कुरान - सार

[मूल अरबी—(नागरी लिपि)—सहित]

विनोबा

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

प्रकाशक	मंत्री, सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी
संस्करण	प्रथम
कुल प्रतियाँ	१,०००, अप्रैल १९६६
मुद्रक	नरेन्द्र भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी
मूल्य	६ रुपया १५ शि० २.४० डा०

अनुवादक : अच्युतभाइ देशपाण्डे

Title	QURAN SAR (Hindi) Arabic in Nagari
Compiler	Vinoba
Subject	Religion
Publisher	Secretary Sarva Seva Sangh Rajghat, Varanasi
Edition	: First
Copies	: 1,000 April 66
Price	Rs 6 Sh 15 $ 2.40

प्रकाशकीय

"इस्लाम की आध्यात्मिक शिक्षा क्या है यह चुन-चुनकर हमने रख दी है सब धर्मवालों के सामने और कुल दुनिया के सामने।

यह है आचार्य विनोबा भावे का कथन 'रूहुल-कुरान' प्रस्तुत करते हुए। अब यह ग्रंथ नागरी लिपि में हिन्दी अनुवाद के साथ कुरान-सार के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

कुरान-शरीफ की कुल ६२३७ आयतों (वचनों) में से १०६५ आयतें 'कुरान-सार' में उद्धृत की गयी हैं। सम्पूर्ण ९ खण्डों ३० अध्यायों, ९० प्रकरणों और ४०० परिच्छेदों में विभाजित है। कौन आयत किस सूरह् (प्रकरण) की है उसका संदर्भ यथास्थान दे दिया गया है। परिच्छेद सं० १६८ २०४ और २८९ के अतिरिक्त सभी आयतें क्रम के अनुसार ही ली गयी हैं।

इस ग्रन्थ में कुरान-शरीफ से निम्नलिखित सूरह् (प्रकरण) संपूर्ण लिये गये हैं

१ •२ ९ •८ ९७ •• १०१ १०२ १०३ १०४, १०७ ११२, ११३, ११४।

निम्नलिखित आयतें (वचन) पूर्ण एक रुकूअ (पैरा) की हैं।

ऊपर के अंक आयतों के और नीचे के सूरह् के हैं

२६१–२६६ / २, २८८–२८६ / २, २•–•० / १७, ३५–४० / २४, ७६–८२ / २८, १२–१९ / ३१, ८–११ / ६३

पूर्ण सूरह् या रुकूअ के अन्त में ऐन् का चिह्न लगा दिया गया है।

यह 'कुरान-सार' प्रस्तुत करने में प्रामाणिक उर्दू और अंग्रेजी अनुवादों तथा भाष्यों का लाभ तो उठाया ही गया है उन समालोचनाओं और सूचनाओं का भी लाभ उठाया गया है जो भारत और पाकिस्तान के पत्र-पत्रिकाओं में 'रूहुल्-कुरान' और 'दि एसेंस ऑफ कुरान' के सम्बन्ध में की हैं।

अरबी भाषा को नागरी में शास्त्रीय ढंग से लिखने का यह प्रथम प्रयास है। इसमें न केवल उच्चारित शब्दों की ही ओर ध्यान दिया है, अपितु शब्द के प्रत्येक अक्षर का लिप्यन्तरित किया गया है। मूल और अनुवाद एक दूसरे के सम्मुख होने के कारण अध्ययन के लिए सुविधा प्राप्त होती है। कुरान-सार के अरबी का एक शब्दकोश भी प्रकाशित किया जा रहा है। किसी भाषा की उच्चारण-पद्धति उस भाषा के विद्वानों से ही जान लेना आवश्यक है और धर्म-ग्रंथों की तो संथा ही लेने की रीति है। फिर भी विशिष्ट अक्षरों के ध्वनिस्थान तथा कुरानसार की नागरी अरबी तथा कुरान शरीफ (अरबी) पढ़ने के विशेष नियम हमने इस ग्रंथ के अन्त में जोड़े हैं उन्हें समझकर ही उनके अनुसार पाठक मूल पुस्तक पढ़ें। धार्मिक ग्रंथों का वाचन शुद्ध ही होना चाहिए, यह उचित आग्रह यहाँ ध्यान में रखना आवश्यक है।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में हमें अनेक मित्रों का विविध रूपों में सहयोग मिला है। उन सबके प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक दिलों को जोड़ने के अपने पवित्र लक्ष्य को पूरा करने में अवश्य ही सफल होगी।

इदुल् अज़्हा (म्)
२—४—६६

सकेत

अरवीपठन और उच्चारण के नियम पुस्तक के अन्त में दिये जा रहे हैं। सकेतो के विषय में कुछ जानकारी यहाँ दी जा रही है।

१–नुक्ता इसकी सहायता लेकर पद्रह नये अक्षर वनाये गये हैं।

२–ॄ ॣ ये दो दीघ मात्राए और नयी वनानी पडी। ये दोनो ह को लगती ह। दूसरी व को और पहली य को भी लगती हैं। इनके सिवा इनका और कही प्रयोग नही होता।

३–' प्लुत या अति दीघ उच्चारण सुझानेवाला सकेत।

४–( ) कोष्ठक इसके अन्दर के हलन्त अक्षर व्याकरण और अनुवाद की सुविधा के लिए दिये गये है। आयत पढते समय उन्हें नही पढना चाहिए। उन्हें छोडकर ही आयत पढी जाय।

५–विराम-चिह्न अर्थात् ठहरने का आदेश देनेवाले चिह्न

O,०, तोय्, ज, वकफ , स्, म्, स्वल्, किफ्,

(त स का दस पाइट, समयाभाव के कारण उपलब्ध न होने से तोय्, स्वात् आदि लिखना पडा)।

६—न ठहरने का आदेश देनेवाले चिह्न
ला, स्वात्, ज्र, स्वली, क ।

७—जहाँ एक से अधिक हो वहाँ अन्तिम सकेत का आदेश मानकर पढा जाय ।

८—जहाँ ठहरना आवश्यक हो वहाँ के शब्द का अन्तिम अक्षर स्वरान्त हो तो भी उसे हलन्त पढा जाय । यह अन्तिम अक्षर यदि न् हो तो उसे न पढकर उसके पूर्व के अक्षर को वह स्वरयुक्त हो तो भी हलन्त पढा जाय। त का हलन्त ह् होता है। त और त एक ही वर्ण के दो रूप हैं।

९—शब्द का अन्तिम अक्षर अकारान्त हो तो उसका उच्चारण भारत की दक्षिण की भाषाओ या उडिया भाषा की पद्धति के अनुसार किया जाय । हिन्दी आदि भाषा की भाँति हलन्त जैसा नही। उ० इय्याक, इय्याक ही पढा जाय इय्याक् नही । रैब को रैब पढे रैब् नहीं—जैसे गोविंद का उच्चारण गोविंद है गोविंद् नहीं । एकाक्षरी शब्द अलबत्ता उसके आगे आनेवाले अक्षर मे मिलाकर ही पढे जाते है, इसलिए उनके लिए उपर्युक्त नियम लागू नही । उ० व ला, थ मा वगैरह ।

●

प्रस्तावना

साइन्स ने दुनिया छोटी बनायी और वह सब मानवों को नजदीक लाना चाहता है। ऐसी हालत में मानव-समाज फिर्कों में बँटा रहे हर जमाअत अपने को ऊँचा समझे और दूसरों को नीचा समझे यह कैसे चलेगा ? हमें एक-दूसरों को ठीक से समझना होगा। एक-दूसरा का गुण ग्रहण करना होगा। यह किताब उस दिशा में एक छोटा-सा प्रयत्न है।

इसी उद्देश्य से 'धम्मपद' की पुनरचना मैंने की थी। और गीता के बारे में मेरे विचार गीता प्रवचना के जरिये लोगों के सामने पेश किये थे।

बरसों से भूदान के निमित्त मेरी पदयात्रा चल रही है जिसका एकमात्र उद्देश्य दिलों को जोड़ने का रहा है। बल्कि मेरी जिन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन में वही प्रेरणा है। मैं आशा करता हूँ, परमात्मा की कृपा से वह सफल होगी।*

मैत्री आश्रम

(असम प्रदेश)

७ ३ ६२

विनोबा

---

* दि एसेन्स ऑफ कुरान' के लिए दी हुई हिन्दी प्रस्तावना।

मराठी संस्करण की प्रस्तावना

[विनोबाजी ने हिन्दी अनुवाद की तरह मराठी अनुवाद की भी एक विशेष प्रस्तावना लिखी। हिन्दी पाठकों के लिए भी वह लाभदायी होगी।]

इधर पाकिस्तान-यात्रा की हमारी तैयारी चल रही थी उधर काशी में कुरान का अंग्रेजी संस्करण मुद्रणमुक्त होकर प्रकाशन के मार्ग पर था। समाचार-पत्र में उसका समाचार दिया गया। उतने समाचार पर कराची के पत्रों में कोलाहल मचाया। अन्यत्र भी इसकी अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिध्वनि उठी। ग्रन्थ प्रकाशित होने के पूर्व ही उसका दुनियाभर में प्रकाशन हुआ। हमारी आशादेवी ने कहा अमेरिका की रूढ़ भाषा में कहा जाय तो कुरान सार का 'दस लाख डालर प्रचार' हुआ। यही विश्रुत ग्रन्थ अब मराठी में प्रकाशित हो रहा है।

इसमें मेरा क्या है? इसके सार वचन पैगंबर-दृष्ट हैं। अनुवाद श्री अच्युतराव देशपाण्डे कर्तृक है। प्रकाशन ग्राम-सेवा-मण्डल का है। इसे जोड़ी हुई प्रारम्भ की अनुक्रमणिका मात्र मेरी कही जायगी।

वचनों का चयन उनकी भाग-अध्याय प्रकरण-परिच्छेदयुक्त रचना और उन सबके मराठी शीर्षक इतना काम मैंने किया है। वह इस अनुक्रमणिका में एकदम देखने को मिलेगा। इसके अतिरिक्त भाग प्रकरण-निर्देशक संस्कृत श्लोक, जो अनुक्रमणिका में दाखिल किये हैं मेरे हैं। उन श्लोकों के सहारे संपूर्ण ग्रन्थ स्मृतिपट पर अंकित हो सकेगा। अखिल भारतीय उपयोग के लिए संस्कृत रचना की गयी। वरना वह भी सहज ही मराठी में होती।

इस पुस्तक में (हमने जो शीर्षक दिये हैं उनमें से) कुछ शीर्षक संस्कृत में दील पड़ते हैं। वे समन्वय की दिशा सुझानेवाले हैं। एक जमाने में प्रस्थान त्रयी का समन्वय कर अपना काम किया पर अब सर्वधर्म-समन्वय करने की

आवश्यकता उत्पन्न हुई है। यह कार्य करते समय गौण-मुख्य-विवेकपूर्वक धर्मग्रन्थों से चयन करना होगा। धर्मग्रन्थ से चयन करना ही गलत है—ऐसी सनातनी' (कट्टर) वृत्ति अलबत्ता छोड़ देनी होगी। कुरान-सार के विषय में ऐसी 'सनातनी वृत्ति' मुसलमानों ने नहीं दिखायी, यह बहुत सन्तोष की बात है। समन्वय के लिए धर्म-विचारों का महत्तम समापवर्तक निकालना होगा। वैसा निकालने से शुद्ध अध्यात्म हाथ आयेगा और विज्ञान-युग में वही काम आयेगा।

अब इन संस्कृत शीर्षकों में से कुछ हम देख लें

'तज्जलान्' (६४) जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारी ब्रह्म-सामर्थ्य दर्शाने के लिए उपनिषदों में यह एक सांकेतिक शब्द प्रयुक्त किया है (छांदोग्य० ३१४१) 'तज्ज + तल्ल + तदन' ऐसी उसकी निरुक्ति भाष्यकार करते हैं।

'दृष्टेः द्रष्टा' (३४) दृष्टि का जो द्रष्टा श्रुति का श्रोता, मति का मन्ता विज्ञाति का विज्ञाता इस प्रकार परमात्म-वर्णन श्रुति ने किया है (बृहदारण्यक ३४२)। कुरान का वाक्य उसका स्मरण करा देता है।

'लोहित-शुक्ल-कृष्ण-वर्णा' (६१) श्वेताश्वतरोपनिषद् में ईश्वर की प्रकृति तिरंगी वर्णित है (श्वे० ४५)। ईश्वर अनेक रंग निर्माण करता है ऐसा लाक्षणिक भाषा में सृष्टि-वैचित्र्य का वर्णन कर उपनिषद् में बताये हुए ही तीन रंग कुरान में निर्दिष्ट हैं। उक्त उपनिषद्-वाक्य में सांख्यों द्वारा सत्त्व रजस्-तमो-मयी प्रकृति का निर्देश कल्पित है।

'यमेव एष वृणुते तेन लभ्य' (६९) परमेश्वर जिस भक्त का वरण करता है उसे उसकी लब्धि होती है। ऐसे अर्थ का उपनिषद् में यह एक ही एक वाक्य है (कठ० १२२३)। उपनिषद् की ब्रह्मविद्या की सामान्य सरणी से यह वाक्य अलग पड़नेवाला है अतः आचार्य (शंकराचार्य) ने उसके अर्थ में थोड़ा फरक किया है। ईश्वरकृत भक्त-वरण कुरान की एक प्रिय कल्पना है।

'कौषीतकी उपनिषद्' ऐसा एक सांकेतिक शीर्षक आया है (७१)। कौषीतकी उपनिषद् में निम्न वचन है

एष हि एव एनं साधु कारयति तं य एभ्यो लोकेभ्यः उन्निनीषते, एष उ एव एनम् असाधु कर्म कारयति तं यम् अधो निनीषते (३.८)

अर्थ परमेश्वर उससे अच्छा काम कराता है जिसकी वह उन्नति चाहता है और उससे बुरा काम कराता है जिसकी वह अवनति चाहता है। यह भी उपनिषद् का अद्वितीय वाक्य है। जीव के स्वतन्त्र कर्तृत्व को इसमें लेशमात्र भी अवकाश नहीं रखा है। सारा बोझ ईश्वर के सिर पर डाल दिया है। इस पर भाष्यकार कहते हैं—'कुर्वन्त हि तम् ईश्वर कारयति।' जीव करता है उससे ईश्वर कराता है। कर्तृत्व से ईश्वर को बचाने के लिए भाष्यकार को ऐसी युक्ति प्रयुक्त करनी पड़ी। ऐसे ही अर्थ का 'भ्रामयन् सर्वभूतानि' आदि गीता-वाक्य प्रसिद्ध ही है। उस पर गीताई चिंतनिकाकार टिप्पणी देता है

ईश्वर कहता है : "तू करना चाहता है, वैसे मैं कराता हूँ"—यह कह कर ईश्वर ने छुटकारा पा लिया।

इसे कहना चाहिए : "तू करायेगा, वैसा ही मैं करूंगा।" तो, यह छूट जायगा।

(गी० चिं० अ० १८ श्लो० ६० टि० ४)

भाष्यकार को जिस विचार ने कठिनाई में डाला और जिसमें से गीताई चिंतनिकाकार ने किसी तरह भाग निकलने का रास्ता ढूंढ निकाला यह आत्यंतिक शरणागति का विचार भारत के 'मार्जारपंथ' भक्ति मार्ग की ओर उसी प्रकार कुरान की खास सिखा है।

× × ×

संस्कृत दीपकों की चर्चा हम यहां समाप्त करें और जिस मूलभूत कल्पना (विचार) ने मुहम्मद पैगंबर साहब की प्रतिभा को प्रभावित किया है और जिसका वर्णन उनकी वाणी में समुद्र जैसा ज्वार लाता है, जितना दूसरे किसी वचन में नहीं आता वह ध्यान में रखकर यह प्रस्तावना समाप्त करें।

कौन-सी है यह मूलभूत कल्पना। वह है ईश्वर का अद्वितीय एकत्व। इस्लाम यानी एकेश्वर-शरणता ऐसी इस्लाम की संक्षेप में व्याख्या की जाती है। पर ध्यान में रखने की बात यह है कि सारा वैदिक भक्ति-मार्ग एकेश्वर निष्ठा पर ही खड़ा है। 'एकमेवाद्वितीय' जैसे वाक्य निर्गुण ब्रह्मपरक हैं कहकर छोड़ दिये जायें और सगुण-परमेश्वर विषयक वाक्य ही विचार में लिये जायें तो भी एकेश्वरनिष्ठा प्रतिपादक वाक्य वेद से गीता भागवत तक सैकड़ों दिखाये जा सकते हैं। पर भक्ति के लिए ईश्वर का एकत्व सुभीते का होने पर भी एकत्व संख्या में ईश्वर को निबद्ध करना यानी ईश्वर को मर्यादा में बाँधने जैसा ही हो जाता है ऐसा वैदिक तत्त्वज्ञान कहता है। तदनुसार ईश्वर एक है अनेक है असंख्येय है शून्य है और अनंत है ऐसा विष्णुसहस्रनाम कहता है। ईश्वर अनेक हैं ऐसा नहीं, ईश्वर अनेक है, इतना अलबत्ता भूलना नहीं चाहिए।

पर यह भी भाषा का खेल हुआ। मन-वाचातीत परम यह स्वरूप' वहाँ किस शब्द का क्या आग्रह रखें? अतः जैसा कि तुकाराम महाराज कहते हैं कि इस विट्ठल को (ईश्वर को) जो-जो भी कहें वह सभी शोभा देता है— यही यथार्थ है।

अन्त में छोटे-से श्वेताश्वतरोपनिषद् से एकेश्वरप्रतिपादक कुछ वचन यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। साधक उनका चिंतन करें।

१ कालात्मयुक्तानि अधितिष्ठत्येकः (१ ३)
२ ईशते देव एकः (१ १०)
३ एष ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः (२ १६)
४ यो देवो अग्नौ यो अप्सु (२ १७)
५ य एको जालवान् (३ १)
६ एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः (३ २)
७ द्यावाभूमी जनयन् देव एकः (३ ३)
८. विश्वस्यैकं परिवेष्टितारम् ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति (३ ७)

९ दिवि तिष्ठत्येकः (३ ९)
१० य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगात् (४ १)
११ यो योनिं योनिम् अधितिष्ठत्येकः (४ ११)
१२ स कारणं करणाधिपाधिपो
न चास्य कश्चित् जनिता न चाधिपः (६ ९)
१३ स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत् (६ १०)
१४ एको देवः सर्वभूतेषु गूढः (६ ११)
१५ एको वशी निष्क्रियाणां बहूनाम् (६ १२)
१६ एको बहूनां यो विदधाति कामान् (६ १३)
१७ एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये (६ १५)

भूदान-यात्रा
(मध्यप्रदेश) –विनोबा का जय जगत्
१४ १२ '६३

खण्डों की रचना

क़ुरान-सार के खण्डों का जो अनुक्रम निश्चित किया गया है वह सूरह् बक़र की प्रारम्भिक पाँच आयतों (वचनों) के क्रम में समान है। इस क्रम को स्मरण में रखने के लिए हम यहाँ विनोबाजी द्वारा रचित एक संस्कृत श्लोक दे रहे हैं

आरम्भे तदनुध्याम भक्त्या भक्तैर्निषेवितम्।
धर्मनीती मनुष्याणां प्रेषितैर्गूढशोधनम्॥

प्रारम्भ[1] में मैं उस ईश्वर[2] का ध्यान करता हूँ जिसकी भक्ति[3] कर भक्तों[4] ने जीवन-साफल्य पाया है।

जिसने धर्म[5] एवं नीति[6] की मानव को शिक्षा दी है और प्रेषितों[7] के द्वारा गूढ़-शोधन[8] करवाया है।

○

विषय-सूची

कुरान-सार के खण्ड तथा प्रकरणों के नाम कंठ करने के लिए निम्नलिखित श्लोक सहायक सिद्ध होंगे। यह संस्कृत रचना विनोबाजी की है

आरम्भे, तदनुध्यान, 'भक्त्या, 'भक्तैर्निषेवितम् ।
धर्म'नीती, 'मनुष्याणां, 'प्रेषिते'गूढशोधनम् ॥

१ 'सम्पर्क, 'सारतत्त्व च, 'साकल्येन समर्पितम्,
पुस्तकेऽस्मिं'स्ततो भक्त्या शुचिर्भूत्वा पठेदिदम् ।

२ एक एवा'द्वितीयश्च, 'प्रकाशो, 'ज्ञानमेव च,
दयालुर्, 'दानवान्, ''कर्ता, ''सुरूपः, ''सुप्रकेतनः ।
''सर्वशक्तिः, ''स्वतंत्रेच्छो, ''मनोवाचामगोचरः,
''नामभिर्घोषित 'श्चापिः, ''प्रार्थनीयः पुनः पुनः ।

३ ''उपासनोपदिष्टेय, ''या धृता मौलिकैरपि,
''निष्ठा, ''त्याग''स्तपश्चर्या, ''धैर्यं मद्भक्तिलक्षणम् ।
''सत्संगः, ''क्षणिको भावो, ''वैराग्य च तदुद्भवम् ।

४ ''लक्षण्याः, ''प्रार्थनावन्तो, ''नैष्ठिका, ''धैर्यशालिनः,
'अहिंसका ये मद्भक्ता, ''मद्दूतैरभिरक्षिताः ।
''नास्तिका, ''भ्रान्त-चित्तास्तु, ''मोघा, ''निरयगामिनः ।

५ ''धर्म-निष्ठा, सहिष्णुत्व, ''लोकसंग्रह-योजना ।

3 १ हुय(अ्)ल् लजी अन्ज़ल अलैक(अ्)ल् किताव मिन्हु आयातुम मुहूकमातुन् हुन्न उम्मु(अ्)ल् किताबि व अुखरु मुतशाबिहातुन्[ण्म] फ़ अम्म-(अ्)(अ्)ल्लजीन फी कुलूबिहिम् जैगुन् फ यत्तबिअून मा तशाबह मिन्हु(अ) ब्तिगांअ (अ्)ल् फ़ित्नवि व (अ्)ब्तिग़ांअतअ्वीलिहई[म] व मा यअलमु तअ्वीलहू इल्ल(अ्) (अ्)ल्लाहुम्

३ ७

4 १ अल्लजीन यस्तमिअून(अ)ल् क़ौल फ यत्तविअून अहूसनहु[ण्र] उ(व्) लांअिक (अ्)-ल्लजीन हदाहुमु(अ्)ल्लाहु व उ(व)लांअिक हुम् उ(व्)ल् (व अ अ्)ल अलवावि ०

३९ १८

5 १ कल्ला इन्नहा तजकिरतुन्०[म]
२ फ मन् शांअ जकरहू ०[म]

८० ११ १२

6 १ ल तुबय्यिनुन्नहू लि(ल्)न्नासि व ला तक्तुमूनहू[म] ..

३ १८७

३ दुहरे वचन (मौलिक तथा लाक्षणिक)

१ वही है, जिसने तुझ पर ग्रन्थ उतारा। उसमें कुछ वचन स्पष्ट हैं, वे ही ग्रन्थ का मूल हैं और दूसरे लाक्षणिक हैं। सो जिनके दिलों में कुटिलता है, वे भ्रम फैलाने के लिए और यथार्थता की टोह लगाने के लिए लाक्षणिक वचनों के पीछे पड़ते हैं। वस्तुत इनकी यथार्थता परमात्मा के सिवा कोई नहीं जानता।

३ ७

४ सर्वोत्तम सार ग्रहण करें

१ जो लोग इन वचनों को सुनते हैं और उनमें से सर्वोत्तम पर चलते हैं, उन्हींको परमात्मा ने मार्ग दिखाया है और वे ही लोग बुद्धिमान् हैं।

३९ १८

५ खुला बोध

१ निस्सन्देह यह एक सदुपदेश है,
२ जो चाहे, उसको विचारे।

८० ११ १२

६ शास्त्र प्रकट करना होता है, छिपाना नहीं

१ लोगों के लिए तुम इस ग्रन्थ को अवश्य प्रकट करोगे, इसे छिपाओगे नहीं।

३ १८७

7 १ व लौ जअल्नाहु कुर्आनन् अअ्जमिय्य (न् अ्)-
ल्ल कालू (अ्) लौ ला फुस्सिलत आयातुहु^णा
अ अअ्जमिय्यु (न्) ँव्व अरबिय्युन्^णोम कुल् हुव
लिल्लजीन आमनू (अ्) हुदँ (य्) व्व शिफा अुन्^णोम

४१ ४४

8 १ व ल क़द् यस्सरन (अ् अ्) ल् कुर्आन लि (ल्)-
ज्जिक्रि फहल् मि (न्) म्मुद्दकिरिन्O

५४ १७

९ १ फ लौ उक्सिमु बि मा तुब्सिरून O^मा
२ व मा ला तुब्सिरून O^मा
३ इन्नहु ल कौलु रसूलिन् करीमि (न्) O^मा मा
४ ँव्व मा हुव बि क़ौलि शाअिरिन् ^णोम कलील (न्)-
म्मा तु (व) अ्मिनून O^मा
५ व ला बि कौलि काहिनिन्^णोम क़लील (न्) म्मा
तजक्करून O^णोम
६ तनज़ील् (न्) म्मि (न्) र् रब्बि (अ्) ल् आलमीनO

६९ ३८-४३

३ ग्रन्थ-स्वरूप

७ ग्रन्थ—मातृभाषा में

१ यदि हम इसे अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषा का कुरान बनाते, तो कहते कि इसके वचन खोलकर क्यों नहीं समझाये गये ? यह क्या ? परायी भाषा और अरबी लोग ! कह यह श्रद्धावानों के लिए प्रबोधन एवं शमन है।

४१ ४४

८ सरल कुरान

१ हमने कुरान को समझने के लिए सरल बनाया है, तो है कोई सोचनेवाला ?

५४ १७

९ कवि का शब्द नहीं

१ कसम खाता हूँ [गवाही है] उस चीज की, जो तुम देखते हो
२ और उस चीज की, जो तुम नहीं देखते
३ कि यह कुरान माननीय दूत का कथन है।
४ किसी कवि का कहना नहीं, किन्तु तुम लोग कम ही श्रद्धा रखते हो।
५ और न यह किसी दैवज्ञ की बात है, किन्तु तुम कम ही ध्यान देते हो।
६ यह उतारा हुआ है विश्व प्रभु का।

६९.३८-४३

10 १ अल्लाहु नज़्ज़ल अह्सन(अ्)ल् हदीसि किताब (न्) म्मुतशाबिह(न्) म्मसानिय [सली] तक़्शइर्रु मिन्हु जुलूदु (अ्)ल्लज़ीन यख़्शौन रब्बहुम्[१] सुम्म तलीनु जुलूदुहुम् व कुलूबुहुम् इला ज़िक्रि(अ्)ल्लाहि [णेग]

३९ २३

11 १ व ल क़द् आतय्नाक सब्अ(न्अ्) म्मिन (अ्)ल् मसानी व (अ्)ल् कुर्आन(अ्)ल् अज़ीम०

१५ ८७

12 १ इन्नहु ल कुर्आनुन् करीमुन् ०[मा]
२ ल्ला यमस्सुहु इल्ल (अ् अ्) ल् मुतह्हरून ०[गय]

५६ ७७,७९

13 १ फ इज़ा करअ्त (अ्)ल् कुर्आन फ(अ्)स्तइज़ बि(अ्)ल्लाहि मिन(अ् ल्)शैतानि(अ्ल्) रजीमि०

१६ ९८

१० हृदय को सन्तोष देनेवाला

१ परमात्मा ने सर्वोत्तम कथन अर्थात् ऐसा ग्रन्थ उतारा, जो परस्पर मिलता-जुलता एव दुहराये जानेवाला है। जिससे उनके शरीर थर्रा उठते हैं, जो अपने प्रभु से डरते है। फिर उनके शरीर और उनके अन्तःकरण ईश्वर-स्मरण से मृदु होते हैं।

३९.२३

११ आवर्तनीय अलफातिहा

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें दुहराये जानेवाले सात वचन दिये और महान् कुरान दिया।

१५.८७

४ पठन-विधि

१२ शुचिर्भूत होकर

१ निस्सन्देह यह आदरणीय कुरान है।

- -

२ इसे वही स्पर्श करते हैं, जो शुचिभूत होते हैं।

५६.७७,७९

१३ ईश्वराश्रयेण पठितव्यम

१ जब तू कुरान पढ़ने लगे, तो परमात्मा की शरण माँग, बहिष्कृत शैतान से बचने के लिए।

१६.९८

खण्ड २

ईश्वर

14 १ कुल् हुव(अ्)ल्लाहु अहदुन् O[म]

२ अल्लाहु(अ् ल्)स्समदु O[म]

३ लम् यलिद् O[ला] व लम् यूलद् O[ला]

४ व लम् यकु(न्)ल्लहु कुफ़ुवन्(अ्)अहदुन O[म]

११२ १-४

15 १ कालु(त्अ् अ्)त्तखज(अ् ल्)रहमानु वलदन्-(अ्)O[गोब]

२ लक़द् जिअ्तुम् शय्अन्(अ्) इद्दन् (अ्) O[ला]

३ तकादु(अ् ल्)स्समावातु यतफत्तरन मिन्हु व तन्शक्कु (अ्) ल् अर्दु व तखिर्रु (अ्) ल् जिबालु हद्दन्(अ्) O[ला]

४ अन् दऔ(अ्)लि(ल्)र्रहमानि वल्दन् (अ्)O[म]

५ व मा यम्बग़ी लि(ल्)र् रहमानि अंय्यत्तखिज वलदन्(अ्) O[गोब]

११ ८८-९२

16 १ व(अ्) स्साफ़्फ़ाति सफ्फन्(अ्) O[ला]

२ फ (अ्ल्) ज़ाजिराति ज़ज्रन्(अ्) O[ला]

३ एक

५ एक एवाद्वितीय

१४ ईश्वर एक है

१ कह ईश्वर एक है।
२ ईश्वर निरपेक्ष है।
३ वह न जनिता है, न जन्य।
४ और न कोई उसके समान है।

११२ १–४

१५ ईश्वर को पुत्र होना शोभा नहीं देता

१ लोग कहते हैं कि ईश्वर को पुत्र है।
२ तुम एक भयकर बात कह रहे हो।
३ जिससे आकाश फट जायें और पृथ्वी खण्ड-खण्ड हो जाय और पर्वत चूर-चूर होकर गिर जायें,
४ कि ये लोग कहते हैं कि परमात्मा को पुत्र है
५ और कृपालु को यह शोभा नहीं देता कि वह किसीको पुत्र माने।

१९.८८–९२

१६ भक्तवृन्दों की सौगन्ध

१ गणसज्जित,
२ विद्रावक

३ फ (अल्) त्तालियाति जिक्रन् (अ) O[प]
४ इन्न इलाहकुम् ल वाहिदुन् O[गोप]
५ रब्बु (अल्) स्समावाति व (अ) ल् अर्दि व
मा बैनहुमा व रब्बु (अ) ल् मशारिकि O[गोप]

३७ १–५

17 १ व इज काल (अ) ल्लाहु या ओम (य् अ) ब्न
मर्यम अ अन्त कुल्त लि (ल्) न्नासि (अ)-
त्तखिजूनी व उम्मिय इलाहैनि मिन् दूनि-
(अ) ल्लाहि [गोप] क़ाल सुब्हानक मा यकूनु ली'
अन् अकूल मा लैस ली[क] बिहक्किन् [गाप] इन् कुन्तु
कुल्तुहु फ़क़द् अलिम्तहु [गोप] तअ्लमु मा फी
नफ्सी व ला अअ्लमु मा फ़ी नफ्सिक [गोप] इन्नक
अन्त अल्लामु (अ) ल् गुयूबिO

२ मा कुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी बिहीं' अनि-
(अ) अ्बुदु (व्अ) (अ) ल्लाह रब्बी व रब्बकुम् [२]
व कुन्तु अलैहिम् शहीद (न्अ) म्मा दुम्तु
फ़ीहिम् [२] फ लम्मा तवफ्फैतनी कुन्त अन्त (अल्)-
र्रक़ीव अलैहिम् [गोप] व अन्त अला (य्) कुल्लि
शय्इन् शहीदुनO

३ इन् तुअ्ज़्जिबहुम् फ इन्न हुम् अिबादुक[२] व इन्
तग्फिर् लहुम् फ इन्नक अन्त (अ) ल् अज़ीज़ु-
(अ) ल् हकीमुO

५ ११९–१२१

३ तथा स्मरण-पठनशीलों की सौगन्ध।

४ निस्सन्देह तुम्हारा भजनीय एक है।

५ वह प्रभु है, आकाश एव पृथ्वी का और उनमें जो वस्तुएँ हैं, उन सबका और उदय-स्थलों का।

३७ १–५

१७ यीशु की साक्ष्य

१ जब परमात्मा कहेगा हे मरियम के बेटे यीशु, क्या तूने लोगों को कहा था कि मुझे और मेरी माँ को परमात्मा के अतिरिक्त दो उपास्य मानो। (यीशु) कहेगा तू पवित्र ह, मेरे लिए शोभनीय नहीं कि वह बात कहूँ, जिसका मुझे अधिकार नहीं। यदि मैंने कहा होगा, तो तू उसे अवश्य जानता होगा। तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है और जो कुछ तेरे मन में है, वह म नहीं जानता। निस्सन्देह तू ही अव्यक्त का ज्ञाता है।

२ तूने मुझे जो आज्ञा दी, केवल वही मैंने उनसे कही कि परमात्मा की भक्ति करो, जो मेरा प्रभु है और तुम्हारा प्रभु है और जब तक म उनके बीच रहा, उनका साक्षी रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उनका निरीक्षक था और तू ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।

३ यदि तू उनको दण्ड दे, तो ये तेरे दास ही ह और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो नि सशय तू ही सर्वजित् और सर्व-विद् है।

५ ११९–१२१

18 १ या अह्ल (अ्)ल् किताबि ला तग़्लू (अ्) फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू (अ्) अल (य्) ल्लाहि इल्ल (अ्) ल् हक़्क़ इन्न म (अ् अ्) ल मसीहु अीस (य् अ्) ब्नु मर्यम रसूलु (अ्) ल्लाहि व कलिमतुहु अल्क़ाहा इला (य्) मर्यम व रूहु (न्) म् मिन्हु फ आमिनू (अ्) बि (अ्) ल्लाहि व रुसुलिही व ला तक़ूलू (अ्) सलासतुन् इन्तहू (अ्) ख़ैर (न्अ्)-ल्ल कुम् इन्नम (अ् अ्) ल्लाहु इलाहुँ वाहिदुन् सुब्हानहु अँ य्यकून लहु वलदुन् लहु मा फि (य्)-(अ्ल्) स्समावाति व मा फि (य् अ्) ल् अर्दि व कफा (य्) बि (अ्) ल्लाहि वकील्न् (अ्)०

४ १७१

19 १ व कज़ालिक नुरी इब्राहीम मलकूत (अ्ल)-स्समावाति व (अ्) ल् अर्दि व लि यकून मिन-(अ्) ल् मूक़िनीन०

२ फलम्मा जन्न अलैहि (अ्) ल् लैलु रआ कौकबन् (अ्) क़ाल हाजा रब्बी फ लम्मा अफ़ल क़ाल ला उहिब्बु (अ्) ल् आफ़िलीन०

१८ अत्री

१ हे ग्रन्थधन्तो, अपने धम के विषय में अत्युक्ति न करो और परमात्मा के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ मत कहो। निस्सन्देह, यीशु ख्रीष्ट मरियम का बेटा परमात्मा का प्रेषित है और उसका शब्द है, जिसे उसने मरियम की ओर भेजा और परमात्मा की ओर से सच्चरित प्राण है। सो परमात्मा और उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखो और न कहो कि 'तीन' हैं। इससे परावृत्त हो जाओ। तुम्हारे लिए ठीक होगा। निस्सन्देह परमात्मा ही एकमेव भजनीय है। वह पवित्र है, इससे परे है कि उसको पुत्र हो। उसीका है, जो कुछ पृथ्वी एव आकाशों में है। और रक्षण में परमात्मा पूर्ण समर्थ है।

४।१७१

१९ न तत्र सूर्यो भाति

१ हम इब्राहीम को इसी प्रकार आकाशों एव पृथ्वी का अपना आधिपत्य दिखाने लगे, जिससे वह विश्वास करनेवालों में से हो जाय।

२ फिर जब उस पर रात्रि ने अधकार फैलाया, तो उसने एक तारा देखा। बोला यह है मेरा प्रभु! फिर जब वह अस्त हो गया, तो बोला मैं डूबनेवालो को पसन्द नहीं करता।

३ फ़लम्मा रअ(अ)ल् कमर वाज़िग़न् (अ) क़ाल हाजा रब्बी[१] फलम्मा अफ़ल क़ाल लअि (न्) ल्लम यह्दिनी रब्बी ल अकूनन्न मिन (अ) ल् क़ौमि (अल्) द्दाल्लीन०

४ फ लम्मा रअ (अल्) श्शमस वाज़िग़तन् क़ाल हाजा रब्बी हाजा अक्बरु[२] फ़लम्मा अफ़लत् क़ाल या क़ौमि इन्नी बरीअु (न्) म्मिम्मा तुश्रिकून०

५ इन्नी वज्जह्तु वज्हिय लिल्लजी फ़त्तर (अल्)-स्समावाति व (अ) ल् अर्द्ध हनीफ़ब्व मा अना मिन (अ)ल् मुश्रिकीन०[३]

६।७५-७९

20 १ ला तस्जुदू (अ) लि (ल) श्शम्सि व ला लिल् क़मरि व (अ)स्जुदू (अ) लिल्लाहि (अ) ल्लजी खलक़ हुन्न इन कुन्तुम् इयाहु तअ्बुदून०

४१।३७

21 १ म (अत्त) ख़ज (अ) ल्लाहु मिं व्वलदिं व्व मा कान मअ़हु मिन् इलाहिन् इज (न्अ) ल्ल जहब कुल्लु इलाहि (न्) म्बिमा ख़लक़ व लअला बअ्ज़ुहुम् अला (य्) बअ्ज़िन्[१] सुब्हान (अ) ल्लाहि अम्मा यसिफ़ून०[२]

२३।९१

३ फिर जब चमकता हुआ चन्द्रमा देखा तो कहा, यह है मेरा प्रभु ! फिर जब वह लुप्त हो गया, तो कहा, यदि मेरा प्रभु मुझे मार्ग न दिखाये, तो निश्चय ही मैं भ्रमितों में से हो जाऊँगा।

४ फिर जब उसने दीप्तिमान सूर्य को देखा, तो कहने लगा यह है मेरा प्रभु ! यह सबसे प्रचण्ड है। फिर जब वह अस्तगत हुआ, तो बोल उठा हे मेरे लोगो ! जिन्हें तुम (ईश्वर का) भागीदार ठहराते हो, उनसे मैं मुक्त हूँ।

५ निश्चय ही मैंने एकाग्र हो अपना मुख उसीकी ओर मोड़ दिया है, जिसने आकाश एवं भूमि बनायी है और मैं विभक्तों में से नहीं हूँ। ६ ७५-७९

२० सूर्य-चन्द्र निर्माता को प्रणिपात करो

१ प्रणिपात न करो सूर्य को और न चन्द्र को, अपितु प्रणिपात करो परमात्मा को, जिसने उन्हें उत्पन्न किया, यदि तुम परमात्मा की ही भक्ति करते हो।

४१ ३७

६ देवता-निषेध

२१ यदि अनेक देवता होते

१ परमात्मा ने किसीको पुत्र नहीं ठहराया और न उसके साथ कोई अन्य भजनीय है, यदि ऐसा होता, तो प्रत्येक भजनीय देवता अपनी निर्मित वस्तु पृथक कर ले जाता और एक-दूसरे पर आक्रमण कर देता। परमात्मा उनकी कथित बातों से बहुत निराला है।

२३ ९१

22 १ द्ररब(अ्) ल्लाहु मसल (न्अ्) र्रजुलन्-(अ्)फीहि शुरकाअु मुतशाक्सिून व रजुलन्-(अ्) सलम (न् अ्) ल्लि रजुलिन्[गोल] हल् यस्तवियानि मसलन्[गोल] अल् हम्दु लिल्लाहि[व] वल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून ०

३९ १२

23 १ मसलु (अ्)ल्लजीन (अ्)त्तखजू मिन् दूनि-(अ्)ल्लाहि औलियाअ कमसलि (अ्)ल् अन्कबूति[खाली] इत्तखजत् वतन्[वाप] व इन्न औहन (अ्)ल् बुयूति ल बैतु (अ्)ल् अन्कबूति[म] लौ कानू (अ्) यअ्लमून०

२९ ४१

24 १ अला लिल्लाहि (अल्) दीनु (अ्)ल् खालिसु[गप] व (अ्)ल्लजीन(अ्)त्तखजू(अ्) मिन् दूनिहर्ठ' औलियाअ[प] मा नअ्बुदु हुम् इल्ला लियुक़र्रिबू-नॉ इल(य् अ्)ल्लाहि जुल्फ़ा(य्) [कप] इन्न-(अ्)ल्लाह यहकुमु बैनहुम् फ़ी माहुम् फीहि यख्तलिफून[गप] इन्न (अ्)ल्लाह ला यह्दी मन् हुव काजियुन् कफ्फारुन्०

३९ ३

२२ अनेक मालिकों का गुलाम

१ परमात्मा ने एक दृष्टान्त दिया कि एक मनुष्य है, जिसके कई झगड़ालू मालिक हैं और एक मनुष्य पूरा एक का ही है। क्या दृष्टान्त में दोनों एक समान है ? सारी स्तुति परमात्मा के लिए है, किन्तु बहुत-से लोग समझते नहीं।

३९ २९

२३ मकड़ी का घर

१ जिन लोगो ने परमात्मा के अतिरिक्त अन्य सरक्षक चुने हैं, उन लोगों की उपमा मकड़ी की-सी है। उसने एक घर बना लिया, किन्तु इस बात में सन्देह नहीं कि सब घरों में कमजोर घर मकड़ी का घर है। अरे, यदि ये लोग समझते !

२९ ४१

२४ विभक्ति और उसका समर्थन

१ स्मरण रखो, शुद्ध भक्ति परमात्मा के ही लिए है और जिन लोगों ने परमात्मा के अतिरिक्त और सरक्षक बना रखे हैं (और कहते है कि) हम तो उनकी भक्ति केवल इस कारण करते हैं कि वे हमें परमात्मा के समीप पहुँचा दें। निस्सन्देह परमात्मा उनके बीच उस वस्तु के सम्बन्ध में निर्णय कर देगा, जिसके विषय में वे विरोध कर रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि परमात्मा उसको मार्ग नहीं दिखाता, जो झूठा और सत्यद्रोही है।

३९ ३

25 १ कुल् हल् मिन् शुरकाअि कु(म्)म्मँय्यब्द(व्)-
अु(अ्) (अ्)ल् खल्क सुम्म युअीदुहु^गोप कुलि-
(अ) ल्लाहु यब्द(व्)अु (अ्) (अ्)ल् खल्क
सुम्म युअीदुहु फ़ अन्ना(य्) तु(य्) अफकून०
२ कुल् हल् मिन् शुरकाअि कु(म्) म्मँय्यह्दी
इल (य् अ्) ल् हक्क़ि^गोप कुलि (अ्)ल्लाहु
यह्दी लिल् हक्कि^गोप अ फ मँय्यह्दी इल(य्) (अ्)-
ल् हक्कि अहक्कु अँय्युत्तबअ अम्म (न्)ल्ला
यहिद्दी इल्ला अँय्युह्दा (य्)^म फ मा लकुम्^गोप-
कैफ तह्कुमून०

१० ३४ ३५

26 १ या अय्युह (अ् अल्) न्नासु ज़ुरिब मसलुन्
फ(अ्)स्तमिअू (अ्)ल्हु^गोप इन्न (अ्)ल्लज़ीन
तद्अून मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि लँय्यख्लुक़ू-
(अ्)ज़ुबाब(न अ)ँव्व ल वि(अ्)ज् तमअु(अ्)
लहु^गोप व इँय्यस्लुब्हुमु (अ्ल्) ज़ुबाबु
शय्अ(न्)ल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु^गोप ज़अुफ-
(अ्ल)त्तालिबु व(अ्)ल् मत्लूबु०

२२ ७३

२५ परमात्मा की दोनों शक्तियाँ देवता में नहीं

१ पूछ तुम्हारे भागीदारों में ऐसा कोई है, जो पहली वार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है? कह परमात्मा पहली वार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है, तो तुम कहाँ उलटे फिरे जाते हो!

२ पूछ तुम्हारे भागीदारों में कोई ऐसा है, जो सत्य का माग दिखाये? कह दे परमात्मा सत्य का माग दिखलाता है। फिर जो सत्य का माग दिखलाता है, वह अनुसरण करने के अधिक योग्य है या वह कि जो बिना बतलाये स्वय ही मार्ग न पाये? तो तुमको हुआ क्या है? कैसा निर्णय करते हो?

१० ३४ ३५

२६ देवता मक्खी भी नहीं उड़ा सकते

१ लोगो, एक दृष्टान्त दिया जाता है, उसे कान लगाकर सुनो। परमात्मा के अतिरिक्त तुम जिन्हें पुकारते हो, वे कदापि एक मक्खी भी नहीं बना सकेंगे, यद्यपि उसके लिए सब इकट्ठा हो जायें, और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाय, तो वे उसको उससे छुड़ा नही सकते। कैसे दुर्बल है ये याचक तथा याच्य!

२२ ७३

27

१ अल्लाहु नूरु (अ् ल्)स्समावाति व (अ्)ल् अर्‌ज़िगीय मसलु नूरिहर्ि क मिशका(व्)ति फ़ीहा मिस्वाहुन् ग़ैब अल् मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन् ग़ैब अ(ल्)ज़्ज़ुजाजतु क अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्युँय्यूक़दु मिन् शजरति (न्)म्-मुबारकतिन् ज़ैतूनति(न्)ल्ला शर्क़िय्यति-ँव्व ला ग़र्बिय्यती(न्)ग ँयकादु ज़ैतुहा युदी'उ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् ग़ाय नूरुन् अला(य्) नूरिन्गीय यह्दि(य् अ्) ल्लाहु लि नूरिहर्ि मँय्यशा'उग़ाय व यज्रिबु (अ)ल्लाहु (अ्)ल् अम्साल लि(ल्) नासिगैम व(अ्)ल्लाहु बि कुल्लि शयजिन् अलीमुन०ग

२ फ़ी बुयूतिन् अज़िन (अ्)ल्लाहु अन् तुर्फअ व युज़्कर फ़ीह (अ् अ्)स्मुहुग युसब्बिहु ग्हु फ़ीहा बि(अ्)ल् ग़ुदुव्वि व (अ्)ल् आसालि०ग

३ रिजालु(न्)ग ल्ला तुल्हीहिम् तिजारतुँव ला बयअुन् अन् ज़िक्रि (अ्)ल्लाहि व इक़ामि (अल्)स्सलातु(व्)ति व ईताअि(अल्) ज़्ज़का-(व्)तिग्गायन यख़ाफ़ून यामन् ततक़ल्लबु फ़ीहि -(अ्)ल क़ुलूबु व (अ्)ल् अब्सार्. ०ग्गा

४ ज्ञानमय

७ परमात्मा प्रकाश-स्वरूप

२७ ईश्वरीय प्रकाश

१ परमात्मा आकाशों एव भूमि का प्रकाश है, इस प्रकाश का दृष्टान्त ऐसा है कि जैसे एक आला है, उसमें एक दीपक है, दीपक शीशे में है। शीशा मानो एक चमकता हुआ तारा है, (दीपक) प्रज्वलित किया जाता है मगलप्रद वृक्ष अर्थात् जैतून से, जो न पौर्वात्य है, न पाश्चिमात्य। निकट है कि उसका तेल प्रज्वलित हो जाय, चाहे उसे अग्नि न छुए। प्रकाश पर प्रकाश। परमात्मा जिसको चाहता है, अपने प्रकाश का माग दिखलाता है और परमात्मा लोगों के लिए दृष्टान्तों का वणन करता है और परमात्मा सर्वज्ञ है।

२ (यह दीपक ऐसे) घरों में (है), जिनको ऊँचा करने की और जिनमें परमात्मा के नाम-स्मरण की परमात्मा ने आज्ञा दी है। वहाँ प्रात-साय उसका स्मरण करते हैं।

३ वे लोग, जिन्हें ईश्वर-स्मरण, नियमित प्राथना तथा नित्य दान से न व्यापार असावधान करता है, न क्रय-विक्रय, वे उस दिन से डरते हैं, जिस दिन हृदय और आँखें उलटायी जायेंगी।

४ लि यजज़िय हुमु (अ्) ल्लाहु अह्सन मा अमिलू-(अ्) व यज़ीदहु (म्) म्मिन् फ़ज़्लिही[३८] व (अ्) ल्लाहु यर्ज़ुक़ु म (न्) य्यशा अु बिग़ैरि हिसाबिन्०

५ व (अ्) ल्लज़ीन कफ़रू (अ्) अअ्मालुहुम् कसराबि (न्) म् बि क़ीअति य्यह्सबुहु (अ्ल्) -ज़ज़्मआनु मा अन्[३९] हत्ता इज़ा जाअहु ल्म् यजिद्हु शय्अ (न्) व्व वजद (अ्) ल्लाह ञिन्दहु फ़वफ़्फ़ाहु हिसाबहु[४०] व (अ्) ल्लाहु सरीञु (अ्) ल् हिसाबि ०[४१]

६ औ क ज़ुलुमातिन् फ़ी बहूरि (न्) ल्लुज्जीयि य्यग्शाहु मौजु (न्) म्मिन् फ़ौक़िही मौजु (न्)-म्मिन् फ़ौक़िही सहाबुन्[४२] ज़ुलुमातु (न्) म्-बाअ्ज़ुहा फ़ौक बाअ्ज़िन्[४३] इज़ा अख़्रज यदहु ल्म् यकद् यराहा[४४] व म (न्) ल्लम् यज्अलि-(अ्) ल्लाहु लहु नूरन् फ़ मा लहु मि (न्) नूरिन्०[४५]

२४ । ३७-४०

28 १ अलो इन्नहुम् यसनून सुदूरहुम लि यस्तख़्फ़ू-(अ्) मिन्हु[४६] अला हीन यस्तग्शून सियाबहुम्[४७] यञ्लमु मा युसिर्रून व मा युञ्लिनून[४८] इन्नहु अलीमु (न्) म् बिज़ाति (अ्स्) सुदूरि०

४ जिससे कि परमात्मा उन्हें उनके कर्मों का उत्तम-से-उत्तम प्रतिफल (बदला) दे और अपने समय में से उनको विपुलता दे। और परमात्मा जिसे चाहता है, अगणित देता है।

५ और जो लोग श्रद्धाहीन हैं, उनकी कृतियाँ ऐसी हैं, जैसे जंगल में मृगजल, जिसे प्यासा पानी समझता है। यहाँ तक कि जब वह उसके पास आता है, तो कुछ नहीं पाता और पाता है ईश्वर को अपने पास। फिर उसने उसका लेखा पूरा कर दिया और ईश्वर शीघ्र हिसाब लेनेवाला है।

६ या जैसे अंधकार एक गहन सागर में, जिस पर छायी हुई है लहर, उस लहर पर एक और लहर और लहर पर मेघ। अन्धकार पर अन्धकार! अपना हाथ जब बाहर निकालता है तो देख नहीं पाता। और जिसे परमात्मा ने प्रकाश नहीं दिया, उसके लिए कोई प्रकाश ही नहीं।

२४।३५-४०

८ सर्वज्ञ

२८ ईश्वर सर्वहृदय-साक्षी—सदण

१ सावधान! वे अपने वक्षस्थल को सिकोड़ते हैं, जिससे कि परमात्मा से छुपायें। सुनो, जिस समय वे अपने कपड़े लपेटते हैं, ईश्वर जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। निस्सन्देह वह अन्तःकरण के रहस्यों से अभिज्ञ है।

२ व मा मिन् दाब्बतिन् फि (य् अ्) ल् अर्द्धि इल्ला अल (य् अ्) ल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ़्लमु मुस्तकर्रहा व मुस्तौदअ़हाणेय कुल्लुन् फ़ी किताबि (न्) म्मुबीनिन्O

३ व हुव (अ्) ल्लजी खलक (अ्ल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्द्र फ़ी सित्तति अय्यामि (न्) व्व कान अ़र्शुहु अल (य् अ्) ल् माअ़ि लि यब्लुव -कुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़मलन्णेय व लअिन क़ुल्त इन्नकु (म्) म्मब्अ़ूसून मि (न्) म् बअ़्दि (अ्) ल् मौति ल यकूलन्न (अ्) ल्लजीन कफ़रू (अ्) इन् हाजा इल्ला सिह्रु (न्) म्मुबीनुन्O

११५–७

29 १ व मा तकूनु फी शअ्नि (न्) व्व मा तत्लू (अ्) मिनहु मिन् कुर्आनि (न्) व्व ला तअ़्मलून मिन् अ़मलिन् इल्ला कुन्ना अलैकुम् शुहूदन्- (अ्) इज् तुफ़ीदून फ़ीहिणेय व मा यअ़्जुबु अ (न्) र्रब्बिक मि (न्) म्मिसकालि जर्रतिन् फि (य् अ्) ल् अर्द्धि व ला फि (य्) (अ्ल्) स्समाअ़ि व ला अस्ग़र मिन् जालिक व ला अक्बर इल्ला फ़ी किताबि (न्) म्मुबीनिन्O

१० ६१

२ भूमि पर चलनेवाला कोई ऐसा नहीं, जिसकी जीविका ईश्वर के अधीन न हो। वह जानता है उसके निवास का स्थान और उसके विश्राम का स्थान। सब बातें उस स्पष्ट ग्रन्थ में उपस्थित हैं।

३ और वही है, जिसने छह दिन में आकाशों और भूमि को उत्पन्न किया और उसका सिंहासन जल पर था (और है) जिससे कि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें से कौन अच्छा काम करता है और यदि तू (मुहम्मद) कहे कि मृत्यु के पश्चात् निश्चय ही तुम उठाये जाओगे, तो वे लोग, जो श्रद्धाहीन हैं, अवश्य कहेंगे कि यह तो खुला जादू है।

११ ५-७

२९ सब-कर्म-साक्षी

१ और तू किसी भी स्थिति में हो। और तू कुरान का कोई पाठ करता हो। और तुम लोग कोई काम करते हो, हम तुम्हारे पास अवश्य उपस्थित होते हैं, जब कि तुम उसमें व्यस्त होते हो। और तेरे प्रभु से कणभर भी कोई वस्तु नहीं छिपती, न भूमि में, न आकाश में। उससे न कोई छोटी, न कोई बड़ी वस्तु है, जो उस स्पष्ट ग्रन्थ में नहीं है।

१० ६१

30 १ व ञिन्दहू मफातिहु (अ्) ल् ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हुव^{गोल} व यअ्लमु मा फि (य्) (अ्) ल् बर्रि व (अ्) ल् बह्‌रि^{गोल} व मा तुस्क़ुतु मि (न्)-अ्वरकतिन् इल्ला यअ्लमुहा व ला हृब्बतिन् फी ज़ुलुमाति (अ्) ल् अर्ज़ि व ला रत्नबि (न्) अ्व ला याबिसिन् इल्ला फी किताबि (न्) म्मुबीनिन्O

६.५९

31 १ इन्न (अ्) ल्लाह ञिन्दहू ञिल्मु (अल्) स्साअ्ति व युनज़्ज़िलु (अ्) ल् ग़ैस व यअ्लमु मा फि (अ्) ल् अर्हामि^{गोल} व मा तद्‌री नफसु (न्) म्मा जा तक्सिबु ग़दन् (अ्)^{गोल} व मा तद्‌री नफ़्सु (न्) म् बि अय्यि अर्ज़िन् तमूतु^{गोल} इन्नल्लाह अ्लीमुन् खबीरुन्O

३१ ३४

32\. १ अल्लाहु यअ्लमु मा तहूमिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीदु (अ्) ल् अर्हामु व मा तज़्दादु (न्)^{गोल} व कुल्लु शयअिन् ञिन्दहू बि मिक़्दारिन्O

२ आ्लिमु (अ्) ल् गैबि व (अल्) श्शहादति -(अ्) ल् कबीर (अ्) ल् मुतआ्लिO

३ सवा अु (न्) म्मिन्कुम् मन् असर्र (अ्) ल् क़ौल व मन् जहर बिहर्रै व मन् हुव मुस्तख़्फ़ि (न्) म् बि(अ्)ल्लैलि व सारिबु(न्)म् बि (अल्) न्नहारिO

१३.८-१०

३० परमात्मा के पास अव्यक्त की कुंजियाँ

१ और उसीके पास अव्यक्त की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके अतिरिक्त कोई नही जानता। और वह जानता है, जो कुछ पृथ्वी और समुद्र में है। और कोइ पत्ता नहीं झडता, पर वह उसे जानता है। बीज का कोइ दाना भूमि के अँधेरे गर्भ में नहीं गिरता और न कोइ हरी वस्तु, न कोइ सूखी वस्तु ऐसी है, जो स्पष्ट ग्रंथ में विद्यमान् नहीं है।

६ ५९

३१ ईश्वर पञ्चज्ञ

१ निस्सन्देह अन्तिम दिन (पुनरुत्थान) का ज्ञान ईश्वर को ही है। वही मेंह बरसाता है और माता के गर्भ में जो कुछ है, उसे वही जानता है। कोइ प्राणी नही जानता कि कल वह क्या करेगा और कोइ नहीं जानता कि वह किस भूमि में मरेगा। निस्सन्देह ईश्वर ही सर्वज्ञ है, सर्वविद् है।

३१ ३४

३२ ईश्वर गर्भज्ञ

१ ईश्वर जानता है, जो प्रत्येक नारी के गर्भ में है और जो कुछ गर्भों में न्यूनाधिक होता है। प्रत्येक वस्तु उसके पास एक परिमाण से है।

२ वह अव्यक्त व्यक्त का ज्ञाता, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च है।

३ तुममें जो चुपके से कहे या पुकारकर कहे और जो रात को छिप जाय और जो दिन में चले फिरे, सब (उसके लिए) बराबर है।

१३.८–१०

33 १ व ल कद् ख़लक़्न (अ्) (अ्) ल् इन्सान व नअ्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् हब्लि (अ्) ल् वरीदि०

५० १६

34 १ ला तुद्रिकुहु (अ्) ल् अब्सारु व हुव युद्रिकु (अ्) ल् अब्सार व हुव (अल्)-ल्लतीफु (अ्) ल् ख़बीरु ०

६ १०३

35 १ हुव (अ्) ल् अवल्लु व (अ्) ल् आख़िरु व (अल्)-ज़्ज़ाहिरु व (अ्) ल् बातिनु व हुव बिकुल्लि शय्अिन् अलीमुन्०

५७ ३

३३ कण्ठ-शिरा से भी निकट

१ हमने मनुष्य को उत्पन्न किया। उसके मन में जो विचार आते रहते हैं, उन्हें हम जानते हैं और हम उससे उसकी कण्ठ-शिरा से भी अधिक निकट हैं।

५० १६

३४ दृष्टे द्रष्टा

१ उसे दृष्टि नहीं पाती, पर वह दृष्टि को पा लेता है। वह सूक्ष्मदर्शी, सावधान है।

६ १०३

३५ आदि-अन्त, प्रकट-अप्रकट

१ वही है आदि, वही है अन्त, वही है प्रकट, वही है अप्रकट। वह वस्तुमात्र का ज्ञाता है।

५७ ३

38 १ व इज़ा जा'अक (अ्)ल्लज़ीन यु(व्)अमिनून बि आयातिना फ़ क़ुल् ,सलामुन् अलैकुम् कतब रब्बुकुम् अला(य्)नफ़्सिहि(अल्) र्रह्मतअ्न अन्नहु मन् अमिल मिन्कुम् सू'अ (न्अ्) म्-बि जहालतिन् सुम्म ताब मि(न्)म् बअ्दिहरी व अस्लह फ़ अन्नहु ग़फ़ूरु(न्) र्रहीमुन०

६५४

39 १ व इन्न रब्बक ल ज़ू मग़फ़िरति(न्) ल्लि न्नासि अला(य्) ज़ुल्मिहिम्१ व इन्न रब्बक ल शदीदु(अ्)ल् अ़िक़ाबि०

१३१

40 १ इन्न म(अ्ल)त्तौबतु अल(य्अ्)ल्लाहि लिल्ल-ज़ीन यअ्मलून (अ्ल्)स्सू'अ बिजहालतिन् सुम्म यतूबून मिन् क़रीबिन् फ उ(य्)लाअिक यतूबु(अ्)ल्लाहु अलैहिम्०५ व कान (अ्)ल्लाहु अलीमन् हकीमन्०

२ व लैसति(अ्ल्) त्तौबतु लिल्लज़ीन यअ्मलून (अ्ल्) स्सय्यिआति२ हत्ता इज़ा हज़र अहदहुमु-(अ्)ल् मौतु क़ाल इन्नी तुब्तु(अ्)ल् आन व

३८ दया-वक्ष

१ जब तेरे पास हमारे वचनों को माननेवाले लोग आयें, तो तू कह दे, तुम पर सलाम हो (तुम्हें शान्ति एव शरणता मिले) । तुम्हारे प्रभु ने करुणा को अपना जिम्मा माना है कि तुममें से जो कोइ अज्ञान से बुरा काम करे, फिर पश्चात्ताप करे और अपना सुधार करे, तो वह परमात्मा क्षमावान्, करुणावान् है ।

६५४

३९ इश्वर दयालु और कठोर

१ निस्सन्देह प्रभु लोगों को उनके अत्याचारों के होते हुए क्षमा करनेवाला है और यह भी निश्चित है कि प्रभु कठोर दण्ड देनेवाला है ।

१३६

४० इश्वर की क्षमा की मर्यादाएँ

१ इश्वर उन्ही लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति करता है, जो अज्ञान से दुष्कम करते हं, फिर शीघ्र पश्चात्ताप करते हैं । ऐसे ही लोगों को वह क्षमा करता है । परमात्मा सर्वज्ञ, सर्व-विद् है ।

२ और उन लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति नही होती, जो दुष्कम करते हैं । यहाँ तक कि जब उनमें से किसीके आगे मृत्यु आ जाती है तो वह कहता है कि अब मैंने पश्चात्ताप किया । और ऐसों के भी पश्चात्ताप स्वीकृत नहीं होते,

ल(अ् अ्)ल्लजीन यमूतून व हुम् कुफ्फारुन्^(गैर)
उ(व्)लाइक अअ्तद्ना लहुम् अजाबन्(अ्)
अलीमन् (अ्)O

४ १७-१८

41 १ इन्न(अ्) ल्लाह् ला यग्फ़िरु अ(न्) य्युश्रक
बिहीं व यग्फिरु मा दून ज़ालिक लिम (न्)-
य्यशाअु व म(न्) य्युश्रिक् बि(अ्)ल्लाहि फ
क़दि(अ्)फ़्तरा(य्)इस्मन्(अ्)अज़ीमन्(अ्)O

४ ४८

42 १ अ(ल्) र्रह्मानु O^(म)

२ अल्लम(अ्)ल् क़ुर्आन O^(गैर)

३ ख़लक़(अ्)ल् इन्सान O^(म)

४ अल्लमहु(अ्)ल् बयानO

५ अ(ल्)श्शमसु व(अ्)ल् क़मरु बि हुस्बानि-
(न्)^(स्वाद)

६ व (अ्ल्) न्नज्मु व (अ्ल्) श्शजरु यस्जु-
दानिO

७ व (अ्ल्) स्समाअ रफ़अहा व वज़अ-
(अ्)ल् मीज़ानO

८ अ ल्ला तत्ग़ौ फ़ि (अ्) ल् मीज़ानिO

९ व अक़ीमु(व्अ्) (अ्) ल् वज़्न बि (अ्) ल्
क़िस्ति व ला तुख़्सिरु(व् अ्) (अ्)ल् मीज़ानO

१० व (अ्) ल् अर्ज़ वज़अहा लिल् अनामिO^(म)

जो श्रद्धाहीन स्थिति में मरते हैं। ऐसे लोगों के लिए हमने एक भयानक दण्ड प्रस्तुत रखा है।

४ १७-१८

४१ अक्षमा का विषय

१ निस्सन्देह परमात्मा इस बात को क्षमा नही करेगा कि उसके साथ किसीको भागीदार किया जाय। इसके अतिरिक्त अन्य दोषों को वह क्षमा करेगा, जिसके लिए वह चाहे। और जो परमात्मा के साथ भागीदार ठहराये, उसने निश्चय ही महान दोप की बात की।

४ ४८

१० ईश्वरीय देनें

४२ आध्यात्मिक, नतिक तथा भौतिक देनें

१ कृपालु न
२ सिखाया कुरान।
३ निर्माण किया मनुष्य।
४ उसको बालना सिखाया।
५ सूय-चन्द्र नियम-परायण हैं।
६ तारे और वृक्ष प्रणिपात करते हैं।
७ आकाश को ऊँचा किया और तुला रखी
८ कि तौल में अतिक्रम न करो।
९ और न्याय से सीधी तौल तौलो और तौल में न्यूनता न करो।
१० भूमि बनायी प्रजा के लिए।

११ फी हा फाकिहतु (न्)[स्वाक्षा] व्व (अल्) न्नख़्लु जातु (अ) ल् अक्मामि०[सकी]

१२ व (अ्) ल् हूब्बु जु (व् अ्) ल् अस्फि व (अल्) र्रैहानु०[क]

१३ फ बि अय्यि आलाअि रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबानि०

५५ १–१३

43 १ अल्लाहु (अ्) ल्लज़ी ख़लक़ (अल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्द व अनज़ल मिन (अल्)-स्समाअि माअन् फ अख़्रज बिही मिन (अल्)-स्समराति रिज़्क (न्) ल्लकुम् [क] व सख़्ख़र लकुमु (अ) ल् फुल्क लि तज्रिय फि (अ्) ल् बह्रि बि अम्रिही [क] व सख़्ख़र लकुमु (अ्) ल् अन्हार०[ग]

२ व सख़्ख़र लकुमु (अल्) श्शम्स व (अ्) ल् कमर दाअिबैनि [च] व सख़्ख़र लकुमु (अल्)-ल्लैल व (अल्) न्नहार०[क]

३ व आताकुम् (म्) म्मिन् कुल्लि मा सअल्तुमूहु [योग] व इन् तअुद्दू (अ्) निअ्मत (अ्) ल्लाहि ला तुह्सूहा[योग]

१४ ३२–३४

११ उसमें फल हैं तथा आवरणाच्छादित फलोंवाली खजूरें हैं।
१२ और धान्य है भूसीवाला और सुवासित फूल।
१३ तो तुम दोनो अपने प्रभु के किन किन उपकारो और चमत्कृतियों को झुठलाओगे ?

५५ १-१३

४३ माँगा, सो सब दिया

१ ईश्वर वह है, जिसने आकाशों एव भूमि को उत्पन्न किया। आकाश से पानी उतारा, फिर उससे तुम्हारे लिए फल उगाये, जो तुम्हारा खाद्य है, नौकाओं को तुम्हारे अधिकार में कर दिया कि परमात्मा की आज्ञा से वे समुद्र में चलें और नदियों को तुम्हारी सेवा में लगाया।

२ और लगाया तुम्हारी सेवा में सूर्य और चन्द्र को, जो कि सतत चले जा रहे हैं। रात्रि को और दिन को भी तुम्हारी सेवा पर नियुक्त किया।

३ और वह सब तुम्हें दिया, जो तुमने माँगा। यदि तुम ईश्वर की देनों को गिनना चाहो, तो गिन नहीं सकते।

१४ ३२-३४

44 १ कुल् अरअैतुम् इन् जअल (अ्) ल्लाहु अलैकुमु-
(अ्) ल्लैल सर्‌मदन् (अ्) इला (य्) यौमि-
(अ्) ल् कियामवि मन् इलाहुन् ग़ैरु (अ्)-
ल्लाहि यअ्‌तीकुम् विज़ियाअिन् ^तोर^ अ फ ला
तस्मअून०

२ कुल् अरअैतुम् इन् जअल (अ्) ल्लाहु अलैकुमु-
(अल्) न्नहार सर्‌मदन् (अ्) इला (य्)
यौमि (अ्) ल् कियामवि मन् इलाहुन्
ग़ैरु (अ्) ल्लाहि यअ्‌तीकुम् वि लैलिन् तस्कुनून
फिहि ^तोर^ अ फ ला तुब्सिरून०

३ व मि (न्) र्‌रह्मतिहर्‌ जअल लकुमु (अ्)-
ल्लैल व (अल्) न्नहार लि तस्कुनू (अ्)
फीहि व लि तब्तग़ू (अ्) मिन फज़्लिहर्‌ व
लअल्लकुम् तश्कुरून०

२८ ७१-७३

45 १ फल् यन्‌जुरि (अ्) ल् इन्सानु इला (य्)
तआमिहर्‌०^ग^

२ अन्ना सबब्‌न (अ्) (अ्) ल् माअ सब्बन् (अ्)०^ग^

३ सुम्म शक़क़्‌न (अ्) (अ्) ल् अर्‌ज़ शक़्क़न् (अ्)०^ग^

४ फ अ (न्) म्बत्‌ना फीहा हब्ब (न् अ्)०^ग^

५ व्व अिनब (न् अ्) व्व क़ज़्ब (न् अ्)०^ग^

४४ द्वन्द्व निर्माण दया

१ कह देखो तो यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए रात्रि कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि तुम्हारे पास कहीं से दिन ले आये ? फिर क्या तुम सुनते नहीं ?

२ कह देखो तो, यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए दिन कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि जो तुम्हारे पास ऐसी रात्रि ले आय कि जिसमें तुम विश्राम पाओ ? फिर क्या तुम सोचते नहीं ?

३ और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए उसने रात दिन बनाये कि उसमें विश्राम करो और उसका कृपा-वैभव चाहो, जिससे कि तुम कृतज्ञ रहो ।

२८.७१–७३

४५ मनुष्य का अन्न

१ मनुष्य अपने अन्न की ओर देखे
२ कि हमने ऊपर से खूब पानी बरसाया,
३ फिर हमने विशेष प्रकार से जमीन चीरी,
४ उसमें अनाज उगाया
५ और अंगूर और सब्जियाँ

६ ॰व्व जैतून (न् अ्)॰व्व नख़ल (न् अ्)०[आ]
७ ॰व्व हदाअिक ग़ुल्ब (न् अ्)०[आ]
८ ॰व्व फाकिहतन् (अ्) ॰ व्व अब्ब(न् अ्)०[आ]
९ म्मताअ (न् अ्) ल्लकुम् व लि अन्आमि-
कुम्०[नाम]

८० २४–३२

46 १ व इन्न लकुम् फि (य्) (अ्) ल् अन्आमि ल
अिबरतन् [गाय] नुम्क़ीकु (म्) म्मिम्मा फी
बुतूनिहर्आ मि(न्)म् बैनि फर्सि (न्) ॰ व्व
दमि (न) ल्लबनन् (अ) ख़ालिसन् (अ्)
साअिग़ा (न् अ्) ल्लि (ल्) श्शारिबीन०
२ व मिन् समराति (अ् ल्) न्नख़ीलि व (अ)-
ल् अअ्नाबि तत्तख़िजून मिन्हु सकर-
(न्अ्) ॰ व्व रिज़्क़न् (अ्) हसनन् [वाय] इन्न फी
जालिक ल आयत (न्) ल्लि कौमि (न्)॰
य्यअ्क़िलून० ,

६ और जतून और खजूरें

७ और घने बाग

८ और फल तथा चारा उगाया

९ तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिए।

८० २४–३२

४६ दूध, द्राक्ष, मधु

१ निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में भी शिक्षण है—उनके पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से शुद्ध दूध, जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है, हम तुम्हें पिलाते हैं—

२ और खजूर और द्राक्ष के फलों में भी। जिससे तुम लोग मद्य और उत्तम खाद्य बनाते हो। इनमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो समझ रखते हैं।

३ व औह्वा (य्) रब्बुक इल (य्) (अ् ल्) नहलि अनि (अ्)त्तख़िज़ी मिन (अ्) ल् जिबालि बुयूत (न्) ँ व्व मिन (अल्) श्शजरि व मिम्मा यअ्रिशून० ५

४ सुम्म कुली मिन् कुल्लि (अ्ल्) स्समराति फ (अ्)स्लुकी सुबुल रब्बिकि जुलुलन् (अ्)५ यख़्रुज् मि (न्) म् बुतूनिहा शराबु (न्)-म् मुख़्तलिफुन् अल्वानुहू फीहि शिफ़ाअु(न्)-ल्लि(ल्)न्नासि५ इन्न फी ज़ालिक लआयात-(न्) ल्लि कौमि (न्) ँ य्यतफक्करून०

१६ ६८-६९

47 १ युअ्ति (अ्) ल् हिक्मत म(न्) ँ य्यशाअु व म (न) ँ य्युअ्त (अ्) ल् हिक्मत फ क़द् ऊतिय ख़ैरन् कसीरन् ५ व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उ(व्)लु (व् अ्) (अ्)ल् अल्बाबि०

२ २६९

३ तेरे प्रभु ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाली कि पर्वतों में, वृक्षों में और जहाँ ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बाँधते हैं, उन स्थानों में घर बना ले।

४ फिर सब फलो म से खा और अपने प्रभु के सुलभ किये हुए मार्गों पर चलती रह। उनके पट से रगविरगा पेय निकलता है, जिसमे लोगों के लिए आरोग्य-लाभ है। निस्सन्देह इसमें सकेत है उन लोगा के लिए, जो सोचते ह।

१६ ६६-६९

४७ बुद्धि सर्वोत्तम देन

१ वह जिसे चाहता ह, बुद्धि देता है और जिस बुद्धि दी गयी, महत्तम कल्याण दिया गया और बुद्धिमान् सदुपदेश मानते ह।

२ २६९

48 १ अम् मन् खलक (अ्ल्) स्समावाति व-(अ्)ल् अर्द्र व अन्जल लकु(म्) म्मिन (अ्ल्)-स्समाअि माअन्[य] फ अ(न्)म्वत्ना बिहर्ते ह्रुदाअिक जात बह्जविन्[य] मा कान लकुम् अन्तु(न्) म्बित्‌ (अ्) शजरहा [गोव] अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि [गोव] वल हुम् क़ौमु(न्)˚ य्यअ्दिलून ०[गोव]

२ अम् मन् जअ्ल(अ्)ल् अर्द्र करार (न्अ)˚व्व जअल खिलालहा अन्हार (न् अ्) ˚ व्व जअल लहा रवासिय व जअल बैन (अ्) ल् बहरैनि ह्राजिजन् [गोव]अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि [गोव] वल् अकसरु हुम ला यअ्लमून ०[गोव]

३ अम् म(न)˚य्युजीब् (अ्) ल् मुद्रतर्र इजा दआहु व यक्शिफु (अ्ल्) स्सू'अ व यजअ्लुकुम् खुलफ़ाअ (अ्)ल् अर्द्रि [गोव] अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि [गोव] क़लील (न्) म्मा तजक्करून ०[गोव]

६ कर्ता

११ सृष्टिकर्ता

४८ कोम पंचक

१ भला किसने निर्माण किया आकाशो को और भूमि को और तुम्हारे लिए पानी उतारा फिर उससे सुन्दर बाग उगाये तथा उनमें वृक्ष उगाये। इन वृक्षों को उगाने की सामथ्य तुममें नहीं थी। क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोइ और नियन्ता है ? कोई नहीं। पर, ये ऐसे लोग हैं कि मुंह मोड़ लेते ह।

२ अथवा किसने भूमि को स्थल बनाया और उसके बीच में नदियाँ बनायी। और उसके लिए पवत बनाये और दो समुद्रो के बीच सीमा रेखा रखी। क्या है इश्वर के अतिरिक्त कोइ अन्य नियन्ता ? कोइ नहीं, पर इनमें अधिकतर लोग समझते नहीं।

३ भला कौन सुनता है आर्त की, जब वह उसे पुकारता है तथा सकट दूर कर देता है और तुम्हें भूमि पर विश्वस्त बनाता है ? क्या ईश्वर के साथ कोइ अन्य नियन्ता ह ? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो।

४ अम् म(न्)ऽय्यहदीकुम् फी जुलुमाति (अ्) ल् बर्रि व (अ्) ल् बह्रि व म (न्) ऽय्युर्सिलु (अ् ल्) र्रियाहु बुशर (न्) म् बैन यदय् रह्मतिही^गोल^ अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि^गोल^ तआल (य् अ्) ल्लाहु अम्मा युश्रिकून ०^गोल^

५ अम् म(न्)ऽय्यब्द (व्) अु (अ्) (अ्) ल् खल्क सुम्म युओदुहू व म (न्) ऽय्यर्जुकुकु(म्)-म्मिन (अ् ल्) स्समाअि व (अ्) ल् अर्ज़ि^गोल^ अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि^गोल^ क़ुल् हातू (अ्) बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् स्वादिक़ीन०

२७ ६० १४

49 १ अल् हम्दु लिल्लाहि फातिरि (अल) स्समावाति व (अ्) ल् अर्ज़ि जाअिलि (अ्) ल् मलाअिकति रुसुलन् (अ्) उ (व्) ली अज्-निहति (न्) म्मस्ना (य्) व सुलास व रुबाअ^गोल^ यजीदु फ़ि (य् अ्) ल् खलक़ि मा यशाअु^गोल^ इन्न (अ्) ल्लाह अला (य्) कुल्लि शय्अिन् कदीरुन् ० ३५ १

50 १ इन्न (अ्) ल्लाह फालिकु (अ्) ल् हब्बि व (ल्) न्नवा (य्)^गोल^ युख्रिजु (अ्) ल् हय्य मिन (अ्) ल् मय्यिति व मुख्रिजु (अ्) ल् मय्यिति मिन (अ्) ल् हय्यि^गोल^ जालिकुमु-(अ्) ल्लाहु फ़ अन्ना (य्) तु (व्) अफ़कून ०

४ अथवा कौन है, जो तुम्हें भूमि एवं सागर के अंधकार में मार्ग दिखलाता है, और कौन भेजता है वायु को अपनी कृपा के आगे, मांगल्यवाहक बनाकर, क्या कोई और नियन्ता है ईश्वर के अतिरिक्त ? ईश्वर उच्च तथा श्रेष्ठ है उस चीज से, जिसे वे भागीदार ठहराते हैं।

५ भला कौन पहली बार पैदा करता है फिर दोबारा करेगा, और कौन तुम्हें आकाश से और भूमि से जीविका देता है ? क्या है और कोई नियन्ता ईश्वर के अतिरिक्त ? कह यदि तुम सच्चे हो, तो प्रमाण ले आओ।

२७ ६०-६४

४९ देवदूत निर्माता

१ स्तुति सब ईश्वर के ही लिए है, जो आकाशों तथा भूमि का उत्पन्न करनेवाला एवं देवदूतों को सन्देश-वाहक बनानेवाला है, जो दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर्खोवाले हैं। उत्पत्ति में वह जो चाहता है, सो बढ़ा देता है। निस्सन्देह ईश्वर सब-कर्म-समर्थ है।

३५ १

५० विकास-कर्ता

१ निस्सन्देह ईश्वर धान्य-बीज और गुठली का भेदन (कर उसे अंकुरित) करता है, जीवित को मृत से निकालता है। वह मृत को जीवित से निकालनेवाला है। यह है ईश्वर ! फिर तुम किधर बहके जा रहे हो ?

२ फालिकु(अ्)ल् इस्बाहि व जअल (अ्)-
ल्लैल सकन (न्)व्व (अ् ल्) श्शम्स व
(अ्) ल् कमर हुस्बानन् (अ्) ज़ालिक
तक्दीरु (अ्) ल अज़ीज़ि(अ्)ल अलीमि ०
३ व हुव(अ्)ल्लज़ी जअल लकुमु (अल्)-
न्नुजूम लि तह्तदू(अ्) बिहा फी ज़ुलुमाति-
(अ्) ल बर्रि व (अ्) ल् बह्रि क़द्
फस्सल्न(अ् अ्) ल् आयाति लि क़ौमि(न्)-
य्यअ्लमून ०
४ व हुव (अ्) ल्लज़ी अनशअकुम्मि (न्)-
न्नफ्सि (न्) व्वाहिदविन् फ मुस्तकर्रू (न्) व
मुस्तौदअुन् क़द् फ़स्सल्न (अ्) ल् आयाति लि
क़ौमि (न्) य्यफ्क़हून०
५ व हुव(अ)ल्लज़ी अन्ज़ल मिन (अल्)-
स्समाअि माअन् फ अख्रजना बिही नबात
कुल्लि शय्अिन् फ अख्रजना मिन्हु
ख़ज़िर (न् अ्) न्नुख्रिजु मिन्हु हुब्ब (न्)-
म्मुतराकिबन् (अ्) व मिन (अल्)-
न्नख्लि मिन् तल्अिहा क़िन्वानुन् दानियतु-
(न्) व्व जन्नाति (न्) म्मिन् अअ्नाबि(न्) व्व
(अल्) ज़्ज़ैतून व (अल्) र्रुम्मान मुश्तबिह (न्)-

२ वह उषा की किरणो को प्रस्फुटित करता है। उसीने रात बनायी है विश्राम के लिए और सूर्य चन्द्र गणित के लिए। सर्वजित् सर्वेश का यह माप है।

३ और वही है, जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये, जिससे तुम उनके द्वारा भूमि एवं सागर के अन्धकार में मार्ग प्राप्त करो। निस्सन्देह हमने बुद्धिमानों के लिए विस्तार के साथ संकेतो का वर्णन किया है।

४ और वही है, जिसने तुम सबको एक जीव से निर्माण किया, फिर एक ठहरने का स्थान है और एक सौंपने का स्थान है। निश्चय ही हमने उन लोगों के लिए, जो सोचते हैं संकेतों का स्पष्ट रूप से विवेचन किया है।

५ और वही है, जिसने आकाश से पानी उतारा और फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार की वनस्पति उत्पन्न की। फिर उससे हरे कोंपल उगाये, जिससे हम ऊपर-नीचे चढ़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से फलों के गुच्छे, जो झुके होते हैं और द्राक्ष के उद्यान और जैतून और अनार, जो परस्पर मिलते-जुलते

ख्व गैर मुतशाबिहिन् गाय उन्जुरू (अ) इला (य्) समरिही इजा असमर व यन्त्रिही गोय इन्न फी जालिकुम् ल आयाति ल्लि कौमि-(न्) य्यु (व्) अमिनून०

६ ९५ ९९

51 १ कुल् अ अिन्नकुम् ल तक्फुरून बि (अ) ल्लजी खल्क (अ) ल् अर्द्र फी यौमैनि व तज्अलून लहु अन्दादन् गोय जालिक रब्बु (अ) ल् आलमीन०म

२ व जअल फीहा रवासिय मिन् फौकिहा व बारक फीहा व कद्दर फीहा अक्वातहा फी अर्बअति अय्यामिन् गोय सवाअ (न) ल्लि-(ल्) स्साअिलीन०

३ सुम्म (अ) स्तवा (य) इल (य अ् ल्) स्समाअि व हिय दुखानुन् फ काल लहा व लिल् अर्द्रि (अ) अ्तिया तौअन् (अ) औ करहन्-(अ) गाय कालता अतैना ताअिअीन०

४ फ कद्राहुन्न सबअ समावातिन् फी यौमनि व औहा (य्) फी कुल्लि समाअिन् अम्रहा गाय व जय्यन्ना (अ्) (अल्) स्समाअ (अल्)-दुन्या बि मसाबीह् वस्ली व हिफ्जन् (अ्) जालिक तक्दीरु (अ्) ऱ् अजीजि (अ्) ल् अलीमि०　　४१ ९-१२

और अलग भी है, उत्पन्न किये। उसके फल की ओर देखो जब वह फलता है और उसके पकने को देखो, निस्सन्देह इसमें संकेत हैं उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं।

६ ९५–९९

५१ सृजन का समय-पत्रक

१ कह क्या तुम उस ईश्वर का इनकार करते हो, जिसने दो दिन में भूमि निर्माण की और किसीको उसके समकक्ष बनाते हो? यह है सारे विश्व का प्रभु।

२ और उसीने भूमि के ऊपर पर्वत रखे और भूमि में विपुलता रखी। उसने चार दिन में उसके उत्पादन की योजना निश्चित की, जिसमें कि माँगनेवालों को पूरा-पूरा मिले।

३ फिर आकाश की ओर ध्यान दिया और वह आकाश धुआँ था। फिर उससे और भूमि से कहा तुम दोनों आओ, प्रसन्नतापूर्वक या खिन्न होकर। दोनों बोले हम आये प्रसन्नता से।

४ सो दो दिन में उन्हें सात आकाश बना दिये और प्रत्येक आकाश में उसकी आज्ञा उतारी और निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और सुरक्षित कर दिया। यह उस सर्वजित् सर्वज्ञ की योजना है।

४१ ९–१२

52. १ अ फ रऐतु(म्) म्मा तहूरुसून०
२ अ अन्तुम् तज़रअूनहू अम् नहूनु ज़्ज़ारिअून०
३ लौ नशा़अु ल जअल्नाहु हुतामन् फज़ल्तुम् तफ़क्कहून ०
४ इन्ना ल मुग्रमून ०
५ बल् नहूनु महूरूमून ०
६ अफ रअतुमु (अ्)ल् माअ (अ्) ल्लज़ी तश्रबून०
७ अ अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिन (अ्) ल् मुज़्नि अम् नहूनु (अ्) ल् मुन्ज़िलून ०
८ लौ नशाअु जअल्नाहु उजाजन् फ़ लौ ला तश्कुरून ०
९ अ फ रऐतुमु (अल्) न्नार (अ्) ल्लती तूरून०^शेष^
१० अ अन्तुम् अन्शअ्तुम् शजरतहा अम् नहूनु (अ्) ल् मुन्शिअून ०
११ नहूनु जअल्नाहा तज़्किरत (न्) ँव मताअ (न्) ल्लिल् मुक्वीन ०
१२ फ सब्बिहू बि (अ्) स्मि रब्बिक (अ्) ल् अज़ीमि ०^शेष^

५२ तेजोवन्न निर्माता

१ तो क्या तुमने सोचा उस पर, जो तुम बोते हो ?
२ क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगानेवाले ?
३ यदि हम चाहते, तो उसको चूर-चूर कर देते, फिर तुम बातें बनाते रह जाते

४ कि हम पर तो दण्ड पड़ा
५ अपितु हम वंचित कर दिये गये !
६ क्या तुमने विचार किया जल पर, जिसे तुम पीते हो ?
७ उसे मेघ से हमने उतारा या तुम हो उतारनेवाले ?
८ यदि हम चाहते तो उसे खारा कर देते, फिर तुम क्यों नही कृतज्ञ होते ?

९ क्या तुमने विचार किया अग्नि पर, जिसे तुम सुलगाते हो ?
१० क्या उसके लिए वृक्ष तुमने उत्पन्न किया या हम हैं उत्पन्न करनेवाले ?

११ हमने ही बनाया उस वृक्ष को, उपदेश और प्रवासियों के लाभ के लिए।

१२ सो तू अपने परम प्रभु के नाम का जप कर, जयजयकार कर।

५६ ६३-७४

53 १ अव लम् यरौ इल (य्) (अल्) तैरि फौक़हुम् साफ़्फ़ाति (न्) व्व यक़बिद्नगोर मा युम्सिकुहुन्न इल्ल (अ्) (अल्) र्रहूमानुगोर इन्नहू वि कुल्लि शयअि (न्) म्बसीरुन् O

१७ १९

54 १ तवारक (अ्) ल्लजी बि यदिहि (अ्) ल् मुल्कुम व हुव अला (य्) कुल्लि शयअिन् कदीरु नि O

२ (अ्) ल्लजी खलक (अ्) ल् मौत व (अ्) ल् हया (व्) त लि यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अमलन् (अ्) गोर व हुव (अ्) ल् अजीजुल गफ़ूरु O

३ (अ्) ल्लजी खलक सव्अ समावातिन् तिबाकन्- (अ्) तोर मा तरा (य्) फ़ी खल्क़ि (अल्)- र्रहूमानि मिन् तफ़ावुतिन् गोर फ (अ्) र्जिअि- (अ्) ल् वसर म हल तरा (य्) मिन् फ़ुतूरिन् O

४ सुम्म (अ्) र्जिअि (अ्) ल् वसर कर्रतैनि यन्कलिय् इलैक (अ्) ल् वसरु खासिअ (न् अ्) व्व हुव हसीरुन् O

६७ १ ४

५३ विश्वाधार [पक्षी का दृष्टान्त]

१ क्या उन लोगों ने अपने ऊपर पक्षियो को नहीं देखा पख फैलाते हुए और कभी समेट लेते हुए ? उनको कोइ नहीं थाम रखता, अतिरिक्त कृपालु के। निस्सन्देह वह प्रत्येक वस्तु का द्रष्टा है।

६७ १९

१२ ईश्वर की सुन्दर रचना

५४ व्यवस्थित रचना

१ मगलप्रद है वह, जिसके हाथ में अधिसत्ता है और वह सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ जिसने मृत्यु एव जीवन का निर्माण किया कि तुम्हारी परीक्षा करे कि कृति में कौन तुममें से अधिक अच्छा है। वह सर्वजित् एव क्षमावान् है।

३ जिसने तह पर तह सात आकाश बनाये। तू कृपालु की रचना में कोई न्यूनता नही देखेगा। फिर दोबारा दृष्टि डाल, तुझे नहीं दरार दीखती है ?

४ फिर बार-बार दृष्टि डाल, तेरी दृष्टि लौट आयेगी, खिसियानी-सी होकर और थकी हुइ।

६७ १-४

55 १ अ लम् नज्अलि (अ्)ल् अर्ज़ मिहाद-(न् अ्) O[ला]

२ व (अ्)ल् जिबाल औताद(न् अ्) O[साद्म]

३ व खलक्नाकुम् अज़्वाज (न अ्) O[ला]

४ व जअल्ना नौमकुम् सुबात (न् अ्) O[श्र]

५ व जअल्न(अ्म्)ल्लैल लिबास(न् अ्) O[श्र]

६ व जअल्न (अ्) (अ्ल्) नहार मआशन्(अ्) O[साद]

७८ ६–११

56 १ अ फ ला यन्ज़ुरून इल(य्) (अ्)ल् इबिलि कैफ़ ख्लिकत् O[सद्य]

२ व इल (य्) (अ्ल्) स्समाअि कैफ रुफिअत् O[सद्य]

३ व इल (य्) (अ्)ल् जिबालि कैफ़ नुस्बित् O[सद्य]

४ व इल (य्) (अ्)ल् अर्ज़ि कैफ सुत्हित् O[सद्य]

८८ १७–२०

57 १ इन्ना ज़य्यन्ना (अ्ल्) स्समाअ (अ्ल्)दुनया बि ज़ीनति(न्) नि (अ्) ल् कवाकिबि O[ला]

२ व हिफ्ज़ (न्) मिन् कुल्लि शैतानि (न्)-म्मारिदिन् O[श]

५५ प्रभुनिर्मित सुन्दर जगत्

१ क्या हमने भूमि को बिछौना नहीं बनाया
२ और पर्वतों को मेखें।
३ और हमने तुम्हें युगल-युगल उत्पन्न किया।
४ और हमने तुम्हारी निद्रा को विश्राम का साधन बनाया।
५ और रात्रि की यवनिका बनायी।
६ और दिन उपार्जन के लिए बनाया।

७८.६-११

५६ ऊँट आदि सृष्टि-चमत्कार

१ क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि वे कैसे बनाये गये!
२ और आकाश की ओर कि वह कैसे ऊँचा किया गया
३ और पर्वत की ओर कि वे कसे गाड़े गये!
४ और भूमि की ओर कि वह कैसे बिछायी गयी!

८८.१७-२०

५७ गूढ़ में मस्तिष्क न लड़ाओ

१ हमने निकटतम आकाश को तारिकाओं से विभूषित किया
२ और उसे प्रत्येक विद्रोही शैतान से सुरक्षित किया।

३ ला यम्मम्मअ़ून इल (अ्)ल् मलइ (अ्)ल् अअ़्ला (य्) व युक्ज़फ़ून मिन् कुल्लि जानिबिन् O

४ दुहूरन् (अ्) व्व लहुम् अ़ज़ाबु (न्अ्)-व्वासिबुन् O

५ इल्ला मन् ख़तिफ (अ्)ल ख़त्फत फ़ अत्बअ़हु शिहाबुन् साक़िबुन् O

३७.६—१०

58 १ व फि(अ्)ल् अर्द्रि क़ितअ़ु(न्)म्मुत जावि-रातु(न) व्व जन्नातु(न्)म्मिन अअ़्नावि(न्) व्व ज़र्अ़ु(न्) व्व नख़ीलुन सिन्वानु(न्) व्व ग़ैरु सिन्वानि(न्) य्युस्क़ा(य्) बि माअि(न्)-व्वाहिदिन् व्व नुफ़द्दिलु वअ़्ज़हा अला(य्) वअ़्दिन् फ़ि(य्) (अ)ल अकुलि इन्न फी ज़ालिक ल आयाति (न्)ल्लि क़ौमि(न) य्यअ़्क़िलून O

१३ ४

59 १ व मिन् आयातिही अन् ख़लक़ कु(म्)म्मिन् तुराबिन् सुम्म इज़ा अन्तुम् बशरुन् तन्तशिरून O

३ वे उस उच्च सभा की ओर कान नहीं लगा सकते, और उन्हें खदेड़ने के लिए सभी ओर से उन पर अंगारे फेंके जाते हैं।

४ और उनके लिए नित्य दण्ड है।

५ किन्तु जो झप से उचक ले, उसके पीछे, एक वेधक ज्वाला लगती है।

३७ ६–१०

१३ ईश्वरीय संकेत

५८ एक जल से विविध फल

१ भूमि में पास-पास कई खण्ड हैं द्राक्ष के उद्यान हैं, कृषि है तथा खजूर के वृक्ष हैं जिनमें एक की जड़ दूसरे से मिली हुई है, और कुछ बिनमिली अकेली ही हैं। एक ही पानी सबको दिया जाता है। और हम फलों में किसीको किसीसे बढ़ा देते हैं। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो बुद्धि रखते हैं।

१३ ४

५९ ईश्वरीय चिह्न

१ उसके चिह्नों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर अब तुम मनुष्य हो कि भूमि पर सब ओर फैल पड़े हो।

२ व मिन् आयातिहर्ते अन् खलक़ लकु(म्) म्मिन् अन्फुसिकुम् अज़्वाज (न् अ्) ल्लि तस्कुनू-(अ्) इलैहा व जअल बैन कु(म्) म्मवद्दव (न्) व्व रह्मतन् ग़ैर इन्न फी जालिक ल आयाति (न्) ल्लि क़ौमी (न्) यतफक्करून O

३ व मिन् आयातिहर्ते ख़लक़ु (अ्ल) स्समायाति व (अ्) ल् अर्द्रि व (अ्) ख़्तिलाफ़ु अल्सिनतिकुम् व अल्वानिकुम् ग़ैर इन्न फी जालिक ल आयाति (न्) लिलल् आलिमीन O

४ व मिन आयातिहर्ते मनामुकुम् बि (अ्) ल्लैलि व (अ्ल्) न्नहारि व (अ) ब्तिग़ा (व) उ कु (म्) म्मिन् फद्रलिहर्ते ग़ैर इन्न फी जालिक ल आयाति (न्) ल्लि क़ौमि (न्) य्यसमऊन O

५ व मिन् आयातिहर्ते युरीकुमु (अ) ल् बर्क़ ख़ौफ (न्) व्व तमअ (न्अ्) व्व युनज़्ज़िलु मिन-(अ् ल्) स्समाअि माअन् फ युह्यर्ते बिहि (अ्) ल् अर्द्र बअ्द मौतिहा ग़ैर इन्न फी जालिक ल आयाति (न्) ल्लि क़ौमि (न्) य्यअ्किलून O

६ व मिन् आयातिहर्ते अन् तक़ूम (अ्ल्) स्समाअु व (अ्) ल् अर्दु बि अम्रिहर्ते ग़ैर सुम्म इज़ा दआकुम् दअ्वत (न्) म्मिन (अ) ल् अर्द्रि ग़ैर इजा अन्तुम् तख़्रुजून O

२ और उसके चिह्नो में से यह है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति में से युगल बनाये कि उनके पास तुम्हें विश्राम मिले। और तुम्हारे बीच प्रीति और करुणा निर्माण की। निस्सन्देह इसमें चिन्तन करनेवालों के लिए सकेत हैं।

३ और उसके चिह्नों में से है आकाश और भूमि की रचना और तुम्हारी बोलियो और तुम्हारे रगो का भिन्न भिन्न होना। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए सकेत हैं।

४ और उसके चिह्नों में से है तुम्हारा रात में और दिन में सोना और तुम्हारा उसके कृपा-वभव को ढूंढना। निस्सन्देह इसमें सकेत हैं उनके लिए, जो सुनते है।

५ और उसके चिह्नों में से यह है कि यह तुमको बिजली दिखलाता है, (जिससे) डर भी (होता है) और आशा भी। वह आकाश से पानी उतारता है, फिर उस पानी से भूमि को उसके मरने के पश्चात् जीवित करता है। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानो के लिए सकेत है।

६ और उसके चिह्नों में से यह है कि उसकी आज्ञा से भूमि एव आकाश स्थिर है। फिर वह जब तुम्हें पुकारकर जमीन में से बुलायेगा, तो तुम उसी समय निकल पडोगे।

३० २०–२५

62 १ कु(ल्)लिल मनि(अ्)ल् अरद्ध व मन् फ़ी-
हा इन् कुन्तुम् तअ्लमून ०

२ सयकूलून लिल्लाहि^{ताम} कुल् अ फ ला
तजक्करून ०

३ कुल् म(न)र्रब्बु (अल्) स्समावाति (अल्)-
स्सब्अि व रब्बु(अ्)ल् अर्शि(अ्) ल् अज़ीमि०

४ सयकूलून लिल्लाहि^{ताम} कुल् अ फ ला तत्तकून

५ कुल् म(न्)म् बि यदिहीं मलकूतु कुल्लि शय्अि-
(न्) व्व हुव युजीरु व ला युजारु अलैहि
इन कुन्तुम् तअ्लमून ०

६ सयकूलून लिल्लाहि^{ताम} कुल् फ अन्ना (य्)
तुस्हरून ०

२३ ८४-८९

63 १ व मा कदरु (व्) (अ् अ्) ल्लाह हक्क
क़द्रिहीं^{जमाअन्} व(अ्)ल् अर्ड़ु जमीअन्(अ्)
[illegible]

७ सर्वशक्ति

१४ सर्वशक्तिमान्

६२ सर्वाधिपति

१ कह किसने रची है भूमि और जो-जो उसमें ह, यदि तुम जानते हो ?

२ वे अवश्य कहेंगे कि इश्वर ने, तो कह फिर तुम सोचते नहीं ?

३ कह कौन है सातों आकाशो का प्रभु और महान् सिंहासन का स्वामी ?

४ वे अवश्य कहेंगे सब इश्वर का है। कह फिर तुम क्यो नहीं डरते ?

५ कह किसके हाथो में प्रत्येक वस्तु की अधिसत्ता है, और कौन सरक्षण देता है और किसके विरोध में सरक्षण नही दिया जा सकता, यदि तुम जानते हो ?

६ वे अवश्य कहेंगे कि यह सब ईश्वर का है, तो कह फिर तुम पर क्या जादू आ पड़ता है ?

२३.८४–८९

६३ प्रलयकारी

१ और वे नहीं समझते इश्वर को जितना कि वह है। पुनरुत्थान के दिन सारी भूमि उसकी एक मुट्ठी में होगी

स्समावातु मव्वीयातु (न्) म्बि यमीनिहर्ती[गैर]
सुब्हानहु व तआला (य्) अम्मा युश्रिकन O

३९.६७

64 १ सब्बिहि (अ्) स्म रब्बिक (अ्) ल् अअ्ल (य्) O[गा]
२ (अ्) ल्लजी खलक फ सव्वा (य्) O[स्वाबरा]
३ व (अ्) ल्लजी क़द्दर फ हदा (य्) O[स्वाबरा]
४ व (अ्) ल्लजी अख्रज (अ्) ल् मर्आ (य्) O[स्वाबरा]
५ फ जअलहु ग़ुसाअन् अह्वा (य्) O[गैर]

८७.१-५

65 १ अव लम् यर (अ्) ल् इन्सानु अन्ना ख्लक्नाहु मि (न्) न्नुत्फविन् फ इजा हुव खसीमु (न्) म्मुबीनुन O
२ व ज़रब लना मसल (न्) व्व नसिय खल्कहु[गैर] काल म (न्) य्युह्यि (अ्) ल् अिजाम व हिय रमीमुन् O
३ कुल् युह्यीह (अ् अ्) ल्लजी अन्शअहा अव्वल मर्रतिन्[गैर] व हुव बि कुल्लि खल्किन् अलीमुनि O[ला]
४ (अ्) ल्लजी जअल ल कु (म्) म्मिन (अ्ल्) श्शजरि (अ्) ल् अख्ज़रि नारन् (अ्) फ इजा अन्तु (म्) म्मिन्हु तूक़िदून O

और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटा होगा। वह पवित्र, निराला है एव सर्वोच्च है उससे, जिसे वे भागीदार ठहराते ह।

३९.६७

६४ तज्जलान्

१ श्रेष्ठतम प्रभु क नाम का जप कर जयजयकार कर।
२ जिसने रचा फिर सँवारा।
३ जिसने परिमाण बनाया फिर माग दिखलाया
४ तथा जिसने चारा उगाया
५ और फिर उसे काला कूड़ा कर डाला।

८७ १–५

६५ पुनरुत्थान-समय

१ मनुष्य ने सोचा नहीं कि हमने उसे एक बीज विन्दु से निर्माण किया सो एकाएक वह स्पष्ट झगड़ालू हा गया
२ और हमारे विषय में अदभुत बातें बोलने लगा और अपनी उत्पत्ति भूल गया। कहता है कि कौन जीवित करेगा हड्डियो को, जो गल गयी हो ?
३ कह उनको वह जीवित करगा जिसने उन्ह पहली बार उत्पन्न किया और वह सब प्रकार उत्पन्न करना जानता है।
४ जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से अग्नि का निर्माण किया, फिर अब तुम उससे आग सुलगाते हो ?

५ अव लैस (अ्) ल्लजी खलक (अल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्द्र वि कादिरिन् अलो (य्) अ (न्) य्यख्लुक मिस्लहुम् बेला (य्) व हुव (अ्) ल् खल्लाकु (अ्) ल् अलीमु O
६ इन्न मा अम्रुहु इजा अराद शय्अन् अ (न्)-य्यकूल लहू कुन् फ यकूनु O
७ फ सुब्हान (अ्) ल्लजी बियदिही मलकूतु कुल्लि शय्अि (न्) व्व इलैहि तुर्जअून O

३६ ७७–८३

66\. १ लिल्ला हि मुल्कु (अल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्द्रि यख्लुकु मा यशाअु यहबु लिम-(न्) य्यशाअु इनास (न्) (अ्) व्व यहबु लिम-(न्) य्यशाअु (अल्) जुजूकूर O
२ औ युजव्विजुहुम् जुक्रान (न्अ्) व्व इनासन् व यज्अलु म (न्) य्यशाअु अकीमन् इन्नहु अलीमुन् क़दीरुन् O

४२ ४९–५०

67 १ कुलि (अल्) ल्लाहुम्म मालिक (अ्) ल् मुल्कि तु (अ्) अति (य्) (अ्) ल् मुल्क मन् तशाअु व तन्जिअु (अ्) ल् मुल्क मिम्मन् तशाअु व तुअिज्जु मन् तशाअु व तुजिल्लु मन् तशाअु वि यदिक (अ्) ल् खैरु इन्नक अला (य्) कुल्लि शय्अिन् क़दीरुन् O

३ २६

५ क्या वह, जिसने आकाशो एव भूमि का निर्माण किया, इस वात में सक्षम नही कि उन जैसा को उत्पन्न करे ? क्यों नहीं ? और वही है सृष्टिकर्ता सवज्ञ ।

६ उसकी आज्ञा यही है कि जव किसी वस्तु का सकल्प करता है, तो उससे कहता है 'हो जाओ', सो वह हो जाती है ।

७ तो पावन है वह जिसके हाथ में सव वस्तु की अधिसत्ता है और उसकी ओर तुम सवको लौटकर जाना है ।

३६ ७७-८३

१५ इच्छा-समर्थ—ईश्वरीय इच्छा सार्वभौम

६६ कन्या-पुत्रदाता

१ ईश्वर की अधिसत्ता है, आकाशो में और भूमि में । जो चाहता है सो उत्पन्न करता है, जिसे चाहता है पुत्री देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है ।

२ या दोनों देता है पुत्र और पुत्रियाँ, और जिसे चाहता है, निस्सन्तान रख देता है । निस्सन्देह वह ज्ञाता है, समर्थ है ।

४२ ४९-५०

६७ 'कल्याण तेरे हाथ'—ईश-स्तवन

१ कह हे ईश्वर ! अधिसत्ता के स्वामी, तू जिसे चाहे सत्ता दे और जिससे चाहे सत्ता छीन ले और जिसे चाहे प्रतिष्ठा दे और जिसे चाहे अप्रतिष्ठा दे । सव कल्याण तेरे हाथ में है । निस्सन्देह तू सर्व-कर्म-समर्थ है ।

68 १ व रब्बुक यख़्लुक़ु मा यशा'अु व यख़्तारु ^गौर^ मा कान लहुमु(अ्)ल् ख़ियरतु ^गाम^ सुब्हान(अ्)-ल्लाहि व तआला(यु)अम्मा युश्रिकून ०
२८-६८

69 १ क़ुल् इन्न(अ्)ल् फ़ज़्ल बि यदि(अ्)ल्लाहि-यु(त्)अतीहि म(न्)य्यशा'अु ^गाम^ व (अ्)-ल्लाहु वासिअुन् अलीमुन् ०२

२ यख़्तस्सु बिरह्मतिही म(न्)य्यशा'अु व (अ्)ल्लाहु ज़ु(ल्)(अ्)ल् फ़ज़्लि(अ्)ल् अज़ीमि ०
३।७३-७४

70 १ व मा कान लि नफ़्सिन् अन् तु(अ्)मिन इल्ला बि इज़्नि(अ्)ल्लाहि ^गौर^ व यज्अलु-(अ्)र्रिज्स अल(य्)(अ्)ल्लज़ीन ला यअ्क़िलून ०
१०।१००

71 १ फ़ म(न्)य्युरिदि (अ्)ल्लाहु अ(न्)-य्यह्दियहु यश्रह् सद्रहु लिल् इस्लामि^न^ व म(न्)य्युरिद् अ(न्)य्युज़िल्लहु यज्अल् सद्रहु ज़य्यिक़न् (अ्)हरजन् (अ्)क अन्न मा यस्सअ्अदु फ़ि(अ्ल्)स्समाअि ^गौर^ क ज़ालिक यज्अलु(अ्)ल्लाहु (अ्)र्रिज्स अल(य्)-ल्लज़ीन ला यु(अ्)मिनून ०
६।१२५

६८ इश्वरभिन्न जीव-स्वातन्त्र्य नहीं

१ तेरा प्रभु जिसे चाहता है उत्पन्न करता है और चुन लेता है। उन (जीवों) को लेशमात्र अधिकार नहीं। इश्वर पवित्र है तथा उन (लोगो) की वि भक्ति से ऊंचा है।

२८६८

६९ यमेव एष वृणुते तेन लभ्य

१ वह वैभव निश्चय ही इश्वर के हाथ में है, जिसे चाहे दे। इश्वर सवव्यापक है, सवज्ञ ह।

२ जिस चाहता ह, अपनी कृपा के लिए चुन लेता है। इश्वर महान् वैभवशाली है।

३ ७३-७४

७० इश्वर की अनुज्ञा बिना श्रद्धा नहीं

१ किसी व्यक्ति के लिए सभव नहीं कि इश्वर की अनुज्ञा के बिना श्रद्धा रखे और वह (अश्रद्धा का) अशुचित्व देता ह उन लोगों को, जो वुद्धि से काम नही लेते।

१० १००

७१ कौषीतकी उपनिषद्—प्रभु-कृपा की महत्ता

१ जिसे इश्वर ऋजुमाग दिखाना चाहता है, उसके हृदय का खोल देता है अपनी शरणता के लिए और जिसे माग भ्रष्ट रखना चाहता है उसके लिए उसके हृदय को बहुत ही सकुचित कर दता है मानो वह मनुष्य बलपूर्वक आकाश पर चढ़ता है। इस प्रकार इश्वर श्रद्धा न रखनेवाला को अपयश देता ह।

६ १२५

72. १ अल्लाहु लाँ इलाह इल्ला हुवर अल् हय्यु (अ्)-
ल् कय्यूमु॰ ला तअ्खुजुहू सिनतु (न्) व्य
ला नौमुन्॰ लहु मा फ़ि (अल्) स्समावाति
व मा फि (अ्) ल् अर्द्वि॰ मन् ज (अ् अ्) ल्लजी
यशफअ् अिन्दहु इल्ला बिइज़्निही॰ यअ्लमु
मा बन ऐदीहिम् व मा खल्फहुम्॰ व ला
युहीतून बिशय्अि (न्) म्मिन् अिल्मिही इल्ला
बि मा शाअ॰ वसिअ कुरसीयुहु (अल्) स्समावाति
व (अ्) ल् अर्द॰ व ला य (अ्) ऊदुहु हिफ्ज़ुहुमा
व हुव (अ) ल् अलीयु (अ्) ल् अज़ीमु O
२ २५५

73 १ क़ु (ल्) ल्लौ कान (अ्) ल् बहूरु मिदाद (न् अ्)-
ल्लि कलिमाति रब्बी ल नफिद (अ्) ल
बहूरु कब्ल अन् तन्फद कलिमातु रब्बी व
लौ जिअना बिमिस्लिही मददन (अ) O
१८-११०

74 १ व लौ अन्न मा फि (अ्) ल् अर्द्वि मिन् शजरतिन्
अक्लामु (न्) व्व (अ्) ल् बह्रु यमुद्दुहू
मि (न्) म्बअ्दिही सब्अतु अब्हुरि (न्) म्मा
नफिदत् कलिमातु (अ्) ल्लाहि॰ इन्न (अ्)
ल्लाह अज़ीजुन् हकीमुन् O
३१ २७

१६ अवर्णनीय–महान्

७२ इश्वरीय सिंहासन

१ इश्वर ! उसके अतिरिक्त कोइ नियन्ता नही । शाश्वत, स्थिर, उसे न ऊँघ आती है न नीद, उसीका है जो कुछ आकाशा में और भूमि में है। उसके पास उसकी अनुज्ञा के बिना कौन सिफारिश कर सकता है ? वह जानता ह, जो कुछ उन लोगों के आगे है और जो कुछ उन लोगो के पीछे ह और वे लोग उसके ज्ञान में से किसी अश को अपनी परिधि में नहीं ला सकते, सिवा इसके कि जो वह चाहे । उसके सिंहासन ने आकाशों एव भूमि को व्याप्त कर लिया ह और उन दोनों की सार-सँभाल उसको थकाती नही । और वह श्रेष्ठतम है, महत्तम है।

२ २५५

७३ इश्वर के वणन को स्याही अपर्याप्त

१ कह मेरे प्रभु की बातें लिखने के लिए यदि समुद्र स्याही हो, तो मेरे प्रभु के गुण का वणन समाप्न होने से पूर्व समुद्र समाप्त हो जाय यद्यपि हम वैसे ही दूसरे समुद्र भी उसकी सहायता के लिए ल आयें ।

१८.१०९

७४ असितगिरिसम स्यात

१ भूमि में जितने भी वक्ष हैं यदि वे लेखनी वन जायें तथा समुद्र (स्याही हो जायें), उसके अतिरिक्त सात समुद्र और साथ हो जायें, तो भी इश्वर की बातो का वणन पूरा नहीं होगा। निस्सन्देह परमात्मा सर्वजित्, सवविद् है।

३१ २७

75 १ ला यस्तवी असहाबु (अल्) नारि व असहाबु (अ्) ल् जन्नति असहाबु (अ्) ल् जन्नति हुमु (अ) ल् फाअिजून ०

२ लौ अन्जल्ना हाज (अ) ल् कुर्आन अला (य) जबलि (न्) ल्ल रएैतहु खाशिअ (न)-म्मुतसद्दिअ (नअ्) म्मिन खश्यति (अ्)-ल्लाहि व तिल्क (अ्) ल् अम्सालु नद्रिबुहा लि (ल्) न्नासि लअल्ल हुम् यतफक्करून ०

३ हुव (अ) ल्लाहु (अ्) ल्लजी ला इलाह इल्ला हुव आलिमु (अ) ल् गैबि व (अ्) श्शहादति हुव र्रह्मानु (अर्) र्रहीमु ०

४ हुव (अ) ल्लाहु (अ्) ल्लजी ला इलाह इल्ला हुव अल् मलिकु (अ्) ल् कुद्दूसु (अस)-स्सलामु (अ) ल मु अमिनु (अ) ल मुहैमिनु (अ्) ल् अजीजु (अ) ल जब्बारु (अ्) ल मुतकब्बिरु सुब्हान (अ्) ल्लाहि अम्मा युश्रिकून ०

५ हुव (अ्) ल्लाहु (अ्) ल् खालिकु (अ) ल बारि (यु) अु (अ्) ल मुसव्विरु लहु (अ्) ल अस्मा अु-(अ) ल् हुस्ना (य्) युसब्बिहु लहु मा फि (अस्)-स्समावाति व (अ्) ल अर्दि व हुव (अ्)-ल् अजीजु (अ्) ल् हकीमु ०

५९ २०—२४

८ नाम-स्मरण

१७ ईश्वर का नाम

७५ ईश्वर के लिए सुन्दर नाम

१ नरक के भागी और स्वर्ग के भागी समान नही हो सकते। जो स्वर्ग-प्राप्ति के अधिकारी है, वे विजयी है।

२ यदि हम इस कुरान को किसी पहाड पर उतारते तो तू देखता कि वह ईश्वर के डर से दब जाता, फट जाता। हम ये दृष्टान्त लोगों के लिए उपस्थित करते हैं कि वे सोचें।

३ वही ईश्वर है जिसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नही। अव्यक्त-व्यक्त का ज्ञाता, वह बहुत कृपालु और अतीव करुणावान् है।

४ वही ईश्वर है जिसके अतिरिक्त अन्य कोई नियन्ता नही। वह सर्वसत्ताधीश है, पवित्रतम है। शरण्य, शान्तिदाता, सरक्षक, सर्वजित्, बलवान् एव महत्तम है। ईश्वर पवित्र है, निराला है उससे जिसे ये भागीदार ठहराते हैं।

५ वही ईश्वर है, कर्ता, भर्ता, स्वरूपदाता, सारे सुन्दर नाम उसीके लिए है। आकाशों में और भूमि में जो है, व उसका जप करते हैं जयजयकार करते है और वही सर्वजित, सर्वविद् है।

५९ २०—२४

76 १ व वाअद्ना मूसा(य्) सलासीन लैलत(न्) व्व अत्मम्नाहा बिअश्रिन् फ तम्म मीकातु रब्बिही अर्बअीन लैलतन् ^ व काल मूसा (य्) लि अख़ीहि हारून(अ) ख़्लुफ़्नी फी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ् सबील (अ्) ल् मुफ़्सिदीन ०

२ व लम्मा जाअ मूसा(य्) लि मीकातिना व कल्लमहु रब्बुहु ^ काल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलैक ^ काल लन् तरानी व लाकिनि-(अ्)न्ज़ुर् इल(य्) (अ्)ल् जबलि फ इनि-(अ्)स्तक़र्र मकानहु फ सौफ तरानी ^ फ लम्मा तजल्ला(य्) रब्बुहु लिल् जबलि जअलहु दक्क(न्अ्) व्व ख़र्र मूसा(य्) सअिक़न् (अ्) ^ फ लम्मा अफाक़ क़ाल सुब्हानक तुब्तु इलैक व अना अव्वलु(अ्)ल् मुअ्मिनीन ०

३ क़ाल या मूसा (य्) इन्नि(य्) (अ)स्तफ़ैतुक अल(य्) (अ्ल्) नासि बि रिसालाती व बि कलामी ^ फ ख़ुज़् मा आतैतुक व कु(न्)-म्मिन (अश्) शाकिरीन ०

९ साक्षात्कार

१८ साक्षात्कार

७६ मूसा को साक्षात्कार—प्रभु बोले

१ हमने मूसा को तीस रात्रियों का अभिवचन दिया तथा उनमें और दस बढ़ाकर पूरा किया। फिर जब उसके प्रभु की चालीस रात्रियाँ पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तू समाज में मेरा स्थान ग्रहण कर कार्य को सँवारता रह और उपद्रवियों के मार्ग का अनुसरण न कर।

२ और जब मूसा हमारे अभिवचन की अवधि पर पहुँचा, तो प्रभु ने उससे बात की। तब मूसा बोला हे मेरे प्रभु, तू मुझे अपना दर्शन दे कि मैं तुझे देखूँ। कहा तू मुझे कदापि नहीं देख सकेगा किन्तु तू पर्वत की ओर देख यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, तो अवश्य ही तू मुझे देख सकेगा। फिर जब उसके प्रभु ने पर्वत पर अपना तेज प्रकट किया तो उस (तेज) ने पर्वत को चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया, तो बोला। पवित्रतम है तू, तेरा जयजयकार है! मैं पश्चात्तापदग्ध होकर तेरी ओर आया हूँ एवं मैं सर्वप्रथम श्रद्धालु हूँ।

३ कहा हे मूसा! अपने सन्देशों के साथ और अपने वार्तालाप के साथ मैंने तुझे लोगों पर विशेषता प्रदान की। सो जो कुछ मैंने तुझे दिया, ले ले और कृतज्ञों में से हो जा।

४ व कतब्ना लहु फि(अ्)ल् अल्वाहि मिन् कुल्लि शय्अि(न्) म्मौअिजत(न्) व्व तफ्सील(न्)-ल्लि कुल्लि शय्अिन् फ़ ख़ुज़्हा वि क़ुव्वति(न्) व्वअ्मुर् क़ौमक यअ्ख़ुज़ू (अ) वि अह्सनिहा

७ १४२-१४५

77 १ व हल् अताक हदीसु मूसा(य्) O

२ इज़् रआ नारन् फ क़ाल लि अह्लिहि(अ्)म्-कुसू(अ्)इन्नी आनस्तु नार(न्) ल्लअ़ल्ली आतीकु(म्)म्मिन्हा वि क़बसिन् औ अजिदु अल(य्) (अ्ल्)न्नारि हुदन्(य्) O

३ फ लम्मा अताहा नूदिय या मूसा(य) O

४ इन्नी अना रब्बुक फख़्लअ् नअ्लैक इन्नक वि(अ्)ल वादि(अ्)ल् मुक़द्दसि तुवन्(य्)O

५ व अन(अ) (अ्)ख़्तरतुक फ(अ्)स्तमिअ लि मा यूहा(य्) O

६ इन्ननी अन(अ्) (अ्)ल्लाहु ला इलाह इल्ला अना फ़(अ्)अ़्बुद्नी व अक़िमि(अ्ल्)-स्सलात लि ज़िक्री O

२० ९-१४

78 १ व(अ्ल्)न्नज्मि इज़ा हवा(य) O

२ मा ज़ल्ल साहिबुकुम् व मा ग़वा (य) O

४ हमने मूसा को पाटियों पर प्रत्येक प्रकार का उपदेश और प्रत्येक वस्तु का विस्तृत वणन लिख दिया । कहा उनको दृढ़ता से थाम ले और अपने समाज को आज्ञा दे कि उसमें उत्तम सार को ग्रहण कर उस पर दृढ़ रहे ।

७ १४२–१४५

७७ मूसा को साक्षात्कार—अग्नि-ज्योति-दशन

१ क्या तेर पास मूसा की कथा पहुँची ?

२ जब उसने एक आग देखी, तो अपने घरवालों से कहा ठहरो, निश्चय ही मने एक आग देखी है, कदाचित् म उसमें से तुम्हारे पास एक अगारा ले आऊँ या आग के पास पहुँचकर रास्ते का पता पाऊँ ।

३ फिर वह जब उसके पास पहुँचा, तो आवाज दी गयी "मूसा !

४ निस्सन्देह मैं तेरा प्रभु हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार डाल । तू पुण्यक्षेत्र तवा में है ।

५ और मैंने तुझे निर्वाचित कर लिया ह सो जो कुछ प्रज्ञान दिया जाता है, वह सुन ।

६ निस्सन्देह मैं जो हूँ, परमात्मा हूँ । मेरे अतिरिक्त अन्य कोई भजनीय नहीं । सो मेरी भक्ति कर तथा मेरे स्मरण के लिए नित्य नियमित प्रायना कर ।

२० ९–१४

७८ महम्मद को साक्षात्कार

१ शपथ ह तारे की, जब कि वह नीचे झुके ।

२ तुम्हारा यह साथी न बहका, न मागच्युत हुआ ।

३ व मा यन्तिकु 'अनि(अ्)ल् हवा (य्) ०[मय]
४ इन् हुव इल्ला वह्युन्(न्) य्यूहा(य्)०[ग]
५ अल्लमहु शदीदु(अ)ल् कुवा(य्)०[ग]
६ ज़ू मिर्रविन् [गय] फ़(अ्)स्तवा(य्)०[ग]
७ व हुव वि(अ्)ल् अुफुक़ि-
(अ्)ल् अअ्ला(य्) ०[गेय]
८ सुम्म दना फ़ तदल्ला(य्)०[ग]
९ फ़ कान क़ाब क़ौसैनि औ अदना(य्) ०[र]
१० फ़ औहा इला(य्) अब्दिही मा औहा(य)०[गय]
११ मा कज़ब(अ्)ल् फु(व्) आदु मा रआ(य्)०
१२ अ फ़ तुमारूनहु अला(य्) मा यरा(य्) ०
१३ व लक़द् रआहु नज़्लतन् अुख़्रा(य) ०[ग]
१४ अिन्द सिद्रति(अ्)ल् मुन्तहा(य्) ०
१५ अिन्दहा जन्नतु(अ्)ल् मअ्वा(य्) ०
१६ इज् यग़्शा(य्) (अ्ल्)स्सिद्‌रत मा यग्शा(य्)०
१७ मा ज़ाग़(अ्)ल् बसरु व मा तग़ा (य्)०
१८ लक़द् रआ(य्) मिन् आयाति रब्बिही-
(अ्)ल् कुबरा(य्) ० ५३ १-१८

79 १ व मा कान लि बशरिन् अ(न्) य्युकल्लिमहु
(अ्)ल्लाहु इल्ला वह्यन्(अ्) औ मि(न्)-
य्वरा(य्)अि हिजाबिन् औ युर्सिल रसूलन्-
(अ्)फ़ यूहिय बि इज़्निही मा यशाअु[र]
इन्नहु अलीयुन् हकीमुन् ०

३ और न वह वासना से बोलता है।
४ यह तो ईश्वरीय ज्ञान है, जो भेजा जाता है।
५ यह उस बलशाली शक्तिमान् ने उसको सिखाया है।
६ वह शक्तिमान् पूर्ण रूप से प्रकट हुआ
७ और यह आकाश के उच्च क्षितिज पर था।
८ फिर वह समीप हुआ, फिर और उतर आया।
९ फिर दो धनुष का अन्तर रह गया अथवा उससे भी निकट आया,
१० फिर उसने अपने इस दास की ओर ईश्वरीय ज्ञान भेजा। जो भेजा, सो ईश्वरीय ज्ञान ही था।
११ जो देखा, उसे हृदय ने मिथ्या नहीं (देखा)।
१२ तो उसने जो देखा उस पर अब तुम उससे झगड़ते हो?
१३ और उसने उसे और भी एक बार उतरते हुए देखा है।
१४ अन्तिम सीमावर्ती बदरी-वृक्ष के समीप,
१५ —उसके पास सुख से रहने का स्वर्ग है—
१६ जब वह बदरी-वृक्ष तेजोवेष्टित था, सतत तेजोवेष्टित था।
१७ उस समय दृष्टि न तो हटी और न उसने अधिक धृष्टता की,
१८ निश्चय ही उसने अपने प्रभु के महान् संकेत देखे।

५३ १–१८

७९ त्रिविध साक्षात्कार

१ किसी मानव पर यह अनुग्रह नहीं होता कि ईश्वर उससे वार्तालाप करे, सिवा कि (१) प्रज्ञान द्वारा (२) आवरण की ओट से या (३) प्रेषित भेजकर जो कि पहुँचाये, परमात्मा की आज्ञा से, वह सन्देश जो परमात्मा चाहे। निश्चय ही वह सर्वोच्च, सर्वविद् है।

३ व मा यन्तिकु अनि(अ)ल् हवा (य्) ०^और^
४ इन् हुव इल्ला वह्यु(न्) य्यूहा(य्)०^जो^
५ अल्लमहु शदीदु(अ)ल् कुवा(य्)०^जो^
६ जू मिर्रतिन् ^भार^ फ़(अ)स्तवा(य्)०^जो^
७ व हुव बि(अ)ल् उफ़ुक़ि-
(अ)ल् अअ्ला(य्) ०^और^
८ सुम्म दना फ तदल्ला(य्)०^जो^
९ फ कान काब कौसैनि औ अदना(य्) ०^र^
१० फ औहा इला(य्)अब्दिहई मा औहा(य्)०^और^
११ मा कजब(अ)ल् फु(ा) आदु मा रआ(य्)०
१२ अ फ तुमारूनहु अला(य्)मा यरा(य्) ०
१३ व लक़द् रआहु नज़्लतन् उख़रा(य्) ०^जो^
१४ अिन्द सिद्रति(अ)ल् मुन्तहा(य्) ०
१५ अिन्दहा जन्नतु(अ)ल मअ्वा(य) ०
१६ इज् यग़श(य्) (अल्) स्सिद्रत मा यग़्शा(य्)०
१७ मा जाग़(अ)ल् बसरु व मा तग़ा (य्)०
१८ लक़द् रआ(य्)मिन् आयाति रब्बिहि-
(अ)ल् कुबरा(य्) ० ५३ १-१८

79 १ व मा कान लि बशरिन् अ(न्) य्युकल्लिमहु
(अ)ल्लाहु इल्ला वह्यन्(अ) औ मि(न्)-
व्वरा(य्)अि हिजाबिन् औ युर्सिल रसूलन्-
(अ)फ यूहिय बि इज़्निहई मा यशाअु ^र^
इन्नहु अलीमुन् हकीमुन् ०

३ और न वह वासना से बोलता है।
४ वह तो ईश्वरीय ज्ञान है, जो भेजा जाता है।
५ वह उस बलशाली शक्तिमान् ने उसको सिखाया है।
६ वह शक्तिमान् पूर्ण रूप से प्रकट हुआ
७ और वह आकाश के उच्च क्षितिज पर था।
८ फिर वह समीप हुआ, फिर और उतर आया।
९ फिर दो धनुष का अन्तर रह गया अथवा उससे भी निकट आया,
१० फिर उसने अपने इस दास की ओर ईश्वरीय ज्ञान भेजा। जो भेजा, सो ईश्वरीय ज्ञान ही था।
११ जो देखा, उसे हृदय ने मिथ्या नहीं (देखा)।
१२ तो उसने जो देखा, उस पर अब तुम उससे झगड़ते हो ?
१३ और उसने उसे और भी एक बार उतरते हुए देखा है।
१४ अन्तिम सीमावर्ती बदरी-वृक्ष के समीप,
१५ —उसके पास सुख से रहने का स्वर्ग है—
१६ जब वह बदरी-वृक्ष तेजोवेष्टित था, सतत तेजोवेष्टित था।
१७ उस समय दृष्टि न तो हटी और न उसने अधिक धृष्टता की,
१८ निश्चय ही उसने अपने प्रभु के महान् संकेत देखे।

५३ १–१८

७९ त्रिविध साक्षात्कार

१ किसी मानव पर यह अनुग्रह नहीं होता कि ईश्वर उससे वार्तालाप करे, सिवा कि (१) प्रज्ञान द्वारा (२) आवरण की ओट से या (३) प्रेषित भेजकर जो कि पहुँचाये, परमात्मा की आज्ञा से, वह सन्देश जो परमात्मा चाहे। निश्चय ही वह सर्वोच्च, सर्वविद् है।

७ व कजालिक औहैना इलैक रूह(न्)म्मिन् अम्रिना मा कुन्त तद्री म(अ्) (अ्)ल् कितावु वल्(अ्) (अ्)ल् इमानु व लाकिन जअलनाहु नूर(नन्)नह्दी बिही म(न्)नशाउ मिन् अिबादिना व इन्नक ल तह्दी इला(य्) सिराति(न्)म्मुस्तक़ीमिन् O
३ सिरातिl (अ्)ल्लाहि (अ)ल्लज़ी लहु मा फ़ि (अल्) स्समावाति व मा फ़ि(अ)ल् अर्ज़ि अला इल(य्) (अ्)ल्लाहि तसीरु (अ्)ल् अुमूरु O ४२ ५१-५३

80 १ इन्ना अनज़ल्नाहु फ़ी लैलति(अ्)-ल् क़दरि O
२ व मा अद्राक मा लैलतु(अ्) ल्क़दरि O
३ लैलतु(अ्) ल् क़दरि खैरु(न्)म्मिन् अल्फ़ि शह्रिन O
४ तनज़्ज़लु(अ्) ल् मलाअिकतु व (अ्) र्रूहु फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्रिन्O
५ सलामुन् हिय हत्ता(य) मत्लअि (अ)ल् फज्रि O १७ १-५

81 १ फतआल(य्) (अ्) ल्लाहु (अ्) ल् मलिकु (अ)ल् हक़्क़ु व ला तअ्जल् बि(अ्)ल् क़ुरआनि मिन् क़ब्लि अ(न्) य्युक़्ज़ा(य्) इलैक वह्युहु व क़ु(ल्) र्रब्बि ज़िद्नी अिल्मन (अ)O २० ११४

२ और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अपनी आज्ञा से प्रज्ञान भेजा। तू नहीं जानता था कि ग्रन्थ क्या है और श्रद्धा क्या है, किन्तु हमने उसे एक ऐसा प्रकाश बनाया, जिसके द्वारा अपने दासों में से हम जिसे चाहते है, मार्ग दिखाते हैं और नि:संशय तू लोगों को सीधा मार्ग दिखलाता है।

३ उस ईश्वर का मार्ग जिसके लिए है, जो कुछ कि आकाशों में है और जो कुछ भूमि में है। सावधान! ईश्वर की ओर ही सब कार्य प्रवृत्त होंगे।

४२ ५१–५३

८० ज्ञान की एक रात्रि = सहस्र मास का जीवन

१ हमने उसे (कुरान को) मंगलप्रद रात्रि में उतारा।

२ और तूने क्या जाना कि मंगलप्रद रात्रि क्या है?

३ वह रात्रि सहस्र मासों से उत्तम है।

४ इस रात्रि में देवदूत और जीव अपने प्रभु की आज्ञा से प्रत्येक कार्य के लिए उतरते हैं।

५ शांतिदात्री, करुणामयी है वह रात्रि, अरुणोदय तक।

९७ १–५

८१ ज्ञान-प्राप्ति के लिए शीघ्रता न कर

१ ईश्वर! परमोच्चपदप्रतिष्ठित वस्तुतः राजराजेश्वर है! और तू कुरान के साथ शीघ्रता न कर, जब तक उसका उतरना पूरा न हो चुके और कह हे प्रभु! मुझे ज्ञान-वृद्ध कर।

२० ११४

82. १ फाविर (अल्) स्समायाति व (अ्) ल्
अरद्वि॰ह अन्त वल्य्यौ फि (अल्) द्दुनूया
य (अ्) ल् आखिरत्वि॰ तवफ्फनी मुस्लिम-
(न्अ्)॰व अल्हिक्नी बि (अल्)
स्वालिहीन०

१२ १०१

83 १ रब्बि औज़िअ्नी अन् अश्कुर निअ्मतक
(अ)ल्लती अन्अम्त अलय्य व अला (य्)
वालिदय्य व अन् अअ्मल ध्वालिहन् (अ्)
तर्ज़ाहु व अद्खिलनी बि रह्मतिक फी
ग्रिबादिक (अ ्) स्सालिहीन०

२७ १९

84 १ मुल अज्जु बि रब्बि (अ्)ल फ़लक़ि ०॰
२ मिन् शर्रि मा ख़ल्क़ ०॰
३ व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब ०॰

१० प्रार्थना

१९ प्रार्थना

८२ शरणता

१ आकाशों तथा भूमि के स्रष्टा ! तू ही इहलोक एवं परलोक में मेरा मरक्षक मित्र है। मुझे शरणावस्था में मृत्यु दे और मुझे सन्तो में सम्मिलित कर।

१२ १०१

८३ कृतज्ञता

१ हे मेरे प्रभु ! मुझे ऐसी शक्ति दे कि म तेरे दयापूण वरदानो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो वरदान तूने मुझे और मेरे माता-पिता को प्रदान किये हं और मैं वह सत्कृत्य करूँ, जो तुझे भाये तथा मुझे अपनी कृपा से अपने पुण्यचरित दासों में प्रविष्ट कर।

२७ १९

८४ सकट-मोचन

१ कह उषा के प्रभु का मैं आश्रय लेता हूँ बचने के लिए
२ प्रत्येक वस्तु की दुष्टता से जो उसने बनायी।
३ और अधकार की दुष्टता से, जब कि वह छा जाय।

४ व मिन् शर्रि (अल्) अफ़्फ़ासाति फ़ि (अ) ल्

उक़दि ०[ल]

५ व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद ०[ऐन्]

११३ १-५

85 १ कुल् अऊज़ु बि रब्बि (अल्) न्नासि ०[प]

२ मलिकि (अल्) न्नासि ०[ला]

३ इलाहि (अल्) न्नासि ०[म]

४ मिन् शर्रि (अ) ल् वस्वासि ० [न] (अ) ल्

ख़न्नासि ०[साक्ता]

५ (अ) ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरि (अल्)-

न्नासि ०[क]

६ मिन (अ) ल् जिन्नति व (अल्) न्नासि ०[ऐन]

११४ १-६

४ और उनकी दुष्टता से, जो ग्रन्थियों म फूंकती हैं।
५ और ईर्ष्यालु की दुष्टता से, जब कि वे ईर्ष्या करें।

११३ १–५

८५ विकार-मोचन

१ मैं आश्रय माँगता हूँ, मानवों के प्रभु का।
२ मानवों के सत्ताधीश का।
३ मानवों के भजनीय का, जिससे कि बचूं
४ कुप्रेरणा करनेवाले पीछे हट जानेवाले की दुष्टता से।
५ जो मानवों के हृदय में विकार डालता ह।
६ वह जिनों में से हो या मनुष्यों में से।

११४ १–६

खण्ड ३

भक्ति-रहस्य

86 १ या अय्यु ह(अ्) (अ्)ल् मुद्दस्सिरु O[ना]

२ कुम् फ़ अन्जिर् O[सालमा]

३ व रब्बक फ कब्बिर O[सालमा]

४ व सियाबक फ तह्हिर O[सालमा]

५ व(अ्ल्) रुजज़ फ(अ्)हजुर् O[सालमा]

६ व ला तम्नुन तस्तक्सिरु O[सालमा]

७ व लि रब्बिक फ (अ)स्बिर् O[मय]

७४ १–७

87 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल् मुज़्ज़म्मिलु O[ना]

२ क़ुमि(अ्)ल्लैल इल्ला क़लीलन् O[ना]

३ निस्फहू अवि(अ्)न्कुस् मिन्हु क़लीलन्(अ्) O[न]

४ औ ज़िद् अलैहि व रत्तिलि(अ्)ल् क़ुरआन तर्तीलन् (अ्) O[गार]

५ इन्ना सनुल्क़ी अलैक क़ौलन्(अ्) सक़ीलन्(अ्) O

६ इन्न नाशिअत(अ्ल्)लैलि हिय अशद्दु वत्अ(न्) व्व अक़्वमु क़ीलन(अ) O[न१]

११ भक्ति

२० प्रार्थनोपदेश

८६ सप्तविध

१ हे प्रावरणावगुण्ठित !
२ उठ और लोगों को सावधान कर
३ और अपने प्रभु की महत्ता वाल
४ एवं अपने मन को शुद्ध रख
५ और अशुचिता से दूर रह
६ अधिक प्रतिदान के उद्देश्य से उपकार न कर।
७ और अपने प्रभु के लिए धीरज रख।

७४ १–७

८७ प्रार्थना के लिए रात्रि का महत्त्व

१ हे चादर में लिपटनेवाले !
२ रात को उठकर उपासना कर, परन्तु थोड़ी देर
३ रात्रि के आधे समय अथवा उसमें कुछ कम कर
४ अथवा उसमें अधिक कर और सावधानी से कुरान का स्पष्ट पाठ कर।
५ निस्सन्देह हम तुझ पर एक भारी बात डालनेवाले हैं।
६ निस्संशय, रात को उठना वासनाओं को कुचलने में बहुत तेज है और वाणी को सरल करनेवाला है।

७ इन्न लक फि(अल्) नहारि सब्हन्(अ)
तवीलन्(अ) O[गाफ़]

८ व(अ)ज़्कुरि(अ)स्म रब्बिक व तबत्तल इलैहि
तब्तीलन्(अ) O[मेम]

९ रब्बु(अ)ल् मश्रिकि व(अ)ल् मग़्रिबि ला
इलाह इल्ला हुव फ(अ)त्तख़िज़्हु वकीलन्(अ) O

१० व(अ)स्बिर अला(य्)मा यकूलून व(अ)-
ह्जुर्हुम् हज्रन्(अ) जमीलन्(अ) O

७३ १-१०

88 १ व इज़ा कुरि (य्)अ(अ)ल् कुर्आनु फ़
(अ)स्तमिऊ(अ) लहु व अन्सितू(अ)
लअल्लकुम् तुर्हमून O

२ व(अ)ज़्कु(र्)रब्बक फ़ी नफ़्सिक तज़र्रुअ-
(न् अ)व ख़ीफ़त (न्)व दून (अ)ल्
जह्रि मिन(अ)ल् क़ौलि बि(अ)ल् गुदुव्वि
व(अ)ल् आसालि व ला तकु(न्)म्मिन(अ)ल्
ग़ाफ़िलीन O

३ इन्न (अ)ल्लज़ीन अिन्द रब्बिक ला
यस्तक्बिरून अन् अिबादतिही व युसब्बिहूनहु
व लहु यस्जुदून O[सज्दा] ७ २०४-२०६

89 १ कुलि(अ)द्अु (य् अ) (अ)ल्लाह अवि(अ)-
द्अु(व् अ) (अल्) र्रहमान[गो१] अय्य(न् अ)-
म्मा तद्अू(अ)फ़ लहु(अ)ल् अस्माअु

७ निस्सन्देह दिन में तुझे बहुत काम रहता है।

८ अपने प्रभु का नाम लेता रह और सबसे अलग होकर उसीकी ओर प्रवृत्त हो।

९ वह पूर्व एव पश्चिम का स्वामी है, उसके अतिरिक्त कोइ भजनीय नही। सो उसीको अपना सार-सँभाल करनेवाला बना ले।

१० और वे लोग जो कुछ कहते रहें, यह सहता रह तथा सुचारु रूप से उन्हें छोड दे।

७३ १-१०

८८ सयत वाणी से प्रार्थना करो

१ जब कुरान पढ़ा जाय, तो उसकी ओर कान लगाओ और मौन रहो, जिससे कि तुम पर कृपा की जाय

२ और अपने प्रभु का, अपने हृदय में, नम्रता एव भय से, सयत वाणी से, प्रात-साय स्मरण करता रह और असावधानों में से न हो जा।

३ निस्सन्देह, जो तेरे प्रभु के निकट है वे उसकी भक्ति करने में अहकार नहीं रखते और उसका जप करते है जयजयकार करते हैं और उसको प्रणिपात करते हैं।

७ २०४-२०६

८९ अल्ला कहो या रहमान कहो

१ चाहे अल्ला कहकर पुकारो या रहमान (दयामय) कहकर, जो भी कहकर पुकारोगे, सो सभी अच्छे नाम उसीके लिए हैं

(अ)ल् हुम्ना (य्)ब व ला तज्हर् बि सलातिक व ला तुखाफित् बिहा व(अ)ब्तगि बैन जालिक सबीलन् (अ) O

१७ ११०

90 १ फ(अ)अ्लम् अन्नहु ला इलाह इल्ल(अ)ल्लाहु व(अ)स्तग्फिर लि ज(न्)म्बिक व लिल् मु(व्)अमिनीन व(अ)ल् मु(व्)अमिनाति ब्म व(अ)ल्लाहु यअ्लमु मुतक़ल्लबकुम् व मस्वाकुम् O ऐन

४ १९

91 १ या अय्युह(अ) (अ)ल्लज़ीन आमनू[1] (अ)इज़ा नूदिय लि(ल्)स्सलाति मि(न्) य्यौमि(अ)ल् जुमुअ्ति फ़(अ)म्ओ (अ)इला (य)जिकरि-(अ)ल्लाहि व जरु (व् अ अ) ल् बैअ्ख़म जालिकुम् ख़ैर(न्)ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून O

२ फ इज़ा कुद्रियति(अल)स् सलातु फ़(अ)न्-तशिरु(अ) फि(अ)ल् अरज़ि व(अ)ब्तग़ू(अ) मिन फज़्लि(अ)ल्लाहि व(अ)ज़कुरु(य् अ)-(अ)ल्लाह कसीर(न् अ)ल्लअल्लकुम् तुफ़्लिहून O

और अपनी प्रार्थना उच्च स्वर से न पढ़ और न चुपके पढ़, उसके बीच का मार्ग स्वीकार कर।

१७.११०

९० क्षमापनम्

१ तू यह जान कि परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और अपने पापों के लिए और श्रद्धावानो एवं श्रद्धावतियों के लिए भी क्षमा माँग। परमात्मा तुम्हारे चलने-फिरने का स्थान और तुम्हारा अन्तिम स्थान जानता है।

४७.१९

९१ प्रार्थना, व्यापार तथा खेल

१ हे श्रद्धावानो! जब प्रार्थना के लिए शुक्रवार का तुम्हें पुकारा जाय, तो ईश-स्मरण के लिए दौड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यदि तुम समझो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है।

२ फिर जब प्रार्थना पूरी की जाय, तो पृथ्वी में फैल जाओ और ईश्वर का कृपा-वैभव ढूँढो तथा ईश्वर का बहुत स्मरण करो, जिससे कि तुम्हारा भला हो।

२ व इज़ा रअ(अ्)तिजारतन् औ लह्व(अ्)-
नि(अ्)न्फ़द्दू(अ्)इलैहा व तरकूक क़ाअि-
मन्(अ्)[गोप] कुल मा अिन्द(अ्)ल्लाहि ख़ैरु(न्)-
म्मिन(अ्ल)ल्लह्वि व मिन(अ्ल्)त्तिजारति [गोप]
व(अ्)ल्लाहु ख़ैरु(अ्र्)र्राज़िक़ीन ० [पेन]

६२ १-११

92 १ अुत्लु मा ऊह़िय इलैक मिन(अ्)ल् किताबि व अक़िमि(अ्ल्)स्सलात [गोप] इन्न(अ्ल्)स्सलात तनहा(य्)अनि(अ्)ल् फ़ह़्शाअि व(अ्)ल् मुन्करि [गाप] व ल ज़िक्रु(अ्)ल्लाहि अक्बरु [गोप] व(अ्)ल्लाहु यअ्लमु मा तस्नअून ०

२९ ४५

93 १ अला बि ज़िक्रि (अ्)ल्लाहि तत्मअिन्नु(अ्)ल् क़ुलूबु ०[गाप]

१३ २८

94 १ व युसब्बिहु(अ्ल्)र्रअ्दु बिह़म्दिही व(अ)ल् मलाअिकतु मिन् ख़ीफ़तिही

१३ १३

३ और वे लोग जब देखते हैं सौदा बिकता हुआ या तमाशा, तो उसे देखकर उसकी ओर दौड़े जाते हैं और तुझे खड़ा छोड़ जाते हैं। कह जो ईश्वर के पास है, वह तमाशे से और व्यापार से उत्तमोत्तम है। और ईश्वर श्रेष्ठ जीविका पहुँचानेवाला है।

६२ ९-११

९२ प्रार्थना से स्मरण बड़ा

१ जो ग्रन्थ तेरी ओर उतरा, उसे पढ़ और नित्य नियमित प्रार्थना कर। निस्सन्देह प्रार्थना लज्जास्पद एवं अनुचित बातों से रोकती है और ईश्वर का स्मरण इन सबसे बड़ा है और ईश्वर जानता है जो कुछ तुम करते हो।

२९ ४५

९३ ईश्वर-स्मरण से अन्तःसमाधान

१ भलीभाँति समझ लो कि ईश्वर के स्मरण से अन्तःकरण को समाधान मिलता है।

१३ २८

२१ सृष्टिकृत प्रार्थना

९४ मेघ-गर्जना जप करती है

१ मेघ-गर्जना परमात्मा की स्तुति के साथ उसका जप करती है, जयजयकार करती है और सब देवदूत उसका आदर के साथ जप एवं स्तवन करते हैं।

१३ १३

३ व इज़ा र‍अ(अ्)तिजारतन् औ लह्व(अ्)-नि(अ्)न्फ़द्दू[1](अ्)इलैहा व तरकूक क़ाअि-मन्(अ्)[गोम] क़ुल मा अिन्द(अ्)ल्लाहि खैरु(न्)-म्मिन(अल्)ल्लह्वि व मिन(अल्)त्तिजारति[गोम] व(अ्)ल्लाहु खैरु(अल्)र्राज़िक़ीन O[ग्न]

६२ ९-११

92 १ अुत्लु मा ऊहिय इलैक मिन(अ्)ल् किताबि व अक़िमि(अल्)स्सलात[गोम] इन्न(अल्)स्सलात तनहा(य्)अनि(अ्)ल् फ़ह्शाअि व(अ्)ल् मुन्करि[गाग] व ल ज़िक्रु(अ्)ल्लाहि अक्बरु[गोम] व(अ्)ल्लाहु यअ्लमु मा तस्नअून O

२९ ४५

93 १ अला बि ज़िक्रि (अ्)ल्लाहि तत्मअिन्नु(अ्)ल् क़ुलूबु O[गाग]

१३ २८

94 १ व युसब्बिहु(अल्)रअ्दु बिहम्दिही व(अ्)ल मलाअिकतु मिन् खीफतिही

१३ १३

९५ पक्षी स्तवन करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि आकाश एव भूमि में जो पक्षी ह, वे पख पसारे परमात्मा का नाम-स्मरण करते हैं। प्रत्येक अपने ढग की प्रार्थना एव जप जानता ह और परमात्मा जानता है, जो कुछ वे करते हैं।

२४४१

९६ सृष्टि का जप अगम्य

१ सात आकाश एव भूमि तथा जो कोइ उनमें है उसका जप करते हैं जयजयकार करते ह। ऐसी कोई वस्तु नही, जो स्तवनपूवक (स्तुति के साथ) उसका जप नही करती, किन्तु तुम उनका नाम-स्मरण नहीं समझते । निस्सन्देह वह धृति-मान्, करुणावान् है।

१७४४

९७ छाया का प्रणिपात

१ आकाशों एव भूमि में जो कोई है वह स्वेच्छया या अनिच्छया परमात्मा को प्रणिपात करते हैं और उनकी परछाइयाँ भी, प्रात-साय उसे प्रणिपात करती ह।

१३१५

९८ सृष्टि का प्रणिपात

१ क्या उन लोगों ने नही देखा कि इश्वर ने जा वस्तुएँ उत्पन्न की ह, उनकी परछाइयाँ दाहिने और यायें इश्वर को प्रणि-पात करते हुए ढलती ह और वे विनम्र ह।

95 ॰ अ लम् तर अन्न(अ)ल्लाह युसब्बिहु लहु मन् फि(स्)स्समावाति व(अ्)ल् अर्द्वि व(अ्ल्)-त्वैरु सीफ्फ़ातिन्^ग़ोथ कुल्लुन् कद् अलिम सलातहु व तस्वीहहु ^ग़ोथ व(अ्) ल्लाहु अलीमु (न्)-म् बि मा यफ्अलून O २४४१

96 ॰ तुसब्बिहु लहु (अ्स्) स्समावातु (अल)-स्सब्अु व(अ्) ल अर्द्व व मन् फीहिन्न^ग़ोथ व इ (न्) म्मिन् शय्अिन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिहिई व लाकि (न्) ल्ला तफ्क़हून तस्बीहहुम्^ग़ोथ इन्नहु कान हलीमन् गफ़ूरन् O १७४४

97 ॰ व लिल्लाहि यस्जुदु मन फि(अ्ल)स्समावाति व(अ्)ल् अर्द्वि त्वौअ(न्)ख्व करह(न्)ख्व जिलाल्हुम् बि (अ्)ल् गुदुव्वि व(अ्)ल आसालि O^ब्बमम

१३१५

98 ॰ अव लम् यरौ (अ्) इला(य्) मा खलक़-(अ्)ल्लाहु मिन् शय्अि(न्)ख्यतफ़य्यउ (यु) अ् जिलालुहु अनि (अ्)ल् यमीनि व (अ्ल्)-श्शमाअिलि सुज्जद(न् अ्)ल्लिल्लाहि व हुम् दाखिरून O

२ आकाशो एव भूमि में जितने भी प्राणी है, वे एव सभी देवदूत ईश्वर को प्रणिपात करते है । वे घमड नहीं करते ।
३ अपने प्रभु का, जो उनक सिर पर है, भय रखते ह । जो आज्ञा पाते ह सो करते हैं ।

१६ ४८-५०

९९ सारी सृष्टि एव कतिपय मनुष्य प्रणिपात करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि जो आकाशों एव भूमि में है तथा सूय और चन्द्र और तारे और पवत और वृक्ष एव पशु तथा मनुष्यो में से बहुत-से लोग परमात्मा को प्रणिपात करते ह ?

२२ १८

२२ निष्ठा

१०० शरणता एव नैष्ठिकता

१ गँवार लोग कहते हैं कि हम श्रद्धा रखते है । कहो कि तुममें अभी श्रद्धा नहीं आयी । अपितु तुम यह कहो कि हमने शरणता स्वीकृत की है, अभी तुम्हारे मानस में श्रद्धा का प्रवेश नहीं हुआ । तथापि यदि तुम ईश्वर की और प्रेषित की आज्ञा मानो, तो ईश्वर तुम्हारे सत्कृत्यो का फल लेशमात्र भी न घटायेगा । निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान् है, करुणावान् है ।
२ श्रद्धावान् केवल ये ही हैं जिन्होंने ईश्वर पर एव उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखी और फिर सन्देह नहीं किया तथा तन-मन-धन से ईश्वर के माग में जूझते रहे । ये ही लोग सच्चे ह ।

४९ १४ १५

२ व लिल्ला हि यस्जुदु मा फि(अ्ल) स्समावाति व मा फि(अ्)ल् अर्द्दि मिन् दाब्बति(न्) व्व-(अ्)ल् मलाअिकतु व हुम् ला यस्तकबिरून O

३ यखाफ़ून रब्बहु (म्) म्मिन फ़ौकिहिम् व यफ़्अलून मा यु(व्) अमरून O नस्सम्द १६।४८-५०

99 १ अ लम् तर अन्न(अ्)ल्लाह यस्जुदु लहु मन् फ़ि(अ्ल्) स्समावाति व मन् फि(अ्)ल् अर्द्दि व(अ्ल्)श्शम्सु व (अ्)ल् कमरु व(अ्ल्)न्नुजूमु व(अ्)ल् जिबालु व(अ्ल्)-श्शजरु व(अ्ल्)द्दवाब्बु व कसीरु(न्) म्मिन (अ्ल्)न्नासि हज्ज २२।१८

100 १ कालति(अ्)ल् अअ्राबु आमन्ना कुल् लम् तु(व्) अ्मिनू व लाकिन् कूलू(अ्) अस्लम्ना व लम्मा यद्खुलि(अ्) ल् ईमानु फी कुलूबिकुम् व इन् तुतीअु (व्अ्) (अ्) ल्लाह व रसूलहु ला यलित्कु(म्) म्मिन् अअ्मालिकुम् शैअन् इन्न(अ्)ल्लाह गफूरु(न्) र् रहीमुन् O

२ इन्नम(अ्) (अ्)ल् मु(व्) अ्मिनून(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्) बि(अ्)ल्लाहि व रसूलिही सुम्म लम् यर्ताबू(अ्) व जाहदू(अ्) बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फी सबीलि(अ्) ल्लाहि उ(व्)लाअिक हुमु(अ्ल्)स्सादिकून O ४९।१४-१५

२ आकाशों एवं भूमि में जितने भी प्राणी हैं, वे एवं सभी देवदूत ईश्वर को प्रणिपात करते हैं। वे घमंड नहीं करते।

३ अपने प्रभु का, जो उनके सिर पर है, भय रखते हैं। जो आज्ञा पाते हैं सो करते हैं।

१६ ४८–५०

९९ सारी सृष्टि एवं कतिपय मनुष्य प्रणिपात करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि जो आकाशों एवं भूमि में है तथा सूर्य और चन्द्र और तारे और पर्वत और वृक्ष एवं पशु तथा मनुष्यों में से बहुत-से लोग परमात्मा को प्रणिपात करते हैं?

२२ १८

२२ निष्ठा

१०० शरणता एवं नैष्ठिकता

१ गँवार लोग कहते हैं कि हम श्रद्धा रखते हैं। कहो कि तुममें अभी श्रद्धा नहीं आयी। अपितु तुम यह कहो कि हमने शरणता स्वीकृत की है अभी तुम्हारे मानस में श्रद्धा का प्रवेश नहीं हुआ। तथापि यदि तुम ईश्वर की और प्रेषित की आज्ञा मानो, तो ईश्वर तुम्हारे सत्कृत्यों का फल लेशमात्र भी न घटायेगा। निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान् है करुणावान् है।

२ श्रद्धावान् केवल वे ही हैं, जिन्होंने ईश्वर पर एवं उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखी और फिर सन्देह नहीं किया तथा तन-मन-धन से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे। ये ही लोग सच्चे हैं।

४९ १४ १५

101 १ लैस अल(य्) (अ्)ल्लजीन आमनू (अ्) व अमिलु-(वुअ्) (अल्) स्सालिहाति जुनाहुन् फी मा तअिमू[1] (अ्) अिजा म(अ्) (अ्) त्तक़ौ (अ्) व्व आमनू (अ्) व अमिलु (वुअ् अ्ल्) स्सालिहानि सुम्म (अ्) त्तक़ौ (अ्) व्व आमनू सुम्म (अ्) त्तक़ौ-(अ्) व्व अह्सनू (अ्)ण्[प] व (अ्) ल्लाहु युहिब्बु-(अ्)ल मुह्सिनीन ०

५ ९६

102. १ कुल् इन्न स्लाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बि (अ्)ल् आलमीन ०[ग]

६ १६२

103 १ सिब्ग़त (अ्)ल्ला हि[क] व मन् अह्सनु मिन-(अ)ल्लाहि सिब्ग़त (न्)[ग] व्व नह्नु लहु आबिदून ०

२ १३८

104 १ या अय्युह (अ् अ्)ल्लजीन आमनू (अ्) ला तत्तखिजू (अ) आबाअकुम् व इख्वानकुम औलियाअ इनि (अ्) स्तहब्बु (व अ् अ्)ल् कुफ्र अल (य्) (अ)ल इमानि[प] व म(न्) य्यत-वल्लहु (म्) म्मिनकुम् फ अु(य्)लाअिक हुमु (अल्) ज़्ज़ालिमून ०

१०१ साधना, श्रद्धा एव सत्कृति का त्रिकोण

१ जिन लोगो ने श्रद्धा रखी और सत्कृत्य किये, उन्होंने जो आहार किया है, उसमें दोष नही, जब कि वे प्रभु-परायण रहें और श्रद्धा रखें और फिर प्रभु-परायण रहें और अनेक सत्कृत्य करें । इश्वर सत्कृत्य करनेवालों से प्रेम करता है ।

५ ९६

१०२ नारायणायेति समपयेत्तत्

१ कह निस्सन्देह मेरी प्रार्थना, मेरी भक्ति, मेरा जीवन, मेरा मरण सब परमात्मा के ही लिए है, जो सारे विश्व का प्रभु है ।

६ १६२

१०३ मन तो रँगा राम में

१ रँगा ह हमको परमात्मा ने, और रँगने में परमात्मा से श्रेष्ठ-तर कौन है ? हम उसीके भक्त हैं ।

२ १३८

१०४ नाते नेह राम के मनियत

१ हे श्रद्धालुओ, अपने पिता को, अपने भाइ को भी मित्र न बनाओ, यदि वे लोग श्रद्धाहीनता को श्रद्धा की अपेक्षा अधिक प्रिय मानें । तुममें से जो लोग उन्हें मित्र समझें, वही लोग दोषी हैं ।

२ कुल इन् कान आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व
इख़्वानुकुम् व अज़वाजुकुम् व अशीरतुकुम्
व अम्वालु नि(अ्)क़्तरफ़्तुमूहा व तिजार-
तुन् तख़्शौन कसादहा व मसाकिनु तरज़ौनहा
अहब्ब इलैकु(म्)म्मिन(अ्)ल्लाहि व रसूलिही
व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़ तरब्बसू हत्ता
यअ्तिय(अ्)ल्लाहु बि अम्रिही व(अ)ल्लाहु
ला यह्दि(य्) (अ्)ल् क़ौम(अ्)ल फ़ासिक़ीन०

९ २३-२४

105 १ इन्न अक्रमकुम् अिन्द(अ्)ल्लाहि अत्क़ाकुम् ०
इन्न(अ्)ल्लाह अलीमुन् ख़बीरुन्०

४९ १३

106 १ व ला तक़ूलन्न लि श(अ्)यिन् इन्नी फ़ाअिलुन्
ज़ालिक ग़दन्(अ्) ०
२ इल्ला अ(न्) य्यशा अ (अ्)ल्लाहु

१८ २३-२४

२ कह तुम्हारे पिता, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारा परिवार और वह धन, जो तुमने उपार्जित किया है तथा वह व्यापार, जिसकी मन्दी से तुम डरते हो और ये घर, जो तुम्हें भाते हैं, यदि ईश्वर से और उसके प्रेषित से और उसके मार्ग में जूझने से तुम्हें अधिक प्यारे हैं, तो तुम प्रतीक्षा करो, जब तक कि ईश्वर आज्ञा भेजे। ईश्वर अपनी अवज्ञा करनेवालों को अपना मार्ग नहीं दिखाता।

९ २३ २४

१०५ नम्रत्वेन उन्नमन्त

१ निस्सन्देह परमात्मा के पास तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक विनम्र है। परमात्मा सर्वज्ञ है सर्वस्पर्शी है।

४९ १३

१०६ ईश्वरेच्छा को शरण

१ किसी बात के सम्बन्ध में कदापि यह न कह कि मैं यह कल करूँगा।

२ परन्तु यह कि 'यदि ईश्वर चाहे तो' !

१८.२३ २४

107 १ अ फ मन् अस्सस बुन्यानहू अला(य्)तक़्वा (य्)मिन(अ्)ल्लाहि व रिद्वानिन् ख़ैरुन् अ(म्)म्मन् अस्सस बुन्यानहू अला(य्)शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ(अ्)न्हार बिही फी नारि जहन्नम^{गाय}

१ १०९

108 १ या अय्युह(अ्)ल्लज़ीन आमनू हल अदुल्लुकुम् अला(य्)तिजारतिन् तुन्जीकुम् मिन् अज़ाबिन अलीमिन्O

२ तु(य्)अमिनून बि(अ्)ल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदून फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि बि अम्वालि कुम् व अन्फ़ुसिकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरु(न्)-ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून O^{गा}

६१ १०–११

109 १ अ जअल्तुम् सिक़ायत(अ्)ल् हाज्जि व अिमारत(अ्)ल्मस्जिदि(अ्)ल् हरामि क मन् आमन बि(अ्)ल्लाहि व(अ्)ल् यौमि(अ्)ल् आख़िरि व जाहद फी सबीलि(अ्)ल्लाहि ला यस्तवून अिन्द(अ्)ल्लाहि व(अ्)ल्लाहु ला यह्दि(य्) (अ्)ल् क़ौम(अ्)ज़्ज़ालि-मीन O^य

१०७ भवन चट्टान पर या धँसनेवाले कगार पर

१ भला जिसने अपने भवन की नींव इस्वर के प्रति अपने धर्म पर एवं उसकी प्रसन्नता पर रखी हो, वह अधिक लाभकारी है या वह, जिसने अपने भवन की नीव एक खोखली घाटी के कगार पर रखी हो, जो गिरने को ही है कि फिर वह उसको लेकर नारकीय अग्नि में ढह पड़े ? --

९ १०९

२३ त्याग-समपण

१०८ उत्तम व्यापार

१ हे श्रद्धालुओ, मं तुम्हें ऐसा व्यापार बतलाऊँ, जो तुम्हें दुःखद दण्ड से बचाये ।

२ परमात्मा पर एव उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखो, और अपने धन स एव अपने प्राण से परमात्मा के मार्ग में जूझते रहो। यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम बुद्धि रखते हो ।

६१ १० ११

१०९ श्रेष्ठ पुण्य

१ क्या तुमने यात्रियों को पानी पिलाने और पवित्र मसजिद बनाने को उस व्यक्ति के समान ठहराया, जिसने इश्वर पर एव पुनरुत्थान के दिन पर श्रद्धा रखी तथा ईश्वर के मार्ग में जूझता रहा ? ये इश्वर क समीप समान नहीं हो सकते । इश्वर अन्यायी लोगों को माग नहीं दिखाता।

२ अल्लजीन आमनू(अ) व हाजरू(अ) व जाहदू-(अ) फी सबीलि(अ)ल्लाहि बि अम्वालिहिम व अन्फ़ुसिहिम् ला अअ्‌ज़मु दरजतन् अिन्द-(अ)ल्लाहि[ला] व उ(व्)लाअिक हुमु(अ)ल् फ़ाअिज़ून ०

९ १९-२०

110 १ या अय्युह (अ) (अ)ल्लज़ीन आमनू(अ) ला तकूनू(अ) क(अ)ल्लज़ीन कफरू(अ) व क़ालू (अ) लि इख्वानिहिम् इज़ा ज़रबू(अ) फि(अ) ल् अर्ज़ि औ कानू(अ) ग़ुज़्ज़ (न् य्) ल्लौ कानू अिन्दना मा मातू(अ) व मा क़ुतिलू(अ)[ला] लि यज्‌अल(अ)ल्लाहु ज़ालिक हसरतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् [ता] व(अ)ल्लाहु युह्‌यी व युमीतु[ता] व(अ)ल्लाहु बि मा तअ्‌मलून बसीरुन ०

२ व लअिन् क़ुतिल्तुम् फी सबीलि(अ)ल्लाहि औ मुत्तुम् ल मग़्फ़िरतु(न्)म्मिन(अ)ल्लाहि व रह्‌मतुन् ख़ैरु(न्)म्मिम्मा यज्‌मअून ०

३ व लअि(न्)म्मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल इ(अ)ल-(य्) (अ)ल्लाहि तुह्‌शरून ०

३ १५६-१५८

२ जिन्होंने श्रद्धा रखी एव घर-द्वार छोडा तथा ईश्वर के मार्ग में तन-मन-धन से जूझे, वे ईश्वर की दृष्टि में बहुत श्रेष्ठ हैं और विजयी है।

९।१९।२०

१० सर्वोत्तम सञ्चय

१ हे श्रद्धालुओ, तुम उन लोगों के जसे मत बनो, जिन्होंने ईश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखलायी और अपने भाइयों के विषय में, जब कि वे परदेश में प्रवास को निकले हों या लड़ते हों, यह कहते रहें कि यदि वे हमारे पास रहते तो न मरते, न मारे जाते। (उनके इस कहने को) ईश्वर उनके लिए शोक का कारण बनायेगा। ईश्वर ही जिलाता है और ईश्वर ही मारता है और ईश्वर तुम्हारा सब काम देखता है।

२ और यदि तुम ईश्वर के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ, तो क्या हुआ ? ईश्वर की क्षमा और कृपा उस धन से बहुत ही श्रेष्ठ है, जिसे वे सञ्चित करते हैं।

३ और यदि तुम मर गये या मारे गये, तो अवश्यमेव ईश्वर के ही पास एकत्र किये जाओगे।

३।१५६-१५८

111 १ व म(न्) य्युहाजिर् फी सबीलि(अ्)ल्लाहि यजिद् फ़ि(अ्)ल् अर्द्दि मुराग़मन् कसीर(न) (अ्) व्वसअ़्तन् व म(न्) य्यख़्रुज मि(न्) म्बैतिही मुहाजिरन् (अ्)इल(य्अ्)ल्लाहि व रसूलिही सुम्म युद्रिक्हु (अ्)ल् मौतु फ क़द वक़अ़ अज्रुहु अल(य्) (अ्)ल्लाहि व कान (अ्)ल्लाहु ग़फूर(न् अ्)र्रहीमन् (अ्)O ४ १००

112 १ फ(अ्)ल्लज़ीन हाजरू (अ्)व अख़्रिजू (अ्)मिन् दियारिहिम व ऊज़ू(अ्)फ़ी सबीली व क़ातलू(अ्) व क़ुतिलू(अ्) ल उकफ़्फ़िरन्न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल उद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहि (अ्) (अ्)ल् अन्हारु सवाब(न्) म्मिन् अ़िन्दि (अ)ल्लाहि व (अ्)ल्लाहु अ़िन्दहु हुस्नु (अ्ल्) स्सवाबि O ३ १९५

113 १ फल् युक़ातिल फी सबीलि(अ्)ल्लाहि (अ) ल्लज़ीन यश्रून (अ्)ल् हयात(य्)व (अ्ल्)- द्दुन्या बि(अ)ल् आख़िरति व म(न्)- य्युक़ातिल फी सबीलि(अ्)ल्लाहि फ़ युक़्तल् औ यग़्लिब् फ सौफ़ नु(अ्)अ्तीहि अज्रन्(अ्) अ़ज़ीमन (अ) O ४ ७४

१११ सवत्र आश्रय

१ जो कोई ईश्वर के माग में अपनी ज मभूमि छोडेगा, वह इस विशाल भूमि में जाने के लिए बहुत स्थान एव क्षत्र पायेगा। तथा जो कोइ अपने घर से प्रस्थान कर ईश्वर एव प्रेपित की ओर चले और यदि उसे मृत्यु आ जाय, तो उसका प्रतिफल इश्वर के अधीन है। इश्वर महान्, क्षमावान् एव महान् करुणावान् है।

४ १००

११२ सवृगति

१ "जिन्होने अपनी ज मभूमि छोडी, जो अपने घरों से निकाले गये, मेरे मार्ग में त्रस्त किये गये और लडे तथा मारे गये, उन लोगो के दोष मैं अवश्य दूर करूँगा और उनको स्वग में प्रविष्ट करूँगा, जिसके नीचे नदियाँ वहती हूं। यह प्रतिफल है इश्वर की ओर से और अच्छा प्रतिफल तो इश्वर के ही पास है।

३ १९५

११३ उभय पक्ष में श्रेयस्कर

१ सो हाँ, इश्वर के माग में तो वे लोग लडें, जो ऐहिक जीवन का पारलौकिक जीवन से विनिमय करते हैं। जो कोइ इश्वर के माग में लडे और मारा जाय या विजय प्राप्त करे, तो उन दोनो स्थितियों में हम उसे महान् फल देंगे।

४ ७४

114 १ अ हसिब(अल्)नासु अ(न्)य्युत्रकू(अ्) अ(न्) य्यकूलू(अ्)आमन्ना व हुम् ला युफ्तनून O

२ व ल कद् फतन्न(अ् अ्)ल्लज़ीन मिन् क़बलिहिम् फ ल यअ्लमन्न(अ्) ल्लाहु(अ्) ल्लज़ीन सदकू(अ्) व ल यअ्लमन्न(अ्)ल् काज़िबीन O

२९ २-३

115 १ व ल नब्लुवन्नकुम् हत्ता(य्)नअ्लम(अ्)ल् मुजाहिदीन मिन्कुम् व(अल्)स्साबिरीन ला व नब्लुव(अ्)अख़्बारकुम् O

४७ ३१

116 १ व लौ बसत्व(अ्) ल्लाहु(अल्)र् रिज़्क़ लि अिबादिहही ल बग़ौ(अ्)फि (अ्)ल् अर्ज़ि व लाकी(न्)य्युनज़्ज़िलु बि क़दरि(न्)म्मा यशाअु लेम इन्नहू बि अिबादिहही ख़बीरु(न्)-म्बसीरुन् O

४२ २७

117 १ व(अ्)ल्लज़ीन जाहदू(अ्)फ़ीना ल नह्दिय्य-न्नहुम् सुबुलना लेम व इन्न(अ्)ल्लाह ल मअ(अ्)ल् मुह्सिनीन O

२९ ६९

२४ कसौटी एव आश्वासन

११४ कसौटी अवश्य होगी

१ क्या ये लोग ऐसा सोचते हैं कि वे इतना कहकर छूट जायेंगे कि हम श्रद्धा रखते हैं और उनकी कसौटी न होगी ?

२ हमने उनसे पूर्व जो थे, उनकी अवश्य ही कसौटी की है। सो ईश्वर जान लेगा उन्हें, जो सच्चे लोग हैं और जान लेगा उन्हें, जो झूठे हैं।

२९ २ ३

११५ परीक्षा होगी

१ हम निश्चय ही तुम्हारी कसौटी करेंगे जिससे कि हम तुममें से जूझनेवालों और धीरज रखनेवालों को जान लें और तुम्हारी स्थिति जाँच लें।

४७ ३१

११६ भक्तों को गरीबी का वरदान

१ यदि ईश्वर अपने दासों की जीविका अत्यधिक बढ़ा दे, तो ये दुनिया में ऊधम मचा दें। किन्तु वह जितनी चाहता है, मापकर उतारता है। निस्सन्देह वह अपने दासों का ध्यान रखनेवाला निरीक्षक है।

४२ २७

११७ साधना-मार्ग में ईश्वर मार्गदर्शक

१ जो हमारे लिए जूझते रहे उन्हें हम अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे। निस्सन्देह ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों के साथ है।

२९ ६९

118 १ व लक़द् सबक़त् कलिमतुना लि अ़िबादिन(अ्)-(अ्)ल् मुर्सलीन ० [सफ़्फ़ात]

२ इन्नहुम् ल हुमु(व्अ्)ल् मन्सूरून ० [साद]

३७ १७१-१७२

119 १ या अय्युह (अ्)(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्) इन् तन्सुरु (व् अ्)(अ्)ल्लाह यन्सुर्कुम् व युसब्बित् अक़्दामकुम् ०

४७ ७

120 १ व इज़ा सअलक अ़िबादी अ़न्नी फ़ इन्नी क़रीबुन्[गोल] उजीबु दअ़्वत (अल्) दाअ़ि इज़ा दआ़नि[ण] फ़ल् यस्तजीबू(अ्)ली वल् यु(व्) अ्मिनू(अ्) बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून ०

२ १८६

121 १ या अय्युह (अ्)(अ्) ल्लज़ीन आमनू इन् तत्तक़ु (व्अ्)(अ्) ल्लाह यज्अ़(ल्)ल्लकुम् फ़ुर्क़ान (न्)व्व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्[गोल] व (अ्)-ल्लाहु ज़ु(व्) (अ्)ल् फ़ज़्लि(अ्)ल् अ़ज़ीमि ०

८ २९

११८ भक्तों की सहायता ईश्वर का विरुद

१ हमारे दासों, प्रेषितों के लिए हमारा यह अभिवचन पहले से ही पहुँच चुका है

२ कि निस्सन्देह उन्हें अवश्यमेव सहायता दी जायगी।

३७ १७१ १७२

११९ सहायकों को सहायता मिलेगी

१ हे श्रद्धालुओ! यदि तुम ईश्वर की सहायता करोगे, तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पाँव जमा देगा।

४७ ७

१२० ईश्वर सन्निकट है

१ जब मेरे दास तुझसे मेरे विषय में पूछें (तो तू कह कि) मैं सन्निकट हूँ। पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब कि वह मुझे पुकारता है। सो उन्हें चाहिए कि वे मेरी आज्ञा मानें और मुझ पर श्रद्धा रखें, जिससे कि वे सन्मार्ग पर आयें।

२ १८६

१२१ ददामि बुद्धियोगम

१ हे श्रद्धालुओ! यदि ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, तो वह तुम्हें विवेक देगा, बुद्धि देगा और तुम्हारे दोष दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। ईश्वर महान् क्षमताशाली है।

८ २९

122 १ हुव(अ)ल्लजी' अन्ज़ल(अल्) स्सकीनत फ़ी कुलूबि(अ)ल् मु(व्) अमिनीन लि यज़्दादू'(अ) इमान(न्) (अ)म्मअ इमानिहिम्^थेव

४८४

123 १ सुम्म नुनज्जी रुसुलना व(अ) ल्लजीन आमनू (अ)क जालिक^ष हक़्क़न्(अ)अलैना नुन्जि(अ) -ल् मु(व्)अमिनीन ०

१० १०३

124 १ खुलिक (अ) ल् इन्सानु मिन् अजलिन्^थेव सउ(व्)रीकुम् आयाती फ ला तस्तअ्जिलूनि०

२१ १७

125 १ तअ्रुजु (अ)ल् मलाअिकतु व(अल्) रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् कान मिक़्दारुहु खमसीन अल्फ सनतिन् ०^व

२ फ(अ)स्बिर् सब्रन्(अ) जमीलन्(अ)०

७० ४-५

126 १ फ ला अुक्सिमु बि(अल्)शशफक़ि ०^ग

२ व(अ)ल्लैलि व मा वसक ०^ग

३ व(अ)ल् क़मरि इज (अ अ) त्तसक़ ०^ग

४ ल तर्कबुन्न तबकन् अन् तबक़िन् ०^थेव

८४ १६-१९

१२२ सान्त्वना मिलती है

१ वही है, जिसने श्रद्धावानो के हृदय में सान्त्वना उत्पन्न की, जिससे कि वे अपनी श्रद्धा के साथ श्रद्धा में और आगे बढ़ें । ४८।४

१२३ मोक्षयिष्यामि

१ फिर हम अपने प्रेषितों और उन लोगों को, जो श्रद्धायुत हुए, मोक्ष देंगे । इसी प्रकार हमारा उत्तरदायित्व है कि श्रद्धावानो को मुक्त करें । १०।१०३

२५ धीरज

१२४ शीघ्रता न कर, सकेत दिखाऊँगा

१ मनुष्य शीघ्रता का बना है। निकट भविष्य में तुम्हें प्रभु-सकेत दिखलाऊँगा । सो तुम मुझसे शीघ्रता करने को मत कहो । २१।३७

१२५ धीरज रखो

१ देवदूत और जीव उसकी ओर एक दिन में चढ़ते हैं, जिस दिन का परिमाण पचास हजार वर्ष है ।

२ सो धीरज रख, खूब धीरज रख ।

७०।४।५

१२६ क्रम क्रम से विकास

१ शपथ खाता हूँ सन्ध्या की लालिमा की,

२ और रात्रि की और उनकी, जिनको वह समेट लेती है

३ और चन्द्रमा की, जब वह पूर्ण हो जाय

४ कि तुम अवश्य क्रम-क्रम से विकास करोगे ।

८४।१६।१९

127 १ व म(न्) य्युतिअि(अ्)ल्लाह व(अल्)-
र्रसूल फ उ(व्)लाअिक मअ(अ्)ल्लज़ीन
अन्अम(अ्)ल्लाहु अलैहि(य्)म्मिन(अ्ल)-
न्नविय्यीन व(अ्ल्)स्सिद्दीक़ीन व(अ्ल्)-
श्शुहदाअि व(अ्ल्)स्सालिहीन* व हसुन
उ(व्)लाअिक रफ़ीकन्(अ्) ०

२ ज़ालिक(अ्)ल् फ़ज़्लु मिन(अ्)ल्लाहि * व
कफ़ा(य्)बि(अ्)ल्लाहि अलीमन्(अ्) ०

४ ६९-७०

128 १ व(अ्)स्विर नफ़्सक मअ(अ्)ल्लज़ीन यद्ऊन
रव्बहुम् बि(अ्)ल् गदा(व्)ति व(अ)ल्
अशिय्यि युरीदून वजहहु व ला तअ्दु अैनाक
अन्हुम् * तुरीदु ज़ीनत(अ्)ल् हया(व्)ति-
(अ्ल्) दुदुन्या*

१८ २८

129 १ फ वजदा अव्द(न्अ्)म्मिन् अिबादिना
आतैनाहु रह्मत(न्)म्मिन् अिन्दिना व
अल्लमनाहु मि(न्)ल्लदुन्ना अिल्मन्(अ)०

२ क़ाल लहु मूसा(य्)हल् अत्तविअुक अला(य्)
अन् तुअल्लिमनि मिम्मा अुल्लिमत् रुशदन्(अ्)०

१२ सत्सगति

२६ सत्सग

१२७ महापुरुषों की सगति का लाभ

१ जो ईश्वर एव उसके प्रेषित की आज्ञा माने, सो वह उन लोगों के साथ है, जिन पर ईश्वर ने दया की है, अर्थात् सन्देष्टा, सत्यभाषी, हुतात्मा, साक्षात्कारी तथा सन्त, सज्जन। ये लोग निश्चय ही अच्छे साथी ह।

२ यह ईश्वर से प्राप्त कृपावैभव ह और ईश्वर पूर्ण ज्ञानी ह।

४ ६९-७०

१२८ सत्संगति से चिपटे रहो

१ अपने-आपको उनके साथ चिपटा रख जो अपने प्रभु को प्रात - सायं पुकारते हैं और यह चाहते हैं कि वह उन पर प्रसन्न रहे। ऐहिक जीवन की जगमगाहट से तेरी आँखें उन लोगो से फिर न जायें ।

१८ २८

१२९ गुरुप्रबोध-पद्धति

१ फिर हमारे दासों में से एक दास को (मूसा ने) पाया, जिस पर हमने अनुग्रह किया था और अपने पास से ज्ञान दिया था,

२ उससे मूसा ने कहा क्या मैं तेरे साथ रहूँ, इसलिए कि जो भला माग तुझे सिखाया गया है, वह तू मुझे सिखा दे ?

127 १ व म(न्)य्युत्त्विअि(अ्)ल्लाह व(अल्)-
र्रसूल फ उ(व्)लाअिक मअ(अ्)ल्लजीन
अन्अम(अ्)ल्लाहु अलैहि(य्)म्मिन(अल्)-
नबिय्यीन व(अल्)सिद्दीकीन व(अल्)-
शुहदाअि व(अल्)स्सालिहीन* व हसुन
उ(व्)लाअिक रफ़ीकन्(अ्) O

२ जालिक(अ्)ल् फ़ज़्लु मिन(अ्)ल्लाहि * व
कफा(य्)बि(अ्)ल्लाहि अलीमन्(अ्) O

४ ६९-७०

128 १ व(अ्)स्बिर नफ्सक मअ(अ्)ल्लजीन यद्अून
रब्बहुम् बि(अ्)ल् गदा(व्)ति व(अ्)ल्
अशिय्यि युरीदून वज्हहु व ला तअ्दु अैनाक
अन्हुम् * तुरीदु जीनत(अ्)ल् हया(व्)ति-
(अल्) दुनया*

१८ २८

129 १ फ वजदा अब्द(न्अ्)म्मिन् अिबादिना
आतैनाहु रह्मत(न्)म्मिन् अिन्दिना व
अल्लमनाहु मि(न्)ल्लदुन्ना अिल्मन् (अ्)O

२ काल लहु मूसा(य्)हल् अत्तबिअुक अला(य्)
अन् तुअल्लिमनि मिम्मा अुल्लिमत् रुशदन्(अ्)O

१२ सत्सगति

२६ सत्सग

१२७ महापुरुषों की सगति का लाभ

१ जो ईश्वर एव उसके प्रेषित की आज्ञा माने, सो वह उन लोगों के साथ है, जिन पर इश्वर ने दया की है, अर्थात् सन्देष्टा, सत्यभाषी, हुतात्मा, साक्षात्कारी तथा सन्त, सज्जन। ये लोग निश्चय ही अच्छे साथी हैं।

२ यह ईश्वर से प्राप्त कृपावैभव है और ईश्वर पूण ज्ञानी है।

४ ६९-७०

१२८ सत्संगति से चिपटे रहो

१ अपने-आपको उनके साथ चिपटा रख, जो अपने प्रभु को प्रात-सायं पुकारते हैं और यह चाहते ह कि वह उन पर प्रसन्न रहे। ऐहिक जीवन की जगमगाहट से तेरी आँखें उन लोगों से फिर न जायें ।

१८ २८

१२९ गुरुप्रबोध-पद्धति

१ फिर हमारे दासों में से एक दास को (मूसा न) पाया, जिस पर हमने अनुग्रह किया था और अपने पास से ज्ञान दिया था,

२ उससे मूसा ने कहा क्या मैं तेरे साथ रहूँ इसलिए कि जो भला मार्ग तुझे सिखाया गया ह, वह तू मुझे सिखा दे ?

३ काल इस्सक लन् तस्तत्वीअ मअिय सब्रन् (अ्)०

४ व कैफ़ तस्बिरु अला (य्) मा लम् तुहित् बिहीं खुब्रन् (अ्)०

५ क़ाल सतजिदुनी' इन् शाअ (अ्) ल्लाहु साबिरन् (अ्) व्व ला अअ्सी लक अम्रन् (अ्)०

६ काल फ़ इनि (अ्) त्तबअ्तनी फ ला तस्अलनी अन् शय्अिन् हत्ता (य्) उह्दिस लक मिनहु जिक्रन् (अ्)०

१८ ६५-७०

130 १ व मा कान (अ्) ल् मु (व्) अ्मिनून लि यन्फ़िरू-(अ्) काफ्फ़तन् फ लौ ला नफर मिन् कुल्लि फिरक़ति (न्) म्मिन्हुम् त्ताअिफतु (न्) ल्लि यतफक्क़हू (अ्) फि (अ्ल्) द्दीनि व लि युन-जिरू (अ्) क़ौमहुम् इजा रजअू' (अ्) इलैहिम् लअल्लहुम् यह्जरून ०

९ १२२

131 १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लजीन आमनु (व्अ्)-(अ्) त्तकु (य्) (अ्) (अ्) ल्लाह हक्क़ तुक़ातिहीं व ला तमूतुन्न इल्ला व अन्तु (म्) म्मुस्लिमून०

३ वह बोला तू कदापि मेरे साथ धीरज न रख सकेगा।
४ और तू क्योंकर धीरज रखेगा ऐसी बात के सम्बन्ध में, जो तेरी समझ की परिधि में नहीं है।

५ मूसा ने कहा यदि ईश्वर ने चाहा, तो तू अवश्य मुझे धीरज रखनेवाला पायेगा और मै तेरी किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।
६ वह बोला फिर यदि तू मेरा अनुसरण करता है, तो मुझसे किसी बात के विषय में कोई प्रश्न न करना, जब तक मैं तेरे लिए उसके निर्देश का प्रारम्भ न करूँ।

१८.६५–७०

१३० स्वाध्याय के लिए कुछ लोग पीछे रहें

१ श्रद्धावानों के लिए उचित नहीं कि सब-के-सब कूच कर जायें। उनके हर समुदाय में से एक भाग क्यों न कूच करे, जिससे कि शेष लोग धर्म का ज्ञान प्राप्त करें। जिससे कि ये लोग अपने समाज को, जब कि वह युद्ध से लौटकर आये, सावधान करें, जिससे कि वह समाज धर्म के विषय में सचेत रहे।

९.१२२

१३१ सज्जनों का समाज बनाओ

१ हे श्रद्धावानो! ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, जैसा कि करना चाहिए, और ऐसी ही स्थिति में मरो कि तुमने सम्पूर्णतया ईश्वर की शरण ली है।

२ व(अ)अ़्तसिमू(अ)बि हब्लि(अ)ल्लाहि जमीअ(न्)(अ)व्व ला तफर्रक़ू(अ)व्वज़्(अ) व(अ)ज़्कुरू(अ)निअ्मत(अ)ल्लाहि अ़लै-कुम् इज़् कुन्तुम् अअ़्दाअन् फ़ अल्लफ़ बन क़ुलूबिकुम् फ़ अस्बह्तुम् बिनिअ्मतिहीं इख़्वानन् व कुन्तुम् अ़ला(य्) शफ़ा हुफ्रति-(न्)म्मिन(अल्)न्नारि फ अन्क़ज़कु(म्)-म्मिन्हा कज़ालिक युबय्यिनु(अ)ल्लाहु लकुम् आयातिहीं लअ़ल्लकुम् तह्तदून०

३ वल् तकु(न्)म्मिन्कुम् उम्मतु(न्)य्यद्ऊन इल(य्)(अ)ल् ख़ैरि व यअ्मुरून बि(अ)-ल् मअ़्रूफि व यन्हौन अ़नि(अ)ल् मुन्करि व उ(व्)लाइक हुमु(अ)ल् मुफ़्लिहून ०

३ १०२-१०४

132\. १ व मा मिन् दाब्बतिन् फि(अ) ल् अर्ज़ि व ला त्वाइरी(न्)य्यत़ीरु बि जनाहैहि इल्ला उममुन् अमसालुकुम्

६ ३८

२ और तुम सब मिलकर ईश्वर की रस्सी दृढ़ता से पकड़ो और बिखर न जाओ। तुम पर ईश्वर की जो दया है, उसे याद करो कि जब तुम परस्पर शत्रु थे, तो ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में स्नेह डाला और अब तुम उसकी दया से भाई-भाई हो गये तथा तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे, सो तुमको ईश्वर ने उससे बचाया। इस प्रकार ईश्वर अपने संकेत तुम्हारे लिए वर्णन करता है, जिससे कि तुम मार्ग प्राप्त करो।

३ तुममें से एक समाज ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाता रहे और अच्छे कामों की आज्ञा करे और बुराई का निषेध करे। ये ही लोग हैं, जो साफल्य पानेवाले हैं।

३ १०२-१०४

१३२ पशु-पक्षी-समाज मनुष्यवत्

१ भूमि में चलनेवाले जो भी पशु हैं और अपने दोनों पंखों से उड़नेवाले जो भी पक्षी हैं, उनके तुम्हारे ही भाँति समाज हैं ।

६ ३८

133 १ इन्नमा मसलु(अ्)ल् हया (व्)त्वि(अल)-
द्दुन्या क माअिन् अन्जलनाहु मिन (अ्ल्)-
स्समाअि फ़(अ्)ख्तलत्व बिही नबातु(अ्)ल्
अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलु(अ्ल्)भासु व(अ्)ल
अन्आमुणेम हत्ता (य्) इजा अख़जति(अ्)ल्
अर्ज़ु जुख़रुफहा व (अ्) ज़्जय्यनत् व जन्न
अह्लुहा अन्नहुम् कादिरून अलैहाण अताहा
अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़जअ्लनाहा
हसीदन्(अ्)क अ(न्)ल्लम् तग्न बि(अ्)ल्
अम्सिणेप क जालिक नुफस्सिलु (अ्)ल् आयाति
लि क़ौमी(न्) य्यतफक्करून ०

१०२४

134 १ मसलु मा युन्फिक़ून फ़ी हाजिहि (अ्)ल
हया(व)त्वि(अ्ल्) द्दुन्या क मसलि रीह्रिन्
फीहा सिर्रुन् असावत् हर्स कौमिन्जलमू'(अ्)
अन्फ़ुसहुम् फअह्लकत्हुणेव व मा जलमहुमु-
(अ्)ल्लाहु व लाकिन् अन्फ़ुसहुम् यज्लिमून०

३११७

१३ अनासक्ति

२७ ससार अनित्य

१३३ उजडा बगीचा

१ ऐहिक जीवन की स्थिति तो ऐसी है, मानो हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उससे भूमि की वनस्पति, जिसको मनुष्य और प्राणी खाते हैं खूब घनी होकर निकली, यहाँ तक कि जब भूमि ने अपना श्रृगार किया और प्रियदर्शिनी हुई तथा भूमिवालों ने यह विचार किया कि यह वैभव अब हमारे हाथ लगेगा, अचानक उस पर रात को या दिन को हमारी आज्ञा जा पहुँची और हमने उसे काटकर ढेर कर डाला, मानो कि कल यहाँ वह उपस्थित ही नहीं थी। इस प्रकार हम सकेतों को विस्तार से वणन करते हैं उन लोगों के लिए, जो विचार करते हैं।

१०२४

१३४ फसल पर पाला

१ लोग इस ऐहिक जीवन में जो कुछ व्यय करते हैं, उसका दृष्टान्त ऐसा है, जैसे एक हवा हो, जिसमें पाला हो, यह हवा ऐसे लोगों की खेती को लग जाय, जिन्होंने अपने तई बुरा किया था—सो उस हवा ने उसे चौपट कर डाला और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वय ही अपने पर अत्याचार करते ह।

३११७

135 १ व(अ)द्रिब लहु(म)म्मसल(अ)ल् हया(व)-
वि(अल्)द्दुन्या क माअिन् अन्ज़लनाहु मिन-
(अल्)स्समाअि फ(अ)ख़्तलत विही नवातु
(अ)ल् अर्दि फअस्बह् हशीमन्(अ)तज़्रहु-
(अल्)र्रियाहु व कान(अ)ल्लाहु अला(य्)
कुल्लि शय्अि(न्)म्मुक्तदिरन्(अ) ०
२ अल् मालु व(अ)ल् बनून ज़ीनतु(अ)ल्
हया(व्)ति (अल्)द्दुन्या व(अ)ल्
बाक़ियातु(अल्) स्सालिहातु ख़ैरुन् अिन्द
रब्बिक सवाब(न्) व ख़ैरुन् अमलन्(अ)०

१८ ४५ ४६

136 १ इन्ना जअलना मा अल (य्)(अ)ल् अर्दि
ज़ीनत(न्)ल्लहा लि नब्लुवहुम अय्युहुम्
अह्सनु अमलन्(अ) ०

१८ ७

137 १ व मा जअलना लि बशरि(न्)म्मिन् क़ब्लिक
(अ)ल् ख़ुल्द अ फ(अ)अि(न्)म्मित्त फ़
हुमु(अ)ल् ख़ालिदून ०

१३५ इह लोक क्षणभंगुर

१ ऐहिक जीवन का दृष्टान्त उनसे वर्णन कर जैसे हमने आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें से भूमि की वनस्पति खूब घनी हो गयी, फिर वह ऐसी चूर-चूर हो गयी कि हवाएँ उसे उड़ाये फिरती हैं। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ सम्पत्ति और सन्तति ऐहिक जीवन की कसौटी है और शेष रहनेवाली हैं सत्कृतियाँ। तेरे प्रभु के निकट प्रतिफल में ये अधिक अच्छी हैं और आकांक्षा की दृष्टि से भी श्रेष्ठतर हैं।

१८.४५ ४६

१३६ संसार की शोभा परीक्षा के लिए

१ निस्सन्देह जो कुछ भूमि के ऊपर है, उसे हमने भूमि का शृंगार बनाया है, जिससे कि हम लोगों की कसौटी करें कि उनमें कौन अच्छा काम करता है।

१८.७

१३७ अमर पट्टा किसीको भी नहीं

१ हमने तुझसे पूर्व किसी मनुष्य को अमरता प्रदान नहीं की, फिर क्या तू मर गया, तो क्या ये लोग सदा जीवित रहेंगे ?

२ कुल्लु नफ्सिन् ज़ाअिक़त्तु (अ्) ल् मौति ^गोव^ व नव्लूकुम् बि (अ्ल्) शृर्शरि व (अ्) ल् ख़ैरि फ़ित्नतन्^गोव^ व इलैना तुर्जअून ० २१ ३४ ३५

138 १ अ तुत्रकून फी मा हाहुना आमिनीन ०^मा^

२ फी जन्नाति (न्) व्व अुयूनि (न्) ०^मा^

३ व्व ज़ुरूअि (न्) व्व नख़्लिन् त़ल्अ़ुहा हृज़ीमुन् ०^र^

४ व तन्हितून मिन (अ्) ल् जिबालि बुयूतन् (अ) फ़ारिहीन ०^र^ २६ १४६ १४९

139 १ व मा हाज़िहि (अ्) ल् हृया (व्) त्तु (अ्ल्) द्दुन्या इल्ला लह्वू (न्) व्व लअिबुन् ^गोव^ व इन्न (अ्ल्)-द्दार (अ्) ल् आख़िरत ल हिय (अ्) ल् हृयवानु^म^ लौ कानू (अ्) यअ़्लमून ० २९ ६४

140 १ ज़ुय्यिन लि (ल्) न्नासि हुब्बु (अ्ल्) श्शहवाति मिन (अ्ल्) न्निसाअि व (अ्) ल् बनीन व (अ्) ल् क़नातीरि (अ्) ल् मुक़न्तरति मिन (अ्ल्)-ज़्ज़हबि व (अ्) ल् फ़िद्दति व (अ्) ल् ख़ैलि-(अ्) ल् मुसव्वमति व (अ्) ल् अन्आमि व-(अ्) ल् हृर्सि ^गोव^ ज़ालिक मताअु (अ्) ल् हृया (व्) ति (अ्ल्) द्दुनया^र^ व (अ्) ल्लाहु अिन्दहू हुस्नु (अ्) ल् मआबि ० ३ १४

२ प्रत्येक जीव को मृत्यु चखनी है। और हम बुरी और भली स्थितियों द्वारा तुम्हारी खूब कसौटी करते हैं। फिर हमारे ही पास तुम लौटाये जाओगे।

२१ ३४ ३५

१३८ तू सुरक्षित है ?

१ क्या तुमको उन सबमें, जो यहाँ हैं बेखटके छोड़ दिया जायगा ?
२ उद्यानों में, झरनो में
३ और खेतों में। खजूरों में, जिनके गुच्छे टूटे पड़ते हैं।
४ (यद्यपि तुम) पर्वतों में इतराते हुए घर तराशते (रहोगे)।

२६ १४६ १४९

१३९ ऐहिक ससार एक खेल

१ यह ऐहिक जीवन तो मनोरजन एव क्रीडा के अतिरिक्त कुछ भी नही और वास्तविकता यह है कि अन्तिम गृह ही जीवन है। अरे-अरे ! यदि ये लोग जानते !

२९ ६४

१४० वासनाओं के विषय

१ वासनाओं को आकृष्ट करनेवाले विषयों के प्रेम ने लोगों को आसक्त किया है। जसे, स्त्रियाँ पुत्र, स्वर्ण-रजतराशि, अकित अश्व, पशु तथा कृषि। यह ऐहिक जीवन का मूल्धन है पर ईश्वर के पास ही अच्छा आश्रय है।

३ १४

141 १ व ला तमुद्दन्न अ़ैनैक इला(य्)मा मत्तअ़्ना बिही' अज़्वाज(न्अ्) म्मिन्हुम् ज़हू्रत(अ)ल् हया(व्)ति(अ्ल्)द्दुन्या ० मा लि नफ़्तिन-हुम् फीहि ग़ैर व रिज़्क़ु रब्बिक ख़ैरु(न्)व्व अबका(य्) ०

२० १३१

142 १ अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव ग़ैर व अ़ल(य्) (अ्)ल्लाहि फल् यतवक्कलि (अ)ल मु(व्)अ्मिनून ०

२ या अय्युह (अ्)(अ्) ल्लज़ीन आमनू' इन्न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्व(अ्)-ल्लकुम् फ़(अ्)ह्ज़रूहुम् व इन् तअ़्फू(अ्) व तस्फ़हू(अ्) व तग़फिरू(अ्) फ इन्न (अ्)ल्लाह ग़फूरु(न्)र् रहीमुन् ०

६४ ११ १४

143 १ इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्नतुन् ग़ैर व(अ्)ल्लाहु अ़िन्दहु अज्रुन(अ्)अ़ज़ीमुन् ०

२ फ(अ्)त्तकु(अ्) (अ्)ल्लाह म(अ्)(अ्)स्ततअ़्तुम् व(अ्)स्मअ़ू(अ्)व अतीअ़ू(अ्)व अन्फ़िकू(अ्)

२८ वैराग्य

१४१ भोग विलास की लालसा न रखो

१ और अपनी आँखें उन वस्तुओं की ओर न पसार, जो हमने उन युग्मों को ऐहिक जीवन की जगमगाहट के रूप में लाभ उठाने के लिए दे रखी है कि उन्हें उन वस्तुओं के द्वारा जाँचें। और तेरे प्रभु की देन अधिक हितावह एवं निरन्तर स्थायी रहनेवाली है।

२० १३१

१४२ स्त्री-पुत्रों में शत्रु सम्भव

१ परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और श्रद्धावानों को चाहिए कि वे परमात्मा पर ही विश्वास करें।

२ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारी स्त्रिया और पुत्रों में तुम्हारे शत्रु सम्भव हैं। सो तुम उनसे बचो। और यदि तुम उनके दोषों को भूल जाओ उनकी त्रुटियो की ओर ध्यान न दो एव उन्हें क्षमा कर दो (तो) निस्सन्देह परमात्मा क्षमावान् करुणावान् है।

६४ १३ १४

१४३ नि स्वार्थी रहो

१ तुम्हारी सम्पत्ति एव तुम्हारी सन्तति तुम्हारे लिए कसौटी है और ईश्वर के ही पास सर्वोत्तम पुरस्कार है।

२ तो यथासम्भव ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो और सुनो और मानो तथा उसके मार्ग में धन व्यय करो।

ख़ैर(न्) (अ्)ल्लि अनफ़ुसिकुम् ^तोग़ व म(न्)-
यूक शुह्ह नफ़्सिही फ उ (व्) लाअिक
हुमु(अ्)ल् मुफ़्लिहून् ०

१४ १५ १६

144 १ या अय्युह(अ्) (अ्)न्नासु इन्न वअ्द(अ्)ल्लाहि
हक़्क़ुन फ ला तग़ुर्रन्नकुमु(अ्)ल् हया(व्)तु-
(अल्)द्दुन्या ^वकफ़ व ला यग़ुरन्नकुम् वि-
(अ्)ल्लाहि(अ्)ल् ग़रूरु ०

२ इन्न(अल्)श्शैतान लकुम् अदुव्वुन् फ(अ्)त्तख़िज़ू
अदुव्वन्(अ्) ^तोग़ इन्नमा यदऊ(अ्) हिज़्बहु
लि यकूनू(अ्) मिन्अस्हाबि(अल्)स्सअीरि ०^पम

३५ ५ ६

145 १ मन् कान युरीदु हर्स(अ्)ल् आख़िरति नज़िद्
लहु फ़ी हर्सिही^ज़ व मन् कान युरीदु हर्स-
(अल्)द्दुन्या नु(व्) अतिही मिन्हा व मा
लहु फि(अ्)ल् आख़िरति मि(न्)न्नसीबिन् ०

४२ २०

इसमें तुम्हारा अपना भला है और जो लोग अपने लोभ से बचा लिये जायें, वे ही लोग सफलता पानवाले हैं।

६४ १५ १६

१४४ शैतान से सावधान !

१ हे लोगो, निश्चय ही इश्वर का अभिवचन सच्चा है। सो तुम्हें ऐहिक जीवन धोखे में न डाले और कपटी शतान इश्वर के विषय में तुम्हें कदापि धोखा न दे।

२ निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है, सो तुम भी उसे शत्रु समझो, यह अपनी टोली को इसलिए बुलाता है कि वे नारकीय *आगवालों में से हो जायें, (नरक के भागी बन जायें)।*

३५ ५ ६

१४५ लोक साहु परलोक निबाहु

१ जो कोइ परलोक की फसल चाहता ह, हम उसे उसकी खेती में अधिक देते हैं और जो कोइ इहलोक की फसल चाहता है, उसे हम इहलोक में से कुछ देते हैं। उसे परलोक में कोई भाग नहीं मिलता।

४२ २०

खण्ड ४

भक्त-अभक्त

146 १ इन्न(अ्)ल् मुस्लिमीन व(अ्)ल् मुस्लिमाति व(अ्)ल् मु(व्) अ्मिनीन व(अ्)ल मु(व्) अ्मिनाति व(अ्)ल् कानितीन व(अ)ल् कानिताति व(अ्ल्) स्स़ादिक़ीन व (अ्ल)-स्स़ादिक़ाति व(अ्स्)स्स़ाबिरीन व(अ्ल्)-स्स़ाबिराति व(अ्)ल् ख़ाशिअ़ीन व(अ)ल् ख़ाशिआ़ति व(अ्)ल् मुतस़द्दिक़ीन व(अ)ल् मुतस़द्दिक़ाति व(अ्ल्)स्स़ाअिमीन व(अ्ल्)-स्स़ाअिमाति व(अ्)ल् ह़ाफिज़ीन फ़ुरूजहुम् व(अ्)ल् ह़ाफिज़ाति व(अ्ल्) ज़्ज़ाकिरीन-(अ्)ल्लाह कसीर(न्)(अ्)व्व (अ्ल्)-ज़्ज़ाकिराति[ण] अअ़द्द(अ्)ल्लाहु लहु(म)-म्मग़्फिरत(न्)व्व अज्रन् अ़ज़ीमन्(अ्) O

११ १५

147 १ इन्न(अ्)ल् मुत्तक़ीन फी जन्नाति(न्)व्व अ़ुयूनिन् O[ण]

२ आखिज़ीन मा आताहुम् रब्बुहुम् [गोम] इन्नहुम् कानू कब्ल ज़ालिक मुह़्सिनीन O[गम]

३ कानू क़लील(न्)म्मिन(अ्)ल्लैलि मा यह्जअ़ून O

४ व बि(अ्)ल् असह़ारिहुम् यस्तग़्फ़िरून O

५ व फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्कु(न्)ल्लि(ल्)-स्साअिलि व(अ्)ल् मह़्रूमि O ५१ १५ १९

१४ भक्त-लक्षण

२९ दशलक्षणी

१४६ दशलक्षण

१ शरणागत एव शरणागता, श्रद्धावान् एव श्रद्धावती, आज्ञा पालक एव आज्ञापालिका, सत्यभाषी एव सत्यभाषिणी, धीर एव धीरा, विनीत एव विनीता, दाता एव दात्री, उपवासी एवं उपवासिनी, शीलरक्षक एवं शीलरक्षिका तथा ईशस्मरणशील एव ईश-स्मरणशीला—इनके लिए ईश्वर ने क्षमा एव महान् पुण्यफल सन्नद्ध कर रखा है।

३३ ३५

३० प्रार्थनावान्

१४७ कामिनि मार्गहि योगी

१ निस्सन्देह ईश्वर-कर्म-परायण व्यक्ति स्वर्ग के उद्यानों एव निझरों में निवास करेंगे।

२ उनका प्रभु उन्हें जो देगा, सो लेते रहेंगे। वे इससे पूर्व सदाचारी थे।

३ वे रात को बहुत थोड़ा सोते थे

४ और पिछली रात में अपने पापों के लिए क्षमा माँगते थे

५ और उनकी सम्पत्ति में भिक्षुकों एव सर्वहाराओं का अधिकार था।

५१ १५-१९

148 १ इन्नमा यु(व्) अमिनु बि आयातिन(अ्) (अ)-
ल्लजीन इजा जुक्किरू(अ्) बिहा खर्रू(अ्)
सुज्जद(न् अ्)ˇव्व सव्वहू(अ्) बि हम्दि रब्बि
हिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून O
२ ततजाफा(य्) जुनूबुहुम् अनि(अ्) ल मज्राजिअि
यद्अून रव्वहुम् खौफ(न्)ˇव्व तमअन् व
मिम्मा रजक्नाहुम् युन्फ़िक़ून O
३ फ ला तअ्लमु नफ्सु(न्) म्मा उख्फिय लहु(म्)-
म्मिन् क़ुर्रति अअ्युनिन् ■ जज़ाअ (न्) म् बि मा
कानू (अ्) यअ्मलून O

३२ १५ १७

149 १ तराहुम रुक्कअन्(अ्) सुज्जद(न् अ्)-
ˇय्यब्तगून फज़्ल(न् अ्) म्मिन(अ) ल्लाहि व
रिद्वानन्(अ्)■ सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहि(म्)-
म्मिन् असरि(अ्ल्) स्सुजूदि जालिक मसलु-
हुम फि (अ्ल) त्तौराति व मसलुहुम्
फ़ि(अ्) ल् इन्जीलि क जर्अिन् अख्रज
शत्अहु फ आज़रहु फ(अ्) स्तग्लज फ-
(अ्) स्तवा (य्) अला (य्) सूक़िही युअ्जिबु-
(अ्ल्) ज्जुर्राअ

४८ २९

१४८ बिस्तर से पीठ नहीं छूती

१ हमारे वचनों को वही मानते हैं कि जब उन्हें उन वचनों के द्वारा समझाया जाता है, तो वे प्रणिपात में गिर पड़ते हैं और अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसका स्मरण करते हैं और घमण्ड नहीं करते।

२ उनकी करवटें बिछौने से छूती नहीं। अपने प्रभु को भय एवं आशा के साथ पुकारते हैं और हमारा दिया हुआ हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

३ और कोई नहीं जानता कि उनके लिए उनका प्रसन्नता देनेवाली क्या-क्या वस्तुएँ छिपा रखी गयी हैं। यह प्रतिफल है उनकी कृतियों का।

३२ १५–१७

१४९ माथे पर घट्ठे

१ तू देखेगा उनको प्रणाम करते हुए, प्रणिपात करते हुए, ईश्वर का कृपा-वैभव एवं उसकी प्रसन्नता ढूँढ़ते हुए। उनकी पहचान उनके माथे पर प्रणिपात के घट्ठे हैं। यही है उनका दृष्टान्त तौरात में और यही है उनका दृष्टान्त बाइबिल में। जैसे कि खेती ने अपना अँखुआ निकाला फिर उसको मजबूत किया, फिर मोटा हुआ और अपने तने पर ऐसा सीधा खड़ा हो गया कि किसानों को प्रसन्न करने लगा ।

४८.२९

150 १ इन्नम(अ् अ्)ल् मु(व्)अ् मिनून(अ्) ल्लजीन
इजा जुकिर(अ्) ल्लाहु वजिलत् कुलूबुहुम
व इजा तुलियत् अलैहिम् आयातुहू जादतहुम्
इमान (न्) (अ्) व्व अला(य्) रब्बिहिम
यतवक्कलून ०[वक़ा]
८.१

151 १ 'व बश्शिरिल् मुख्बितीन ०[ण]
२ (अ्) ल्लजीन इजा जुकिर(अ्) ल्लाहु वजिलत्
कुलूबुहुम् व (अल्) साबिरीन अला(य्)
मा असाबहुम् व (अ्)ल् मुकीमि(य्) (अल्)-
सला(व्) ति[अ] व मिम्मा रजकनाहुम्
युन्फिकून० २२.१४ १५

152 १ तबारक(अ्) ल्लजी जअल फि(अल्) समाअि
बुरूजन् (अ्) व्व जअल फीहा सिराज(न्) व्व
क़मर(न) (अ्) म्मुनीरन् (अ्)०
२ व हुव(अ्) ल्लजी जअल (अ्) ल्लैल व
(अल्) न्नहार खिल्फव(न्) ल्लि मन अराद
अ(न्) य्यज्जक्कर औ अराद शुकूरन्०
३ व अिबादु (अल्)र् रह्मानि (अ्)ल्लजीन
यम्शून अल(य्) (अ्)ल् अर्ज़ि होन(न्अ) व्व
इजा खातबहुमु (अ्)ए् जाहिलून कालू (अ्)
सलामन् (अ्)०

१५० कम्पित-हृदय

१ श्रद्धावान् वे ही हैं कि जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है, तो उनके हृदय कम्पित होते हैं और जब उनके सम्मुख उसके वचन पढ़े जाते हैं, तो वे वचन उनकी श्रद्धा बढ़ाते हैं और वे अपने प्रभु पर विश्वास रखते हैं।

८२

१५१ विनम्र

१ शुभ सन्देश दे उन विनम्रों को।
२ कि जिनके हृदय कम्पित हो उठते हैं, जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है। जो आ पड़नेवाले संकट में धीरज रखते हैं और जो नित्य-नियत प्रार्थना करते हैं और हमारे दिये में से हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

२२ ३४ ३५

१५२ कृपालु के दास

१ मंगलप्रद है वह, जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये और उसमें एक प्रचण्ड दीप एवं प्रकाशमान चन्द्र बनाया,
२ और वही है, जिसने अदलते-बदलते आगे-पीछे आनेवाले रात और दिन बनाये, ये सब उनके लिए संकेत हैं, जो सोचना चाहते हैं और कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं।
३ और कृपालु के दास वे हैं, जो भूमि पर नम्रता से चलते हैं और जब बेसमझ लोग उनसे बातें करते हैं, तो कहते हैं 'भाई सलाम!'

४ व (अ)ल्लजीन यबीतून लि रब्बिहिम् सुज्जद (न्अ)व्व कियामन्O

२५ ६१-६४

153 १ व मिन (अ्ल्) न्नासि म (न) य्यश्री नफ्सहु (अ)-व्तिग़ाअ मर्दाति (अ्) ल्लाहिगोल व (अ्)ल्लाहु रअूफु (न्)म् बिल् अिबादिO

२ २०७

154 १ इन्न (अ्) ल्लजीन आमनू व हाजरू (अ्) व जाहदू (अ्) बि अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् फी सबीलि (अ्) ल्लाहि व (अ्) ल्लजीन आवौ (अ्) व्व नसरू (अ्) उ (व्) लाअिक बअ्दुहुम् औलियाअु बअ्ज़िन्

८.७२

155 १ अला इन्न औलियाअ (अ्) ल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून O१

२ अल्लजीन आमनू (अ्) व कानू (अ्) यत्तक़ूनOगोल

३ लहुमु (अ) ल् बुश्रा (य्) फि (अ्) ल् हयात (व) ति (अ्ल्) द्दुन्या व फि (य्) (अ) ल् आखिरतिगोल ला तब्दील लि कलिमाति (अ्) ल्लाहिगोल जालिक हुव (अ्) ल् फौज़ु (अ्) ल अज़ीमु Oगोल

१० ६२-६४

४ जो लोग अपने प्रभु के समक्ष प्रणिपात में और खड़े-खड़े रात्रि बिताते हैं।

२५ ६१-६४

३१ निष्ठावान्

१५३ मच्चित्ता मद्गतप्राणा

१ लोगों में ऐसे भी हैं, जो ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अपने प्राणों को बेच डालते हैं। ईश्वर अपने दासों पर बहुत स्नेह करनेवाला है।

२ २०७

१५४ अन्योन्य मित्र

१ निस्सन्देह जो लोग श्रद्धा रखते हैं, जिन्होंने अपनी जन्मभूमि छोड़ी और तन-मन-धन से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे तथा जिन लोगों ने उन्हें आश्रय दिया और सहायता की, ये लोग अन्योन्य मित्र हैं।

८७२

१५५ परमात्मा के मित्र

१ स्मरण रखो, जो परमात्मा के मित्र हैं, उनको न भय है, न शोक।

२ ये वे लोग हैं, जो श्रद्धा रखते हैं और संयम से रहते हैं।

३ उनके लिए इहलोक के जीवन में और परलोक के जीवन में शुभ सन्देश है। परमात्मा की बातें परिवर्तित नहीं होतीं।

१० ६२-६४

156 १ ला तजिदु क़ौम (न्) य्यु(व्) अमिनून वि (अ्)ल्लाहि व (अ्)ल् यौमि(अ्)ल् आख़िरि युवाद्दून मन् ह़ाद्द(अ्)ल्लाह व रसूलहू व लौ कानू[1](अ्) आबाअहुम् औ अब्नाअहुम् औ इख़्वानहुम् औ अशीरतहुम्[णेम] उ(व्)लाअिक कतव फ़ी क़ुलूबिहिमु(अ्)ल् ईमान व अय्यदहुम् बि रूहि(न्)म्मिनहु[णेष्व] युद्खिलुहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तह़्तिह(अ्) (अ्)ल् अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा[णेम] रज़िय(अ्)ल्लाहु अन्हुम् व रज़ू(अ्)अनहु[णेम] उ(ल)लाअिक ह़िज़्बु (अ्) ल्लाहि[णेम] अला इन्न ह़िज़्ब-(अ्)ल्लाहि हुमु(अ्)ल् मुफ़्लिहूनO

५८ २२

157 १ या अय्युह(अ्)ल्लज़ीन आमनु(स्अ्) (अ्)स्त-अीनू(अ्) बि(अ्ल्)स़्स़ब्रि व (अ्ल्)-स़्स़लाति[णेम] इन्न (अ्)ल्लाह मअ(अ्ल्)स़्स़ा-'बिरीन O

२ व ला तक़ूलू(अ्)लि म(न्) य्युक़्तलु फ़ी सबीलि(अ्) ल्लाहि अम्वातुन्[णेम] बल अह़्या-अु(न्) व्व लाकि(न्)ल्ला तश्अुरून O

१५६ ईश्वर की भक्त-मण्डली

१ तू न पायेगा ऐसे लोगों को, जो ईश्वर एव अन्तिम दिन पर श्रद्धा रखते हुए उन लोगो से मित्रता रखते हों, जो ईश्वर एव उसके प्रेषित के विरोधी हं, फिर भले ही वे उनके पिता हों, पुत्र हों, भाइ हों या उनके कुटुम्बी हों। ये ही लोग हैं, जिनके मन में इश्वर ने श्रद्धा लिख दी है और अपने दातृत्व से जिनकी सहायता की है। यह उन्हें ऐसी वाटिकाओ में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी। वे उनमें नित्य रहेंगे। इश्वर उनसे प्रसन्न और वे उससे प्रसन्न। यह इश्वर की भक्त-मण्डली हैं, खूब सुन लो, इश्वर की मण्डली ही सफलता प्राप्त करनेवाली है।

५८.२२

३२ धैर्यवान्

१५७ सहनशील

१ हे श्रद्धावानो! धीरज से और प्रार्थना के साथ ईश्वर से सहायता चाहो, निस्सन्देह इश्वर धीरज रखनेवालो के साथ है।

२ और जो इश्वर के माग में मारे जाते ह, उनको मरा हुआ न कहो, अपितु वे जीवित ह। पर तुम नहीं समझते।

३ व ल नब्लुवन्नकुम् बि शय्अि (न्) म्मिन (अ्) ल् खौफि व (अ्) ल् जूअि व नक़्सि (न्) म्मिन (अ)- ल् अम्वालि व (अ) ल् अन्फ़ुसि व (अ्ल)- सूसमरातिगोम व बश् शिरि (अ्ल्) स्साबिरीन०ण

४ (अ्) ल्लजीन इजा असावत्हु (म्) म्मुसीबतुनश काल् (अ्) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलहि राजिअून ०गोम

५ उ (व्) लाअिक अ़लैहिम् सल्वातु (न्) म्मि (न्) र्रब्बिहिम् व रहमतुन शफ व उ (व्) लाअिक हुमु (अ्) ल् मुह्तदून ०

२ १५३-१५७

158 १ व सारिअ़् इला (य्) मग़फिरत्नि (न्) म्मि (न्)- र्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र् दुह (अ्ल्)- स्समावातु व (अ्) ल् अर्दु ण अुअिद्दत लिल् मुत्तक़ीन ०ग

२ (अ्) ल्लजीन युनफ़िक़ून फि (अ्ल्) स्सर्राअि व (अ्ल्) ज़्ज़र्राअि व (अ्) ल् काजिमीन (अ्) ल् ग़ैज व (अ्) ल् आफीन अ़नि (अ्ल्) न्नासि गोम व (अ्) ल्लाहु युहिब्बु (अ) ल् मुह्सिनीन ०र

३ और हम तुम्हारी कसौटी अवश्य करेंगे, कुछ भय द्वारा, कुछ क्षुधा द्वारा और कुछ धन, प्राण और फलों की हानि द्वारा। शुभ सन्देश सुना दे धीरज रखनेवालो को—
४ कि जब उन्हें कुछ कष्ट पहुँचे, तो कह कि हम तो ईश्वर के ही हैं, और हम उसीकी ओर लौटकर जानेवाले है।
५ ऐसे लोगों पर उनके प्रभु की ओर से दया है और कृपा है और ये ही लोग ठीक रास्ते पर हैं।

२ १५३–१५७

३३ अहिंसक

१५८ क्षमाशील

१ अपने प्रभु की क्षमा की ओर दौड़ो, तथा स्वर्ग की ओर, जिसकी व्यापकता में आकाश एव भूमि समाविष्ट है, जो सन्नद्ध रखा गया है, पाप से बचनेवालों के लिए।
२ (वे) सम्पन्नता एव विपन्नता में हमारे मार्ग म व्यय करते है, क्रोध पी जाते है और लोगों के दोषों की ओर ध्यान नहीं देते—और ईश्वर सत्कृति करनेवालों पर प्रेम करता है

३ व (अ्)ल्लजीन इजा फअ्लू (अ्) फ़ाहिशतन् आ जलमू (अ्) अन्फुसहुम् जकरु (व्अ् अ्)ल्लाह फ (अ्)स्तग्फरू (अ्)लि जुनूबिहिम् व मन् यग्फिरु (अ्ल्) ज्जुनूब इल्ल (अ्) ल्लाहु व लम् युसिर्रू (अ्) अला (य्) मा फअ्लू (अ) व हुम् यअ्लमून०

४ उ (व) लाअिक जर्जा (व्) अुहु (म्) म्मग्फ़िरतु (न्) म्मि (न्) र् रब्बिहिम् व जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिह (अ्) (अ्)ल् अन्हार् खालिदीन फ़ीहा व निअ्म अजरु (अ्)ल् आमिलीन०

३ १३३–१३६

159 १ व युत्अिमून (अ्ल्) त्तआम अला (य्) हुब्बिही मिस्कीन (न्अ्) व्व यतीम (न्अ्) व्व असीरन्०

२ इन्न मा नुत्अिमुकुम् लि वज्हि (अ्)ल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जर्जाअ (न्) व्व ला शुकूरन (अ्)०

३ इन्ना नखाफु मि (न्) र्रब्बिना यौमन् (अ्) अबूसन् (अ्) कमतरीरन्०

४ फ वकाहुमु (अ्)ल्लाहु शार्र जालिक (अ्)ल् यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्रत (न्) व्व सुरूरन् (अ्) ०

७६ ८–११

३ और उन लोगों पर, जो जब घृणास्पद कर्म करते हैं या अपने ऊपर अत्याचार करते हैं तो उन्हें ईश्वर याद आता है, और (वे) अपने पापों की क्षमा माँगते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त कौन है, जो पापों को क्षमा करे और जान-बूझकर वे अपने किये पर हठ नहीं करते—

४ ये ही लोग हैं जिनका प्रतिफल उनके प्रभु की ओर से क्षमा है और उद्यान हैं, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। ये लोग नित्य उनमें रहेंगे। कर्मठ लोगों के लिए यह क्या ही उत्तम पुरस्कार है!

३ १३३-१३६

१५९ दाता

१ ईश्वर के प्रेम के लिए वे वञ्चितों, अनाथों तथा बन्दियों को भोजन कराते हैं।

२ केवल ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही वे खिलाते हैं, (कहते हैं) हम तुमसे न कोई प्रतिफल चाहते, न कृतज्ञता।

३ हम अपने प्रभु का भय रखते हैं और भय रखते हैं मुँह बनानेवाले और त्योरी चढ़ानेवाले दिन का।

४ अतः ईश्वर ने उन्हें उस दिन के संकट से बचा लिया और उन्हें स्फूर्ति एवं आनन्द देकर सहायता दी।

७६.८-११

160 १ व(अ्)ल्लज़ीन यज्तनिबून कबाअिर(अ्)ल इस्मि व(अ्)ल् फवाहिश व इजा मा ग़ज़िबू (अ्) हुम् यग़्फिरूनo

२ व(अ्)ल्लजीन(अ्)स्तजाबू(अ्)लि रब्बिहिम व अक़ामु(अ्) (अल्)सलला (व्)त व अम्रुहुम् शूरा(य्) बैनहुम् व मिम्मा रज़क्नाहुम् युन्फिक़ूनo

४२ १७-१८

161 १ व (अ्)ल्लजीन यसिलून मा अमर (अ्)ल्लाहु बिही अ(न्) यूसल व यख़्शौन रब्बहुम व यख़ाफून सू अ(अ्)ल् हिसाबि o

२ व (अ्)ल्लजीन सबरू(अ्) (अ)बतिग़ाअ वज्हि रब्बिहिम् व अकामु (अ्) (अ्ल)सलला(व्) त व अन्फ़क़ू(अ्)मिम्मा रज़क्नाहुम् सिर(न्) (अ्)व्व अलानियत(न्)व्व यद्रअून बि(अ्)ल् हसनति(अ्ल्)सय्यिअत उ(व्)लाअिक लहुम् उक़्ब(य्) (अल्)दारि o

११ २१-२२

१६० अन्योन्य विमर्शकारी

१ जो लोग दोषों एवं घृणास्पद कर्मों से बचते हैं, जब उन्हें क्रोध आता है, तो क्षमा करते हैं।

२ और जिन लोगों ने अपने प्रभु की आज्ञा मानी तथा नित्य-नियमित प्रार्थना की, उनका कार्य परस्पर विमर्श से होता है और वे हमारे मार्ग में उसमें से व्यय करते हैं, जो हमने उन्हें दिया है।

४२ ३७–३८

१६१ जोड़नेवाले

१ और वे लोग जो जोड़ते हैं उसको, जिसके जोड़ने की ईश्वर ने आज्ञा दी है और अपने प्रभु से डरते हैं और हानिकर लेखे-जोखे की चिन्ता रखते हैं।

२ और अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहने के लिए धीरज रखते हैं तथा नित्य-नियमित प्रार्थना करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से हमारे मार्ग में प्रकट या अप्रकट व्यय करते हैं तथा अच्छाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। ये ही लोग हैं जिनके लिए सद्गति है।

१३ २१-२२

162 १ इन्न ख़िबादी लैस लक अ़लैहिम् सुलत्वानुन् (अ्) इल्ला मनि (अ्) त्तवअ़क मिन (अ्) ल् गावीन ०

१५।४२

163 १ अल्लज़ीन यह्मिलून (अ्) ल् अ़र्श व मन् हौलहु युसब्बिहून बि हम्दि रब्बिहिम् व यु (व्) अमिनून बिहृ व यस्तग्फिरून लिल्लज़ीन आमनू (अ) रब्बना वसिअ़्त कुल्ल शयअि (न्) र्रह्मत- (न्) व्व अ़िलमन् फ (अ्) ग़्फ़िर् लिल्लज़ीन ताबू (अ्) व (अ्) त्तबअू (अ्) सबीलक वक़िहिम् अ़ज़ाब (अ्) ल् जहीमि०

२ रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अ़दनि- निल्लती वअ़(द्) त्तहुम् व मन् सलह मिन् आबाअिहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्याति- हिम् इन्नक अन्त (अ्) ल् अ़ज़ीज़ु (अ्) ल् हकीमु ०

३ वक़िहिमु (अल्) स्सय्यिआति व मन् तक़ि- (अल्) स्सय्यिआति यौमअिजिन् फ क़द रहिम्तहु व ज़ालिक हुव (अ्) ल् फौज़ु (अ्) ल् अ़ज़ीमु ०

४०।७-९

३४ भक्तों को आशीर्वाद

१६२ शतान का वस भक्तों पर नहीं चलेगा

१ (हे शैतान !) निस्सन्देह जो मेरे दास हैं, उन पर तेरा कुछ भी वस नहीं चलेगा। (वह) उन भ्रमितों पर चलेगा जो तेरे मार्ग पर चलें।

१५ ४२

१६३ देवदूतों की भक्तों के लिए प्रार्थना

१ जो देवदूत ईश्वर का सिंहासन उठा रहे हैं और जो उनके इद-गिद हैं, वे अपने प्रभु का जप करते हैं और उसका स्तवन करते हं, और उस पर दृढ़ श्रद्धा रखते हैं और श्रद्धावानो के लिए प्रभु की क्षमा माँगते हैं कि हे प्रभो ! तेरी करुणा और तेरे ज्ञान ने प्रत्येक वस्तु को व्याप लिया है। तो जो लोग पश्चात्ताप करें तथा तेरे मार्ग पर चलें, उनको क्षमा कर और उन्हें नरक के दण्ड से बचा।

२ हे प्रभो ! उनको नित्य रहने के स्वर्ग में, जिनका तूने उन्हें वचन दिया है, प्रविष्ट कर और उनके पितरों, पत्निया एव सन्तति में से जो सत्कृतिवान् हों, उन्हें भी उसमें प्रविष्ट कर। निश्चय ही तू सवशक्तिमान्, सवविद् ह।

३ और उन्हें दुष्कृत्यों से बचा। और जिसे तू दुष्कृत्यो से उस दिन बचा ले, उस पर तूने बहुत बड़ी कृपा की। और यही बड़ी विजय है।

४० ७-९

१५

164 १ सुम्म क़सत् कुलूबुकु (म्) म्मि (न्) म्बअ़्दि जालिक फ हिय क (अ्) ल् हिजारति औ अशद्दु क़स्वतन्[सेर] व इन्न मिनल् हिजारति ल मा यतफज्जरु मिन्हु (अ्) ल् अन्हारु[सल] व इन्न मिन्हा ल मा यश्शक़्क़कु फ यख़्रुजु मिन्हु (अ्) ल् मा अु[सल] व इन्न मिन्हा ल मा यह्बितु मिन् ख़श्यति-(अ्) ल्लाहि[सल]

२ ७४

165 १ व लौ फ़तह्ना अ़लैहिम् बाब (न्) म्मिन (अ्ल)-स्समाअि फ ज़ल्लू (अ्) फ़ीहि यअ़्रुजून ०[ल]

२ ल क़ालू (अ्) इन्न मा सुक्किरत अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमु (न्) म्मस्हूरून ०

१५ १४-१५

166 १ इन्नहु फक्कर व क़द्दर ०[ला]

२ फ क़ुतिल कैफ क़द्दर ०[ला]

३ सुम्म क़ुतिल कैफ क़द्दर ०[ला]

१५ अभक्त

३५ नास्तिका

१६४ पाषाण से भी कठोर

१ इस पर भी (इश्वर के सक्त दर्शन के पश्चात् भी) फिर तुम्हारे मन पत्थर के समान अथवा उससे भी कठोर हो गये। वास्तव में पत्थरो में तो ऐसे भी ह, जिनसे निझर फूट निकलते ह और उनमें कुछ ऐसे हैं, जो फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है। और उनमें से ऐसे भी हैं नि इश्वर के भय से गिर पड़ते ह।

२ ७४

१६५ अविश्वास की परिसीमा

१ यदि हम उन पर आकाश का कोइ द्वार खोल दें और वे दिन-दहाडे उसमें चढ़ने लगें।

२ तब भी यही कहेंगे कि हमारी दृष्टि बाँध दी गयी है। अपितु हम लागो पर तो जादू कर दिया गया ह।

१५ १४–१५

१६६ डाँवाडोल

१ उसने सोचा और अटकल दौडायी।

२ उसका नाश हो, कैसी अटकल दौडायी।

३ फिर उसका नाश हो—कसी अटकल दौडायी।

४ सुम्म नजर ०^म
५ सुम्म अबस व बसर ०^म
६ सुम्म अद्बर व(अ्)स्तक्बर ०^म
७ फ काल इन् हाजा इल्ला सिह्रु(न्)-
य्यु(व्) अ्सर् ०^म ७४ १८-२४

167 १ व काlू(अ्)ल(न्)न्नु(व्) अमिन लक हृत्ता(य्) तफ्जुर लना मिन(अ्)ल् अरज़ि यबूअन्(अ)०^म
२ औ तकून लक जन्नतु(म्)म्मि(न्) न्नखीलि (न्)व्व अिनबिन् फ़ तुफ़ज्जिर(अ्)ल् अन्हार खिलालहा तफ्जीरन् (अ्) ०^म
३ औ तुस्क़ित(अ्ल्)स्समाअ क मा ज़अमृत अ़लैना किसफन् औ तअ्तिय बि(अ्)ल्लाहि व(अ्)ल् मलाअिकति क़बीलन् ०^म
४ औ यकून लक बैतु(न्)म्मिन् जुख्रुफिन् औ तर्क़ा फि(अ्ल्)स्समाअि^{गोय} व ल(न्)न्नुअमिनु लि रुक़िय्यिक हृत्ता (य्) तुनज्ज़िल अ़लैना किताब(न्) न्नक्र(व्) अुहु^{गोय} क़ुल् सुब्हान रब्बी हल् कुन्तु इल्ला बशर(न्अ्)र्-रसूलन्(अ्)० १७ ९०-९३

168 १ व मिन(अ्ल्) न्नासि म(न्)य्युजादिलु फ़ि-(अ्)ल्लाहि बग़ैरि अिल्मि(न्)व्व ला हुद-(न्)(य्)व्व ला किताबि(न्)म्मुनीरिन् ०^म

४ फिर विचार किया।

५ फिर त्यौरी चढ़ायी और मुह् बनाया।

६ फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया।

७ फिर बोला यह् तो केवल जादू है, जो (पहले से) चला आता ह्।

७४।१८-२४

१६७ चमत्कार दिखाओ

१ वे बोले हम तेरा कहना कदापि न मानेंगे, जब तक तू हमारे लिए भूमि से एक स्रोत प्रवाहित न कर दे।

२ या तेरा खजूरों का और अगूरों का एक बाग हो। फिर उसके बीच-बीच में तू नदियाँ प्रवाहित कर दे।

३ या तू हम पर आकाश टुकड़े-टुकड़े (फराके) गिरा दे, जैसे कि तू कहा करता है या ईश्वर को या देवदूतों को हमारे सामने ले आ।

४ या तेरे लिए एक स्वर्ण-भवन हो या तू आकाश पर चढ़ जा, और तेरे चढ़ने का भी हम विश्वास न करेंगे, जब तक तू हम पर एक ग्रन्थ उतार न लाये, जिसे हम पढ़ें। तू कह पवित्र है मेरा प्रभु, मैं एक मानव हूँ—सन्देश पहुँचानेवाला।

१७.९०—९३

१६८ वितण्डवादी नास्तिक एव तथाकथित आस्तिक

१ कुछ लोग ऐसे होते ह् कि वे परमात्मा के विषय में झगड़ते रहते ह्—बिना किसी ज्ञान के, बिना मार्ग-दर्शन के, या बिना किसी ऐसे ग्रन्थ के, जो प्रकाश दे—

२ सानिय अित्फिहीं लि युज़िल्ल अन् सबीलि (अ्)ल्लाहि[णेय] लहू फ़ि(य्) (अल्) द्दुन्या ख़िज़्यु(न्)ँव्व नुज़ीक़ुहू यौम(अ्)ल् क़ियामति अज़ाब(अ्)ल् हरीक़ि ०

३ व मिन(अल्)न्नासि म(न्)ँय्यअ्बुदु(अ्)ल्लाह् अला (य्) हर्फ़ि(न्)[क] फ़ इन असाबहू ख़ैरुनि(अ्)त्मअन्न बिहीं व इन् असाबत्हु फ़ित्नतुनि(अ्)न्क़लब अला(य्)वज्हिहीं[कफ़-] ख़सिरु(अल्)द्दुन्या व(अ्)ल्आख़िरत[णेग] ज़ालिक हुव (अ्)ल् ख़ुस्रानु(अ्)ल् मुबीनु ०

२२ ८ ९, ११

169 १ मसलुहुम् क मसलि(अ्)ल्लज़ि(य्) (अ्)स्तौक़द नारन्(अ्)फ़ लम्मा अज़ाअत् मा हौलहू ज़हब(अ्)ल्लाहु बि नूरिहिम् व तरकहुम् फ़ी ज़ुलुमाति(न्)ल्ला युब्सिरून ०

२ सुम्मु(न्)म्बुक्मुन् अुमयुन फ़हुम् ला यर्जिअून०[ग]

३ औ क सय्यिबि(न्)म्मिन (अल्)स्समाअि फ़ीहि ज़ुलुमातु (न)ँव्व रअ्दु(न)ँव्व वर्क़ुन्[क] यज्अलून असाबिअहुम फ़ी आज़ानिहि (म्)म्मिन (अल्) स्सवाअिक़ि हज़र(अ्)ल् मौति[णेग्व] (अ्)ल्लाहु मुहीतु-(न्)म् बि(अ्)ल् काफ़िरीन०

२ —घमण्ड के साथ, जिससे कि परमात्मा के मार्ग से लोगों को च्युत करें। ऐसे मनुष्य के लिए इस जगत् में अपकीर्ति है और हम उसे पुनरुत्थान के दिन जलती आग का दण्ड भुगतायेंगे।

३ और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो सीमा-रेखा पर (रहकर) परमात्मा की भक्ति करते हैं। फिर यदि उन्हें लाभ पहुँचा, तो उस भक्ति पर स्थिर हुए और यदि उन पर कोई कसौटी आ पड़ी, तो उलटे फिर गये। उसने इहलोक एवं परलोक दोनों गँवाये। यही स्पष्ट हानि है।

२२-८,९,११

१६९ अविश्वासी की उपमा

१ उनका दृष्टान्त उस मनुष्य का-सा है, जिसने आग जलायी, फिर जब आग ने उसके परिसर को प्रज्वलित किया, तो ईश्वर उनका प्रकाश ले गया और उनको अँधेरे में छोड़ दिया कि वे कुछ नहीं देखते।

२ बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं सो वे नहीं पलटेंगे।

३ या उनका दृष्टान्त ऐसा है, जैसे आकाश से जोर की वर्षा हो रही है, उसमें अन्धकार है और मेघों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक है। वे कड़क के मारे मृत्यु के डर से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं और ईश्वर श्रद्धाहीनों को घेरे हुए है।

४ यकादु(अ्)ल् वर्कु यख्त्फु अव्सारहुम्[कोप] कुल्लमा अज्ञाअ लहु(म्)म्मशौ(अ्)फ़ीहि[लग] व इजा अज़्लम् अ़लैहिम् क़ामू(अ्)[कोप] व ला शाअ(अ्)ल्लाहु लजहव बि समअ्हिम व अव्सारिहिम्[लाम] इन्न(अ्)ल्लाह अ़ला(य्)कुल्लि शय्अिन् कदीरुन् ०

२ १७-२०

170 १ व मा अर्सल्ना फी करयवि(न्)म्मि(न्)-न्नजीरिन् इल्ला काल मुत्रफ़ूहा[ग] इन्ना बि मा उर्सिल्तुम् बिही काफिरून०

२ व कालू(अ्) नह्नु अक्सरु अम्वाल(न्)व्व औलाद (न्अ्)[ग] व्व मा नह्नु बि मुअज़्जवीन०

३४ ३४-३५

171 १ व इजा कील लहुम् आमिनू(अ्)कमा आमन (अ्ल्)न्नासु कालू(अ्)अनु(य्) अमिनु क मा आमन(अ्ल्)स्सुफ़हाअु[कोप] अला इन्नहुम् हुमु-(अ्ल्)स्सुफहाअु व लाकि(न्)ल्ला यअ्लमून०

२ १३

४ ऐसा लगता है कि विद्युत् उनकी दृष्टि छीन ले जाय। जब यह उन पर चमकती है, तो उसके प्रकाश में वे चलने लगते हैं और जब उन पर अन्धकार करती है, तो वे खड़े हो जाते है और यदि ईश्वर चाहे तो उनकी दर्शन-शक्ति एव श्रवण-शक्ति ले जाय। निस्सन्देह ईश्वर सर्व-क्षम-समर्थ है।

२ १७–२०

३६ भ्रान्तचित्त

१७० श्रीमान् नहीं मानते

१ हमने किसी बस्ती में कोई सावधान करनेवाला भेजा, तो वहाँ के श्रीमानों ने यही कहा कि जिस वस्तु के साथ तुम भेजे गये हो, उसे हम नही मानते।

२ और उन्होंने कहा हम सम्पत्ति एव सन्तति में अधिक हैं और हमें कोई दण्ड नहीं होगा।

३४ ३४ ३५

१७१ "श्रद्धा रखना मूर्खों का काम!"

१ जब उनसे कहा जाता है कि श्रद्धा रखो, जिस प्रकार अन्य लोगों ने श्रद्धा रखी, तो कहते हैं क्या हम श्रद्धा रखें, जिस प्रकार कि मूर्खों ने श्रद्धा रखी। समझ लो, वास्तव में वे ही मूर्ख हैं, किन्तु वे जानते नहीं।

२ १३

172 १ अ फ़ रअैत मनि(अ्)त्तखज इलाहहु हवाहु व अद्दल्लहु (अ्)ल्लाहु अला (य्) अिल्मि (न्) व्ख सतम अला (य) सम्अिही व कल्बिही व जअल अला (य्) बसरिही ग़िशावतन् ग़ौर फ़ म (न्)- य्यह्‌दीहि मि (न) म्बअ्दि (अ्) ल्लाहि ग़ौर अफ़ल तजक्करून ०

२ व काल् (अ्) मा हिय इल्ला हयावुन (अ्) द्दुन्या नमूतु व नह्‌या व मा युह्‌लिकुना इल्ल (अ्) (अल्) दहरु व

८५ २३ २४

173 १ व इजा कील लहुम् अन्फ़िक़ू (अ्) मिम्मा रज़क़- कुमु (अ) ल्लाहु क़ाल (अ) ल्लजीन कफ़रू (अ्) लिल्लजीन आमनू (अ्) अनुत्‌अिमु म (न) ल्लौ यशाअु (अ) ल्लाहु अत्‌अमहु क़स्रत इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालि (न) म्मुबीनिन्०

३६ ४७

174 १ इन्न (अ्) ल्लजीन फ़तनु (अ्) (अ्) ल् मु (व)- अ्मिनीन वल् मु (व्) अ्मिनाति सुम्म लम् यतूबू (अ्) फ लहुम् अजाबु जहन्नम व लहुम् अजाबु (अ्) ल् हरीक़ि ० ग़ौर

८५ १०

७२ कामवादी एवं कालवादी

१ क्या तूने देखा उस व्यक्ति को, जिसने वासनाओं को अपना देवता बना रखा है। और परमात्मा ने उसे, सूझ-बूझ रहते हुए, भ्रमित कर दिया है और उसके कान और मन पर मुहर लगा दी है और उनकी आँख पर आवरण डाल दिया है। फिर उसे परमात्मा के अतिरिक्त कौन मार्ग पर लाये ? तो क्या तुम नहीं सोचते ?

२ और वे कहते हैं हमारे इस ऐहिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हम मरते है और हम जीते हैं और काल के बिना हमें कोई नहीं मारता।

४५ २३ २४

७३ "ईश्वर उन्हें नहीं देता, तो हम क्यों दें ?"

१ और जब उनसे कहा जाता है कि परमात्मा ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से उसके मार्ग में व्यय करो, तो श्रद्धाहीन श्रद्धावानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसों को खिलायें कि जिन्हें ईश्वर चाहता तो खिला देता। तुम लोग तो स्पष्ट ही भ्रमित अवस्था में हो।

३६ ४७

७४ भक्तों को सतानेवाले

१ निस्सन्देह जिन्होंने श्रद्धावान् पुरुषों को एवं श्रद्धावती महिलाओं को सताया, फिर पश्चात्ताप नहीं किया, तो उनके लिए नरक का दण्ड है और उनके लिए जलने का दण्ड है।

८५ १०

175 १ व मिन् अह्लि(अ)ल् किताबि मन् इन् तअ्मनहु बि क़िन्तारी(न्) यु(व्)अद्दिहर्ती इलैक व मिन्हु(म्)म्मन् इन् तअ्मनहु बिदीनारि(न्)-ल्ला यु(व्)अद्दिहर्ती इलैक इल्ला मा दुम्त अलैहि क़ाअिमन्(अ) ज़ालिक बि अन्न-हुम् क़ालू लैस अलैना फ़ि(य्) (अ)ल् उम्मिय्यिन सबीलुन् व यक़ूलून अल(य्) (अ)ल्लाहि-(अ)ल् कज़िब व हुम् यअ्लमून०

३।७५

176 १ मसलु(अ)ल्लज़ीन कफ़रू(अ)बि रब्बिहिम् अअ्मालुहुम करमादि नि(अ)श्तद्दत बिहि-(अ्ल्) र्रीहु फ़ी यौमिन् आसिफ़िन् ला यक़्दिरून मिम्मा कसबू(अ) अला(य्) शय-अिन ज़ालिक हुव(अ्ल्) ज़्ज़लालु(अ)ल् बईदु०

१४।१८

177. १ व ल क़द कज़्ज़ब अस्हाबु(अ)ल् हिज्रि(अ)ल् मुर्सलीन ०

२ व आतैनाहुम आयातिना फ़ कानू(अ) अनहा मुअ्रिज़ीन ०

१७५ अनपढ़ों से दुर्व्यवहार उचित माननेवाले

१ ग्रन्थवालों में से कुछ लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनके पास धन की राशि धरोहर रखे, तो वे तुझे वह लौटा देंगे और कुछ उनमें ऐसे हैं कि यदि तूने उनके पास एक दीनार भी धरोहर रखी, तो वे तुझे वापस न करेंगे, जब तक कि तू उनके सिर पर खड़ा न हो। यह इसलिए कि उनका कहना है कि "अनपढ़ लोगों के साथ किये जानेवाले व्यवहार में हम पर कोई दोष नहीं।" और वह ईश्वर के विषय में झूठ बोलते हैं और वे यह जानते हैं।

३।७५

३७ मोघकर्माण

१७६ सर्वं हुत भस्मनि

जो लोग अपने प्रभु से अश्रद्ध हुए, उनके कर्मों का दृष्टान्त उस राख का-सा है, जिसे एक तूफानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वे कुछ न पायेंगे उसमें से, जो उन्होंने कमाया। यही है दूर की भ्रान्ति।

१४।१८

१७७ खुदी हुई गुफाएँ व्यर्थ गयीं

१ निस्सन्देह हिज्रवालों ने प्रेषितों को अस्वीकार किया।

२ और हमने उन्हें अपने संकेत दिये, तो वे उनसे मुँह फेरे रहे।

३ व कानू(अ) यनह्रितून मिन(अ)ल् जिवालि बुयूतन्(अ) आमिनीन०

४ फ अखजत् हुमु(अल्) स्सैहतु मुस्बिहीन ०^ग

५ फ़ मा अग़्ना(य्) अन् हु(म्)म्मा कानू(अ) यक्सिबून ० ^गेम

१५ ८०–८४

178 १ कुल् इल् नुनब्बि अुकुम् बि(अ)ल् अख्सरीन अअ्मालन्(अ) ०^गीम

२ अल्लजीन ज़ल्ल सअ्युहुम् फि(अ)ल् हया(व्)ति -(अल्)द्दुन्या व हुम् यह्सबून अन्नहुम् युह्सिनून सुन्अन्(अ) ०

३ उ(व्)लाअिक(अ)ल्लजीन कफरू (अ)बि आयाति रब्बिहिम् व लिकाअिही फ़ हबितत् अअ्मालुहुम् फ़ ला नुक़ीमु लहुम् यौम (अ)ल क़ियामति वज्नन्(अ) ०

१८ १०३–१०५

179 १ मसलु(अ)ल्लजीन हुम्मिलु (अल्) त्तारात सुम्म लम् यह्मिलूहा क मसलि(अ)ल् हिमारि यह्मिलु असफ़ारन्(अ) ^गेम

३ और वे निश्चिन्त होकर पहाड़ों में घर कुरेदते रहे।
४ सो प्रात होते ही एक बहुत बड़े धमाके ने उन्हें आ घेरा।
५ सो उनका कौशल उनके कुछ काम न आया।

१५.८०–८४

१७८ के मोघकर्माण·

१ कह क्या हम तुम्हें उन लोगों की बात कहें, जो कर्मों की दृष्टि से बहुत घाटे में हैं ?

२ ये वे ही लोग हैं, जिनकी सारी दौड़धूप ऐहिक जीवन में खो गयी और वे इस कल्पना में हैं कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं।

३ यही लोग हैं, जिन्होंने अपने प्रभु के संकेतों को और उसके मिलने को अस्वीकार किया, सो उनका किया धरा मटियामेट हो गया। सो हम उनके लिए पुनरुत्थान के दिन कोई वजन निर्धारित नही करेंगे।

१८.१०३–१०५

१७९ यथा खरो चन्दनभारवाही

१ जिन पर धर्मग्रन्थ, तौरात, लादा गया, पर उन्होंने उसे नही उठाया, उन लोगो का दृष्टान्त गधे जैसा है कि पीठ पर किताबें लादे हुए है।

६२.५

180 १ व मं(न्) य्युशरिक बि(अ्)ल्लाहि फ क अन्न मा खर्र मिन (अल्) स्समाअि फतख्तफ़ुहु (अल्)-त्वैरु औ तह्वी बिहि (अल्) र्रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़िन्० २२।११

181 १ व म(न्) य्यअ्शु अन् जिक्रि(अल्) र्रह्मानि नुकय्यिद्‌ लहु शैत्वानन्(अ्) फ़ हुव लहु क़रीनुन् ०

२ व इन्न हुम् ल यसुद्दूनहुम् अनि (अल) स्सबीलि व यह्सबून अन्नहु(म्) म्मुह्तदून०

३ हत्ता(य्) इजा जाअना क़ाल या लैत बैनी व बैनक बुअ्द(अ्)ल् मश्रिकैनि फ़ बिअ्स(अ्)ल् क़रीनु ०

४३ ३६-३८

182 १ हल् उनब्बिअुकुम् अला(य्) मन् तनज़्ज़लु-(अल्) श्शयात्वीनु ०[२]

२ तनज़्ज़लु अला (य्) कुल्लि अफ्फ़ाकिन् असीमिन् ०[२]

३ य्युल्क़ून(अल्) स्समअ व अकसरुहुम् काजिबुन ०[२]

४ व (अल्) श्शुअराअु यत्तबिअुहुमु(अ्)ल् ग़ावून ०[२]

३८ नरकभाज

१८० ऊँचाई से गिरना

१ जिसने ईश्वर का भागीदार बनाया, वह मानो आकाश से गिर पड़ा, फिर उसको पक्षी उड़ा ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर स्थान पर फेंक देती है।

२२ १

१८१ शैतान दुष्ट साथी

१ जो कोई ईश्वर के स्मरण से मुँह मोड़ता है, उसके लिए हम एक शैतान नियुक्त करते हैं, सो वह उसका साथी होता है।

२ और वे उसको मार्ग से रोकते रहते हैं और ये लोग इस कल्पना में रहते हैं कि हम मार्ग पर हैं।

३ यहाँ तक कि जब हमारे पास आयेगा तो (शैतान से) कहेगा अरे-अरे, मेरे और तेरे बीच पूर्व-पश्चिम की दूरी होती ! कैसा दुष्ट साथी है !

४३ ३६-३८

१८२ शैतान किस पर सवार होता है ?

१ क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतर आते हैं ?

२ वे उतर आते हैं प्रत्येक झूठे पापी पर।

३ जो (जहाँ तहाँ) कान लगाये रहते हैं, पर उनमें अधिकतर झूठे हैं।

४ और कवि ? सो उनका अनुसरण करते हैं भटके हुए लोग !

५ अलम् तर अन्न हुम् फी कुल्लि वादि (न्)-
य्यहीमून ०[ग]

६ व अन्न हुम् यकूलून मा ला यफ्अलून ०[ग]

२६ २२१–२२६

183 १ मा सलककुम् फी सक़र ०
२ कालू (अ्) लम् नकु मिन (अ्) ल् मुसल्लीन०[ग]
३ व लम् नकु नुत्अिमु (अ्) ल् मिस्कीन०[ग]
४ व कुन्ना नखूदु मअ (अ्) ल् खाअिज़ीन ०[ग]
५ व कुन्ना नुकज़्ज़िबु वि यौमि (अल्) दीनि ०[ग]
६ हत्ता (य्) अतान (अ्) (अ्) ल् यकीनु [गैर]

७४ ४२–४७

184 १ वैलु (न्) य्यौम अिज़ि (न्) ल्लिल् मुकज़्ज़िबीन०
२ अ लम् नुह्लिकि (अ्) ल् अव्वलीन ०[गैर]
३ सुम्म नुत्बिअुहुमु (अ्) ल् आखिरीन०
४ क ज़ालिक नफ्अलु बि (अ्) ल् मुजरिमीन०
५ वैलु (न्) य्यौम अिज़ि (न्) ल्लिल् मुकज़्ज़िबीन०

७७ १५–१९

185 १ इन्ना अन्ज़रनाकुम् अज़ाबन् (अ्) क़रीबन्[गर्मी]
य्यौम यन्ज़ुरु (अ्) ल् मरअु मा क़द्दमत् यदाहु
व यक़ूलु (अ्) ल् काफिरु या लैतनी कुन्तु
तुराबन् (अ्) ०

५ क्या तूने नहीं देखा कि ये प्रत्येक क्षेत्र में सिर मारते फिरते हैं।
६ और यह कि ये जो कुछ कहते हैं, वह करते नहीं।

२६ २२१–२२६

१८३ हमारी करतूत

१ (स्वर्गवासी नरकवासियों से पूछेंगे) क्या चीज तुम्हें नरक में ले गयी ?
२ वे कहेंगे हम प्रार्थना नहीं करते थे
३ तथा हम वञ्चितों को खाना नहीं खिलाते थे।
४ बकवासियों के साथ हम बकवास करते थे
५ और हम अन्तिम न्याय के दिन का अस्वीकार करते थे।
६ यहाँ तक कि हमें मृत्यु आ गयी।

७४ ४२–४७

१८४ नास्तिकों को धिक्कार

१ धिक्कार है, उस दिन ईश्वर का अस्वीकार करनेवालों के लिए।
२ क्या हमने पूर्वकालीनों को नष्ट नहीं किया,
३ फिर हम (इन) उत्तरकालीनों को भी उनके साथ कर देंगे।
४ हम पापियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।
५ धिक्कार है, उस दिन अस्वीकार करनेवालों के लिए।

७७ १५–१९

१८५ "अरे-अरे, यदि मैं धूल होता तो !"

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें एक निकटवर्ती आपत्ति से सावधान कर दिया, जिस दिन प्रत्येक मनुष्य अपने कृत-कर्मों को देखेगा और श्रद्धाहीन कहेगा "अरे-अरे, मैं धूल होता तो !"

७८ ४०

खण्ड ५

धर्म

186 १ लैस(अ्)ल् बिर्र अन् तुवल्लू(अ्) वुजूहकुम् क़िबल (अ्)ल् मश्‌रिक़ि व (अ्)ल् मग़्‌रिबि व लाकिन्न (अ्)ल् बिर मन् आमन बि(अ्)ल्लाहि व (अ्)ल् यौमि(अ्)ल् आख़िरि व (अ्)ल् मलाइकति व (अ्)ल् किताबि व (अल्)-नबीयईन व आत(य्) (अ्)ल् माल अला(य्) हुब्बिही जवि(य्)ल् क़ुर्‌बा(य्) व (अ्)ल् यतामा(य्) व (अ्)ल् मसाकीन व (अ्)ब्न-(अल्)सबीलि व (अल्)साइलीन व फ़ि(य्) (अल्) रिक़ाबि व अक़ाम (अल्)-सला(व्) व व आत(य्) (अल्)ज़का (व्)त व(अ्)ल् मूफ़ून बिअह्‌दिहिम् इजा आहदू(अ) व (अल्)साबिरीन फ़ि(अ्)ल् बअ्‌सा(अ) व(अल्)ज़र्रा(अ) व हीन(अ्)ल् बअ्‌सि उ(ल्)लाइक(अ)ल्लज़ीन सदक़ू(अ्) व उ(ल्)-लाइक हुमु(अ्)ल् मुत्तक़ून ०

२ १७७

187 १ फ(अ्)त्तक़ुम् म मा अुमिरत व मन् ताब मअक व ला तत्‌ग़ौ(अ्) इन्नहु बि मा तअ्‌मलून बसीरुन०

१६ धर्म-विचार

[३९ धर्म-निष्ठा]

१८६ धर्म-सार

१ धार्मिकता यह नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व की ओर करो या पश्चिम की ओर अपितु धार्मिकता यह है कि कोई व्यक्ति श्रद्धा रखे ईश्वर पर, अन्तिम दिन पर, देवदूतों पर और ईश्वरीय ग्रन्थों पर और प्रेषितों पर तथा ईश्वर के प्रेम से धन दे, सगे सम्बन्धियों को, अनाथों को, वञ्चितों को, प्रवासियों को तथा याचकों को और किसी बन्दी की मुक्ति के लिए और नित्य-नियमित प्रार्थना करे, नियत दान दे। और वे जब अभिवचन दें, तो अभिवचन पूरा करें। और तंगी, कठिन समय, संकट एव आपत्ति में धीरज रखें। ये हैं सत्य प्रिय लोग और यही हैं ईश्वर-परायण।

२ १७७

१८७ धर्म-मर्यादा

१ सो, जिस प्रकार तुझे आज्ञा हुई है, दृढ़ रह और तेरे साथ वे भी दृढ़ रहें, जो पश्चात्तापयुक्त होकर मेरी ओर मुड़ें। और मर्यादा से न बढ़ो। निस्सन्देह तुम जो कुछ करते हो, उसे ईश्वर देखता है।

२ व ला तर्कनू(अ्) इल(य) (अ्)ल्लज़ीन ज़लमू(अ्) फ तमस्सकुमु(अ्ल्)न्नार् व मा लकु(म्)म्मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि मिन् औलियाअ सुम्म ला तुन्सरून O

३ व अक़िमि (अ्ल्) स्सलात तरफ़यि (अ्ल्)-न्नहारि व ज़ुलफ(न्) (अ्)म्मिन(अ्) ल्लैलि[और] इन्न(अ्)ल् हसनाति युज़्हिब्न (अ्ल्)-स्सय्यिआति,[और] ज़ालिक ज़िक्रा(य्) लि(ल्)-ज़्ज़ाकिरीन O[२]

४ व(अ्)स्बिर् फ इन्न(अ्)ल्लाह ला युज़ीअु अज्र(अ्)ल् मुह्सिनीनO

११ ११२-११५

188 १ फ अक़िम् वज्हक लि(ल्) द्दीनि हनीफन् (अ्)[और] फ़ित्रत (अ्)ल्लाहि (अ्) ल्ती फत्र (अ्ल्)-न्नास अलैहा[और] ला तब्दील लि खल्कि-(अ्)ल्लाहि[वह] ज़ालिक (अ्ल्)द्दीनु (अ्)ल् क़य्यिमु[क्या] व लाकिन्न अक्सर (अ्ल्)न्नासि ला यअ्लमून O[क्या]

३० ३०

२ और उन लोगों की ओर न झुकना, जिन्होंने अत्याचार किये हैं। वरन् अग्नि की लपेट में आ जाओगे। ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र नहीं। फिर तुम्हारी सहायता न की जायगी।

३ और नियमित प्रार्थना करो, दिन के दोनों छोरों में और कुछ रात्रि व्यतीत होने पर। निस्सन्देह सत्कृत्य दुष्कृत्यों को दूर करते हैं। यह एक स्मरणदायिनी वस्तु है उन लोगों के लिए, जो स्मरण रखते हैं।

४ और धीरज रखो। निस्सन्देह सत्कृतिवानों का पारिश्रमिक नष्ट नहीं होता।

११ ११२–११५

१८८ ईश्वर निर्मित मानव-स्वभाव का अनुसरण ही धर्म

१ अपना ध्यान स्थिर कर लो धर्म के लिए एकाग्र होकर। ईश्वर-निर्मित स्वभाव को धारण करो, जिस पर उसने मनुष्य को निर्माण किया। ईश्वर के सृष्टि-नियमों में कोई परिवर्तन नहीं। यही सरल धर्म है। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

३० ३०

189 १ लिल्लाहि मा फि(अल्) स्समावाति व मा फि (अ्)ल्अर्द्रिशेष व इन् तुब्दू (अ्)मा फ़ी अन्-फुसिकुम् औ तुख़्फूहु युहासिब्कुम् बिहि (अ्) ल्लाहुशेषफ यग्फ़िर् लि म(न्) यशाअु व युअज्जिबु म(न्) य्यशाअु शेष व(अ्)ल्लाहु अला(य्) कुल्लि शय्अिन् क़दीरुन्०

२ आमन (अ्ल्)र्रसूलु बि मा अुन्जिल इलहि मि(न्) र्रब्बिही व(अ्)ल् मु(अ्) अमिनून शेष कुल्लुन् आमन बि(अ्)ल्लाहि व मलाअिकति-ही व कुतुबिही व रुसुलिही शेष ला नुफर्रिकु बैन अहदि(न्)म्मि(न्) र्रुसुलिही शेष व क़ालू(अ्) समिअ्ना व अतअ्ना शेष गुफ्रानक रब्बना व इलैक(अ्)ल् मसीरु ०

३ ला युकल्लिफु(अ्)ल्लाहु नफ़्सन (अ्)इल्ला वुस्अहा शेष लहा मा कसबत् व अलैहा म(अ)-(अ्)क्तसबत् शेष रब्बना ला तु(अ)आख़िज्ना इ(न्)न्नसीना औ अख़्तअ्ना शेष रब्बना व ला तहमिल अलैना इस्रन् (अ्) क मा हमल्तहु अल(य्) (अ्)ल्लज़ीन मिन् क़ब्लिना शेष रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना-बिहीशेष व(अ)अ्फु अन्ना शेष व(अ्)ग़फ़िर

१८९ इस्लाम की निष्ठा

१ जो कुछ आकाशो एव भूमि में है, वह परमात्मा का ही है और तुम अपने मन की बात प्रकट करो या छिपाओ, ईश्वर तुमसे इसका लेखा लेगा, फिर जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ प्रेषित उस पर श्रद्धा रखता है, जो उस पर उसके प्रभु की ओर से उतरा और श्रद्धावान् भी श्रद्धा रखते हैं। प्रत्येक श्रद्धा रखता है ईश्वर पर, देवदूतो पर, ग्रन्थो पर और प्रेषितों पर। उनका कहना है कि हम प्रेषितों में से किसीमें कोइ भेद नहीं करते। हमने सुना और हमने माना। हे प्रभो ! हम तेरी क्षमा के याचक हैं और हमें तेरी ओर लौटकर जाना है।

३ ईश्वर किसी प्राणी पर उसकी समाइ से अधिक बोझ नहीं डालता। जिसने जो कुछ कमाया, उसका फल उसीको है और जिसने जो कुछ करनी की, वह उसीको भरनी है। "हे प्रभो ! यदि हमसे कोई भूल हो जाय या कोई दोष हो जाय, तो हमें न पकड। हम पर ऐसा बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे प्रभो, हम पर वह भार न डाल जिसकी हममें शक्ति नहीं और हमें माफ कर, क्षमा कर

ऊना बहक व(अ)र्हम्ना बहक अन्त
मौलाना फ(अ)न्सुर्नाअल(य्) (अ)ल्क़ौमि
(अ)ल् काफ़िरीन ०[१] २२८४-२८६

190 १ अ फ ग़ैर दीनि (अ)ल्लाहि यब्गूनव लहु असलम
मन् फ़ि(य्) (अल्)स्समावाति व (अ)ल्
अर्दि त्वौअ(न्) व्व करह(न्) व्व इलैहि
युर्जअून ० ३८३

191 १ व म(न्)य्युस्लिम् वजहहु इल(य्) (अ)-
ल्लाहि व हुव मुह्सिनुन् फ़क़दि(अ)स्तम्सक
बि(अ)ल् अुर्वति(अ)ल् वुस्क़ा(य्) और य
इल(य्) (अ)ल्लाहि आक़िबतु(अ)ल् उमूरि०
३१ २२

192 १ ला इक्राह फ़ि(य्) (अल्)द्दीनि क़(द्)-
त्तबय्यन (अल्)र्रुश्दु मिन(अ)ल् ग़य्यि
फ़म(न्)य्यक्फ़ुर् बि(अल्)त्ताग़ूति व यु(य्)-
अ्मि(न्) म्बि(अ)ल्लाहि फ़क़दि(अ)स्तम्सक
बि(अ) ल् अुर्वति (अ)ल् वुस्क़ा(य्)
ल(अ) (अ) न् फ़िसाम लहा और व(अ)ल्लाहु
समीअुन् अलीमुन् ० २.२५६

और हम पर कृपा कर। तू ही हमारा रक्षक है। श्रद्धाहीनों के विरोध में हमारी सहायता कर।

२ २८४–२८६

१९० ईश्वर-शरणता के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं

१ क्या वे ईश्वरीय निष्ठा के अतिरिक्त और कुछ चाहते हैं ? वस्तुतः आकाश एवं भूमि में जो कोई हैं, वे सब सम्मति से या असम्मति से ईश्वर की ही आज्ञा का पालन करते हैं और उसीकी ओर लौटाये जायेंगे।

३-८३

१९१ दृढ़ आधार

१ जो कोई अपना हेतु ईश्वर के अधीन करे और वह सत्कृतिवान् हो, तो निस्सन्देह उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। ईश्वर के अधीन प्रत्येक कार्य की पूर्ति है।

३१ २२

४० धर्म-सहिष्णुता

१९२ धर्म में जबरदस्ती को अवकाश नहीं

१ धर्म के विषय में जोर-जबरदस्ती नहीं। सच्चा मार्ग कुमार्ग से अलग और स्पष्ट हो गया है। जो कोई कुवासनाओं को तज दे और ईश्वर पर श्रद्धा रखे, तो उसने दृढ़ सहारा, आश्रय ग्रहण किया, जो कभी टूटनेवाला नहीं। ईश्वर सब सुननेवाला, सब जाननेवाला है।

२ २५६

193 १ इन्न (अ्)ल्लज़ीन यक्फ़ुरून बि(अ्)ल्लाहि व रुसुलिहईं व युरीदून अ(न्)य्युफ़र्रिक़ू-(अ्)बैन (अ्)ल्लाहि व रुसुलिहईं व यक़ूलून नु(व्)अमिनु बि बअ्ज़िन् (न्)व नक्फ़ुरु बि बअ्ज़िन्ण व युरीदून अ(न्)य्यत्तख़िज़ू(अ्) बैन ज़ालिक सबीलन् ०ण

२ उ(व्)लाअिक हुमु(अ्)ल्काफ़िरून हक़्क़न्(अ्) व अअ्तदना लिल् काफ़िरीन अ़ज़ाब (न्)-(अ्)म्मुहीनन् (अ्) ०

३ व(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्) बि (अ्)ल्लाहि व रुसुलिहईं व लम् युफ़र्रिक़ू (अ्) बैन अहदि-(न्)म्मिन्हुम् उ(व्)लाअिक सौफ यु (व्) अ्तीहिम् उजूरहुम्गैप व कान (अ्)ल्लाहु ग़फ़ूर(न्अ्)र्रहीमन्(अ्) ०

४ १५०-१५२

194 १ व इन्न हाज़िहईं उम्मतुकुम् उम्मत(न्)-व्वाहिदत(न्)व्व अना रब्बुकुम् फ(अ्)त्तक़ूनि ०

२ फ़ तक़त्तअ़ू(अ्) अम्रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन् (अ्)गैर कुल्लु हिज़्बि(न्)म् बि मा लदैहिम् फ़रिहून०

२३ ५२-

१९३ सब प्रेषितों पर श्रद्धा

१ जो लोग ईश्वर एव उसके प्रेषितों को मानते नहीं और ईश्वर एव उसके प्रेषितों में भेद करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसीको मानेंगे और किसीको नही मानेंगे और श्रद्धा-हीनता एव श्रद्धा के बीच एक रास्ता निकालना चाहते है,

२ वास्तव में यही लोग श्रद्धाहीन हैं और हमने श्रद्धाहीनो के लिए लज्जास्पद दण्ड तैयार रखा है।

३ किन्तु जो लोग ईश्वर एव उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखते हैं और प्रेषितो में किसीमें भी भेद नहीं करते, उनको हम अवश्य उनके प्रतिफल प्रदान करेंगे। ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

४ १५०–१५२

१९४ भक्तों का समाज एक

१ निस्सन्देह तुम्हारा (भक्तों का) समाज एक समाज है और मै तुम्हारा प्रभु हूँ, अत मत्परायण हो जाओ।

२ फिर लोगों ने अपने (इस) धर्म को अपने बीच काटकर टुकड़े-टुकड़े कर लिया, और प्रत्येक सम्प्रदाय जो उसके पास है, उसी पर रीझ रहा है।

२३ ५२–५३

195 १ व ला तत्रुदि (अ्) ल्लजीन यदऊन रब्बहुम् वि (अ्) ल् ग़दा (व) वि-व (अ्) ल् अशिय्यि युरीदून वज्हहु^गोल मा अलैक मिन् हिसाबि-हि (म्) म्मिन् शय्अि (न्) व्व मा मिन् हिसाबिक अलैहि (म्) म्मिन् शय्अिन् फ़ततूरुदहुम् फ़तकून मिन (अ् ल्) ज़्ज़ालिमीन O

६ ५२

196 १ व ला तसुब्बु (अ्) (अ) ल्लजीन यदऊन मिन् दूनि (अ्) ल्लाहि फ़ यसुब्बु (अ्) ल्लाह अदव (न्)-(अ्) म् वि ग़ैरि अिल्मिन्^गोल

६ १०८

197 १ लि कुल्लिन् जअल्ना मिन्कुम् शिरअत (न्) व्व मिन्हाजन् (अ्)^गोल व लौ शा (अ्) ल्लाहु ल जअलकुम् उम्मत (न्) व्वाहिदत (न्) व्व लाकिन् लिल यब्लुवकुम् फी मा आताकुम फ (अ्) स्तबिकु (वुअ्) (अ्) ल् ख़ैराति^गोल इल-(य्) (अ्) ल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन (अ्) फ युनब्बिअुकुम् वि मा कुन्तुम् फी हि तख़्तलिफ़ून O^ज

५ ५१

१९५ भाविकों को दूर न करो

१ जो लोग अपने प्रभु को प्रात-साय पुकारते हैं और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं, उनको तू दूर न ढकेल। उनके लेखे में से तुम पर कुछ नहीं है और न तेरे लेखे में से उन पर कुछ है कि तू उन्हें दूर हटा दे। ऐसा करने से दुष्टों में तेरी गिनती होगी।

६ ५२

१९६ अन्य देवताओं की निन्दा न करो

१ ये लोग ईश्वर के अतिरिक्त जिसको पूजनीय मानते है, तुम उनको बुरा न कहो, जिससे कि वे मर्यादा का भग कर बिना समझे ईश्वर को बुरा कहने लगें

६ १०८

१९७ भलाई में होड़ करो

१ तुममें से हरएक के लिए हमने एक मार्ग बनाया एव एक पद्धति बनायी और यदि ईश्वर चाहता, तो तुम सबको अवश्य एक समाज बना देता। किन्तु उसने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हें वह जाँचना चाहता है। इसलिए तुम सत्कृतियों में एक-दूसरों से बढ़ने का प्रयत्न करो। ईश्वर के ही पास तुम्हें पहुँचना है। फिर जिस बात में तुम विरोध करते थे, उस विषय में वह तुम्हें वास्तविकता बतायेगा।

५ ५१

198 १ व ला तुजादिलू (अ्)अह्ल(अ्)ल् किताबि इल्ला बि(अ्)ल्लती हिय अह्सनु [वक्फ़] इल्ल-(अ्) (अ्)ल्लज़ीन ज़लमू(अ्)मिन्हुम् व क़ूलू(अ्) आमन्ना बि(अ्)ल्लज़ी उन्ज़िल इलैना व उन्ज़िल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदु(न्)व्व नह्नु लहु मुस्लिमून ०

२९ ४६

199 १ इन्न(अ्)ल्लाह हुव रब्बी व रब्बुकुम् फ(अ्)-अ्बुदूहु [वक्फ़] हाज़ा सिरातु(न्)म्मुस्तक़ीमुन् ०

४३ ६४

200 १ व लिल्लाहि (अ्)ल् मशरिक़ु व (अ्)ल् मग्रिबु[वक्फ़] फ़ अैन मा तुवल्लू(अ्) फ़सम्म वज्हु(अ्)ल्लाहि [वक्फ़] इन्न (अ्)ल्लाह वासिअुन् अ्लीमुन् ०

२ ११५

201 १ व क़ालू(अ्)ल(न्)य्यद्ख़ुल(अ्)ल् जन्नत इल्ला मन् कान हूदन्(अ्) औ नसारा(अ्)[वक्फ़] तिल्क अमानिय्युहुम्[वक्फ़] क़ुल हातू(अ्) बुर्हान-कुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ०

१९८ सुसभ्य साधो

१ तुम ग्रन्थवानो से केवल इस रीति से चर्चा करो, जो सौजन्यपूर्ण हो—उन लोगों को छोडकर, जो अत्याचारी हैं—और कहो जो ग्रन्थ हम पर उतरा और तुम पर उतरा, उस पर हम श्रद्धा रखते हैं और हमारा भजनीय एव तुम्हारा भजनीय एक ही है और हम उसीके शरण हैं।

२९ ४६

१९९ तुम्हारा और मेरा प्रभु एक है

१ निस्सन्देह ईश्वर ही मेरा और तुम्हारा प्रभु है। सो उसकी भक्ति करो। यह सीधा मार्ग है।

४३ ६४

२०० पूर्व-पश्चिम समान

१ पूर्व एव पश्चिम सब ईश्वर की ही हैं। सो तुम जिस ओर मुख करो, उसी ओर ईश्वर सम्मुख है।

२ ११५

२०१ स्वर्ग किसीकी बपौती नहीं

१ वे कहते हैं यहूदी और ईसाई के अतिरिक्त और काई कदापि स्वर्ग में नहीं जायेंगे। अरे, ये तो उनके मनोरथ हैं। कह यदि तुम सच्चे हो, तो अपना प्रमाण लाओ।

२ वला(य्) मन् असलम वजहहु लिल्लाहि व हुवमुहूसिनुन् फलहू अजरुहु अिन्द- रब्बिहीं व ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहूजनून ०

२.१११-११२

202. १ व मा उमिरू (अ्) इल्ला लि यअबुदु(वअ्)-(अ्)ल्लाह मुख़्लिसीन लहु (अल्)दीनंं हुनफा अ व युकीमू(अ्) (अल्) सलता(व्)त व यु(व्) अतु(वअ्) (अल्) ज़कात(व्)व व ज़ालिक दीनु (अ्)ल् कय्यिमति ०

९८.५

203 १ फ(अ्)सबिर अला(य्) मा यकूलून व सब्बिह बि हम्दि रब्बिक कब्ल तुलूअि(अल्) शशम्सि व क़ब्ल ग़ुरूबिहा व मिन् आनां(य्)अि-(अ्)ल्लैलि फ सब्बिहू व अत्राफ़(अल्) न्नहारि लअल्लक तरज़ा (य्)०

२० १३०

204 १ फ़कुलू(अ्)मिम्मा ज़ुकिर(अ्)स्मु(अ्)ल्लाहि अलैहि इन् कुन्तुम् बि आयातिहीं मु(व्)अमिनीन ०

२ व ला तअकुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मु (अ्) ल्लाहि अलैहि व इन्नहु ल फिसकुनंं

६ ११८-१२१

२ क्यों नहीं ? जिसने अपना व्यक्तित्व ईश्वर को सौंप दिया और वह सत्कृतिवान् है, तो उसके लिए उसका प्रतिफल उसके प्रभु के पास है। उनको कोई भय नहीं और न वे दुःखी होंगे।

२।१११-११२

४१ धर्म-विधि

२०२ विधि-त्रय

१ और उन्हें आज्ञा दी गयी कि ईश्वर की भक्ति करें और केवल उसीके लिए शुद्ध निष्ठा रखें, एकाग्र होकर। और नित्य-नियमित प्रार्थना करें एवं नियत दान दें। यही सीधा धर्म है।

९८।५

२०३ उपासना (पंच-नमाज)

१ वे जो कुछ कहते हैं, उसे सहन कर और अपने प्रभु के स्तवन के साथ उसका जप कर, जयजयकार कर। सूर्य निकलने से पहले और उसके अस्त होने के पहले और जप किया कर। रात की कुछ घड़ियों में और दिन के दोनों छोरों पर, जिससे कि प्रभु तुझे स्वीकार करे।

२०।१३०

२०४ प्रभु-स्मरणपूर्वक आहार-सेवन

१ यदि ईश्वर के संकेतों पर तुम श्रद्धा रखते हो, तो जिस अन्न पर ईश्वर-नाम-स्मरण किया गया हो, उसमें से खाओ

205 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्) कुतिब अलैकुमु (अ्ल्) सियामु क मा कुतिब अल(य्) (अ्)ल्लजीन मिन् क़ब्लिकुम् लअल्लकुम् तत्तकून ०[क]

२ अय्याम(न्) (अ्)म्मअ्दूदातिन्[ग्रैर] फ मन् कान मिन्कु(म्)म्मरीद़न्(अ्)औ अला (य्) सफ़रिन् फ अिद्दतु(न्)म्मिन् अय्यामिन् अुखर[ग्रैर] व अल(य्) (अ्)ल्लजीन युतीक़ूनहु फ़िद्यतुन् तआमु मिस्कीनिन्[ग्रैर] फ मन् ततव्वअ खैरन् (अ्)फ हुव खैरु(न्)ल्लहु[ग्रैर] व अन् तसूमू(अ) खैरु(न्)ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून ०

२ १८३–१८४

206 १ व अतिम्मु(अ्) (अ्)ल् हज्ज व(अ्)ल् अुम्रत लिल्लाहि[ग्रैर] फ इन् उह्सिर्तुम् फ़ म(अ्)-(अ्)स्तैसर मिन(अ्)ल् हद्यि[क]

२ ...फ़ ला रफस व ला फुसूक़[क] व ला जिदाल फि (अ्)ल् हज्जि[ग्रैर]

२.१९६–१९७

२ और उसमें से न खाओ, जिस पर ईश्वर-नाम-स्मरण न किया गया हो, क्योंकि ऐसा करना आज्ञा भग है ।

६ ११८-१२१

२०५ उपवास

१ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारे लिए उपवास की विधि है—जैसे उन लोगों के लिए विधि थी, जो तुमसे पूर्व थे—जिससे कि तुम सयमी हो जाओ।

२ कुछ गिनती के दिन उपवास करो। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो या प्रवास में हो, तो दूसरे दिनों में वह गिनती पूरी करे। और जो लोग शक्ति रखते हैं, उनके लिए विधि है, एक अकिञ्चन को अन्न देना। फिर जो कोई अधिक सत्कर्म करे, तो वह उसके लिए अच्छा ही है। और यदि तुम उपवास करो, तो तुम्हारे लिए हितकर है, यह तुम जानो।

२ १८३-१८४

२०६ पुण्ययात्रा

१ पुण्ययात्रा एव क्षेत्र-दर्शन को ईश्वर के लिए पूरा करो। फिर यदि तुम कहीं रोके जाओ, तो जो भेंट बन पड़े, वह भेज दो ।

२ यात्रा में कोई दुष्ट आचरण, कोई दुर्भाषण और कोई कलह न हो ।

२ १९६-१९७

खण्ड ६

नीति

207 १ व मा यस्तवि (यम्) ल् अअ्मा (य्) व (अ्)ल
वब़ीर् O[ग]
२ व ल (अ्) (अ्ल्) ज़ुलमातु व ल (अ्) (अ्ल्)-
न्नूर् O[ग]
३ व ल (अ्) (अ्ल्) ज़िल्लु व ल (अ्) (अ्)ल्
ह्रूर् O[१]
४ व मा यस्तवि (य्) (अ्)ल् अह्या उ व ल (अ्)-
(अ्)ल् अम्वातु[गोष]

३५ ११ २२

208 १ अन्ज़ल मिन (अ्ल्) स्समोअि मा अन् फ़ सालत्-
औदियतु (न)म् वि कदरिहा फ (अ्) ह्तमल
-(अ्ल्) स्सैलु ज़वद (न् अ्) र्रावियन् (अ्)[गष]
व मिम्मा यूक़िदून अलैहि फ़ि (य्) (अ्ल) न्नारि-
(अ्) ब्तिग़ाअ हिलयतिन् औ मताअिन् ज़वदु-
(न्) म्मिस्लुहु[गोष] कज़ालिक यज़्रिबु (अ्) ल्लाहु-
(अ्) ल् हक़्क़ व (अ्) ल् बातिल[०गोष] फ अम्म (अ्)-
(अ्ल्) ज़्ज़वदु फ़ यज्हबु जुफ़ाअन् [ग] व
अम्मा मा यन्फ़अु (अ्ल्) न्नास फ यमकुसु
फ़ि (अ्) (अ्)ल् अर्ज़ि[गोष] क जालिक युद्रिबु-
(अ्) ल्लाहु (अ्)ल् अम्साल O[गोष]

११ १७

१७ सत्य

४२ सत्यासत्य-विवेक

२०७ ज्ञान-अज्ञान भेद

१ अन्धा और देखनेवाला समान नही
२ और न प्रकाश एव अन्धकार
३ और न छाया एव धूप
४ और न समान हं जीवित एव मृत ।

३५ १९–२२

२०८ जल-फेन-न्याय

१ उसने आकाश से पानी उतारा, फिर अपने माप के अनुसार नाले बहने लगे । फिर वह बाढ़ फूला हुआ झाग ऊपर ले आयी और उस चीज पर भी ऐसा ही झाग होता है, जिसको गहने या साजो-सामान के लिए आगमें तपाते हैं, इसी प्रकार ईश्वर सत्यासत्य का दृष्टान्त देता है। तो, जो झाग है, वह सूखकर उड़ जाता है और उसमें से जो चीज लोगों के काम आती है, वह जमीन में शेष रह जाती है, इस प्रकार ईश्वर अपने दृष्टान्त देता है।

१३ १७

209 १ व ला तल्बिसु (व्अ्) (अ्)ल् हक़्क़ बि(अ्)ल् बातिलि व तक्तुमु (व् अ) (अ्)ल् हक़्क़ व अन्तुम् तअ्लमून०

२ ४२

210 १ व लहु (अ्) त्तबअ (अ्)ल् हक़्क़ु अह्वाअ-हुम् ल फसदति (अ्स्) स्समावातु व (अ्)ल् अर्ज़ु व मन् फी हिन्नल्

२३ ७१

211 १ बल् नक़्जिफु बि (अ)ल् हक़्क़ि अल (य्) (अ्)ल् बातिलि फ यद्मग़ुहु फ इज़ा हुव ज़ाहिक़ुन्०

२१ १८

२०९ सत्यासत्य की मिलावट न करो

१ सत्य एव असत्य की मिलावट न करो, और सत्य को जान-बूझकर मत छिपाओ ।

२ ४२

२१० सत्य हमारी वासनाओं के अनुसार नहीं चलता

१ सत्य यदि लोगों की वासनाओं का अनुकरण करे, तो आकाश एवं भूमि में और जो कोई उनके बीच में हैं, सब बिगड़ जाय ।

२३ ७१

२११ असत्य का मस्तक भग

१ हम सत्य को असत्य पर फेंक मारते हैं। फिर वह उसका सिर फोड डालता है ।

२१ १८

212 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)लिम
तक़ूलून मा ला तफ़्अलून ०
२ कबुर मक्तन्(अ्) अिन्द(अ्)ल्लाहि अन्
तक़ूलू(अ्) मा ला तफ़्अलून ०

६१ २-३

213 १ अ तअ्मुरून(अ्ल्)न्नास वि(अ्)ल् बिर्रि
व तन्सौन अन्फुसकुम् व अन्तुम् ततलून(अ)ल्
किताव ^शेष^ अ फ ला तअ्क़िलून०

२४४

214 १ व औफ़ू(अ्)वि अह्दि(अ)ल्लाहि इजा आह
-(द्)तुम् व ला तन्कुदु(व्अ्) (अ्)ल् ऐमान
वअ्द तौकीदिहा व कद जअलतुम(अ्)ल्लाह
अलैकुम् कफ़ीलन्(अ्)^शेष^ इन्न(अ्) ल्लाह
यअ्लमु मा तफ़्अलून ०
२ व ला तकूनू(अ्)क (अ्)ल्लती नक़ज़त् ग़ज़्लहा
मि(न्)म् यअ्दि कुव्वतिन अन्कासन(अ्)^शेष^

१६ ९१-९२

१८ वाक्शुद्धि

४३ सत्यसन्ध

२१२ कथनी वसी करनी

१ हे श्रद्धावानो ! ऐसी बात क्यों कहते हो, जो करते नही ?
२ ईश्वर के निकट यह बात बहुत निन्द्य है कि वह बात कहो, जो करो नही।

६१ २-३

२१३ परोपदेशे पाण्डित्यम

१ क्या तुम लोगो को सत्कार्य करने का आदेश देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो जब कि तुम ग्रन्थ-पारायण करते हो ! फिर क्या तुम बुद्धि से काम नही लेते ?

२४४

२१४ सूत तोड़नेवाली

१ ईश्वर को दिया हुआ अभिवचन पूरा करो जब कि तुमने अभिवचन दिया है। और शपथों को दृढ़ करने के पश्चात् तोड न डालो, जब कि तुम ईश्वर को अपने ऊपर साक्षी बना चुके हो। निश्चय ही ईश्वर जानता है, जो कुछ तुम करते हो।
२ और उस स्त्री के जैसा न हो जाओ, जिसने अपने श्रम से काता हुआ सूत टुकडे-टुकडे कर डाला !

१६९१-९२

215 १ व(अ्)ल्लजी जाअ बि(अ्ल्) स्सिद्क़ि व सद्दक़ बिही' अु(व्)लाअिक हुमु(अ्)ल् मुत्तक़ून O

२ लहुम् मा यशाअून अिन्द रब्बिहिम् जालिक जज़ा(व्) अु(अ्)ल् मुह्सिनीन O

३९ ३३-३४

216 १ अलम् तर कैफ ज़रब(अ्)ल्लाहु मसलन्(अ्) कलिमतन् तय्यिबतन् क शजरतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहा साबितु(न्) व्व फ़र्अुहा फ़ि-(अ्ल्)स्समाअि O

२ तु(अ्)अ्ती' अुकुलहा कुल्ल हीनि (न्)म्-बि इज़्नि रब्बिहा व यज़्रिबु(अ)ल्लाहु(अ्)ल् अम्साल लि(ल्)न्नासि लअल्लहुम् यतज़क्करून O

३ व मसलु कलिमतिन् ख़बीसतिन् क शजरतिन् ख़बीसति नि(अ्)ज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़ि(अ्)-ल् अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रारिन् O

१४ २४-२६

217 १ व क़ुल् लि अिबादी यक़ूलु(अ्)ल्लती हिय अह्सनु इन्न(अ्ल्)श्शैतान यन्ज़ग़ु बैनहुम् इन्न(अ्ल्) श्शैतान कान लिल् इन्सानि अदुव्व(न्) (अ्)म्मुबीनन्(अ्) O

१७ ५३

२१५ सत्य निष्ठा

१ जो लोग सच्ची बात लेकर आये और जिन्होंने उसे सच माना, वे ही लोग धर्मपरायण हैं।

२ वे जो कुछ चाहेंगे, वह उनके प्रभु के पास है। सत्कृतिवानों का यह प्रतिफल है।

३९ ३३–३४

४४ मंगल वाणी

२१६ सुवचन-कुवचन—उपमा

१ क्या तूने देखा नही कि ईश्वर ने सुवचन का कैसा दृष्टान्त दिया है। उसका दृष्टान्त एक अच्छे (जाति के) वृक्ष का है, जिसका मूल दृढ़ है और उसकी शाखाएँ आकाश में हैं।

२ प्रतिक्षण वह अपने प्रभु की आज्ञा से फल दे रहा है और ईश्वर लोगों के लिए दृष्टान्त देता है, जिससे कि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें।

३ और कुवचन का दृष्टान्त एक दुष्ट (जाति के) वृक्ष का है, जो भूमि के ऊपर ही ऊपर उखाड़ लिया जाता है। उसके लिए कोई स्थैर्य नहीं है।

१४ २४–२६

२१७ शिव वद

१ मेरे दासों को कह कि वह बात कहें, जो बहुत अच्छी है। शैतान उनमें कलह के बीज डालता है। वास्तविकता यह है कि शैतान मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है।

१७ ५३

218 १ व मन् अह्सनु कौल्(न्)म्मिम्मन् दआ इल(य्)(अ्) ल्लाहि व अमिल सालिह(न्अ्)ञ्व काल इन्ननी मिन(अ्)ल् मुस्लिमीन ०

४१ ३३

219 १ या अय्युह(अ्)ल्लजीन आमनु(व्अ्)त्तक़ु(वअ्)(अ्)ल्लाह् व कूलू कौलन सदीदन्(अ्)०^म

३३ ७०

220 १ ला युहिब्बु(अ्)ल्लाहु(अ्)ल् जह्र बि(अल्)स्सू'अि मिन(अ्)ल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलिम^मीम व कान(अ्)ल्लाहु समीअन्(अ)अलीमन्(अ्)
२ इन् तुब्दू(अ्) खैरन्(अ्)औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्फू(अ्)अन् सू'अिन् फ इन्न(अ्)ल्लाह कान अफ़ुव्वन(अ्)क़दीरन०

४ १४८–१४९

221 १ या अय्युह(अ्)(अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)ला यसख़र् कौमु(न्)म्मिन् क़ौमिन् असा(य्)अ(न्)य्यकूनू(अ्) खैर(न्अ्)म्मिन्हुम् व ला निसा'अु-(न्)मि(न्)न्निसा'अिन असा(य)अ(न्)य्य-कुन्न खैर(न्)(अ्)म्मिन्हुन्न व ला तल्मिज़ू(अ्) अन्फुसकुम् व ला तनाबज़ू(अ्) बि(अ्)ल्

२१८ उत्तम वाणी

१ इससे उत्तम किसकी बात हो सकती है, जो ईश्वर की ओर बुलाये और सत्कृत्य करे, और कहे कि निस्सन्देह मैं उन लोगों में हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को ईश्वर की आज्ञा के अधीन किया।

४१ ३३

२१९ सीधी बात

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर से डरो और सीधी बात कहो।

३३ ७०

४५ अनिन्दा

२२० बुरी बात मुख से न निकालो

१ बुरी बात वाणी पर लाना ईश्वर को नहीं भाता, अतिरिक्त इस स्थिति के कि किसी पर अत्याचार हुआ हो। ईश्वर सुननेवाला है, जाननेवाला है।

२ यदि तुम भलाई प्रकट करो या अप्रकट रखो, या बुराई को क्षमा करो तो, निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान् सर्वशक्तिमान् है।

४ १४८–१४९

२२१ निन्दा न करो

१ हे श्रद्धावानो ! पुरुषों को पुरुषों की हँसी नहीं उड़ानी चाहिए कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ायें, कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छी हों। एक-दूसरे को दोष न लगाओ और एक-दूसरे को विद्रूपित

अल्काविरीन विअ्स (अ्)ल् इस्मु (अ्)ल् फुसूक़ु
वअ्द (अ्)ल् ईमानि व म(न्)ल्लम् यतुब्
फ उ(व्)लाअिक हुमु (अ्ल्)ज़्जालिमून O
२ या अय्युह(अ्) (अ्) ल्लजीन आमनु(अ्)-
(अ्)ज्तनिबू(अ्)कसीर(न्अ्) म्मिन(अ्ल्)-
ज़्जन्नि इन्न बअ्द्र(अ्ल्)ज़्जन्नि इस्मु(न्) व्व
ला तजस्ससु(अ्) व ला यग़्त(ब्)ब्बअ्द्रुकुम्
बअ्द्रन्(अ्) अ युहिब्बु अहदुकुम् अ(न्)-
य्यअ्कुल लह्म अख़ीहि मैतन् (अ्) फ
करिह्तुमूहु व(अ्ल्) त्तक़ु(व्अ्)(अ्)-
ल्लाह इन्न(अ्)ल्लाह तव्वाबु(न्)र्रहीमुनO
४९ ११-१२

222. १ व इज़ा रऐत(अ्)ल्लज़ीन यख़ूज़ून फी आयाति-
ना फ अअ्रिज़ अनहुम् हत्ता(य्) यख़ूज़ु(अ)
फी हदीसिन् ग़ैरिहि व इम्मा युन्सियन्नक(अ्ल्)
श्शैतानु फ ला तक़्अुद् बअ्द(अ्ल्)ज़्जिक्रा-
(य्)मअ(अ्)ल् क़ौमि(अ्ल्)ज़्जालिमीन O
६ ६८

223. १ व इज़ा समिअु(व्अ्)(अ्ल्)ल्लग्व अअ्रज़ू-
(अ्)अन्हु व क़ालू(अ्)ल्ना अअ्मालुना
व लकुम् अअ्मालुकुम् सलामुन् अलैकुम्
ला नब्तग़ि(य्)(अ्)ल् जाहिलीनO २८ ५५

नामों से न पुकारो। श्रद्धायुक्त होने के पश्चात् पाप का नाम ही बुरा है, और जो इससे परावृत्त न हों, वे ही अत्याचारी हैं।

२ हे श्रद्धावानो ! बहुत संशय करने से बचे रहो। निस्सन्देह कुछ संशय पाप हैं। और किसीकी टोह में न लगो, और तुममें से कोई किसीकी चुगली न करे। भला तुममें से किसीको यह भायेगा कि अपने मरे हुए भाई का मांस खाये ? तुम्हें उससे घिन आयेगी। ईश्वर से डरते रहो। निस्सन्देह ईश्वर पश्चात्ताप को स्वीकार करनेवाला है, करुणावान् है।

४९.११.१२

२२२ विवाद टालो

१ जब तू उन लोगों को देखे कि वे हमारे वचनों पर टीका-टिप्पणियां कर रहे हैं तो तू उनके पास से हट जा। यहां तक कि वे उसके अतिरिक्त और किसी बात में लग जायें। और शैतान तुझे भुलावे में डाल दे, तो स्मरण आ जाने के पश्चात् तू उन अत्याचारियों के साथ न बैठ।

६.६८

२२३ व्यर्थ बातें टालो

१ जब व्यर्थ बातें सुनते हैं, तो टाल जाते हैं और कहते हैं हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। तुम्हें सलाम। हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते।

२८.५५

224 १ व क़द् नज़्ज़ल अ़लैकुम् फि(अ्) ल् किताबि अन् इज़ा समिअ्तुम् आयाति(अ्)ल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़अु बिहा फ ला तक़्अुदू-(अ्) मअ़हुम् हत्ता(य्)यख़ूड़ू(अ्) फ़ी हदीसिन् ग़ैरिहिई इन्न कुम् इज़(न्अ्)-म्मिस्लुहुम्

४ १४०

225 १ वैलु(न्) लिल कुल्लि हुमज़ति(न्) ल्लुमज़ति-नि ०

२ (अ्)ल्लज़ी जमअ़ माल(न्) (अ्) व्व अ़द्ददहु०

३ यह्सबु अन्न मालहु अख़्लदहु ०

४ कल्ला ल युम्बज़न्न फि (अ्)ल् हुतमति

५ व मा अदराक म(अ्) (अ्)ल् हुतमतु०

६ नारु(अ्)ल्लाहि (अ्)ल् मूक़दतु०

७ (अ्) ल्लती तत्तलिअ़ु अ़ल(य्) (अ्)ल् अफ़्इदति०

८ इन्नहा अ़लैहि(म्)म्मु (व्) अ्सदतुन् ०

९ फ़ी अ़मदि(न्)म्मुमद्ददतिन्०

१०४ १-९

धम निन्दा नहीं सुननी चाहिए

१ ईश्वर इस ग्रन्थ में तुम पर आज्ञा उतार चुका है कि जब तुम ईश्वर के वचनों के विषय में सुनो कि उनका अस्वीकार किया जा रहा है और उसकी हँसी उड़ायी जा रही है, तो उन लोगों के पास न बैठो। जब तक कि वे इसके अतिरिक्त दूसरी बात में न लग जायँ, नहीं तो तुम भी उन्हीं जैसे होगे ।

४।१४०

२२५ निन्दकों की गति

१ दोष ढूंढ़नेवाले पिशुन एवं कटुभाषी के लिए धिक्कार,
२ जिसने धन इकट्ठा किया और उसे गिनता रहा,
३ वह इस गुमान में है कि धन उसको नित्य जीवित रखेगा।
४ कदापि नहीं, वह अवश्य फेंका जायगा उस जलानेवाली के भीतर।
५ और तू क्या जानता है कि वह जलानेवाली क्या है ?
६ वह है ईश्वर की सुलगायी हुई आग।
७ जो दिलों पर चढ़ आती है।
८ निश्चय ही वह आग उन पर बन्द कर दी जायगी।
९ लम्बे-लम्बे खम्भों (के रूप) में।

१०४।१-९

226 १ कतबूना अला (य्) बनी इसराईल अन्नहु मन् कतल नफ़्स (न्) मृबिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फि (अ्) ल् अर्द्दि फ़ क अन्नमा क़तल- (अ्ल्) न्नास जमीअन् (अ्) व मन् अह़्याहा फ़ क अन्नमा अह़्य (अ्) (अ्ल्) न्नास जमीअन् (अ्)^क़ेय

५ ३५

227 १ उद्अू (अ्) रब्बकुम् तज़र्रुअ (न्) (अ्)व्व ख़ुफ़्यतन् ^क़ेय इन्नहु ला युहिब्बु (अ्) ल् मुअ्तदीन ० र

२ व ला तुफ़्सिदू (अ्) फि (य्) (अ्) ल् अर्द्दि बअ्द इस्लाहिहा व (अ्) दअूहु ख़ौफ़ (न्)- (अ्)व्व तमअन् (अ्)^क़ेय इन्न रह़्मत (अ्)- ल्लाहि करीबु (न्) म्मिन (अ्)ल् मुह़्सिनीन०

७ ५५–५६

१९ अहिंसा

४६ न्याय-बुद्धि

२२६ एक मनुष्य बचाना अर्थात् जगत को बचाना

१ हमने इस्रायल-पुत्रों को आदेश दिया कि जिसने किसी मनुष्य की किसी प्राण की हानि के बदले या पृथ्वी में युद्ध छेड़ने के कारण के अतिरिक्त अन्य कारण से—हत्या की, तो उसने मानो, अखिल मानव-जाति की हत्या कर दी। और जिसने किसी प्राण को बचाया, उसने मानो अखिल मानव-जाति को जीवन प्रदान किया ।

५ ३५

२२७ कलह न फलाओ

१ अपने प्रभु को पुकारो, गिड़गिड़ाते हुए और मौनपूर्वक निस्सन्देह वह मर्यादाओं का अतिक्रमण करनेवालों को पसंद नहीं करता।

२ इस जगत् में बखेड़ा न मचाओ, जब कि उस (जगत्) का सुधार हो चुका है। और उसी (प्रभु) को पुकारो भय एवं आशा के साथ। ईश्वर की करुणा सत्कृति करनेवालों के निकट है।

७ ५५–५६

228 १ या अय्युह (अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्) कूनू(अ्) कव्वामीन लिल्लाहि शुहदाअ बि(अ्)ल् क़िस्त्रि व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अला(य्) अल्ला तअ्दिलू (अ्) गाफ इअ्दिलू(अ्) क़फ हुव अक्रबु लि(ल्)तक़्वा-(य्) व (अ्)त्तक़ु(वुअ्) (अ्)ल्लाहगाफ इन्न-(अ्)ल्लाह खबीरु (न्)म्बि मा तअ्मलून ० ५ १

229 १ व इन् जनहू (अ्) लि(ल्) स्सलमि फ (अ)-ज्नह् लहा व तवक्कल अल(य्) (अ्)ल्लाहि गाफ इन्नहु हुव(अ्ल्) स्समीअु (अ्)ल् अलीमु०

२ व इ (न्) य्युरीदू (अ्)अ(न्) य्यख्दअूक फ इन्न हस्बक (अ्) ल्लाहु गाफ हुव (अ्)-ल्लजी अय्यदक बि नस्रिही व बि(अ्)ल मु(अ्)मिनीन०ला

३ व अल्लफ बैन कुलूबिहिम गाफ लौ अन्फ़क्त मा फि(अ्)ल् अर्दि जमीअ(न्अ) म्मा अल्लफ्त बैन कुलूबिहिम् व लाकिन्न(अ्)ल्लाह अल्लफ बैनहुम् गाफ इन्नहु अजीजुन हकीमुन०

८.६१-६३

230 १ व इन् आक़ब्तुम् फआक़िबू(अ्) बि मिस्लि मा अूकिब्तुम् बिही गाफ व लइन् सबर्तुम् ल हुव खैरु(न्)लि(ल्)स्साबिरीन०

२२८ द्वेष करनेवालों पर भी अन्याय न करो

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर के लिए सत्य पर स्थिर रहनेवाले तथा न्याय की साक्ष्य देनेवाले बनो। किसीका द्वेष तुम्हें इस प्रकार उत्तेजित न करे कि तुम न्याय न कर सको। न्याय करो। यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो। निस्सन्देह ईश्वर तुम्हारे कृत्यों से अवगत है।

५९

२२९ मैत्री के लिए प्रस्तुत रहो

१ यदि वे सन्धि की ओर झुकें, तो तू भी उसके लिए झुक जा और ईश्वर पर भरोसा रख। निस्सन्देह वही सर्वश्रुत, सर्वज्ञ है।

२ और यदि वे तुझे धोखा देने की इच्छा रखते हों, तो तेरे लिए ईश्वर पर्याप्त है। उसीने तुझे अपनी सहायता से एवं श्रद्धावानों के द्वारा बल पहुँचाया।

३ और श्रद्धावानों के हृदय एक-दूसरे से जोड़ दिये। यदि तू पृथ्वी में जो कुछ है सब व्यय कर डालता तो भी उनके हृदयों को जोड़ न सकता। किन्तु ईश्वर ने उनके हृदय जोड़ दिये। निस्सन्देह वह सर्वजित्, सर्वविद् है।

८६१-६३

४७ न्याय से क्षमा श्रेष्ठ

२३० सहन करना श्रेष्ठ

१ यदि बदला लो, तो उतना ही जितना तुम्हें कष्ट दिया गया और यदि सहन करो, तो सहन करनेवालों के लिए सहन करना ही अच्छा है।

२ व(अ्)स्बिर् व मा सब्रुक इल्ला बि(अ्)ल्लाहि व ला तह्जन् अ़लैहिम् व ला तकु फी ज़ैकि(न्)-म्मिम्मा यम्कुरून ०

३ इन्न(अ्)ल्लाह मअ(अ्)ल्लज़ीन(अ्)त्तकौ-(अ्)व्व(अ्)ल्लज़ीन हु(म्)म्मुह्सिनून ०

१६ १२६-१२८

231 १ व(अ्)ल्लज़ीन इज़ा असावहुमु(अ्)ल् वग्यु-हुम् यन्तसिरून ०

२ व जज़ा(उ्) अु(अ्)सय्यिअतिन् सय्यिअतु-(न्)म्मिस्लुहा[२] फ मन अ़फ़ा व अस्लह फअज्रुहु अ़ल (य्) (अ्) ल्लाहि[लोप] इन्नहु ला युहिब्बु (अल्)ज़्ज़ालिमीन ०

४२ ३९-४०

232 १ खुज़ि(अ्)ल् अ़फ्व वअ्मुर् बि (अ्)ल् अ़ुर्फि व अअ़रिद़ अ़नि(अ्) ल् जाहिलीन०

२ व इम्मा यन्ज़ग़न्नक मिन (अल्)श्शैतानि नज्ग़ुन् फ(अ्)स्तअिज़् बि(अ्)ल्लाहि[१] इन्नहु समीअुन् अ़लीमुन् ०

३ इन्न(अ्)ल्लज़ीन(अ्)त्तक़ौ(अ्) इज़ा मस्सहुम् त्ताअिफु(न्)म्मिन(अल्)श्शैतानि तज़क्करू(अ्) फ इज़ा हु(म्)म्मुब्सिरून ०[३]

७ १९९-२०१

२ तू सहन कर। तेरा सहन करना ईश्वर की ही सहायता से है। उनके लिए दुःखी न हो और उनके कपटों से व्यथित न हो।

३ निस्सन्देह ईश्वर उन लोगों के साथ है, जो उससे डरते हैं और जो अच्छे काम करते हैं।

१६ १२६–१२८

२३१ क्षमा करना श्रेष्ठ

१ वे लोग जब उन पर बहुत अत्याचार होता है, तो जवाब देते हैं।

२ बुरे काम का बदला उतना ही बुरा है। फिर जो कोई क्षमा करे और सपरिवर्तन करे, उसका प्रतिफल ईश्वर के अधीन ही है। निस्सन्देह वह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता।

४२ ३९–४०

४८ अहिंसक निष्ठा

२३२ क्षमा एवं ईश्वराश्रय

१ क्षमा करने का अभ्यास कर, सत्कृति का आदेश देता जा, और गँवारों से टल।

२ यदि शैतान की छेड़ तुझे उकसाये, तो ईश्वर का आश्रय माँग। निस्सन्देह वह सर्वश्रुत है, सर्वज्ञ है।

३ निस्सन्देह जो लोग ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य करते हैं, उनको शैतान की ओर से कोई विकार छू भी जाता है, तो वे चौकन्ने हो जाते हैं। सो एकाएक उनकी आँखें खुल जाती हैं।

७ १९९–२०१

233 १ इद्‌फ़अ् बि(अ्)ल्लती हिय अह्‌सनु (अल)-सय्यिअतगोल नह्‌नु अअ्‌लमु बि मा यसिफ़ूनo
२ व क़ु(ल्‌) र्रब्बि अऊज़ु बिक मिन्‌ हमज़ाति-(अल्‌) श्शयातीनिoग
३ व अऊज़ु बिक रब्बि अ (न्‌) य्यह्‌ज़ुरूनि o

२३ ९६–९८

234 १ वल्‌ यअ्‌फ़ू(अ्)वल्‌ यस्फ़ह्‌(अ्)गोल अ ला तुहिब्बून अ(न्‌) य्यग़्फ़िर(अ्)ल्लाहु लकुम्‌गोल व(अ्)ल्लाहु ग़फ़ूरु(न्‌) र्रह़ीमुन्‌o

२४ २२

235 १ व ला तस्तवि (य्‌) (अ्)ल्‌ हसनतु व ल-(अ्) (अल्‌)स्सय्यिअतुगोल इद्‌फ़अ् बि (अ्)-ल्लती हिय अह्‌सनु फ़इज़(अ) (अ्)ल्लज़ी बैनक व बैनहु अदावतुन्‌ क अन्नहु वलिय्युन्‌ हमीमुन्‌o
२ व मा युल्‌क़्क़ाहा इल्ल(अ्) (अल)ल्ज़ीन सबरू(अ्)*व मा युल्‌क़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन्‌ अज़ीमिन्‌o

४१ ३४–३५

२३३ बुराई का भलाई से प्रतिकार

१ बुराइ का प्रतिकार ऐसे बर्ताव से करो, जो बहुत अच्छा हो। हम भलीभाँति जानते हैं, जो ये बोल रहे हैं।

२ और कह हे प्रभो ! म तेरा आश्रय चाहता हूँ शैतान की कुप्रेरणाओं से बचने के लिए।

३ और हे प्रभो ! म तेरा आश्रय माँगता हूँ, शैतान मेरे पास न आये इसलिए।

२३ ९६–९८

२३४ हम क्षमायाचक, हम क्षमा करें

१ लोगो को चाहिए कि वे क्षमा करें और भूल जायें। क्या तुम नहीं चाहते कि ईश्वर तुमको क्षमा करे? ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

२४ २२

२३५ शत्रु मित्र होंगे

१ सत्कम एव दुष्कम समान नही हो सकते। दुष्टता को ऐसे बर्ताव से दूर कर, जो बहुत अच्छा हो। फिर एकाएक वह मनुष्य कि जिसके और तेरे बीच शत्रुता है ऐसा होगा, मानो वह तेरा सुहृद् मित्र है।

२ और यह बात उसको प्राप्त होती है, जो दृढ़निश्चय है, और यह बात उसीको मिलती है, जो बड़ा भाग्यवान् है।

४१ ३४–३५

236 १ इन्न (अ) ल्लज़ीन आमनू (अ) व अमिलु (अ
(अल्) स्सालिहाति स यज्अलु ल हुमु (अल्
र्रह्मानु वुद्दन् (अ)O

१९

237 १ अरऐत (अ) ल्लज़ी युकज़्ज़िबु बि (अल्) द्दीनिO
२ फ ज़ालिक (अ) ल्लज़ी यदुअ्अु (अ) ल् यतीमO
३ व ला यहुद्दु अला (य) त्आमि (अ)
मिस्कीनिO
४ फ वैलु (न) ल्लिल् मुसल्लीनO
५ (अ) ल्लज़ीन हुम् अन् सलातिहिम् साहूनO
६ (अ) ल्लज़ीन हुम् युराऊनO
७ व यम्नऊन (अ) ल् माऊनO

१०७ १-

238 १ अ लम् नज्अ (ल्) ल्लहु ऐनैनिO
२ व लिसान (न्) व्व शफ़तैनिO
३ व हदैनाहु (अल्) नज्दैनिO
४ फल (अ) (अ) क्तहम (अ) ल् अक़बतO

२३६ प्रेम कैसे प्राप्त होगा ?

१ निस्सन्देह जो श्रद्धा रखते हैं और जिन्होंने सत्कृत्य किये हैं, उनमें वह कृपालु प्रेम निर्माण करता है।

१९।९६

४९ सहयोग-वृत्ति

२३७ पड़ोसी-धर्म

१ क्या तूने उस मनुष्य को देखा, जो न्याय के दिन को नहीं मानता ?
२ तो यही वह व्यक्ति है, जो अनाथ को धक्के देता है।
३ और वंचितों को अन्न देने के लिए लोगों को उत्साहित नहीं करता।
४ सो, उन प्रार्थना करनेवालों को धिक्कार,
५ जो अपनी प्रार्थना से असावधान हैं।
६ वे, जो मिथ्याचार करते हैं।
७ और पड़ोसियों को दैनन्दिन बरतने की छोटी चीजें भी नहीं देते।

१०७।१-७

२३८ संयम एवं दया का पारस्परिक बोध

१ क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं ?
२ और जीभ और दो होंठ ?
३ और दिखला दिये उसको दोनों मार्ग।
४ तो वह घाटी नहीं चढ़ा।

236 १ इन्न (अ्) ल्लजीन आमनू (अ्) व अमिलु (वस्)-
(सॉल्) स्सालिहाति स यज्अलु ल हुमु (अ्ल्)
र्रह्मानु वुद्दन् (अ्)०

१९ ९६

237 १ अरऐत (अ्) ल्लजी युकज़्जिबु बि (अ्द्) दीनि०[ईन]
२ फ ज़ालिक (अ्) ल्लज़ी, यदुअ्अु (अ्) ल् यतीम०[ईम]
३ व ला यहुद्दु अला (त्) तआमि (अ्) ल्
मिस्कीनि०[ईन]
४ फ वैलु (न्) ल्लिल् मुसल्लीन०[ईन]
५ (अ्) ल्लजीन हुम् अन् सलातिहिम्साहून०[ऊन]
६ (अ्) ल्लजीन हुम् युराऊन०[ऊन]
७ व यम्नऊन (अ्) ल् माअून०[ऊन]

१०७ १-७

238 १ अ लम् नज्अ (ल्) ल्लहु अैनैनि०[ऐन]
२ व लिसान (न्) व्व शफतैनि०[ऐन]
३ व हदैनाहु (न्ल्) नज्दैनि०[ऐन]
४ फल (अ्) (अ्) क्तहम (ल्) न्, अकबत०[अत्]

२३६ प्रेम कसे प्राप्त होगा ?

१ निस्सन्देह जो श्रद्धा रखते हैं और जिन्होंने सत्कृत्य किये हैं, उनमें वह कृपालु प्रेम निर्माण करता है।

१९ ९६

४९ सहयोग-वृत्ति

२३७ पड़ोसी धर्म

१ क्या तूने उस मनुष्य को देखा, जो न्याय के दिन को नहीं मानता ?
२ तो यही वह व्यक्ति है, जो अनाथ को धक्के देता है।
३ और वंचितों को अन्न देने के लिए लोगों को उत्साहित नहीं करता ।
४ सो, उन प्रार्थना करनेवालों को धिक्कार,
५ जो अपनी प्रार्थना से असावधान हैं।
६ वे, जो मिथ्याचार करते हैं।
७ और पड़ोसियों को दैनन्दिन बरतने की छोटी चीजें भी नहीं देते ।

१०७ १-७

२३८ संयम एवं दया का पारस्परिक बोध

१ क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं ?
२ और जीभ और दो होंठ ?
३ और दिखला दिये उसको दोनों मार्ग।
४ तो वह घाटी नहीं चढ़ा।

५ व मा अद्राक म(अ्) (अ्)ल् अकवतु ०
६ फक्कु रक़बतिन् ०
७ औ इत्आमुन् फी यौमिन् जी मस्गवतिन् ०
८ य्यतीमन् (अ) जा मक्रवतिन् ०
९ औ मिस्कीनन् (अ)जा मत्रबतिन् ०
१० सुम्म कान मिन(अ्)ल्लजीन आमनू(अ)व तवासौ(अ्)बि(अ्ल्) सब्रि व तवासौ बि-(अ्) ल् मर्हमति ०

१० ८-१७

239 १ व(अ्)ल् अस्रि ०
२ इन्न (अ्)ल् इन्सान ल फी ख़ुस्रिन् ०
३ इल्ल(अ) (अ)ल्लजीन आमनू(अ्)व अमिलु-(अ्) (अ्ल्)स्सालिहाति व तवासौ(अ्)बि-(अ्) ल् हक़्क़ि ० व तवासौ बि(अ्ल्)-सब्रि ०

१०३ १-३

240 १ व तआवनू(अ्) अल(य) (अ)ल् बिर्रि व (अ्ल्) तक़्वा(य्) व ला तआवनू-(अ) अल(य) (अ्)ल् इस्मि व(अ)ल् उद्-वानि

५ और तूने क्या जाना कि वह घाटी क्या है ?

६ बन्दी को मुक्त करना,

७ या भूख के दिन में खाना खिलाना

८ सगे-सम्बन्धी अनाथ को

९ तथा धूल में पड़े हुए अकिञ्चन को

१० फिर उन लोगों में सम्मिलित होना, जो श्रद्धा रखते हैं और परस्पर धीरज का बोध देते हैं और परस्पर करुणा का बोध देते हैं।

९०.८–१७

२३९ सत्य और धीरज का पारस्परिक बोध

१ शपथ है काल की।

२ निश्चय ही मनुष्य घाटे में है।

३ अतिरिक्त उन लोगों के, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते हैं और परस्पर सत्य का बोध देते हैं एवं परस्पर धृति का बोध देते हैं।

१०३ १–३

२४० पारस्परिक सहायता

१ सत्कृति एवं संयम में एक-दूसरे की सहायता करो। पाप एवं अत्याचार में एक-दूसरे की सहायता न करो।

५ २

241 १ व लि कुल्लि व्विजह्तिवुन् हुव मुवल्लीहा फ़-(अ्) स्तबिक़ु (अ्) (अ्)ल् ख़ैराति^आय ऐन मा तकूनू (अ्) यअ्ति बि कुमु (अ्)ल्लाहु जमीअन् (अ्) ^गोल इन्न (अ्) ल्लाह अला (य) कुल्लि शय्अिन् क़दीरुन्O

२ १४८

242\. १ फ ला तुब्रिज़ि (अ)ल् मुकज़्ज़िबीनO

२ वद्दू (अ्)लौ तुद्हिनु फ़ युद्हिनूनO

३ व ला तुत्रिअ् कुल्ल हूल्लाफ़ि (न) म्महीनिनO^गा

४ हम्माज़ि (न्) म्मश्शाअि (न्) म्बि नमीमि (न्)O^गा

५ म्मन्नाअि (न्) ल्लिल् ख़ैरि मुअ्तदिन् असीमिन्O^गा

६ अुतुल्लि (न्) म् बअ्द ज़ालिक ज़नीमिन्O^गा

७ अन् कान ज़ा मालि (न्) व्व बनीनO^गोल

६८ ८-१४

२४१ सत्कृतियों में होड़ करो, चाहे उद्दिष्ट विभिन्न हों

१ प्रत्येक के लिए दिशा है, जिसकी ओर वह मुड़ता है। सो तुम भलाइयों की ओर बढ़ो, दौड़ो। जहां कहीं तुम होगे, ईश्वर तुम सबको इकट्ठा कर लायेगा। निस्सन्देह ईश्वर सब-कुछ-समर्थ है।

२ १४८

५० असहयोग

२४२ दुर्जनों को न मानो

१ सो तू कहना न मान, ईश्वर को न माननेवालों का।
२ वे चाहते हैं कि यदि तू नरम पड़े, तो वे भी नरम पड़ें।
३ और तू कहा न मान बहुत-सी शपथें खानेवाले नीच का,
४ जो दोषैकदृष्टि, पिशुन है,
५ भले कार्य को रोकनेवाला, मर्यादा का अतिक्रमण करनेवाला पापी है,
६ जो क्रूर और इन सबसे अधिक यह कि पल-पल में रंग बदलनेवाला है।
७ और यह सब इस घमण्ड से कि वह सम्पत्तिवान्, सन्ततिवान् है।

६८८-१४

243 १ उजिन लिल्लजीन युक़ातलून बि अन्नहुम ज़ुलिमू(अ्) ०[१] व इन्न(अ्)ल्लाह अला(य्) नस्रिहिम् ल क़दीरुनि०[ग]

२ (अ्)ल्लजीन उख्रिजू (अ्)मिन् दियारिहिम् बि ग़ैरि हक़्क़िन् इल्लो अ(न्)य्यकूलू(अ्) रब्बुन(अ्) (अ्)ल्लाहु[ग] व लौ ला दफ़्अु-(अ्) ल्लाहि (अल्) न्नास बअ्ज़हुम् बि बअ्ज़ि-(न्) ल्ल हुद्दिमत् सवामिअु व बियअु(न्) व्व सलवातु(न) व्व मसाजिदु युज्करु फीह (अ)-(अ) स्मु (अ्)ल्लाहि कसीरन् (अ)०[१]

२२ ३९-४०

244 १ व(अ्) ल्लजीन हाजरू (अ्) फ़ी सबीलि-(अ्)ल्लाहि सुम्म क़ुतिलू (अ्)औ मातू(अ्) ल यर्ज़ुक़न्नहुमु (अ्) ल्लाहु रिज़्क़न् (अ) हसनन्(अ) व इन्न(अ्)ल्लाह ल हुव ख़ैरु-(अ्ल) राज़िक़ीन०

२ ल युद्ख़िलन्नहु(म्) म्मुद्ख़ल(न) य्यर्ज़ौनहु[ग] व इन्न (अ्)ल्लाह ल अलीमुन हलीमुन०

३ ज़ालिक[ग] व मन् आक़ब बि मिस्लि मा अुक़िब बिही सुम्म बुग़िय अलैहि ल यन्सुरन्नहु (अ्)ल्लाहु[ग] इन्न(अ्)ल्लाह ल अफ़ुव्वुन ग़फ़ूरुन्०

२२ ५८-६०

५१ अनिवार्य प्रतिकार

२४३ प्रतिकार के अभाव में धर्मस्थान उध्वस्त होते

१ उन लोगों को लड़ाई की अनुज्ञा दी जाती है, जिनसे लड़ाइ की जा रही है और इस कारण भी कि उन पर बहुत अत्याचार ढाये गये। निस्सन्देह ईश्वर उनकी सहायता करने में समर्थ है।

२ उनको अन्याय से उनके घरो से निकाला गया, केवल उनके इस कहने पर कि हमारा प्रभु ईश्वर है। और यदि ईश्वर लोगों को एक को दूसर से न हटाता रहता, तो साधुओं के एकान्त स्थल, क्रिश्चियनों के पूजा-स्थान, यहूदियो के उपासना-स्थान और मस्जिदें, जिनमें परमात्मा का नाम बहुत लिया जाता है, ढाये जाते। निस्सन्देह परमात्मा उसकी अवश्य सहायता करेगा, जो उसकी सहायता करेगा। निस्सन्देह परमात्मा बलशाली है, सर्वजित् है। २२ ३९-४०

२४४ धर्मरक्षणार्थ मर्यादित प्रतिकार

१ जिन लोगों ने ईश्वर के मार्ग में घर-द्वार छोड़ा, फिर मारे गये या मर गये, उनको ईश्वर अवश्य अच्छी जीविका देगा। और निश्चय ही ईश्वर सबसे श्रेष्ठतर जीविका देनेवाला है।

२ वह उन लोगों को अवश्य ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे। निस्सन्देह ईश्वर सर्वज्ञ है सर्वसह है।

३ यह हुआ, और जो व्यक्ति बदला ले उतना ही जितना कि उसे सताया गया है, उस व्यक्ति पर यदि फिर से अत्याचार हो, तो ईश्वर उसे अवश्य सहायता देगा। निस्सन्देह ईश्वर दोषों को भूल जानेवाला तथा क्षमा करनेवाला है। २२ ५८-६०

245 १ व इज़् मुल्तुम् या मूसा(य्) ल (न्)न्नस्बिर
अला(य्) तआमि(न्) व्वाहिदिन् फ(अ्)-
दवु ल ना रब्बक युख़्रिज् ल ना मिम्मा
तुम्बितु(अ्)ल् अर्दु मि(न्)म् बक़्लिहा
व क़िस्साअिहा व फ़ूमिहा व अदसिहा व
बसलिहा काल अतस्तब्दिलून(अ्) ल्लज़ी
हुव अद्ना(य्) बि (अ्) ल्लज़ी हुव ख़ैरुन्
इह्बितू(अ्) मिस्रन्(अ्) फ इन्न लकुम् (अ्)-
म्मा सअल्तुम व दुरिबत् अलैहिमु(अ्ल्)-
ज़िल्लतु व (अ्)ल् मस्कनतु व बाऊ
बि ग़ज़बि(न्)म्मिन(अ्)ल्लाहि

२० अस्वाद

५२ रसनाजय

२४५ एक अन्न से उकताना

१ जब तुमने कहा हे मूसा, हम एक ही प्रकार के भोजन पर कदापि सन्तोष नही कर सकते, सो अपने प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना कर कि हमारे लिए वह उस वस्तु का निर्माण करे, जिसे भूमि उगाती है, अर्थात् साग, सब्जी, गेहूँ, दाल और प्याज। मूसा ने कहा क्या तुम श्रेष्ठ[1] (वस्तु) के स्थान पर कनिष्ठ[2] (श्रेणी की वस्तु) लेना चाहते हो ? सो किसी शहर में जा उतरो। जो कुछ तुम माँगते हो, वहाँ मिल जायगा। और फिर उन पर अपमान एव परवशता थोप दी गयी और वे ईश्वर के प्रकोप के भाजन बन गये ।

२६१

---

१ श्रेष्ठ—जो ईश्वर ने दिया। २ कनिष्ठ—जो वासनाओं ने माँगा।

हुव अअ्लमु बिकुम् इज् अन्शअकु(म्)म्मिन
(अ्) ल् अर्ज़ि व इज् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी
बुतूनि उम्महातिकुम् * फ़ ला तुज़क्कू (अ्)
अन्फ़ुसकुम्[ताव] हुव अअ्लमु बि मनि(अ्) त्तक़ा
(य्)o

५३ ३२

249 १ व ज़रू(अ्)ज़ाहिर(अ्)ल् इस्मि व बातिनहू[ओर]
इन्न (अ्) ल्लज़ीन यक्सिबून (अ्) ल् इस्म
सयुज्ज़ौन बिमा कानू (अ्)यक्तरिफ़ून o

६ १२०

250 १ क़द् अफ़्लह मन् तज़क्का (य्) o[ला]
२ व ज़कर (अ्)स्म रब्बिही फ़ सल्ला(य्)o[मेर]

८७ १४-१५

251 १ व नफ़्सि (न्)व्व मा सव्वाहा[सारन्गा]
२ फ़ अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा o[सार]
३ क़द् अफ़्लह मन् ज़क्काहा o[सारन्गा]
४ व क़द ख़ाब मन् दस्साहा o[मेघ]

९१ ७-१०

252. १ या बनी' आदम क़द् अन्ज़ल्ना अलैकुम् लिबास-
(न्) (अ्)य्युवारी सौआतिकुम् व रीशन्-
(अ्)[मेघ] व लिबासु (अल्) त्तक़्वा (य्)[ला]

है। और तुम्हें उस समय से वह भलीभाँति जानता है, जब तुम्हें उसने भूमि से निर्माण किया और जब तुम अपनी माताओं के गर्भ में थे। सो तुम अपना पावित्र्य न जतलाओ। वह भलीभाँति जानता है कि कौन संयमी एवं ईश्वर-परायण है।

५३ ३२

२४९ अन्तर्बाह्य पाप टालो

१ बाहरी और भीतरी पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं, उन्हें उनकी उस करतूत का फल अवश्य दिया जायगा।

६ १२०

२५० पवित्रता एवं प्रभु-स्मरण

१ निस्सन्देह, सफल हुआ वह व्यक्ति, जिसने पवित्रता धारण की।
२ अपने प्रभु का नाम लिया और प्रार्थना की।

८७ १४–१५

२५१ शुभाशुभ विवेक जाग्रत रखो

१ शपथ है जीव की और उसकी, जिसने उसको विकसित किया।
२ फिर उस जीव को शुभाशुभ विवेक की अन्तःप्रेरणा दी।
३ निश्चय ही वह मनुष्य साफल्य को पहुँचा, जिसने उसे विशुद्ध किया।
४ और असफल हुआ वह, जिसने उसका अवरोध किया।

९१ ७–१०

२५२ शील रक्षा

१ हे आदम-पुत्रो! निस्सन्देह हमने तुमको वस्त्र दिये हैं, जो तुम्हारी लज्जा ढाँकते हैं और जो शोभा भी हैं, पर संयम का

जालिक खैरुन् ^शेष^ जालिक मिन् आयानि
(अ्)ल्लाहि लअल्लहुम् यज्जक्करून ०
२ या बनी आदम ला यफ्तिनन्नकुमु (अल्)-
श्शैतानु क मा अख्रज अबवैकु(म्) म्मिन-
(अ्) ल् जन्नति यन्ज़िअु अन्हुमा लिबासहुमा
लि युरियहुमा सौआतिहिमा ^शेष^ इन्नहु यराकुम्
हुव व क़बीलुहु मिन् हैसु ला तरौनहुम् ^शेष^ इन्ना
जअल्ना (अल्) श्शैयातीन औलियाअ
लिल्लजीन ला यु(व्) अमिनून ०
३ व इजा फअलू (अ्) फाहिशतन् कालू वजद्ना
अलैहा आबाअना व (अ्) ल्लाहु अमरना
बिहा ^शेष^ कुल् इन्न (अ्)ल्लाह ला यअ्मुरु
बि (अ्)ल् फह्शाअि ^शेष^ अ तकूलून अल-
(अ्)ल्लाहि मा ला तअ्लमून० ७ २६-२८
१ 253 सुम्म क़फ़्फ़ैना अला (य्) आसारिहिम
बि रसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि ईसा(य्) (अ्)बनि
मर्यम व आतैनाहु (अ्) ल् इन्जील ^श^
व जअल्ना फ़ी कुलूबि (अ्) ल्लजीन(अ्)-
त्तबअूहु रअफतन्(न्) व्व रह्मतन् ^शेष^ व रह्बानिय्यतन्
नि (अ्)ब्तदअूहा मा कतब्नाहा अलैहिम्
इल्ल (अ्) (अ्) बतिग़ाअ रिद्वानि (अ्)-
ल्लाहि फ मा रऔहा हक्क रिआयतिहा *

प्रावरण श्रेष्ठतम प्रावरण है। ये ईश्वर के संकेत हैं, जिससे कि ये लोग उपदेश प्राप्त करें।

२ हे आदम-पुत्रो! तुम्हें शैतान चरित्र-भ्रष्ट करने के लिए न बहकाये, जसा कि उसने तुम्हारे (सर्वप्रथम) माँ-बाप को स्वग से निकलवाया, उनके कपड़े उनसे उतरवाये, जिससे कि उन्हें उनके लज्जा-स्थान दिखाई दें। शतान और उसका परिवार तुम्हें इस तरह देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देख सकते। निस्सन्देह हमने शैतान को उन लोगों का मित्र बना दिया, जो श्रद्धा नही रखते।

३ और ये लोग जब कोई बुरा काम करते ह, तो कहते हैं कि 'हमने अपने बाप-दादाओं को इसी पद्धति पर चलते पाया ह, और ईश्वर ने ही हमें ऐसा करने की आज्ञा दी ह।' निस्सन्देह ईश्वर बुरे काम की आज्ञा नहीं दिया करता। क्या तुम ईश्वर के विषय में ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नही ?

७ २६–२८

२५३ अनधिकृत सन्यास

१ फिर उन प्रेषितों के पश्चात् हमने क्रमश प्रेषित भेजे और उनके पश्चात् हमने मरियम के पुत्र यीशु को भेजा और उसे एंजिल (न्यू टेस्टामेंट) प्रदान की। और यीशु के अनुयायियों के हृदयों में मृदुता एव करुणा उत्पन्न कर दी और उन्होंने सन्यास एव एकान्त जीवन अपनी ओर से चालू किया। उसे हमने उनके लिए आवश्यक नही किया था। परन्तु उन्होंने ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए यह किया। फिर उसे जैसा निभाना चाहिए था, वसा नहीं निभाया।

फ आतैन (अ्) (अ्) ल्लजीन आमनू (अ्) मिन्हुम् अज्रहुम् म व कसीरु (न्) म् मिन्हुम् फ़ासिक़ूनO ५७ २७

254 १ हुनालिक दआ जकरीया रब्बहु म काल रब्बि हब् ली मि (न्) ल्लदुन्क जुर्रीयतन् तय्यिबतन् म इन्नक समीउ (अ्ल्)द्दुआइO

२ फ नादत्हु (अ्) ल् मलाइकतु व हुव क़ाइमु- (न्) य्युसल्ली फि (ल्) (अ्) ल् मिह्राबि ला अन्न (अ्) ल्लाह युबश्शिरुक बि यह्या (य्) मुसद्दिक़न् (अ्) म् बि कलिमति (न्) म्मिन- (अ्) ल्लाहि व सय्यिद (न् अ्) व्व हसूर- (न्अ्) व्व नबिय्य (न् अ्) म्मिन् (अ्ल्)- स्सालिहीन O ३ ३८-३९

255 १ फ इजा जाअति (अ्ल्) त्ताम्मतु (अ्) ल् कुब्रा (य्) Oमसली

२ यौम यतजक्करु (अ्) ल् इन्सानु मा सआ (य्) Oला

३ व बुर्रिज़ति (अ्) ल् जह़ीमु लिम (न्) य्यरा (य्) O

४ फ अम्मा मन् तग़ा (य्) Oला

५ व आसर (अ्) ल् हया (य्) त (अ्ल्) द्दुन्या Oला

६ फ इन्न (अ्) ल् जह़ीम हिय (अ) ल् मअ्वा (य्) Oत्प

७ व अम्मा मन् ख़ाफ मक़ाम रब्बिही व नह (य्)- (अ्ल्) न्नफ्स अनि (ल्) ल् हवा (य्) Oला

८ फ इन्न (अ्) (अ्) ल् जन्नत हिय (अ्) ल् मअ्वा (य्) Oत्प ७९ ३४-४१

फिर हमने उनमें से जो श्रद्धावान् थे, उन्हें उनका फल दिया। पर अधिकतर उनमें दुराचारी थे।

५७ २७

२५४ ब्रह्मचारी जॉन (यह्या)

१ उस स्थान पर जकरिया ने अपने प्रभु को पुकारा। कहा हे प्रभो! मुझे अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर। निस्सन्देह तू ही प्रार्थना सुननेवाला है।

२ जब कि वह उपासना-स्थान में बैठकर उपासना कर रहा था, देवदूतों ने उसे पुकारकर कहा "ईश्वर तुझे शुभ सन्देश देता है (कि) तुझे जॉन (यह्या) (नाम का पुत्र) होगा। वह ईश्वरीय वाणी को प्रमाणित करनेवाला, उदात्त, ब्रह्मचारी, सन्देष्टा और सत्कृतिवान् होगा।"

३ ३८-३९

२५५ प्रभु का मान रखकर काम नियमन

१ फिर जब आयेगी वह बड़ी विपत्ति

२ उस दिन मनुष्य स्मरण करेगा, जो प्रयत्न उसने किये थे।

३ और नरक उसके सम्मुख लाया जायगा कि वह उसे देखे।

४ तो जिसने प्रभु से विद्रोह किया होगा

५ और ऐहिक जीवन को अधिक मान्य किया होगा

६ तो नरक उसका ठिकाना है।

७ और जो अपने प्रभु के सम्मुख खड़े होने से डरा हो और उसने अपने मन को वासनाओं से रोका हो

८ तो निस्सन्देह उसका स्थान स्वर्ग है।

७९ ३४-४१

256 १ अल्लजीन यअ्कुलून (अ्ल्) र्रिबा (यअ्) ला यकूमून इल्ला क मा यक़ूमु (अ) ल्लजी यतख़ब्बतुहु (अ्ल) श्शैत्वानु मिन- (अ्) ल् मस्सि ^गाय^ जालिक बिअन्नहुम् क़ालू (अ्) इन्नम (अ) (अ्) ल् बैअु मिस्ल्- (अ्ल्) र्रिबा (व् अ्) म व अहल्ल- (अ्) ल्लाहु (अ्) ल् बैअ व हरम (अ्ल्)- र्रिबा (वअ्) ^गाय^ फ मन् जाअहु मौअ़िजतु- (न्) म्मि (न्) र्रब्बिही फ़ (अ्)- न्तहा (य्) फ लहु मा सलफ ^गाय^ य अम्रुहु इल (य्) (अ्) ल्लाहि ^गाय^ व मन् आद फ़ उ (य) लाअिक असहाबु (अ्ल्) न्नारि ^ग^ हुम् फीहा ख़ालिदून ०

२ यम्हक़ु (अ्) ल्लाहु (अ्ल) र्रिबा (यअ्) व युर्बि (य्) (अ्ल्) स्सदक़ाति ^गाय^ व (अ्) ल्लाहु ला युहिब्बु कुल्ल कफ्फारिन असीमिन ०

२ २७५-२७६

257 १ य मां आसेंतु (म्) म्मि (न्) र्रिय (न अ)- ल्लि यर्बुव (अ) फ़ी अम्वालि (अ्ल्)- न्नासि फ़ ला यर्बू (अ) अ़िन्द (अ्) ल्लाहि ^ग^ व मां आततु (म्) म्मिन ज़का (त्) ति्

२२ शुद्ध जीविका

५४ अस्तेय

२५६ ब्याज निषेध

१ जो लोग ब्याज खाते हैं, वे लोग उसी व्यक्ति की भाँति खड़े हो सकेंगे, जिसे शतान ने छूकर बावला कर दिया हो। ऐसा इसलिए कि वे कहते हैं कि व्यापार भी तो ब्याज ही जैसा है, जब कि ईश्वर ने व्यापार वध किया है और ब्याज निषिद्ध। अत: जिस व्यक्ति को उसके प्रभु की ओर से उपदेश पहुँचे और वह ब्याज से परावृत्त हो, तो जो कुछ पहले वसूल हो चुका, वह उसका है और उसका मामला ईश्वर के अधीन है। और जो कोई उसके पश्चात् फिर ब्याज लेगा, तो वे ही ह आग में झोंके जानेवाले, जिसमें वे हमेशा रहेंगे।

२ ईश्वर ब्याज को विफल करता है और दान को सुफलित करता ह। ईश्वर कृतघ्न दुराचारी को पसद नही करता।

२ २७५-२७६

२५७ धन ब्याज पर न दो, दान में दो

१ सो जो कुछ तुम ब्याज पर देते हो, जिससे कि लोगों के धन में पहुँचकर वह बढ़े, तो (ध्यान रखो कि) ईश्वर के यहाँ वह नहीं बढ़ता। और जो कुछ पवित्र मन से नियमित रूप से दान देते हो—

तुरीदून वज्ह (अ) ल्लाहि फ़ उ (व्) लाअिक
हुमु (अ्)ल् मुद्ध्अिफ़ून० ३० ३९

258 १ व इला (य्) मद्यन अख़ाहुम् शुअैबन् (अ्)गेर
क़ाल या क़ौमि (अ्) अ्बुदु (वुअ्) (अ्)-
ल्लाह् मा लकु (म्) म्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहु गेर
व ला तनक़ुसु (वुअ्) (अ्) ल् मिक्याल
व (अ्) ल् मीज़ान इन्नी' अराकुम् बिख़ैरि-
(न्) व्व इन्नी' अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ाब
योमि (न्) म्मुहीत्विन् ०

२ व या क़ौमि औफ़ु (व् अ्) (अ्) ल् मिक्याल
व (अ्) ल् मीज़ान बि (अ्) ल् क़िस्ति व ला
तब्ख़सु (व् अ्) (अल्) न्नास अशयाअ-
हुम् व ला तअ्सौ (व्) फ़ि (य्) (अ्) ल्
अर्द्वि मुफ़सिदीन ०

३ बक़ीयतु (अ) ल्लाहि ख़ैरु (न्) ल्लकुम् इन
कुन्तु (म्) म्मु (अ) अ्मिनीन पेर व मा अना
अलैकुम् बिहफ़ीज़िन ० ११ ८४-८६

259 १ वैलु (न्) ल्लिल् मुत्वफ़्फ़िफ़ीन ० गर
२ (अ) ल्लज़ीन इज (अ) (अ्) क्ताल् (अ) अल-
(य्) (अल) न्नासि यस्तौफ़ून ०
३ व इज़ा कालूहुम् औ व्वज़नूहुम युख़्सिरून० गर
८३ १-३

260 १ व ला तनमम्नो (य्) मा फ़द्दल (अ्) ल्लाहु
बिही' बअ्द्वकुम् अला (व्) बअ्द्विन्
४ ३२

ईश्वर की प्रशंसा प्राप्त करने के हेतु से—तो ऐसे ही लोग ईश्वर के पास अपना दिया हुआ दुगुना करनेवाले हैं।

३० ३९

२५८ सही नाप और तौल

१ और मिदियन की ओर हमने उनके भाई शोयेब को भेजा। उसने कहा भाइयो, ईश्वर की भक्ति करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई भजनीय नहीं और नाप-तौल कम न करो, मैं तुम्हें निश्चिन्त देखता हूँ और ऐसे दिन की विपदा से डरता हूँ, जो तुम सबको आ घेरेगी।

२ और, भाइयो, न्याय से पूरा नाप और तौल करो। लोगों को उनकी वस्तुओं में घाटा न दिया करो, और धरती पर कलह फैलाते न फिरो।

३ ईश्वर की दी हुई बचत तुम्हारे लिए अधिक हितावह है, यदि तुम श्रद्धावान् हो और मैं तुम पर कोई निरीक्षक नहीं हूँ।

११ ८४–८६

२५९ धोखे की कमाई शैतान की कमाई

१ नाप-तौल कम करनेवालों के लिए धिक्कार।

२ कि जब लोगों से नाप लें, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

३ और जब उन्हें नापकर या तौलकर दें, तो घटाकर देते हैं।

८३ १–३

२६० मा गृध

१ और लालच न करो उस चीज का कि जिसके द्वारा ईश्वर ने तुममें से एक को दूसरे पर विशिष्टता दी है। ४ ३२

261 १ हा अन्तुम् हा (व्) अुलाअि तुद्औन लितुन्फिक्रू- (अ्) फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि[१] फ मिन्कु (म)- म्म (न्) य्यब्खलु[२] व म (न्) य्यब्खल् फ इन्न मा यब्खलु अ (न्) न्नफ़्सिही[३] व (अ्) ल्लाहु (अ्) ल् गनिय्यु व अन्तुमु (अ्) ल् फुकरा अु[४] व इन् ततवल्लौ (अ्) यस्तब्दिल् कौमन् (अ्) ग़ैरकुम्[५] सुम्म ला यकूनू (अ्) अम्सालकुम् ० ४७ ३८

262 १ व (अ्) अबुदु (वअ्) (अ्) ल्लाह् व ला तुशरिकू (अ्) बिही[१] शैअ (न्) व्व बि (अ्) ल वालिदैनि इह्सान (न् अ्) व्व बि जि (अ्) ल् कुर्बा (य) व (अ्) ल् यतामा (य्) व- (अ्) ल् मसाकीनि व (अ्) ल् जारि जि (य्)- (अ्) ल् कुर्बा (य्) व (अ्) ल् जारि (अ्)- ल् जुनुबि व (अ्) स्साहिबि बि (अ्) ल जन्बि व (अ्) ब्नि (अ्स्) स्सबीलि[२] व मा मलकत् ऐमानुकुम[३] इन्न- (अ) ल्लाह् ला युहिब्बु मन् कान मुख्ताल- न् (अ्) फ़ख़ूर (अ्) नि ०[४]

२ (अ्) ल्लजीन यब्खलून व यअ्मुरून (अ्) न्नास बि (अ्) ल् बुख्ली व यक्तुमून मा आताहुमु (अ्) ल्लाहु मिन् फ़द्लिही[१]

५५ असग्रह

२६१ कृपणता में हानि

१ हाँ, तुम लोग ऐसे हो कि तुम्हें ईश्वरार्थ दान करने के लिए कहा जाता है, तो तुममें कोई ऐसा है, जो कजूसी करता है। जो कोई कजूसी करता है, वह स्वय अपने लिए कजूसी करता है। ईश्वर तो निरपेक्ष है और तुम दीन हो और यदि मुँह फेरोगे, तो ईश्वर तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को लायेगा। फिर वे तुम्हारे जैसे न होंगे।

४७ ३८

२६२ कृपण द्वारा कृपणता का शिक्षण

१ तुम ईश्वर की भक्ति करो और उसके साथ किसीको भागीदार न बनाओ। और माता पिता के साथ सुजनता का वर्ताव करो। और सगे-सम्बन्धियों, अनाथों, अकिञ्चनो, परिचित पड़ोसियों, अपरिचित पड़ोसियों, सह प्रवासियों और प्रवासियो के साथ अच्छा वर्ताव करो। और उन (दास-दासियों) के साथ भी, जो तुम्हारे अधीन हैं। निस्सन्देह ईश्वर को इत रानेवाले आत्मश्लाघी नहीं भाते।

२ जो कजूसी करते हैं और दूसरों को भी कजूसी सिखाते हैं और ईश्वर ने अपनी दया से जो उनको दिया है, उसे छिपाते

व अअ्तदना लिल् काफिरीन अज़ाब(न अ्)-म्मुहीनन् (अ्) O[१]
४ ३६-३७

263 १ व ला यह्सबन्न (अ्) ल्लजीन यब्ख़लून बिमा आताहुमु (अ्)ल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हुव ख़ैर (न अ्) ल्लहुम् बल् हुव शर्रु(न्)-ल्लहुम् सयुतव्वकून मा बख़िलू (अ्) बिही यौम (अ्)ल् क़ियामति व लिल्लाहि मीरासु (अल्) स्समावाति व (अ्)ल् अर्ज़ि व (अ्) ल्लाहु बि मा तअ्मलून ख़बीरुन् O
३ १८०

264 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू इन्न कसीर(न् अ्)म् मिन (अ्) ल् अह्बारि व (अल्) र्रुह्बानि ल यअ्कुलून अम्वाल-(अल्)न्नासि बि (अ्)ल् बातिलि व यसुद्दून अन् सबीलि (अ्) ल्लाहि व (अ्) ल्लजीन यक्निज़ून (अल्) ज़्ज़हब व (अ्)ल् फ़िज़्ज़त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि फ़ बश्शिरहुम् बि अज़ाबि न अलीमि(न्)O
२ यौम युह्मा (यु) अलैहा फ़ी नारि जहन्नम फ तुक्वा (य)बिहा जिबाहुहुम व जुनूबुहुम व ज़ुहूरुहुम् हाज़ा मा कनज़्तुम लि अन्फुसिकुम् फ ज़ूक़ू (अ्) मा कुन्तुम् तक्निज़ून O ९ ३४-३५

हैं, ऐसे कृतघ्नों के लिए हमने अपमानजनक दण्ड तैयार रखा है।

४ ३६-३७

२६३ कृपणों की कुगति

१ और ये लोग, जिन्हें ईश्वर ने वैभव दिया है, तो भी कजूसी करते हैं, यह कल्पना न करें कि यह उनके लिए अच्छा है। नहीं, अपितु यह उनके लिए बुरा है। पुनरुत्थान के दिन वह धन, जिसमें उन्होंने कजूसी की थी, हँसली बनाकर, उनके गले में डाला जायगा। आकाश एव भूमि की विरासत ईश्वर के लिए ही है और ईश्वर तुम्हारे सब कामों की खबर रखता है।

३ १८०

२६४ सुवर्णसंग्राहक

१ श्रद्धावानो! बहुत-से विद्वान् और मठवासी लोग दूसरों का धन खोटी रीति से खा जाते हैं और उन्हें ईश्वर के माग से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी सचित करके रखते हैं और उसे ईश्वर के माग में व्यय नहीं करते, तो उन्हें खबर दो कि उन्हें एक बडा दु:खदायक दण्ड होगा।

२ जिस दिन उस धन पर नरक की आग दहकायी जायगी, फिर उसीसे उनके माथों, करवटों एव पीठों को दागा जायगा। (और कहा जायगा) यह है, जो तुमने अपने लिए सचित कर रखा था। लो, अब अपने समेटे हुए धन का स्वाद चखो।

९ ३४-३५

265 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू (अ्) मा लकुम् इज़ा कील लकुमु(अ्)न्फ़िरू-(अ्) फी सबीलि (अ्) ल्लाहि (अ्)-स्साक़ल्तुम् इल (य्)ल् अर्दि अ रज़ीतुम् बि (ल) ल् हयात (द्) दि (अल्) दुनया मिन (अ्) ल् आख़िरति फ मा मताअु-(अ्) ल् हयात(द्) दि (अल्) दुनया फ़ि (य्) (अ्)ल् आख़िरति इल्ला क़लीलुन्० ९।३८

266 १ इन्न क़ारून कान मिन् क़ौमि मूसा (य) फ़ बग़ा (य्) अलहिम् व आतयनाहु मिन-(अ्)ल् कुनूज़ि मा इन्न मफ़ातिहहू ल तनू'उ बि-(अ्)ल् अुस्बति उ(ल)लि(य्) (अ्)ल् क़ुव्वति इज़ क़ाल लहु क़ौमुहु ला तफ़्रह् इन्न(अ)ल्लाह ला युहिब्बु (अ्)ल् फ़रिहीन०

२ व(अ्)बतग़ि फ़ी मा आताक (अ्)ल्लाहु (अल्)-दार (अ्)ल् आख़िरत व ला तन्स नसीबक मिन (अल्)दुनया व अहसिन क मा अहसन-(अ्)ल्लाहु इलैक व ला तब्ग़ि (अ्)ल् फ़साद फ़ि (अ्)ल अर्दि इन्न(अ)ल्लाह ला युहिब्बु (अ)ल् मुफ़्सिदीन०

३ क़ाल इन्न मा ऊतीतुहु अला (य्) अिल्मिन्

२६५ भूमि से चिपकनेवाले

१ हे श्रद्धावानो ! तुमको क्या हुआ है कि जब तुमसे कहा जाता है कि ईश्वर के मार्ग में जूझने चलो, तो तुम भूमि से चिपके रह जाते हो । क्या पारलौकिक को छोड़कर ऐहिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हो ? तो ऐहिक जीवन की साधन-सामग्री पारलौकिक की तुलना में अत्यन्त क्षुद्र है ।

९ ३८

२६६ कारून की करुण कहानी

१ कारून मूसा की बिरादरी में से था । फिर उनके खिलाफ विद्रोह करने लगा । और हमने उसे इतने खजाने दिये थे कि उसकी तालियाँ उठाने से कई बलशाली व्यक्ति थक जाते । जब उसके लोगों ने उसे कहा इतरा मत, निश्चय ही ईश्वर को इतरानेवाले नहीं भाते ।

२ और जो तुझे ईश्वर ने दिया है, उसके द्वारा परलोक की गवेषणा कर और इहलोक से अपना भाग (यहाँ ले जाना है यह) न भूल और उपकार कर, जैसे ईश्वर ने तेरे साथ उपकार किया है और भूमि में कलह का इच्छुक न बन । ईश्वर को कलह करनेवाले नहीं भाते ।

३ बोला यह धन तो मुझे एक हुनर से मिला है, जो

अिन्दीणैर अव लम् यअ्लम् अन्न (अ्)ल्लाह कद् अह्लका मिन् कब्लिहीं मिन (अ्) ल् कुरूनि मन् हुव अशद्दु मिन्हु कुव्वत (न्) व्व अक्सर जमअन् (अ्)ला व ला युस्अलु अन् जुनूबिहिमु (अ्) ल् मुजरिमून O

४ फ खरज अला (य्)कौमिहीं फी जीनतिहीं काल (अ्)ल्लजीन युरीदून (अ्)ल् हयात (अ्)द्-(द्)दुन्या या लैत लना मिस्ल मा ऊतिय कारूनु इन्नहू ल जू हज्जिन् अजीमिन् O

५ व काल (अ्) ल्लजीन ऊतु (य्अ) (अ्)-ल् अिल्म वैलकुम् सवाबु (अ्) ल्लाहि खैरु-(न्) लिल मन् आमन व अमिल सालिहन्-(अ्) व्व ला युलक्काहा इल्ल (अ्)-(अ्ल्) स्साबिरून O

६ फ खसफ्ना बिही व बिदारिहि (अ्)ल् अर्ज फ मा कान लहू मिन् फ़िअतिन् (न्) य्यन-सुरूनहू मिन दूनि (अ्)ल्लाहि व मा कान मिन (अ) ल् मुन्तसिरीन O

७ व अस्बह (अ्) ल्लजीन तमन्नौ (अ्) मकानहू बि (अ्) ल् अम्सि यकूलून वै क अन्न (अ)-ल्लाह यब्सुतु (अ्ल) रिज्क लि म(न्)-य्यशाउ मिन अिबादिही व यक्दिरु *

मेरे पास ह। क्या उसे ज्ञात नहीं कि ईश्वर ने उसके पूर्व कई जातियाँ नष्ट की हैं, जो उससे बहुत अधिक बलशाली थीं एव सख्या में भी बहुत अधिक थीं ? और पापियों से उनके पाप पूछने पडते।

४ फिर वह एक वार अपने लोगों के सम्मुख ठाट से निकला। उसे देखकर उन्होंने, जो ऐहिक जीवन के इच्छुक थे, कहा अरे-अरे ! हमको भी मिलता, जसा कि कारून को मिला है। निस्सन्देह वह बहुत भाग्यवान् है।

५ और जिनको सूझ-बूझ मिली थी, वे बोले तुम्हें धिक्कार ! इश्वर का प्रतिफल हितकर है उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते ह, और यह उन्हींको दिया जाता है, जो धीरजवाले ह।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को भूमि में धँसा दिया और ईश्वर के अतिरिक्त उसका फिर कोई ऐसा समूह नही हुआ, जो उसकी सहायता करता, न वह स्वय सहायता प्राप्त कर सका।

७ और वे लोग जो कल सायकाल उसके जैसा होने की लालसा रखते थे, कहने लगे अरे-अरे ! इश्वर अपने दासों में से जिसके लिए चाहता है, रोजी बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) सीमित कर देता है।

अिन्दी^गैब अव लम् यव्लम् अन्न (अ्)ल्लाह क़द् अह्लक मिन् क़व्लिहई मिन (अ्) ल् क़ुरूनि मन् हुव अशद्दू मिन्हु क़ुव्वत (न्)^व्व अक्सर् जमअन् (अ्)^गैब व ला युस्अलु अन् ज़ुनूबिहिमु (अ्) ल् मुज्रिमून O

४ फ़ ख़रज अला (य्) क़ौमिहई फी ज़ीनतिहई^गैब क़ाल (अ्) ल्लज़ीन युरीदून (अ्) ल् हूया (व) त- (अ्ल्) द्दुन्या या लैत लना मिस्ल मा ऊतिय क़ारूनु ^ग इन्नहू ल ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीमिन् O

५ व क़ाल (अ्) ल्लज़ीन ऊतु (ल्अ्) (अ्)- ल् अिल्म वैलकुम् सवाबु (अ्) ल्लाहि ख़ैरु- (न्) ल्लि मन् आमन व अमिल सालिहन्- (अ्) ^ज व ला युलक़्क़ाहा इल्ल (अ्)- (अ्ल्) स्साबिरून O

६ फ़ ख़सफ़्ना बिहई व बिदारिहि (अ्) ल् अरद^गग फ मा कान लहू मिन् फ़िअति (न्)^य्यन्- सुरूनहू मिन् दूनि (अ्) ल्लाहि ^ज व मा कान मिन (अ्) ल् मुन्तसिरीनO

७ व अस्बह (अ्) ल्लज़ीन तमन्नौ (अ्) मकानहू बि (अ्) ल् अम्सि यक़ूलून वैक अन्न (अ्)- ल्लाह यब्सुतु (अ्ल्) र्रिज़्क लि म (न्)- ^य्यशाअु मिन अिबादिहई व यक़्दिरु ^ज

मेरे पास है। क्या उसे ज्ञात नहीं कि ईश्वर ने उसके पूर्व कई जातियाँ नष्ट की हैं, जो उससे बहुत अधिक बलशाली थीं एव सख्या में भी बहुत अधिक थीं ? और पापियो से उनके पाप पूछने पडते।

४ फिर वह एक बार अपने लोगो के सम्मुख ठाट से निकला। उसे देखकर उन्होंने जो ऐहिक जीवन के इच्छुक थे, कहा अरे-अरे ! हमको भी मिलता, जैसा कि कारून को मिला है। निस्सन्देह वह बहुत भाग्यवान् है।

५ और जिनको सूझ-बूझ मिली थी, वे बोले तुम्हें धिक्कार ! ईश्वर का प्रतिफल हितकर है उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते ह और सत्कृत्य करते हैं, और यह उन्हीको दिया जाता है, जो धीरजवाले हैं।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को भूमि में धँसा दिया और ईश्वर के अतिरिक्त उसका फिर कोइ ऐसा समूह नहीं हुआ, जो उसकी सहायता करता, न वह स्वय सहायता प्राप्त कर सका।

७ और वे लोग, जो कल सायकाल उसके जैसा होने की लालसा रखते थे, कहने लगे अरे-अरे ! ईश्वर अपने दासो में से जिसके लिए चाहता है, रोजी बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) सीमित कर देता है।

लौ ला अ (न्) म्मन (अ) ल्लाहु अलैना
ल खसफ बिनाॱ वैक अन्नहु ला युफ़्लिहु
(अ) ल् काफिरून ०
२८ ७६-८२

267 १ इन्नहु कान ला यु(व्) अमिनु बि(अ) ल्लाहि
(अ) ल् अजीमि०
२ व ला यहुद्दु अला (य) तआमि (अ) ल्
मिस्कीनि०
३ फ़ लैस लहु (अ) ल् यौमहाहुना हमीमुन्०
६९ ३३-३५

268 १ फ अम्म (अ) ल् इन्सानु इजा म (अ)-
(अ) ब्तलाहु रब्बुहु फ़ अक्रमहु व नअमहु०
फ़ यकूलु रब्बी' अक्रमनि०
२ व अम्मा इजा म (अ) (अ) ब्तलाहु फ़ क़दर
अलैहि रिज़्क़हु० फ यक़ूलु रब्बी' अहाननि०
३ कल्ला बल्ला तुक्रिमून (अ) ल् यतीम ०
४ व ला तहाद्दून अला (य) तआमि (अ) ल्
मिस्कीनि०
५ व तअकुलून (अल्) तुरास अक्ल (न्)-
(अ) ल्लम्म(न् अ)०
६ व तुहिब्बून(अ) ल् माल हुब्बन् (अ)
जम्मन् (अ)०
८९ १५-२०

और इश्वर हम पर उपकार न करता, तो हमें भी भूमि में धँसा देता। अरे-अरे! श्रद्धा-हीन कभी सफल नही होते।

२८.७६–८२

६७ उसे अब मित्र नहीं रहा

१ वह महान् ईश्वर पर श्रद्धा नहीं रखता था
२ और वंचित को खिलाने के लिए (किसीको) प्रोत्साहित नहीं करता था।
३ सो, आज उसका यहाँ कोई मित्र नहीं।

६९ ३३–३५

६८ कहता है, इश्वर ने सम्मान दिया और इश्वर ने मान-हानि की

१ देखो, मनुष्य को जब उसका प्रभु जाँचता है अर्थात् उसे सम्मान देता है और सुख देता है तो कहता है "मेरे प्रभु ने मुझे सम्मान दिया।"
२ और जब वह उसे जाँचता है, और उसकी जीविका सीमित कर देता है तो कहता है "मेरे प्रभु ने मेरी मान-हानि की।"
३ कदापि नहीं। अपितु तुम अनाथ की ओर ध्यान नहीं देते।
४ और वंचित को खिलाने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित नहीं करते।
५ और दूसरों की विरासत का धन समेट-समेटकर खा जाते हो।
६ और धन को प्राण से भी अधिक प्यार करते हो।

८९ १५–२०

269 १ अल्हाकुमु (अल्) तकासुरु O[क]
२ हत्ता (य्) ज़ुर्तुमु (अ्) ल् मकाबिर O[गम]
३ कल्ला सौफ़ तअ्लमून O[ग]
४ सुम्म कल्ला सौफ तअ्लमून O[गीप]
५ कल्ला लौ तअ्लमून अिल्म (अ्) ल् यक़ीनि O[क]
६ ल तरवुन्न (अ्) ल् जह़ीम Oला
७ सुम्म ल तरवुन्नहा अैन (अ्) ल् यक़ीनि O[क]
८ सुम्म ल तुस्अलुन्न यौम अिज़िन् अनि (अल)-
नअीमि O[पैन]

१०२ १-८

270 १ मसलु (अ्) ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम्
फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि कमसलि ह़ब्बतिन्
अ (न्)म्बतत् सब्अ् सनाबिल फ़ी कुल्लि
सु(न्)म्बुलति(न्) म्मि (अ्)अतु ह़ब्बतिन्[गोप]
व (अ्)ल्लाहु युज़ाअिफु लि म (न्)य्यशा-
अु[गोप] व (अ्) ल्लाहु वासिअुन् अलीमुन् O
२ अल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वाल्हुम् फ़ी सबीलि-
(अ्) ल्लाहि सुम्म ला युत्बिअून मा अन्फ़क़ू (अ्)
मन्न (न्) व्व ला अज़ (न् य्) [ग]
ल्लहुम् अज्रुहुम् अिन्द रब्बिहिम् [ग] व ला
ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम यह़्ज़नून O

९६९ लोभमूलक स्पर्धा

१ विपुलता की तृष्णा ने तुम्हें भरमाया है,
२ यहाँ तक कि तुम कब्रों में जा मिलो।
३ कदापि नहीं, अविलम्ब तुम जान ही लोगे,
४ अविलम्ब ही तुम्हें ज्ञात होगा।
५ अरे-अरे, तुम्हें निश्चित ज्ञान होता
६ कि अवश्य तुम्हें नरक की अग्नि देखनी है।
७ फिर उसे अवश्य निश्चित दृष्टि से देखोगे।
८ फिर उस दिन तुमसे अवश्य पूछा जायगा ईश्वरीय देनों के विषय में। (कि तुमने उनके लिए कृतज्ञता व्यक्त की ?)

१०२ १–८

५६ दान

९७० दान प्रकरण

१ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे एक दाना कि उसमें से सात बालें उगीं। हर बाल में सौ दाने। ईश्वर जिसके लिए चाहता है, वृद्धि करता है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

२ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं और व्यय करके न उपकार जताते हैं और न कष्ट पहुँचाते हैं, उनके लिए उनका पारिश्रमिक उनके प्रभु के यहाँ है और उनको न डर है और न वे दुःखी होंगे।

३ क़ौलु (न्) म्मअरूफु (न्) व्व मग़्फ़िरतुन् ख़ैरु (न्) म्मिन् सदकातिं (न्) य्यत्बउहा अज़न् (य्) और व (अ्) ल्लाहु ग़नीयुन् हलीमुन्O

४ या अय्युह (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) ला तुब्तिलू (अ्) सदक़ातिकुम् बि (अ्) ल् मन्नि व (अ्) ल् अज़ा (य्) क (अ्) ल्लज़ी युन्फ़िक़ु मालहु रिआअ (अ्ल्) न्नासि व ला यु(व्) अमिनु बि (अ्) ल्लाहि व (अ्)ल् यौमि (अ्)ल आख़िरि और फ मसलुहु क मसलि सफवानिन् अलैहि तुराबुन् फ़ असाबहु वाबिलुन् फतरकहु सलदन् (अ्) और ला यक्दिरून अला (य्)शय्अि (न्) म्मिम्मा कसबू (अ) और व(अ्) ल्लाहु ला यह्दि (अ्)ल् क़ौम (अ्) ल् काफ़िरीन O

५ व मसलु (अ्) ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वाल-हुमु (अ्) ब्तिग़ाअ मर्ज़ाति (अ्) ल्लाहि व तस्बीत (न) म्मिन् अन्फ़ुसिहिम् क मसलि जन्नतिम् बिरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन् फ आतत् अकुलहा ज़िअ्फ़ैनि * फ़ इ(न)-ल्लम् युसिबहा वाबिलुन् फ तल्लुम् और व (अ्) ल्लाहु बिमा तअ्मलून बसीरुन् O

३ एक भली बात एव क्षमा करना उस दान से श्रेष्ठतर है कि जिसके पीछे पीड़न हो । ईश्वर निरपेक्ष है एव अतीव सहिष्णु है ।

४ हे श्रद्धावानो ! अपने दान उपकार जतलाकर या पीडा पहुँचाकर नष्ट न करो। उस व्यक्ति की भाँति, जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में केवल दिखलाने के लिए व्यय करता है, और ईश्वर एव अन्तिम दिन पर श्रद्धा नहीं रखता। सो उसका उदाहरण ऐसा है, जैसे कि एक चट्टान, उस पर कुछ मिट्टी पड़ी है, फिर उस पर जोर की वर्षा हुइ, तो उसने उस पत्थर को स्वच्छ कर दिया। ऐसे लोगों को उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता और ईश्वर श्रद्धाहीनों को मार्ग नहीं दिखाता।

५ और जो ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और दृढ़ चित्त से अपना धन ईश्वर के माग में व्यय करते है, उनका उदाहरण ऐसा है, जसे ऊँचाई पर एक बाग है, उस पर जोर की वर्षा हुइ, तो वह बाग अपना फल दुगुना लाया और यदि उस पर वर्षा न हुई, तो हलकी फुहार भी पर्याप्त है। ईश्वर तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

३ कौलु (न्) म्मअ्रूफ़ू (न्) व्व मग़्फिरतुन् ख़ैरु (न्) म्मिन् सदक़ाति (न्) य्यत्बअुहा अजन् (य्) गौण व (अ्) ल्लाहु ग़नीयुन् हलीमुन् ०

४ या अय्युह (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) ला तुब्तिलू (अ्) सदकातिकुम् वि (अ्) ल् मन्नि व (अ्) ल् अज़ा (य्) क (अ्) ल्लज़ी युन्फिकु मालहु रिआअ (अ्ल्) न्नासि व ला यु (व्) अ्मिनु वि (अ्) ल्लाहि व (अ) ल् यौमि (अ्) ल् आखिरि गौण फ मसलुहू क मसलि सफ़वानिन् अलैहि तुराबुन् फ़ असाबहू वाबिलुन् फतरकहु सलदन (अ्) गौण ला यक़्दिरून अला (य) शैअ्नि (न्) म्मिम्मा कसबू (अ) गौण व (अ्) ल्लाहु ला यह्दि (अ्) ल् क़ौम (अ्) ल् काफिरीन ०

५ व मसलु (अ्) ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अमवाल-हुमु (अ्) ब्निग़ाअ मर्ज़ाति (अ्) ल्लाहि व तस्वीत (न्) म्मिन् अन्फुसिहिम् क मसलि जन्नतिम् विरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन् फ़ आतत् अुकुलहा ज़िअ्फ़ैनि ✱ फ इ (न्)-ल्लम् युसिवहा वाबिलुन् फ़ तल्लुम् गौण व (अ्) ल्लाहु बिमा तअ्मलून बसीरुन् ०

३ एक भली बात एव क्षमा करना उस दान से श्रेष्ठतर है कि जिसके पीछे पीडन हो। ईश्वर निरपेक्ष है एव अतीव सहिष्णु है।

४ हे श्रद्धावानो! अपने दान उपकार जतलाकर या पीडा पहुँचाकर नष्ट न करो। उस व्यक्ति की भाँति, जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में केवल दिखलाने के लिए व्यय करता है, और ईश्वर एव अन्तिम दिन पर श्रद्धा नही रखता। सो उसका उदाहरण ऐसा है, जैसे कि एक चट्टान, उस पर कुछ मिट्टी पडी है, फिर उस पर जोर की वर्षा हुइ, तो उसने उस पत्थर को स्वच्छ कर दिया। ऐसे लोगों को उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता और ईश्वर श्रद्धाहीनों को मार्ग नही दिखाता।

५ और जो ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और दृढ़ चित्त से अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे ऊँचाइ पर एक बाग है, उस पर जोर की वर्षा हुइ, तो वह बाग अपना फल दुगुना लाया और यदि उस पर वर्षा न हुई, तो हलकी फुहार भी पर्याप्त है। ईश्वर तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

६ अ यवद्दु अहदुकुम् अन् तकून लहु जन्नतु (न्)-म्मि(न्) नख़ीलि(न्) व्व अअ्नाबिन् तज्री मिन तह्तिह (अ्) (अ्) ल् अन्हारु लहु फ़ीहा मिन् कुल्लि (अ्ल्) स्समराति व असावहु (अ्) ल् किबरु व लहु ज़ुर्रीयतुन् ढुअ्फा उ फ असावहा इअ्सारुन् फीहि नारुन् फ(अ्) ह्तरक़त् क ज़ालिक युबय्यिनु (अ्) ल्लाहु लकुमु (अ्) ल् आयाति लअ्ल्लकुम् ततफक्करून ०

२ २६१–२६६

271 १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) अन्फ़िक़ू (अ्) मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम् व मिम्मा अख़्रज्ना ल कु(म्) म्मिन् (अ्) ल् अर्ज़ि व ला तयम्ममु (अ्) (अ्) ल् ख़बीस मिनहु तुन्फ़िक़ून व लस्तुम् बि आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू (अ्) फ़ीहि व (अ्) अ्लमू (अ्) अन्न (अ्) ल्लाह ग़निय्युन् हमीदुन ०

२ २६७

६ क्या तुममें से कोइ यह पसद करेगा कि एक खजूर का या अगूर का बाग हो, उसके नीचे नदियाँ बहती हो, उसके मालिक के लिए उस बाग में सब प्रकार के फल हों और वह बूढ़ा हो गया हो और सन्तति उसकी अत्यन्त अशक्त हो कि ऐसी स्थिति में उस बाग पर एक बवडर आ पड़े, जिसमें आग हो, जिससे वह बाग झुलस जाय ? इस प्रकार ईश्वर तुमसे अपनी बातें वर्णन करता है, ताकि तुम समझो ।

२२६१–२६६

२७१ दान उत्तम वस्तु का

१ हे श्रद्धावानो ! जो तुमने कमाया है या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने भूमि से उत्पन्न किया है, उसमें से उत्तमोत्तम वस्तु ईश्वर के मार्ग में दान करो और यह विचार न करो कि निकम्मी चीज ईश्वर के मार्ग में दान की जाय, जब कि तुम स्वय वैसी वस्तु को लेनेवाले नही । सिवा इसके कि उसके लेने में तुम उपेक्षा करतो । जान लो कि ईश्वर निरपेक्ष है तथा स्तुति योग्य है ।

२२६७

274 १ लन् तनालु (व् अ्) (अ्)ल् बिर्र हत्ता(यु) तुन्फ़िक़ू(अ्) मिम्मा तुहिब्बून ° व मा तुन्फ़िक़ू(अ्) मिन् शय्‌इन् फ इन्न(अ्) ल्लाह बिहि अलीमुन् ○

३९२

275 १ या अय्युह(अ्)ल्लज़ीन आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अन् ज़िक्रि-(अ)ल्लाहि व म(न्) य्यफ़्अल ज़ालिक फ उ(व्)लाइक हुमु(अ्)ल् ख़ासिरून ○

२ व अन्फ़िक़ू (अ्)मि (न्) म्मा रज़क़्नाकु(म्)-म्मिन् क़ब्लि अ(न्) य्यातिय अहदकुमु(अ्)-ल् मौतु फ यक़ूल रब्बि लौ ला अख़्ख़र्तनी इला (यु) अजलिन् क़रीबिन् फ अस्सद्दक व अकु (न्) म्मिन (अल्)स्सालिहीन ○

३ व ल(न्) य्यु(व्) अख़्ख़िर (अ्)ल्लाहु नफ़्सन (अ्)इज़ा जाअ अजलुहा व (अ्)ल्लाहु ख़बीरु(न्)म्बिमा तअ्मलून ○

६३ ९-११

२७४ प्रियतम वस्तु ईश्वर को

१ तुम नेकी को कदापि प्राप्त न कर सकोगे, जब तक कि तुम अपनी प्यारी चीज को ईश्वर के मार्ग में दान न करो। जो वस्तु तुम ईश्वर के मार्ग में दान करोगे, ईश्वर उसे भलीभांति जानता है।

३ ९२

२७५ प्राक शरीरविमोक्षणात्

१ हे श्रद्धावानो! तुम्हारा धन एवं तुम्हारी सन्तति तुम्हें ईश्वर के विषय में असावधान न कर दे। और जो ऐसा करें, तो ऐसे ही लोग घाटे में हैं।

२ और हमने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से ईश्वर के मार्ग में खर्च करो, इसके पूर्व कि तुममें से किसीको मृत्यु आ जाय, तो वह कहने लगे कि हे प्रभो! तूने मुझे थोड़ी-सी मुहलत क्यों न दी कि मैं दान देता और नेक लोगों में शामिल हो जाता।

३ और ईश्वर किसी प्राणी को, जब उसकी मृत्यु आ जायगी, तो मुहलत नहीं देता। ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अवगत है।

६३ ९-११

औ किलाहुमा फ ला तक़ु(ल्)ल्लहुमा उफ़्फि(न्) व्व ला तन्हरहुमा व क़ु(ल्)-ल्लहुमा कौलन्(अ्) करीमन्(अ्)०

२ व(अ्)खफ़िद्व लहुमा जनाह (अल्)ज़्ज़ुल्लि मिन(अल्)र्रहमति व क़ु (ल्)रब्बि(अ्)र्हम्-हुमा क मा रब्बयानी सग़ीरन्(अ्) ०[भाग]

३ रब्बुकुम् अअ्लमु बि मा फी नुफ़ूसिकुम् [*] इन् तकूनू (अ्) सालिहीन फ इन्नहु कान लिल् अव्वाबीन ग़फ़ूरन्(अ्)०

४ व आति ज(अ्)(अ्)ल् क़ुर्बा (य्) हक़्कहु व (अ्)ल् मिस्कीन व(अ्)ब्न (अल्) सबीलि व ला तुबज़्ज़िर तब्ज़ीरन् (अ्) ०

५ इन्न(अ्)ल् मुबज़्ज़िरीन कानू इख़्वान(अल्)-श्शयातीनि[भेद] व कान (अल्) श्शैतानु लि रब्बिही कफ़ूरन्(अ्)०

६ व इम्मा तुअ्रिज़न्न अन्हुमु(अ्)ब्ति ग़ाअ रह्मति -(न्) म्मि(न्)र्रब्बिक तर्जूहा फ क़ु(ल्)-ल्लहुम् क़ौल (न्)म्मैसूरन्(अ्)०

७ व ला तज्अल यदक मग़्लूलतन् इला (य्) अुनुक़िक व ला तब्सुत्हा कुल्ल(अ्)ल् बस्ति फ तक़्अुद मलूम(न्) (अ्)म्महसूर(न्अ)०

बुढ़ापे को पहुँच जायें, तो उनका तिरस्कार न कर और न उन्हें झिड़की दे। उनसे नम्रता से बात कर।

२ और उनके सामने नम्रता से और करुणा से झुककर रह और कह हे प्रभो! इन दोनों पर कृपा कर, जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला।

३ तुम्हारा प्रभु भलीभाँति जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है। यदि तुम भले हो, तो भक्ति की ओर लौट आनेवालों को वह क्षमा करनेवाला है।

४ (३) सग-सम्बन्धी वंचित एवं प्रवासी को उनका देय देते रहो। (४) और फिजूलखर्ची न करना।

५ निस्सन्देह फिजूलखर्च लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

६ (५) और यदि तू अपने प्रभु की कृपा ढूँढ़ने में, जिसकी तुझे आशा है उनसे दूर हो जाय, तो उनसे नरमी से बात कर।

७ (६) और न तो तू अपना हाथ गले से बाँध रख (अर्थात् कंजूस बन)। और न तो सर्वथैव खुला फैला दे (अर्थात् अति व्यय कर) कि तू निन्दित एवं कंगाल बनकर बैठा रह।

८ इन्न रब्बक यब्सुतु (अल्) र्रिज़्क लि म(न्)-य्यशाउ व यक़्दिरु[ग़ोल] इन्नहु कान बि ख़िबादिही ख़बीर (न्) (अ्) म्बसीरन् (अ)०[२९]

९ व ला तक़्तुलू (अ्) औलादकुम् ख़श्यत इम्-लाक़िन्[ग़ोल] नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम व इय्याकुम्[ग़ोल] इन्न क़त्लहुम् कान ख़ित्अन् कबीरन् (अ्)०

१० व ला तक़्रबु(व्) (अ्) (अल्) ज़्ज़िना(य्) इन्नहु कान फ़ाहिशतन्[ग़ोल] व साअ सबीलन् (अ्)०

११ व ला तक़्तुलु(न्) (अ्) (अल्) न्नफ़्स (अ्) ल्लती हर्रम (अ्) ल्लाहु इल्ला बि(अ्)ल् हक़्क़ि[ग़ोल] व मन् क़ुतिल मज़्लूमन् (अ्) फ़ क़द् जअ़ल्ना लि वलिय्यिही सुल्तानन् (अ्) फ़ ला युस्रिफ़ (फ़्)-फ़ि(अ्)ल् क़त्लि[ग़ोल] इन्नहु कान मन्सूरन् (अ्)०

१२ व ला तक़्रबू (अ) माल (अ्) ल यतीमि इल्ला बि(अ्)ल्लती हिय अह्सनु हत्ता (य) यब्लुग़ अशुद्दहु[ग़ार] व औफ़ू(अ्) बि(अ)ल् अह्दि[ग़] इन्न (अ्)ल् अह्द कान मस्ऊलन्(अ)०

१३ व औफ़ु(य) (अ्) (अ)ल् कैल इज़ा किल्तुम् वज़िनू(अ्) बि(अ्)ल् क़िस्तासि (अ्)ल् मुस्तक़ीमि[ग़ार] ज़ालिक ख़ैर (न्) व्व अह्सनु तअ्वीलन्(अ्)०

८ निस्सन्देह तेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है, जीविका बढ़ाता है और जिसके लिए चाहता है, सीमित कर देता है। निस्सन्देह वही अपने दासो से अवगत है एव सवदृष्‌ है।

९ (७) और अपनी सन्तति को दारिद्रय के डर से न मार डालो। हम उनको भी जीविका देते हं और तुमको भी। वास्तव में उन्हें मार डालना महान्‌ पाप है।

१० (८) और व्यभिचार के समीप भी न फटको। वह निश्चय ही निर्लज्जता है और बुरा मार्ग है।

११ (९) और उस जीव की हत्या न करो, जिसकी हत्या निषिद्ध की गयी है, सिवा न्याय के साथ। और जो अन्याय से मारा गया, तो उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दिया है। वह उस विषय में मर्यादा से बाहर निकल न जाय। निस्सन्देह उसकी सहायता की जाती है।

१२ (१०) और अनाथ के धन के निकट न जाओ। सिवा अच्छी नीयत से, यहाँ तक कि वह बालिग हो जाय। (११) और वचन को पूरा करो। निस्सन्देह वचन के विषय में पूछा जायगा।

१३ (१२) और जब नापकर दो, तो नाप पूरा भर दो और ठीक तराजू से तौलो। यह अच्छा ह और उसका अन्त भी अच्छा है।

१४ व ला तक्फु मा लैस लक बिहीं ञ्रिल्मुन्णैर इन्न (अल्) सुसमञ्ज व (अ)ल् वसर व (अ)ल् फु(व्)आद कुल्लु उ(व्)लाञिक कान अन्हु मस् ऊलन् (अ) ०

१५ व ला तम्शि फि(अ)ल् अर्द्धि मरहन् (अ)र इन्नक लन तख्रिक़(अ)ल् अर्द्ध व लन् तब्लुग़ -(अ)ल् जिबाल तूलन् (अ) ०

१६ कुल्लु जालिक कान सय्यिअुहु ञ्रिन्द रब्बिक मक्रूहन् (अ) ०

१७ जालिक मिम्मा औहा (य्) इलैक रब्बुक मिन (अ)ल् ह्रिक्मतिणैर १७ २३–३९

279 १ व लक़द् आतैना लुक्मान(अ)ल् ह्रिकमत अनि (अ)शकुर लिल्लाहिणैर व म(न)न्यश्कुर् फ इन्नमा यशकुरु लि नफ़्सिहीर व मन कफर फ इन्न (अ)ल्लाह गनिय्युन् हमीदून ०

२ व इज काल लुक्मानु लि(अ)ब्निहीं व हुव यञ्रिजुहु या बुनय्य ला तुशरिक बि(अ)ल्लाहिणैर इन्न(अल्) श्शिर्क ल जुल्मुन् अजीमुन् ०

३ व वस्सयन(अ) (अ)ल् इन्सान बि वालिदैहिर हमलतहु उम्मुहु वह्नन्(अ) अला (य) वह्नि (न्)व्व फिसालुहु फी आमैनि अनि-(अ)शकुर ली व लि वालिदैकणैर इलय्य(अ)ल् मसीरु ०

१४ (१३) और किसी ऐसी बात के पीछे न लग, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। निस्सन्देह कान और आंख और मन सबसे (उस दिन) प्रश्न पूछा जायगा ।

१५ (१४) और पृथ्वी पर इतराता हुआ न चल। न तू भूमि फाड सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है।

१६ इन आज्ञाओं में से प्रत्येक का बुरा स्वरूप तेरे प्रभु के समीप तिरस्करणीय है।

१७ यह उन विवेक की बातों में से है कि जो तेरे प्रभु ने तुझको प्रज्ञानरूप मे भेजी।

१७ २३–३९

२७९ लुकमान का पुत्र को बोध

१ हमने लुकमान को विद्या प्रदान की कि ईश्वर की कृतज्ञता व्यक्त करे। जो कोई कृतज्ञता व्यक्त करता है, वह अपने भले के लिए करता है और जो कृतघ्नता व्यक्त करता है ता ईश्वर निरपेक्ष है तथा वही स्तुति के योग्य है।

२ लुकमान ने अपने पुत्र को सदुपदेश किया कि बेटा, ईश्वर के साथ किसीको भागीदार न ठहराना। निस्सन्देह यि भक्ति बडा अत्याचार है।

३ और हमने मनुष्य को उसके माता पिता के सम्बन्ध में आदेश दे दिया है—उसकी माँ ने उसे थक-थककर पेट म रखा और उसका दूध दो वर्ष में छूटता है—कि तू मेरी एवं अपने माता-पिता की कृतज्ञता प्रकट कर। मेरी ओर ही तुझे लौटकर आना है।

४ व इन् जाहदाक अ़ला (य्) अन् तुश्‌रिक बी मा लैस लक बिहीं अ़िल्मुन् फ ला तुति़अ्‌हुमा व साहिब्‌हुमा फि (अल्) दुनया मअ्‌रूफ (न्अ्)¹ व् (अ्) त्तबिअ् सबील मन् अनाब इलय्य² सुम्म इलय्य मर्‌जिअ़ुकुम् फ उनब्बिअु-कुम् बि मा कुन्तुम् तअ़्मलून ०

५ या बुनय्य इन्नहा इन् तकु मिसकाल हब्बति (न) म्मिन् ख़रदलिन् फ तकुन् फी सख़्‌रतिन् औ फि (य्) (अल्) स्समावाति औ फ़ि (य्) (अ्) ल् अर्‌द़ि यअ्‌ति बिह (अ्) (अ्) ल्लाहु³ इन्न (अ्) ल्लाह लतीफ़ुन् ख़बीरुन ०

६ या बुनय्य अक़िमि (अल्) स्सलात वअ्‌मुर् बि (अ्) ल् मअ्‌रूफ़ि व (अ्) न्ह अ़नि (अ्) ल् मुन्‌करि व (अ्) स्बिर् अ़ला (य्) मा असाबक⁴ इन्न ज़ालिक मिन् अ़ज़्मि (अ्) ल् उमूरि ०⁵

७ व ला तुसअ़्अ़िर् ख़द्दक लिन्नासि व ला तमशि फि (अ्) ल अर्‌द़ि मरहन् (अ्)⁶ इन्न (अ्) ल्लाह ला युहिब्बु कुल्ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरिन् ०⁷

८ व (अ्) क़्सिद् फी मश्‌यिक व (अ्) ग़्‌दुद् मिन् सौतिक⁸ इन्न अन्‌कर (अ्) ल् अस्वाति ल सौतु (अ्) ल् हमीरि ०⁹ ३१।१२-१९

४ और वे दोनों यदि तुझे इस बात पर बाध्य करें कि उस चीज को मेरा भागीदार मान कि जिसका तुझे कुछ ज्ञान नही तो उन दोनों का यह कहना न मान। और दुनिया में उनका भलीभाँति साथ दे। और उस व्यक्ति का मार्ग स्वीकार कर, जो मेरी ओर प्रवृत्त हुआ। मेरी ओर ही तुम्हें लौटकर आना है। तब मैं तुम्हें वह सब कुछ बतला दूँगा, जो तुम करते थे।

५ बेटा! यदि कोई वस्तु राई के दाने के समान हो, चाहे वह किसी पत्थर में हो या आकाशो में या भूमि में, तो भी ईश्वर उसे निश्चय ही प्रस्तुत कर देगा। निस्सन्देह ईश्वर अतीव सूक्ष्मदर्शी एव सर्वस्पर्शी है।

६ बेटा, प्रार्थना नित्य-नियमित करता रह तथा (लोगो को) भली बात का आदेश दे और बुराई से रोक और तुझ पर जो आ पड़े, उसको सहन कर। निस्सशय यह धर्य का काय है।

७ और लोगों की अवहेलना में गाल मत फुला और भूमि पर इतराकर न चल। निस्सन्देह ईश्वर किसी श्रद्धाहीन आत्म-श्लाघी को पसद नहीं करता।

८ और चाल में मध्यम गति अपना और अपनी ध्वनि को मृदु बना। निस्सन्देह ध्वनि में सबसे बुरी ध्वनि गधे की ध्वनि है।

280 १ व वस्सैन (अ्) ल् इन्सान बि वालिदैहि इह्सानन् (अ्)ᶜᵒ हमलत्हु उम्मुहु कुर्ह (न्-अ्) व्व वज़ञ्अत्हु कुर्हन् (अ्)ᶜᵒ व हम्लुहु व फ़िसालुहु सलासून शह्र (नअ्)ᶜᵒ हत्ता (य्) इज़ा बलग़ अशुद्दह्‌ व बलग़ अर्बईन सनतन्ᶜᵒ क़ाल रब्बि औज़िअ्नी' अन् अश्कुर् निअ्मतक (अ्) ल्लती' अन्अम्त अलय्य व अला (य्) वालिदय्य व अन् अअ्मल सालिहन् (अ्) तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फी ज़ुर्रीयती ᶜᵒ इन्नी तुब्तु इलैक व इन्नी मिन (अ्) ल् मुस्लिमीन ०

२ उ (व्) लाइक (अ्) ल्लज़ीन नतक़ब्बलु अन्हुम् अह्सन मा अमिलू (अ्) व नतजावज़ु अन् सय्यिआतिहिम् फ़ी' अस्हाबि (अ्) ल् जन्नतिᶜᵒ वअ्द (अल्) स्सिद्क़ि (अ्) ल्लज़ी कानू (अ्) यूअदून०

४६ १५-१६

२८० सवगृहस्थ

१ हमने मनुष्य को आदेश दिया कि अपने माता-पिता के साथ सौजन्य से बरते। उसकी माँ ने कष्ट से उसका बोझ उठाया और कष्ट से उसे जन्म दिया और उसका गर्भ निवास और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में पूरा होता है। यहाँ तक कि जब वह युवावस्था को पहुँचता है और चालीस वर्ष का हो जाता है, तो कहने लगता है प्रभो, मुझे बल दे कि मैं तेरी उन देनों के लिए कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो तूने मुझे एवं मेरे माता-पिता को प्रदान की और म सत्कृति करूँ, जिससे तू प्रसन्न हो। मेरे लिए मेरी सन्तति में सुधार कर। निश्चय ही मैं तेरी ओर लौट आया हूँ और तेरा शरणागत हूँ।

२ ये वे लोग हैं कि हम उनके किये हुए उत्तम कार्य स्वीकृत करते हैं और उनकी बुराइयाँ क्षमा करते हैं। ये लोग स्वर्ग के अधिकारी हैं। और इन्हें जो अभिवचन दिया गया था, वह सच्चा अभिवचन था।

४६ १५-१६

281 १ यम्‌चलूनक अनि(अ)ल्‌ ममृरि ॥ व(म्)ल्‌ मसिरिणेम कुल्‌ फी हिमा इसमुन्‌ कबीरु(न्)‌ व्व मनाफिअु लिन्नासि व इसमु हुमा अकबरु मि(न्)‌ नफ़अि हिमाणेम

२.२१९

282 १ व इजा हुय्यीतुम्‌ बि तहीयतिन्‌ फ़ हय्यू(अ) बि अह्सन मिन्‌हा औ रुद्दूहाणेम इन्न(अ)ल्लाह कान अला(य्‌) कुल्लि शय्‌अिन्‌ हसीबन्‌(अ)०

४.८६

283 १ या अय्युह(अ) (अ)ल्लजीन आमनू(अ)ला तद्‌खुलू(अ) बुयूतन्‌(अ) गैर बुयूतिकुम्‌ हत्ता(य्‌) तस्तअ्‌निसू(अ) व तुसल्लिमू(अ) अला(य्‌) अह्‌लिहाणेम जालिकुम्‌ खैरु(न्)-ल्लकुम्‌ लअल्लकुम्‌ तजक्करून ०

२४ शिष्टाचार

५९ सदाचार

२८१ मद्य-निषेध

१ लोग शराब और जुए के विषय में तुमसे पूछते हैं। कह उन दोनों में महापाप है। और लोगों के लिए उनमें कुछ लाभ भी है, किन्तु उनका पाप उनके लाभों से बहुत अधिक है ।

२।२१९

२८२ अधिक मगलप्रद बोलो

१ जब तुम्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया जाय, तो तुम उसे उससे उत्तम रीति से उत्तर दो या वही कहो। निस्सन्देह ईश्वर प्रत्येक वस्तु का लेखा-जोखा लेनेवाला है।

४।८६

२८३ किसीके घर में प्रवेश करते हुए

१ हे श्रद्धावानो! अपने घरों के अतिरिक्त किसी और घर में प्रवेश न करो, जब तक कि अनुमति न ले लो और घरवालों को प्रणाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, ताकि तुम याद रखो।

२ फ़इ(न्)ल्लम् तजिदू(अ्) फी हा अहृदन्(अ्) फ़ ला तद्खुलूहा हृत्ता(य्)यु(व्) अ्जन लकुम्* व इन् क़ील लकुमु (अ्)र्जिअ़ू(अ्) फ(अ्)र्जिअ़ू(अ्) हुव अज़्का(य्) लकुम्^ग़ैर व(अ्)ल्लाहु बि मा तअ़्मलून अ़लीमुन्O

२४ २७–२८

284 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू इज़ा क़ील लकुम् तफ़स्सहू (अ्)फि(य्)ल मजालिसि फ(अ्)फसहू(अ्) यफसहि (अ्)ल्लाहु लकुम्* व इज़ा क़ील(अ्)न्शुज़ू(अ्)फ(अ्)न्शुज़ू(अ्) यर्फअ़ि (अ्)ल्लाहु (अ्)ल्लज़ीन आमनू (अ्)मिन्कुम्^ग़ व(अ्)ल्लज़ीन ऊतु(व्-अ्) (अ्)ल् अ़िल्म दरजातिन्^ग़ैर व(अ्)ल्लाहु बि मा तअ़्मलून ख़बीरुन्O

५८ ५१

285 १ म(न्)य्यश्फअ़् शफ़ाअ़तन् हृसनत(न्)-य्यकु(न्)ल्लहू नसीबु(न्)म्मिन्हा* व म(न्)-य्यश्फअ़् शफ़ाअ़तन् सय्यिअत(न्)य्यकु(न्)-ल्लहू किफ़्लु(न्)म्मिन्हा^ग़ैर व कान(अ्)ल्लाहु अ़ला(य्)कुल्लि शय्अि(न्)म्मुक़ीतन्(अ्)O

४ ८८

२ यदि घर में किसीको न पाओ, तो उसमें प्रवेश न करो, जब तक कि तुम्हें अनुमति न मिल जाय। और यदि तुमसे कहा जाय कि लौट जाओ, तो तुम लौट जाओ। वह तुम्हारे लिए बहुत पवित्रता की बात है। ईश्वर तुम्हारे सब कामों का ज्ञान रखता है।

२४ २७-२८

२८४ सभा-व्यवस्था

१ हे श्रद्धावानो! जब तुम्हें कहा जाता है कि सभाओं में दूसरों के लिए जगह कर दो तो जगह कर दो, ईश्वर तुम्हारे लिए बहुत गुंजाइश कर देगा। और जब तुमसे उठने के लिए कहा जाय, तो उठ जाओ। तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं तथा ज्ञान रखते हैं, परमात्मा उनकी श्रेणियां उच्च कर देगा। जो कुछ तुम करते हो, ईश्वर उससे अवगत है।

५८.११

२८५ सिफारिश में जिम्मेवारी

१ जो कोई भली बात की सिफारिश करेगा, उसे उसमें से भाग मिलेगा और जो कोई बुरी बात की सिफारिश करेगा, वह उसमें भाग पायगा। ईश्वर प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि रखनेवाला है।

४.८५

286 १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्) इजा तनाजैतुम फ़ ला तननाजौ(अ्) बि(अ्)ल् इस्मि व(अ्)ल अुद्वानि व मअ्सियति-(अ्ल्)र्रसूलि व तनाजौ(अ्) बि(अ्)ल बिर्रि व(अ्ल)त्तक्वा(य्)^ग्य^ वत्तकु(वुअ्) (अ्)ल्लाह (अ्)ल्लजी इलैहि तुह्शरून ०

२ अलम् तर अन्न (अ्)ल्लाह यअ्लमु मा फ़ि (अ्ल्)स्समावाति व मा फि(अ्)ल् अर्ज़ि^ग्य^ मा यकूनु मि(न्)न्नजवा(य्)सलासविन् इल्ला हुव राबिअुहुम् व ला खम्सविन् इल्ला हुव सादिसुहुम् व ला अदना(य्) मिन् जालिक व ला अक्सर इल्ला हुव मअहुम् ऐन मा कानू(अ्)^म^ सुम्म युनब्बिअुहुम् बि मा अमिलू(अ्) यौम(अ्)ल् क़ियामति^ग्य^ इन्न(अ्)ल्लाह बि कुल्लि शयअिन् अलीमुन् ०

५८ १,७

२८६ मन्त्रणाएँ

१ हे श्रद्धावानो ! जब तुम गुप्त मन्त्रणाएँ करो, तो पाप एव अत्याचार के लिए तथा प्रेषित की अवज्ञा के लिए गुप्त मन्त्रणाएँ न करो, सत्कृत्य एव धर्मपरता के लिए मन्त्रणाएँ करो और ईश्वर से डरते रहो। उसीके पास तुम सब एकत्र किये जाओगे।

२ क्या तूने देखा नहीं कि ईश्वर जानता है, जो कुछ आकाशो में है तथा जो कुछ भूमि में है। कोइ गुप्त सभा तीन मनुष्यो की ऐसी नहीं, जिसमें वह (ईश्वर) चौथा न हो और न पाँच मनुष्यो की गुप्त मन्त्रणा, जिसमें छठा वह न हो और न इससे न्यून, न इससे अधिक। परन्तु वह उनके साथ है, चाहे वे कही भी हो। फिर वह उन्हें पुनरुत्थान के दिन उनके सब कर्मो का वृत्तान्त सुनायेगा। निस्सन्देह ईश्वर प्रत्येक वस्तु जानता है।

५८.९,७

खण्ड ७

मानव

287 १ व इज़ काल रब्बुक लिल् मलाअिकति इन्नी जाअिलुन् फि(अ्)ल् अर्ज़ि खलीफ़तन् ^{गेत} क़ालू(अ्) अ तजअलु फ़ीहा म(न्) य्युफ़्सिदु फीहा व यस्फिकु(अ्ल्) दिमाअ^a व नह्नु नुसब्बिहु बि हम्दिक व नुक़द्दिसु लक^{गेत} काल इन्नी अअ्लमु मा ला तअ्लमून०

२ व अल्लम आदम(अ्)ल् अस्माअ कुल्लहा सुम्म अरज़हुम् अल(य्)(अ्)ल मलाअिकति फ काल अ(न्)म्बिअूनी बि अस्माअि हा(व्) अुलाअि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ०

३ क़ालू(अ्) सुब्हानक ला अिल्म लना इल्ला मा अल्लमतना^{गेत} इन्नक अन्त(अ्)ल् अलीमु (अ्)ल हकीमु०

४ काल या आदमु अ(न्)म्बि अहुम् बि अस्माअि-हिम्^a फ लम्मा अ(न्)म्बअहुम् बि अस्माअि-हिम् ^ग क़ाल अ लम् अकु(ल्)ल्लकुम् इन्नी अअ्लमु ग़ैब (अ्ल्) स्समावाति व(अ्)ल् अर्ज़ि^ग व अअ्लमु मा तुब्दून व मा कुन्तुम् तक्तुमून०

५ व इज़् कुल्ना लिल् मलाअिकति(अ्)स्जुदू(अ्) लि आदम फ़ सजदू(अ्) इल्ला इब्लीस^{गेत}

२५ मानवता

६० मानव का वैशिष्ट्य

२८७ विशिष्ट वाणी

१ जब तेरे प्रभु ने देवदूतों से कहा कि में एक नायब बनानेवाला हूँ, तो देवदूतों ने कहा क्या तू पृथ्वी पर किसी एस को नियुक्त करेगा, जो उसमें कलह उत्पन्न कर और रक्त बहाये ? यद्यपि हम तेरे स्तवन के साथ तेरा जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और पवित्रता का कीतन करत ह। कहा निस्सन्देह में जानता हूँ, जो कुछ तुम नही जानते।

२ और ईश्वर ने आदम को सब वस्तुओं क नाम सिखा दिये। फिर उन वस्तुओं को देवदूतो के सम्मुख प्रस्तुत किया और कहा उनके नाम बताओ, यदि तुम सच्च ज्ञानी हो।

३ उन्होंने कहा पवित्र है तू, हमको तूने जो कुछ सिखाया, उसके अतिरिक्त हम कुछ नही जानत। निस्सन्देह तू ही सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

४ कहा हे आदम ! देवदूतो को उन वस्तुओं के नाम बता द। तो जब आदम ने उन्हें उनके नाम बता दिये, तो ईश्वर ने कहा क्या मैंने तुमसे नही कहा था कि में आकाशों एव भूमि की गुप्त स्थितियाँ जानता हूँ। जो कुछ तुम प्रकट करते हो, उसे भी जानता हूँ और जो कुछ तुम छिपात हो, उसे भी।

५ और जब हमने देवदूतों से कहा कि आदम को प्रणिपात करो, तो उन सबने प्रणिपात किया केवल शैतान को छोडकर

अबा(य्) व (अ्)स्तक्बर व कान मिन-(अ्)ल् काफिरीन०

२ ३०-३४

288 १ काल या इब्लीसु मा मनअक अन् तस्जुद लि मा खलक्तु बि यदय्य

३८ ७५

289 १ ल कद् अर्सल्ना रुसुलना बि(अ्)ल् बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना मअहुमु (अ्)ल् किताब व(अ्)ल मीज़ान लि यकूम (अल्)श्नासु बि(अ्)ल् किस्ति व अन्ज़ल्न(अ्) (अ्)ल् हदीद फीहि बअ्सुन् शदीदु(न्) व्व मनाफिअु लिन्नासि

५७ २५

290 १ इन्ना अरद्न(अ्) (अ्)ल् अमानत अल(य्)-(अल) स्समावाति व(अ्)ल् अर्दि व(अ्)ल जिबालि फ अबैन अ(न्) य्यह्मिल्नहा व अश्-फक्न मिन्हा व हमलह(अ्) (अ्)ल इन्सानु इन्नहू कान ज़लूमन्(अ्) जहूलन्(अ्) ०

३३ ७२

उसने इनकार किया और अपनी बडाइ के घमड में पड गया और अश्रद्धालुओ में सम्मिलित हो गया ।

२ ३०–३४

२८८ मानव दोनों हाथों की कृति

१ कहा हे इब्लिस ! जिसे मैंने अपने दोना हाथो से बनाया, उसे प्रणिपात करने से तुझे क्या चीज निषेधक हुइ ? क्या तू बडाई के घमड में पड गया या तू उच्च श्रेणीवालो में से है ?

३८.७५

२८९ तीन इश्वरीय देनें ग्रन्थ, तुला, लोहा

१ हमने अपने प्रेषितो को खुली निशानियाँ देकर भेजा है और उनके साथ हमने ग्रन्थ उतारा है तथा तराजू उतारी है, जिससे कि लोग न्याय पर स्थिर रहें और हमने लोहा उतारा, जिसमें बडा सकट है और लोगों के लिए कइ लाभ भी हैं ।

५७ २५

२९० अमानत

१ हमने यह अमानत आकाशों एव भूमि एव पर्वतों के सम्मुख प्रस्तुत की । सबने उसे उठाने से इनकार किया । वे उससे डर गये और मनुष्य ने उसे उठा लिया । निश्चय ही वह बडा निरकुश और अज्ञानी है ।

३३ ७२

291 १ ल कद् ख़लकन (अ्) (अ्) ल् इन्सान फी' अह्सनि तक्वीमिन् ०[ग]

२ सुम्म रदद्नाहु अस्फ़ल साफ़िलीन ०[ल]

९५ ४–५

292 १ फ मिन्हुम् जालिमु (न्) लि नफ़सिही[ग] व मिन्हु (म्) म्मुक्तसिदुन्[म] व मिन्हुम् साबिकु (न्) म् बि (अ्) ल ख़ैराति वि इज़्नि (अ्) ल्लाहि[ग] ज़ालिक हुव (अ्) ल् फ़ज़्लु (अ्) ल कबीर् ०[गैर]

३५ ३२

293 १ व मा ख़लक़्तु (अ्) ल् जिन्न व (अ्) ल् इन्स इल्ला लि यअ्बुदूनि०

२ मा अुरीदु मिन्हु (म्) म्मि (न्) ररिज़्कि (न्) व्व मा अुरीदु अ (न्) य्युत्अिमूनि ०

३ इन्न (अ्) ल्लाह हुव (अ्ल) र्रज़्ज़ाकु ज़ु (व्)- (अ्) ल् क़ुव्वति (अ्) ल मतीनु ०

५१ ५६–५८

294 १ लौ कान अरज़न् (अ्) क़रीब (न्अ्) व्व सफ़रन् (अ्)

२९१ दो सिरे

१ वस्तुत हमने मनुष्य को सर्वोच्च बनाया ।
२ फिर हमने उसे लौटा दिया नीचो में सबसे अधिक नीच बनाकर ।

९५ ४-५

२९२ तीन श्रेणियाँ हीन, मध्यम, उत्तम

१ सो कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वय पर अत्याचार करनेवाले हैं और कुछ उनमें से मध्यम गतिवाले हैं और कुछ उनमें ईश्वर की सत्कृतियों में सबसे आगे बढ जानेवाले हैं। यही महान् सौभाग्य है।

३५ ३२

२९३ मनुष्य-जन्म का हेतु

१ मने जिन एव मनुष्यों को इसीलिए उत्पन्न किया कि वे मेरी भक्ति करें ।
२ मैं उनसे कोइ जीविका नहीं चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें ।
३ निस्सन्देह ईश्वर ही सबको जीविका देनेवाला, बलशाली, सर्वशक्तिमान् है ।

५१ ५६–५८

६१ मानव की दुर्बलता

२९४ अस्थिर

१ यदि लाभ निकट होता और उसके लिए प्रवास सुकर होता,

काइद(न्अ्)ल्ल(अ्)त्तवअूक व लाकि (न्)-
न्वअ्अुदत् अ़लैहिमु (अ्ल्) मशुक्क़तु॰॰

१ ४२

295 १ अव लम् यसीरू(अ्)फि(अ्)ल् अर्द्हि फ यन्-
ज़ुरू(अ्) कैफ़ कान आ़क़िबतु (अ्)ल्लज़ीन
मिन् क़ब्लिहिम्॰॰ कानू(अ्) अशद्द मिन्हुम
कुव्वत(न्)ँव असारू(व्अ्)(अ्)ल अर्द्ह
व अ़मरूहा अक्सर मिम्मा अ़मरूहा व जाअत्-
हुम् रुसुलुहुम् बि(अ्)ल् बय्यिनाति॰॰ फ़मा
कान(अ्)ल्लाहु लियज़्लिमहुम् व लाकिन्
कानू(अ्) अन्फुसहुम् यज़्लिमून ०॰॰

३० १

296 १ व लइअिन् अज़क़्न(अ्)(अ्)ल् इन्सान मिन्ना
रह्मतन् सुम्म नज़अ्नाहा मिनहु॰ इन्नहु
ल यअूसुन् कफ़ूरुन् ०

२ व लइअिन अज़क़नाहु नअ्माअ बअ्द ज़र्रा'अ
मस्सत्हु ल यक़ूलन्न ज़हब(अ्ल्) स्सय्यिआतु
अ़न्नी॰॰ इन्नहु ल फरिहुन् फख़ूरुन् ०॰

११ ९-१०

तो ये मनुष्य अवश्य तेरे साथ हो लेते। परन्तु उनके लिए तो यह प्रवास बहुत कठिन हो गया ।

९४२

२९५ अनुभव से पाठ नहीं लेते

१ क्या उन्होंने पृथ्वी का पर्यटन नहीं किया, जिससे कि वे देखते कि उनसे पहलेवालों का अन्त क्या हुआ ? वे उनसे बल में अधिक थ और उन लोगों न भूमि को जोता-बोया था और जितना इन्होंने उसे आबाद किया है, उसस अधिक उन्होंने उसे आबाद किया था। उनके पास ईश्वर क प्रेषित उसकी खुली निशानियाँ लेकर आये थे। ईश्वर न उन पर अन्याय नहीं किया, अपितु वे स्वय अपने पर अत्याचार करत थे।

३०९

२९६ डोलायमान

१ यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से कृपा का स्वाद चखा देते हैं, फिर उससे उसको हटा लेते ह, तो वह निराश एव कृतघ्न हो जाता है।

२ और यदि उस कष्ट के पश्चात् जो उस मिले हैं, ईश्वरीय देन का स्वाद हम चखा दें, तो वह कहने लगता है मेरे सारे दुख-दर्द दूर हो गये ! (ईश्वर ने दूर किये एसा नही कहता) निस्सन्देह वह बडा इतरानेवाला आत्मश्लाघी है।

११९-१०

297 १ व जअल्तु लहू माल(न्) म्ममूदूदन्(अ्)O
२ व्व बनीन शुहूदन्(अ्) O
३ व्व महूह्(द्)त्तु लहू तमहीदन्(अ्)O
४ सुम्म यत्मअु अन् अजीद O

७४ १२-१५

298 १ इन्न(अ्)ल् इन्सान खुलिक़ हलूअन् O
२ इजा मस्सहु(अल्)श्शर्रु जजूअन्(अ्)O
३ व्व इजा मस्सहु(अ्)ल् ख़ैरु मनूअन् (अ्)O

७० १९-२१

299 १ अव ला यरौन अन्न हुम् युफ्तनून फ़ी कुल्लि
आमि(न्)म्मर्रतन् औ मर्रतैनि सुम्म
ला यतूबून व ला हुम् यज्जक्करून O

९ १२६

300 १ लिम तस्तअ्जिलून बि (अल्)स्सय्यिअति
क़ब्ल(अ्)ल् हसनति लौ ला तस्तग्फिरून-
(अ्)ल्लाह लअल्लकुम् तुर्हमून O

२७ ४६

२९७ लालची

१ मने उस विपुल धन दिया
२ और साथ रहनवाले पुत्र दिये
३ और उसके लिए सब प्रकार के साधन जुटाय,
४ फिर भी मनुष्य लोभ रखता है कि म उसे और अधिक दूं।

७४ १२-१५

२९८ विधायी एवं दीर्घसूत्री

१ निस्सन्देह मनुष्य अधीर उत्पन्न किया गया है।
२ जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो घबरा जाता है
३ और जब उसे सम्पदा प्राप्त होती है तो (देने में) कजूसी करता है।

७० १९-२१

२९९ संवेदनहीन

१ क्या ये लोग दखते नही कि वे प्रतिवर्ष एक बार कसौटी में डाल जाते हैं, फिर भी वे न तो पछतावा करते हैं और न कोई पाठ लेते हैं।

९.१२६

३०० बुराइ की ओर शीघ्र बढ़नेवाला

१ लोगो ! भलाई स पहले बुराइ के लिए क्यो उतावली करते हो ? ईश्वर से क्षमा क्या नहीं मांगते, जिससे कि तुम पर कृपा की जाय ?

२७ ४६

301 १ व मा अुबर्रि(यु)अु नफ्सीय इन्न(अल्)-अफ्स ल अम्मारवु(न्)म् बि(अल्)सूअि इल्ला मा रहिम रब्बीपोर इन्न रब्बी ग़फूरु(न्)-र्रहीमुन् ०

१२ ५३

302 १ व लौ यु(ए) आखिजु(अ)ल्लाहु (अल्)नास बि मा कसबू(अ)मा तरक अला(य)जहूरिहा मिन् दाब्बविन्..

१५ ४५

303 १ मा असाबक मिन् हसनविन् फ़ मिन (अ)ल्लाहिस व मा असाबक मिन् सय्यिअविन् फ मि(न्)-अफ़्सिकपोर

४ ७९

304 १ या अय्युह(अ) (अ)ल् इन्सानु मा ग़रक बि रब्बिक(अ)ल् करीमि ०ग

२ (अ)ल्लजी खलक़क फ सव्वाक फ अदलक ०ग

६२ पापाभिमुखता

३०१ जीव दोषप्रवृत्त

१ मैं (हजरत यूसुफ) अपने-आपको दोषमुक्त नहीं मानता। निस्सन्देह मानवी मन तो बुराई की ओर प्रवृत्त करता है, सिवा उस स्थिति के कि किसी पर मेरे प्रभु की कृपा हो। निस्सन्देह मेरा प्रभु क्षमावान् है।

१२ ५३

३०२ यदि ईश्वर दण्डन करता

१ यदि ईश्वर लोगो को उनके कृत्यो के लिए पकडता, तो इस भूमि पर एक प्राणी न छोडता ।

३५ ४५

३०३ भलाई ईश्वर की, बुराई हमारी

१ तेरा जो कल्याण होता है, वह ईश्वर की ओर से होता है और जो कष्ट तुझे पहुँचता है, वह तेरी वासना की ओर से पहुँचता है ।

४ ७९

६३ कृतघ्नता

३०४ हे मनुष्य ! तू कृतघ्न क्यों हुआ ?

१ हे मनुष्य ! तुझे किस चीज ने तेरे उदार प्रभु से बहका दिया

२ जिसने तुझे उत्पन्न किया, फिर तुझे ठीक किया एव तुझे समत्वयुक्त बनाया

३ फी' अम्यि सूरत्रि (न्) म्मा शाअ रक्कबक ०[गौर]

८२ ६–८

305 १ इन्न (अ्) ल इन्सान लि रब्बिहई ल कनूदुन् ०[ग]

२ व इन्नहू अला (य्) जालिक ल शहीदुन् ०[र]

३ व इन्नहू लि हुब्बि (अ्) ल् खैरि ल शदीदुन् ०[गैर]

४ अ फ ला यअ्लमु इजा बुअ्सिर मा फि (य्) (अ्) ल् कुबूरि०[ग]

५ व हुस्सिल मा फि (अ्ल्) सुदूरि ०[ग]

६ इन्न् रब्बहुम् वि हिम् यौम इजि (न्) ल्ल खबीरुन् ०

१०० ६–११

306 १ व इजा मस्स (अ्) ल् इन्सान (अ्ल्) ब्रुरुर्रु दआना लि जम्बिहई औ क़ाअिदन् (अ्) औ क़ाअिमन् (अ्)[र] फलम्मा कशफना अनहू ब्रुर्रहू मर क अ (न्) ल्लम् यद्अुना इला (य्) ब्रुरिर (न्)-म्मस्सहू[गैर] क जालिक जुय्यिन लिल् मुस्रिफ़ीन मा कानू यअ्मलून ०

१० १२

३ और जिस रूप में उसने चाहा, उस रूप से तेरा योग साधा।

८२ ६-८

३०५ कृतघ्न मनुष्य

१ निश्चय ही मनुष्य अपने प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

२ और निस्सन्देह वह इस बात का साक्षी भी है।

३ और वह धन के प्रेम में बहुत पक्का है।

४ क्या वह नहीं जानता वह समय, जब उठाया जायगा, जो कुछ कब्रों में है।

५ और प्राप्त किया जायगा, जो कुछ वक्षों में है।

६ निस्सन्देह उनका प्रभु उस दिन उनकी स्थिति से सम्पूर्ण अवगत है।

१०० ६-११

३०६ दुःख में स्मरण एवं सुख में विस्मरण

१ जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है, तो वह लेटे, बैठे या खड़े हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे वह कष्ट हटा देते हैं, तो वह ऐसा चल निकलता है, मानो कष्ट के पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादा का अतिक्रमण करनेवालों के लिए उनकी करतूतें उन्हें सुन्दर लगें, ऐसा हमने किया है।

१० १२

307 १ हुव(अ)ल्लजी युसय्यिरुकुम् फि(अ)ल् बर्रि व(अ)ल् बह्रि हत्ता(य्) इजा कुन्तुम् फि(अ)ल् फुल्कि व जरैन बि हिम् बि रीहिन् तय्यिबति(न्) व्व फ़रिहू(अ) बिहा जाअतहा रीहुन् आसिफ़(न्) व्व जाअहुमु(अ)ल् मौजु मिन् कुल्लि मकानि(न्) व्व-जन्नू(अ) अन्न हुम् उहीत बिहिम् दअवु(अ) (अ)ल्लाह मुख़्लिसीन लहु(अल्)दीन लअिन् अनजैतना मिन् हाजिही लनकूनन्न मिन (अल्) श्शाकिरीन०

२ फ लम्मा अन्जाहुम् इजा हुम् यबग़ून फ़ि(अ)ल अर्द्वि बि ग़ैरि(अ)ल् हक़्क़ि या अय्युह(अल्) न्नासु इन्न मा बग़्युकुम् अला(य्) अन्फुसिकु(म्) म्मताअ(अ)ल् हया(ब)ति (अल्)द्दुनया सुम्म इलैना मर्जिअुकुम् फ़ नुनब्बिअुकुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलून०

१० २२-२३

308 १ ला यसअमु(अ)ल् इन्सानु मिन् दुआअि(अ)ल् खैरि व इ(न्)म्मस्सहु(अल्)श्शर् फ यऊसुन् क़नूतुन्०

२ व लअिन् अजक़्नाहु रह्मत(न्) म्मिन्ना मि(न्) म्बअ्दि दर्राअ मस्सतहु ल यक़ूलन्न हाजा ली

३०७ समुद्र एवं तट का दृष्टान्त

१ वह ईश्वर ही है जो तुम्हें थल-जल में घुमाता है। जब तुम नौकाओं में होते हो और वह नौका लोगों को लेकर वायु से चलती है और लोग उससे खुश होते हैं कि यकायक उन नौकाओं पर झंझावात आता है और उन पर सब ओर से लहरें उठी चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि वे घिर गये हैं। तो वे निष्ठा को ईश्वर ही के लिए विशुद्ध करके उससे प्रार्थना करने लगते हैं कि यदि तूने हमको इससे बचा लिया, तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे।

२ फिर जब ईश्वर उन्हें बचा लेता है, तो वे शीघ्र ही भूमि पर अन्यायपूर्ण विद्रोह करते हैं। लोगो! तुम्हारा यह विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध है। थोड़े दिनों के ऐहिक जीवन का लाभ उठा लो, फिर हमारे ही पास तुम्हें लौटकर आना है। तो हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या करते थे?

१० २२-२३

३०८ अस्माक अय महिमा

१ मनुष्य लाभ एवं सुभीता के लिए प्रार्थना करने में थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचता है, तो वह बहुत हताश, निराश हो जाता है।

२ और किसी कष्ट के पश्चात् जो उसको पहुँचता है, हम उसे अपनी कृपा का स्वाद चखा दें, तो वह अवश्य कहेगा 'यह मेरे कारण है।'

३ व इज़ा अनुअम्ना अल(य्)(अ्)ल् इन्सानि अअ्रज़ व नआ बि जानिबिहुई व इज़ा मस्सहु -(अल्)श्शर्रु फ ज़ू दुआइन् अरीज़िन्O

४१ ४९-५१

309 १ व(अ्)ल्लैलि इज़ा यग़्शा(य्) O

२ व (अल्)न्नहारि इज़ा तजल्ला(य्) O

३ व मा खलक (अल्)ज़्जकर व (अ्)ल् उन-सा(य्) O

४ इन्न सअ्यकुम् ल शत्ता(य्) O

५ फ अम्मा मन् अअ्ता(य्) व (अ्)त्तक़ा(य्)O

६ व सद्दक़ बि(अ्)ल् हुस्ना(य्) O

७ फ़ सनुयस्सिरुहू लिल् युस्रा(य्) O

८ व अम्मा म(न्)म् बख़िल व(अ्)स्तग़्ना(य्)O

९ व कज़्ज़ब बि(अ्)ल् हुस्ना (य्) O

१० फ़ सनुयस्सिरुहू लिल् उस्रा(य्) O

११ व मा युग्नी अनहु मा लुहू इज़ा तरद्दा(य्) O

१२ इन्न अलैना लल् हुदा(य्) O

१३ व इन्न लना लल् आखिरत व(अ्)ल ऊला(य्)O

१४ फ़ अनज़र्तुकुम् नारन्(अ्) तलज़्ज़ा(य्)O

३ और जब हम मनुष्य को सुख के-साधन भेजते हैं, तो वह हमसे मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है। और जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करनेवाला हो जाता है।

४१ ४९–५१

६४ आस्तिकनास्तिकता

१०९ भलाई पर विश्वास रखनेवाला तथा न रखनेवाला

१ शपथ है रात्रि की, जब वह फैल जाय
२ और दिन की, जब वह प्रकाशित हो जाय
३ और उसकी, जिसने नर-नारी निर्माण किये।
४ निस्सन्देह तुम्हारी प्रयत्न अस्त-व्यस्त है।
५ सो जिसने ईश्वर के मार्ग में दान किया एव ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया
६ और भलाइ में विश्वास रखा,
७ तो हम उसके लिए सुख-सुविधाऐं पहुँचायेंगे।
८ और जिसने कजूसी की और बेपरवाही बरती
९ और भलाई में विश्वास न रखा,
१० तो हम उसे कष्ट में डालेंगे।
११ और उसका धन उसके काम न आयेगा, जब वह गड्हे में गिरेगा।
१२ निस्सन्देह मार्ग-दर्शन हमारे जिम्मे है।
१३ और निस्सन्देह इहलोक तथा परलोक दोनों हमारे ही हं।
१४ तो हमने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सावधान करा दिया।

१५ ला यस्लाहा इल्ल(अ्) (अ्)ल् अश्क़(य्) ०^ग
१६ (अ्)ल्लज़ी कज़्ज़ब व तवल्ला(य्) ०^{गेय}
१७ व सयुजन्नबुह(अ्) (अ्)ल् अतक(य्) ०^ग
१८ (अ्) ल्लज़ी यु(व्) अ्ती मा लहु यत-
ज़क्का(य्)०^य
१९ व मा लि अह्दिन् अिन्दहू मि(न्)निअ्मतिन्
तुजज़ा(य्) ०^ग
२० इल्ल(अ्) (अ्)बुतिग़ाअ वज्हि रब्बिहि(अ्)ल्
अअ्ला(य्) ०^य
२१ व ल सौफ़ यर्ज़ा(य्) ०^{ग्र}

१२ १-२१

१५ उसमें वही गिरेगा, जो अभागा है

१६ जिसने (ईश्वर का) अस्वीकार किया और मुँह फेरा

१७ और उसे आग से वह बचाया जायगा, जो बहुत धर्म-परायण है

१८ जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में देता है, जिससे कि वह विशुद्ध हो जाय

१९ और उस पर किसीका ऐसा उपकार नही है कि जिसे वह इस प्रकार लौटा रहा है।

२० अतिरिक्त इससे कि उसे अपने परम प्रभु की प्रसन्नता इष्ट है।

२१ और निश्चय ही वह प्रसन्न हो जायगा।

९२ १–२१

खण्ड ८

प्रेषित

310 १ व मा अर्सल्ना मि(न्)र्रसूलिन् इल्ला वि लिसानि क़ौमिही लि युबय्यिन लहुम्

१४४

311 १ व लि कुल्लि उम्मतिन्(न्)र्रसूलुन् फ इज़ा जाअ रसूलुहुम् कुज़िय बैनहुम् बि(अ्)ल् क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून०

१०४७

312. १ व मा अर्सल्ना क़ब्लक इल्ला रिजाल(न्)नूही इलैहिम् फ़ स्अलू(अ्) अह्ल (अल्)ज़्जिक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्लमून०

२ व मा जअल्नाहुम् जसद(न्अ्)ल्ला यअ्कुलून (अल) त्तआम व मा कानू(अ्) खालिदीन०

२१७-८

२६ पूर्व-प्रेषित

६५ प्रेषित—सर्वजनहिताय

३१० प्रेषित मातृभाषा में बोलते ह

१ हमने कोइ प्रेषित भी भेजा, तो उसके समाज की भाषा में (बोलनेवाला) भेजा, जिससे कि वह उन्हें भलीभाँति स्पष्ट रूप से समझा दे⋯ ।

१४४

३११ प्रत्येक समाज के लिए प्रेषित

१ प्रत्येक समाज का एक प्रेषित है। जब उनका प्रेषित आता है, तो उनके बीच न्याय से निर्णय होता है तथा उन पर अन्याय नहीं होता ।

१०४७

६६ प्रेषित मनुष्य ही

३१२ पहले के प्रेषित मनुष्य ही थे

१ हमने तुझसे पूर्व केवल मनुष्यों को ही प्रेषित बनाकर भेजा है। उन (प्रेषितों) को हमने प्रज्ञान दिया। यदि तुम्हें यह ज्ञात न हो, तो ग्रन्थवानों से पूछ लो।

२ और हमने उनके शरीर ऐसे नहीं बनाये थे कि वे भोजन न करते हों और न वे नित्य रहनेवाले थे।

२१७–८

313 १ व लक़द् अर्सल्ना रुसुल(न्अ्)म् मिन् क़ब्लिक व् जअल्ना लहुम् अज्वाज(न्अ्)ंव्व जुर्रिय्यतन्[ण्य] व मा कान लि रसूलिन् अ(न्अ्)-य्यातिय बि आयतिन् इल्ला बि इज़्नि (अ्)ल्लाहि[ण्य] लि कुल्लि अजलिन् किताबुन्O
११ ३८

314 १ व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लिक मि(न्) र्रसूलि (न्)ंव्व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा तमन्ना-(य्)अल्क़(य्) श्शैतानु फी उमनिय्यतिही फ़ यन्सखु (अ्) ल्लाहु मा युल्क़ि (य्)-(अल) श्शैतानु सुम्म युहकिमु(अ्)ल्लाहु आयातिही व (अ्)ल्लाहु अलीमुन् हकीमुन्O
२२ ५२

315 १ व मा मनअ (अ्ल) न्नास अ(न्)ंय्यु(य्)-अ्मिनू (अ्) इज़् जाअहुमु (अ्)ल् हुदा (य्) इल्ला अन् क़ालू (अ्) अ बअस (अ्)ल्लाहु बशर(न्) (अ्) र्रसूलन् (अ्)O

२ क़ु (ल्) ल्लौ कान फि (य्) (अ्) ल् अर्दि मलाइकतु(न्)ंय्यम्शून मुत्मइन्नीन ल नज़्ज़ल्ना अलैहि(म्)म्मिन (अल्) स्समाअि मलक(न् अ्) र्रसूलन्(अ्)O
१७ ९४-९५

३१३ बाल-बच्चों में रहनेवाले

१ तुझसे पूर्व भी हम बहुत से प्रेषित भेज चुके हैं और हमने उन्हें स्त्री-पुत्र दिये थे। और किसी प्रेषित के लिए यह सम्भव नहीं कि वह ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई प्रभु-संकेत ले आये हरएक अवधि लिखी हुई है।

१३ १८

३१४ सब प्रेषितों को शैतान का अनुभव

१ तुझसे पूर्व किसी ऐसे प्रेषित तथा सन्देष्टा को नहीं भेजा कि जब भी उसने ग्रन्थ-पाठ किया, तो शैतान ने उसके पठन में दखल न दिया हो। तब ईश्वर शैतान की व्यंजना को मिटा देता है और अपने वचनों को प्रतिष्ठित करता है। और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

२२ ५२

३१५ प्रेषित मनुष्य ही क्यों ?

१ लोगों के पास जब कभी धर्मोपदेश आया, तो उन्हें उस पर श्रद्धा रखने से किसीने नहीं रोका, सिवा उनके यह कहने के कि क्या ईश्वर ने मनुष्य को प्रेषित बनाकर भेज दिया है ?

२ कह यदि भूमि में देवदूत शान्ति से चल फिर रहे होते, तो हम अवश्य किसी देवदूत को प्रेषित बनाकर आकाश से उतारते।

१७ ९४-९५

316 १ क़ालत् रुसुलुहुम् अ फ़ि (य्) (अ्)ल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरि (अल्) स्समावाति व (अ)ल् अर्द्दि गोय यद्ऊकुम् लि यग्फ़िर लकु(म)-म्मिन् जुनूबिकुम् व यु(य्)अख्खिरकुम् इला (य्) अजलि (न्) म्मुसम्मन् (य) क़ालू (अ्) इन् अन्तुम् इल्ला बशरु (न्)म् मिस-लुना गोय तुरीदून अन् तसुद्दूना अम्मा कान यअ्बुदु आबा(ड्)अुना फअ्तूना बि सुल्तानि-(न्) म्मुबीनिन् ०

२ क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इ (न्) नहनु इल्ला बशरु (न्) म्मिस्लुकुम् व लाकिन्न (अ्) ल्लाह यमुन्नु अला(य्) म(न्) य्यशाअु मिन् अिबादिही गोय व मा कान लना अ(न्)-न्नअ्तियकुम् बि सुल्तानिन् इल्ला बि इज्नि-(अ्)ल्लाहि गोय व अल(य्) (अ्)ल्लाहि फल यतवक्कलि (अ्) ल् मु(व्) अ्मिनून ०

३ व मा लना अल्ला नतवक्कल अल (य्)-(अ)ल्लाहि व क़द् हदाना सुबुलना गोय व ल नस्-बिरन्न अला मा आजैतुमूना गोय व अल(य्)-(अ्)ल्लाहि फल् यतवक्कलि (अ्)ल मुत-वक्किलून० रुक

११६ प्रेषित मनुष्य ही हैं, पर ईश्वर के कृपापात्र हैं

१ उनके प्रेषित बोले क्या ईश्वर के विषय में तुम्हें सन्देह है, जो आकाशों एवं भूमि का बनानेवाला है। वह तुम्हें बुला रहा है, ताकि वह तुम्हारे दोष क्षमा करे तथा तुम्हें एक निश्चित अवधि तक मुहलत दे। उन्होंने कहा तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो। हमें उनकी भक्ति से रोकना चाहते हो, जिनकी भक्ति हमारे बाप-दादा करते रहे हैं। तो तुम हमारे पास कोई प्रमाण ले आओ।

२ उनके प्रेषितों ने उनसे कहा हम तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, परन्तु ईश्वर अपने मनुष्यों में से जिन पर चाहता है, उपकार करता है। यह हमारे अधिकार में नहीं है कि बिना ईश्वर की आज्ञा के तुम्हारे पास कोई प्रमाण ला सकें। ईश्वर पर ही श्रद्धावानों को भरोसा करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ कि हम ईश्वर पर भरोसा न करें, जब कि उसने हमको अपने मार्ग दिखा दिये और जो कष्ट तुम हमें पहुँचा रहे हो, उसे हम अवश्य सहन करेंगे। भरोसा करनेवालों को ईश्वर पर ही भरोसा करना चाहिए।

१४।१०-१२

६७ गुणविशिष्ट

३१७ दृढ़ निश्चय

१ कितने ही ऐसे सन्देष्टा हैं, जिनसे सहयोग कर बहुत-से ईश्वर-निष्ठ जूझे। ईश्वर के मार्ग में जो कष्ट उन पर पड़े, उनसे न वे डिगे, न निर्बल हुए और न दबे। ईश्वर दृढ़निश्चयी लोगों से प्रेम करता है।

२ वे बोले तो केवल यह बोले हे प्रभो! हमारे पापों को और हमारे कामों में जो ज्यादतियाँ हुईं उन्हें, माफ कर। हमारे पाँव जमा और अश्रद्धावानों के विरोध में हमें मदद दे।

३ फिर ईश्वर ने उन्हें ऐहिक फल भी दिया तथा पारलौकिक श्रेष्ठ फल भी दिया। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों को चाहता है।

३ १४६-१४८

३१८ सहनशील

१ तुझसे पूर्व भी बहुत-से प्रेषित अस्वीकृत किये जा चुके हैं। तो उन्होंने अस्वीकृत होने पर और कष्ट दिये जाने पर सहन किया। यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गयी। ईश्वर की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। निस्सन्देह तेरे पास प्रेषितों के वृत्तान्त आ चुके हैं।

317 १ व कअय्यि (न्) ,म्मि(न्) नबीयिन् कातल^मअहू रिब्बीयून कसीरुन्^फ मा वहनू(अ्) लि मा असाबहुम् फी सबीलि (अ्)ल्लाहि व मा ज़अुफ़ू(अ्)व म(अ्) (अ्)स्तकानू (अ्)^व (अ्)ल्लाहु युहिब्बु (अल्) स्साबिरीन०

२ व मा कान क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू (अ्) रब्बन (अ्) (अ्) ग्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इस्राफ़ना फी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना व(अ्)न्सुरना अल (य्) (अ्) ल् क़ौमि (अ्) ल् काफिरीन०

३ फ आताहुमु (अ्)ल्लाहु सवाब (अल्)द्दुन्या व हुस्न सवाबि (अ्) ल् आखिरति^व (अ्)ल्लाहु युहिब्बु (अ्)ल् मुह्सिनीन०

३ १४६-१४८

318 १ व ल क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलु(न्) म्मिन् क़ब्लिक फ सबरू (अ्) अला (य्)मा कुज़्ज़िबू (अ्) व ऊज़ू हत्ता (य्) अताहुम् नस्रुना^व ला मुबद्दिल लि कलिमाति(अ्)ल्लाहि^व ल क़द् जाअक मि(न्) न्नबइ(य्) (अ्)ल् मुर्सलीन०

६७ गुणविशिष्ट

३१७ दृढ़ निश्चय

१ कितने ही ऐसे सन्देष्टा हैं, जिनसे सहयोग कर बहुत-से ईश्वर-निष्ठ जूझे। ईश्वर के मार्ग में जो कष्ट उन पर पड़े, उनसे न वे डिगे, न निर्बल हुए और न दबे। ईश्वर दृढ़निश्चयी लोगों से प्रेम करता है।

२ वे बोले तो केवल यह बोले हे प्रभो! हमारे पापों को और हमारे कामों में जो ज्यादतियाँ हुईं उन्हें, माफ कर। हमारे पाँव जमा और अश्रद्धावानों के विरोध में हमें मदद दे।

३ फिर ईश्वर ने उन्हें ऐहिक फल भी दिया तथा पारलौकिक श्रेष्ठ फल भी दिया। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों को चाहता है।

३ १४६-१४८

३१८ सहनशील

१ तुमसे पूर्व भी बहुत-से प्रेषित अस्वीकृत किये जा चुके हैं। सो उन्होंने अस्वीकृत होने पर और कष्ट दिये जाने पर सहन किया। यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गयी। ईश्वर की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। निस्सन्देह तेरे पास प्रेषितों के वृत्तान्त आ चुके हैं।

२ व इन् कान कबुर अलैक इअराहुहुम् फ़ इनि-
(अ्)स्ततअ्त् अन् तब्तग़िय नफ़क़न् फि(अ्)-
ल् अर्द्रि औ सुल्लमन् फि (अल्) स्समाअि
फतअ्तियहुम् बिआयतिन्^वाप^ व लौ शाअ(अ्)-
ल्लाहु ल जमअहुम् अल(य्) (अ्)ल् हुदा(य्)
फ ला तकूनन्न मिन (अ्) ल् जाहिलीन ०

६ ३४–३५

319 १ व इज् कालत् अुम्मवु (न्)म्मिनहुम् लिम
तअिज़ून क़ौम नि^वा^ (अ्)ल्लाहु मुह्लिकु-
हुम् औ मुअज्ज़िबुहुम् अज़ाबन्(य्)
शदीदन् (अ्)^वाप^ क़ालू (अ्) मअ्ज़िरतन्
इला (य्) रब्बिकुम् व लअल्लहुम् यत्तकून ०

७ १६४

320 १ व कुल्ल (न्) (अ्) न्नक़ुस्सु अलैक मिन्
अ(न्)म्बाअि (अल्) र्रुसुलि मा नुसब्बितु
बिहि फु(य्)आदक^र^ व जाअक फ़ी हाज़िहि
(अ्) ल् हक़्क़ु व मौअिज़तु(न्) व्व
ज़िक्रा(य्) लिल् मु(य्) अमिनीन ०

११ १२०

२ और यदि उन लोगो की विमुखता तुझे दुःख देती हो, तो यदि तुझसे हो सके तो तू भूमि में कोइ सुरग ढूंढ़ या आकाश में सीढ़ी ढूंढ़। फिर उनके पास कोइ निशानी ले आ। अरे, यदि इश्वर चाहता, तो उन सबको अवश्य मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अत तू अज्ञान न बन।

६ ३४-३५

३१९ विपरीत परिस्थिति में बोध देनेवाले

१ जब उनमें से एक समूह ने कहा तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश करते हो, जिन्हें ईश्वर नष्ट करनेवाला है या कठोर दण्ड देनेवाला है ? तब उन (भक्तो) ने उत्तर दिया तुम्हारे प्रभु के सम्मुख हम दोप-मुक्त हो, इसलिए और इसलिए भी कि कदाचित् वे बच जायें।

७ १६४

६८ कथा कथनहेतु

३२० प्रेपितों की कहानियाँ क्यों कहीं ?

१ ये प्रेपितों की कहानियाँ, जो हम तुझे सुनाते हैं, ये वे बातें हैं जिनके द्वारा हम तेरे मन को दृढ़ करते हैं। और इनमें तेरे पास सत्य वस्तु आयी है तथा श्रद्धावानों के लिए उपदेश एवं चेतावनी।

११ १२०

321. १ व लक़द् नादाना नूहुन् फ ल निअ्म(अ्)ल् मुजीबून ० ख़लव़
२ व नज्जय्नाहु व अह्लहु मिन(अ्)ल् कर्बि (अ्) ल् अ़ज़ीमि ० ख़रणी

३७ ७५-७६

322. १ व नादा(य्) नूहु(न्) रब्बहू फ क़ाल रब्बि इन्न (अ्)ब्नी मिन् अह्ली व इन्न वअ्दक (अ्) ल् हक़्क़ु व अन्त अह्कमु (अ्) ल् हाकिमीन ०
२ क़ाल या नूहु इन्नहु लैस मिन् अह्लिक ४ इन्नहू अ़मलुन् ग़ैरु सालिहिन् ख़करमी फ ला तस्अल्नि मा लस लक बिही अ़िल्मुन्गोर इन्नी अअ़िज़ुक अन् तकून मिन (अ्) ल् जाहिलीन ०

११ ४५-४६

323 १ क़ाल अ फ तअ़्बुदून मिन् दूनि(अ्)ल्लाहि मा लायन्फ़अ़ुकुम् शैअ (न) ब्व ला यज़ुर्रुकुम्०
२ उफ़्फि (न्) ल्लकुम् व लिमा तअ़्बुदून मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि गार अ फ ला तअ़्क़िलून ०

६९ नूह*

३२१ नूह का उद्धार

१ नूह ने हमें पुकारा था। सो पुकार का उत्तर देने में हम बहुत अनुकम्पाशील हैं।

२ हमने उसको और उसके घरवालों को बड़े भारी दुःख से मुक्ति दी। ३७ ७५–७६

३२२ भक्तिहीन हो, तो वह पुत्र पुत्र नहीं

१ नूह ने अपने प्रभु को पुकारा, कहा, हे प्रभो! मेरा बेटा मेरे परिवारवालों में से है और निस्सन्देह तेरा अभिवचन सच्चा है और तू सब नियन्ताओं से बड़ा और श्रेष्ठतर नियन्ता है।

२ ईश्वर ने कहा हे नूह! वह तेरे परिवारवालों में से नहीं है। वह एक बिगड़ा हुआ काम है। अतः उस बात की माँग तू मुझसे न कर, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। मैं तुझे सावधान करता हूँ कि तू गँवारों में से न हो। ११ ४५–४६

७० इब्राहीम*

३२३ इब्राहीम के लिए अग्नि ठंडी

१ (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसे की भक्ति करते हो, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सकता है, न कुछ बुरा कर सकता है?

२ धिक्कार है तुम पर और उन चीजों पर, जिसकी तुम ईश्वर के अतिरिक्त भक्ति करते हो। क्या तुम समझते नहीं?

---

* पूर्व-प्रेषितों के नामों के साथ 'अलैहिस्सलाम' कहने की परिपाटी है।

३ क़ालू (अ) ह्रर्रिक़ूहु व (अ) न्सुरू (अ) आलिहतकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन ○

४ कुल्ना या नारु कूनी बर्द(न् अ)व्व सलामन् (अ) अ़ला (इ) ब्राहीम ○[ग]

२१ ६६-६९

324

१ क़ाल अफ़रअैतु (म्) म्मा कुन्तुम् तअ़्बुदून ○[ग]

२ अन्तुम् व आबा (उ) अुकुमु (अ) ल् अक़्दमून ○[मस्ती]

३ फ़ इन्न हुम् अ़दुव्वु (न्) ल्ली इल्ला रब्ब (अ) ल् आ़लमीन ○[ग]

४ (अ) ल्लज़ी ख़लक़नी फ़ हुव यह्दीनि ○[ग]

५ व (अ) ल्लज़ी हुव युत़्अ़िमुनी व यस्क़ीनि ○[ग]

६ व इज़ा मरिज़्तु फ़ हुव यश्फ़ीनि ○[मारग]

७ व (अ) ल्लज़ी युमीतुनी सुम्म युह़्यीनि ○[ग]

८ व (अ) ल्लज़ी अत़्मअ़ु अ (न्) य्यग़्फ़िर ली ख़त़ी अती यौम (अल) द्दीनि ○[गोर]

९ रब्बि हब् ली हुकुम (न्) (अ) व्व अल्हिक़्नी बि (अल्) स्सालिह़ीन ○[ग]

१० व (अ) जअ़ल्ली लिसान सिद्क़िन् फ़ि (अ) ल् आख़िरीन ○[ग]

११ व (अ) ज्अ़ल्नी मि (न्) व्वरसति जन्नति (अल) न्नअ़ीमि ○[ग]

३ वे लोग बोले यदि तुम कुछ करनेवाले हो, तो इसको जला दो और अपने भजनीयों की सहायता करो।

४ हमने कहा हे अग्नि ! इब्राहीम के लिए तू शीतल एव शान्त हो जा।

२१ ६८-६९

३२४ इब्राहीम की ईश्वरनिष्ठा

१ इब्राहीम ने कहा भला देखते हो, जिसकी तुम भक्ति करते हो।

२ तुम, तथा तुम्हारे बाप-दादा।

३ वे निश्चय ही मेरे शत्रु हैं, सिवा विश्व प्रभु के,

४ कि जिसने मुझे उत्पन्न किया और वही मेरा मार्ग-दर्शन करता है।

५ और वही है, जो खिलाता और पिलाता है।

६ और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही आरोग्य देता है।

७ और वही है, जो मुझे मारेगा, फिर जिलायेगा।

८ और जिससे मैं आशा करता हूँ कि पुनरुत्थान के दिन मेरे दोष क्षमा करेगा।

९ हे प्रभो ! मुझे विद्या दे एव मुझे सत्कृतिवानो में प्रविष्ट कर।

१० आनेवाली पीढ़ियों में मेरे बारे में सच्ची जानकारी प्रदान कर।

११ मुझे आनन्दमय स्वर्ग के भागियों में प्रविष्ट कर।

१२ व(अ)ग़्फिर् लि अबी' इन्नहू कान मिन (अल्) द्दाल्लीन ०[ग]

१३ व ला तुख़्ज़िनी यौम युब्असून ०[ग]

१४ यौम ला यन्फ़अु मालु(न्)" व्व ला बनून०[ग]

१५ इल्ला मन् अत (य्) (अ)ल्लाह बि क़ल्बिन् सलीमिन् ०[गेय]

२६७५-८९

325 १ 'इन्नहू कान सिद्दीक़(न् अ) नबिय्यन् ०

२ इज़ क़ाल लि अबीहि या अबति लिम तअ्बुदु मा ला यस्मअु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अनक शय्अन्(अ)०

३ या अबति इन्नी क़द् जाअनी मिन (अ) ल् अिल्मि मा लम् यअ्तिक फ़ (अ)त्तबिअ्नी' अह्दिक सिरातन् (अ) सविय्यन् (अ)०

४ या अबति ला तअ्बुदि (अल्) शैतान[गेय] इन्न (अल्) शैतान कान लि(र) र्रहमानि असिय्यन् (अ)०

५ या अबति इन्नी' अख़ाफु अ(न्)" य्यमस्सक अज़ाबु(न्) म्मिन (अल्) र्रहमानि फ तकून लि (ल्) शैतानि वलिय्यन् ०

६ क़ाल अ रागिबुन् अन्त अन् आलिहती या इब्राहीमु * ल अि(न्)ल्लम् तन्तहि ल अर्जु-मन्नक व(अ) हजुरनी मलिय्यन् (अ)०

१२ मेरे पिता को क्षमा कर कि वह भ्रमितों में से है।

१३ और जिस दिन लोग उठाये जायेंगे, उस दिन मुझे नीचा न दिखा।

१४ जिस दिन कि सम्पत्ति तथा सन्तति काम नहीं आयेगी।

१५ केवल यही काम आयेगा कि ईश्वर के सम्मुख शुद्ध, स्वस्थ हृदय लेकर आये।

२६.७५–८९

३२५ पिता-पुत्र-संवाद

१ निस्सन्देह वह बहुत सच्चा सन्देष्टा था।

२ जब उसने अपने पिता से कहा कि हे पिता! तू उसकी भक्ति क्यों करता है, जो न सुनता है, न देखता है और न तेरे कुछ काम आता है?

३ हे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आया है, जो तेरे पास नहीं आया। तो तू मेरे कहने पर चल। मैं तुझे सीधा मार्ग दिखा दूँगा।

४ हे पिता! शैतान की भक्ति न कर। निस्सन्देह शैतान उस कृपालु का विद्रोही है।

५ हे पिता! मैं डरता हूँ कि उस कृपालु की ओर से तुझ पर कोई आपत्ति आ जाय, तो तू शैतान का साथी हो जाय।

६ इब्राहीम के पिता ने कहा– हे इब्राहीम! क्या तू मेरे भजनीयों से फिरा हुआ है? यदि तू इससे परावृत्त न हुआ, तो मैं तुझे अवश्य ही पत्थर मार-मारकर मार डालूँगा। मेरे पास से सदा के लिए दूर हो जा।

329 १ क़ाल इन्नी अब्दु(अ्)ल्लाहि[ध्यमेर] आतानिय (अ्) ल् किताब व जअलनी नबिय्यन् O[ग]

२ व्व जअलनी मुबारकन् अैन मा कुन्तु[गार] व औसानी बि(अ्ल्) स्सलाति व (अ्ल)-ज़्ज़का(त्) ति मा दुम्तु हय्य(न्अ्)O[सरसरी]

३ व्व बर्र(न् अ्)म् बि वालिदती व लम् यज्अल्नी जब्बारन् (अ्) शक़िय्यन् (अ्) O

४ व(अ्ल्) स्सलामु अलय्य यौम वुलिद्त्तु व यौम अमूतु व यौम अुब्असु हय्यन् (अ्)O

५ जालिक ओसा(य्) (अ्) ब्नु मर्यम[१]

१९ १०-१४

330 १ व क़ौलिहिम् इन्ना क़तल्ना (अ्) (अ्)ल् मसीह् ओसा(य्) ब्न मर्यम रसूल-(अ्)ल्लाहि[१] व मा क़तलूहु व मा सल्बूहु व लाकिन् शुब्बिह लहुम्[गेर] व इन्न (अ्) ल् लज़ीन (अ्) ख़्तलफ़ू (अ्) फ़ीहि ल फ़ी शक्कि (न्) म्मिनहु[गेर] मा लहुम् बिही मिन् अिलमिन् इल्ल (अ्) (अ्) त्तिबाअ (अ्ल) ज़्ज़न्नि[१] व मा क़तलूहु यक़ीनन् (अ्) O[ग]

२ ब(ल्) र्रफ़अहु (अ्) ल्लाहु इलैहि[गेर] व कान (अ्) ल्लाहु अज़ीज़न् (अ्) हकीमन् (अ्)

४ १५७-१५८

७२ यीशु ख्रीष्ट

३२९ यीशु की धन्योक्ति

१ (यीशु) बोला निस्सन्देह मैं ईश्वर का दास हूँ। उसने मुझे ग्रन्थ दिया है और मुझे सन्देष्टा बनाया है।

२ और मुझे धन्य बनाया है चाहे मैं कहीं रहूँ। और मुझे प्रार्थना एवं नियत दान का आदेश किया है, जब तक मैं जीता रहूँ।

३ और मुझे अपनी माता के प्रति कर्तव्य-परायण बनाया और मुझे उद्धत एवं अभागी नहीं बनाया।

४ और धन्य है मुझे, जिस दिन मैं उत्पन्न हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा एवं जिस दिन मैं जीवित होकर उठाया जाऊँगा"।

५ यह है यीशु मरियम का बेटा।

१९ ३०–३४

३३० यीशु को सूली पर चढ़ाना—एक भास ही

१ उनके इस कहने पर कि हमने मरियम के बेटे यीशु ख्रीष्ट (ईसामसीह), ईश्वर के प्रेषित, को मार डाला, (हमारा यह कहना है) कि उन्होंने न तो उसे मारा, न उसे सूली दी, किन्तु उन्हें भास ही हुआ और जो लोग इस विषय में विरोध करते हैं, वे इस विषय में अवश्य सन्देह में हैं। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल कल्पना पर चल रहे हैं और निश्चय ही उन्होंने उसे मारा नहीं।

२ अपितु ईश्वर ने उसे अपनी ओर उठा लिया। और ईश्वर सर्वजित् सर्वविद् है।

४ १५७–१५८

331 १ या यह्या (य्) खुजि (अ्) ल् किताब बि कुव्व-तिन्^गोप व आतयनाहु (अ्) ल् हुक्म सबि-य्यन् (अ्) O^ग

२ व्व हनान (न् अ्)म् मि (न्) ल्लदुन्ना व जका (त्) तन्^गोप व कान तकिय्यन् (अ्)O^ग

३ व्व बर्रन् (अ्) म्बि वालिदयहि व लम् यकुन् जब्बारन् (अ्) असिय्यन् (अ्)O

४ व सलामुन् अलैहि यौम वुलिद व यौम यमूतु व यौम युब्असु हय्यन् (अ्) O १९ १२-१५

332 १ व ल तजिदन्न अश्रद्दन्नास (न्) अदावत (न्) लिल्लजीन आमनु (ल्य) (अ्) ल्लजीन काल् (अ्) इन्ना नसारा (य्)^गोप जालिक बि अन्न मिनहुम् क़िस्सीसीन व रुह्बान (न् अ्) न्व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून O

२ व इजा समिअ् (अ्) मा उन्जिल इल (य्) (अल्) रसूलि तरा (य्) अअ्युनहुम् तफ़ीजु मिन (अ्ल्) द्दम्अि मिम्मा अरफ़् (अ्) मिन (अ्) ल हक़्क़ि^र यकूलून रब्बना आमन्ना फ (अ्) क्तुब्ना मअ (अल्)-शाहिदीन O ५.८५-८६

333 १ व ल क़द् अर्सल्ना रुसुल (न्) (अ्) म्मिन् क़ब्लिक मिन्हु (म्) म्मन् क़सस्ना अलैक व मिन्हु (म्) म्म (न्) ल्लम् नक़्सुस् अलैक ^गर

४० ७८

३३१ यीशु का गुरु—पवित्र जॉन

१ हमने कहा हे जॉन ! ग्रन्थ को दृढ़ता से थाम लो और हमने उसे प्रलयकाल में विद्या प्रदान की।

२ और अपने पास से हृदय का मादव दिया और पवित्रता दी और वह ईश्वर-परायण था।

३ और अपने माता पिता के प्रति सुजनता का वर्ताव करनेवाला था, अहंकारी तथा विद्रोही न था।

४ और धन्य है उसे, जिस दिन वह उत्पन्न हुआ, जिस दिन वह मरेगा तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायगा।

१९.१२–१५

३३२ यीशु के अनुयायी

१ श्रद्धावानों की मैत्री में तुम उन लोगों को निकटतम पाओगे, जो कहते हैं कि हम क्रिश्चियन हैं। यह इसलिए कि कुछ इनमें विद्वान् हैं और भक्ति करनेवाले मठवासी साधु हैं। वे घमण्ड नहीं करते।

२ और जब वे उस वचन को सुनते हैं, जो प्रेषित पर उतारा गया है, तो तू देखेगा कि उनकी आँखें आँसुओं से उमड़ती हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचाना है। वे कहते हैं कि हे प्रभो ! हम श्रद्धायुक्त हुए हैं, हमें साक्षियों के साथ लिख दे।

५.८५–८६

७३ अकथित प्रेषित

३३३ प्रेषित, जिनका निर्देश नहीं हुआ

१ हमने तुझसे पूर्व बहुत से प्रेषित भेजे, जिनमें से कुछ प्रेषितों का निर्देश हमने तुझसे किया है और कुछ वे हैं, जिनका निर्देश तुझसे नहीं किया'।

४०.७८

334 १ इक्रअ् वि (अ्)स्मि रब्बिक (अ्) ल्लजी खलक़O[१]
२ खलक (अ्) ल् इन्सान मिन अलक़िनO[२]
३ इक्रअ् व रब्बुक (अ) ल् अक्रमुO[३]
४ (अ्) ल्लजी अल्लम बि (अ्) ल् क़लमिO[४]
५ अल्लम (अ्) ल् इन्सान मा लम यअलम्O[५]

९६ १-५

335 १ सुब्हान (अ्) ल्लजी असरा (य)बि अब्दिही लैल (न्) (अ्) मिन (अ्) ल् मस्जिदि- (अ्) ल् हरामि इल (य्) (अ) ल् मस्जिदि- (अ्) ल् अक़्स (अ्) (अ) ल्लजी बारक्ना हौलहु लि नुरियहु मिन् आयातिना इन्नहु हुव (अ्) (अ) स्समीअ् (अ्) ल् बसीरुO

१७ १

336 १ य मा शाहिनुकुम् बि मज्नूनिन्O[१]
२ व ल क़द् रआहु बि (अ्) ल् उफ़ुक़ि- (अ्) ल् मुबीनिO[२]
३ व मा हुव अल (य्) (अ्) ल् ग़ैबि बि ज़नीनिन्O

८१ २२-२४

२७ मुहम्मद पैगंबर *

७४ साक्षात्कार

३३४ प्रथम साक्षात्कार

१ पढ़, अपने प्रभु के नाम से, जिसने निर्माण किया।
२ निर्माण किया, मनुष्य को, जम हुए रक्त से
३ पढ़, और तेरा प्रभु सबसे अधिक उदार है,
४ जिसने ज्ञान सिखाया लेखनी से
५ सिखाया मनुष्य को, जो वह नहीं जानता था। ९६ १–५

३३५ दिव्य-अनुभव

१ पवित्र है वह, जो ले गया एक रात अपने दास को पवित्र मसजिद से दूरस्थ मसजिद तक, जिसके परिसर को हमने मांगल्य का आशीर्वाद दिया है, जिससे कि उसे अपनी निशानियों का दर्शन कराये। निस्सन्देह वह सुननेवाला, देखनेवाला है। १७ १

३३६ निस्संशय साक्षात्कारी

१ और यह तुम्हारा साथी पागल नहीं
२ और वस्तुतः उसने उसे खुले आकाश के क्षितिज पर देखा
३ और वह अव्यक्त की बात बताने में कंजूस नहीं है। ८१ २२–२४

---

* पैगंबर मुहम्मद के नाम के साथ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने की परिपाटी है।

337 १ अकिमि (अल्) स्सला (त्) व लि दुलूकि-(अल्) श्शम्सि इला (त्) ग़सक़ि (अ्) ल्लैलि व क़ुर्आन (अ्) ल् फ़ज्रि इन्न क़ुर्आन-(अ्) ल् फज्रि कान मश्हूदन् (अ्)O

२ व मिन (अ्) ल्लैलि फ तहज्जद विहि नाफिलत-(न्) ल्लक असा (य्) अ (न्) य्यवअसक रब्बुक मकाम (न्) म्महमूदन् (अ्)O

३ व क़ु (ल्) र्रब्बि अद्खिल्नी मुद्ख़ल सिद्क़ि (न्) व्व अख्रिज्नी मुख्रज सिद्क़ि (न) व्व (अ्) ज्अ्(ल्)ल्ली मि (न्) ल्लदुनक सुल्तान (नअ्) न्नसीरन् (अ्) O

४ व क़ुल जाअ (अ्) ल् हक़्क़ु व ज़हक़ (अ) ल् बातिलु इन्न (अ्) ल् बातिल कान ज़हूक़न् (अ्) O १७७८-८१

338 १ व इ (न्) म्मा नुरियन्नक बअ्ज़ (अ्) ल्लज़ी नअिदुहुम् औ नतवफ़्फ़यन्नक फ इन्न मा अलैक (अ्) ल् वलाग़ु व अलै न (अ्) (अ्) ल् हिसाबु O ११४०

339 १ इन्नक ला तुस्मिअु (अ्) ल् मौता (य्) व ला तुस्मिअु (अल्) स्सुम्म (अल्) दुआअ इज़ा वल्लौ (अ्) मुद्बिरीनO

७५ ईश्वरदत्त आदेश

३३७ विशेष प्रार्थना का आदेश

१ नित्य-नियमित प्रार्थना कर, सूर्य ढलने से रात के अँधेरे तक, प्रतिदिन उष:काल के समय कुरान पढ़। निश्चय ही उष काल का कुरान पढ़ना देखा जाता है।

२ और रात को कुरान के साथ विशेष प्रार्थना कर। यह तेरे लिए अतिरिक्त प्रार्थना है। आशा है कि तुझे तेरा प्रभु स्तवनीय स्थान पर पहुँचा देगा

३ और कह हे प्रभु! मुझे जहाँ भी ले जा, भलाई के साथ ले जा और जहाँ से भी निकाल, भलाई के साथ निकाल और अपने पास से ऐसा अधिकार दे, जो (तेरी) सहायता देनेवाला हो

४ और कह सत्य आ गया है और असत्य मिट गया है। निस्सन्देह असत्य मिटनेवाला ही है।

१७ ७८–८१

३३८ केवल सन्देशवाहक

१ चाहे कोई अभिवचन जो हमने उन्हें दिया है, हम तुझे दिखला दें, चाहे हम तुझे उठा लें सो तेरा जिम्मा केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, हिसाब लेना हमारा काम है।

१३ ४०

३३९ प्रबोधन तेरा काम नहीं

१ निस्सन्देह तू प्रेतों को सुना नहीं सकता तथा बहरों को अपनी पुकार सुना नहीं सकता, जब कि वे पीठ फेरकर चल दें।

२ व मा अन्त विहादि (य्) (अ्)ल् उम्यि अन् ह्रलालतिहिम्[गोप] इन् तुस्मिअु इल्ला म (न्)-य्यु(व्)अ्मिनु वि आयातिना फ़ हु(म्)-म्मुस्लिमून O

२७ ८०-८१

340 १ अवस व तवल्ला (य्) O[ग]

२ अन् जाअहु (अ्) ल् अअ्मा (य्)O[ग]

३ व मा युद्‍रीक ल्अल्लहू यज्ज़क्का (य्) O[ग]

४ औ यज्ज़क्करु फ तन्फअहु (अ ल्)-ज़िकरा (य्)O[गग]

५ अम्मा मनि (अ्) स्तग़्ना (य्)O[ग]

६ फ अन्त लहु तसद्‍दा (य्)

७ व मा अलैक अल्ला यज्ज़क्का (य्)O[गग]

८ व अम्मा मन् जाअक यस्आ (य) O[ग]

९ व हुव यख़्शा (य्)O[ग]

१० फ अन्त अनहु तलह्हा (य्)O[ग]

८० १-१०

341 १ या अय्युह (अ्) (अल्) न्नासु वस्लिम् मा अुनज़िल इलैक मि(न्)र्रब्बिक [ग] व इ(न्)-ल्लम् तफ्अल् फ मा बल्लग़्त रिसालतहू [गग] व (अ्) ल्लाहु यअ्सिमुक मिन (अन्) न्नासि[मे]

५ ७०

२ और तू अन्धों को, उनके भटकने से (बचाकर) मार्गदर्शन करनेवाला भी नहीं। तू तो केवल उन्हींको सुना सकता है, जो हमारी निशानियों पर श्रद्धा रखते हैं, फिर वे शरणागत भी हैं।

२७.८०–८१

३४० मुहम्मद और अन्धा—

"कौन जानता है कि करुणा किस पर होगी।"

१ रसूल ने त्योरी चढ़ायी और मुंह फेरा
२ कि उसके पास एक अंधा (अचानक) आ गया
३ और तुझे क्या पता कदाचित् वह पवित्र हो जाता।
४ या ध्यान देता तो उपदेश देना उसे लाभ पहुँचाता।
५ तो वह जो परवाह नहीं करता
६ उसका तो तू ख्याल करता है,
७ यद्यपि तुझ पर कोई दोष नहीं कि वह नहीं सुधरता।
८ और वह जो तेरे पास दौड़ता हुआ आया
९ और वह डरता है
१० तो तू उसकी ओर से ध्यान हटा लेता है।

८० १–१०

३४१ निर्भयता से सन्देश पहुँचाओ

१ हे सन्देष्टा, तुझ पर तेरे प्रभु की ओर से जो कुछ उतारा गया है उसे (लोगों के पास) पहुँचा दे और यदि तू न करे, तो तूने उसका सन्देश नहीं पहुँचाया। और ईश्वर तुझे (विरोधी) लोगों से बचा लेगा।

342 १ व लक़द् नअ्लमु अन्नक यज़ीकु सद्रुक बिमा यकूलून०^म

२ फ़ सब्बिह् बि हम्दि रब्बिक व कु(न्)म्मिन (अल्) स्साजिदीन०^म

३ व (अ्) अ्बुद् रब्बक हत्ता (य्) यअ्तियक (अ्)ल् यक़ीनु ०

१५ ९७-९९

343 १ फ़ बिमा रह्मति (न्) म्मिन (अ्) ल्लाहि लिन्त लहुम् ^ज व लौ कुन्त फज़्जन् (अ्) ग़लीज (अ्) ल् क़ल्बि ल (अ्) न्फ़द्दू (अ्) मिन् हौलिक^स्य फ़(अ्)अ्फु अन्हुम् व (अ्)स्तग्फिर लहुम् व शाविर्हुम् फ़ि(अ्)ल् अम्रि ^ज फ़इज़ा अज़म्त फ़ तवक्कल् अल (य्) (अ्) ल्लाहि^स्य इन्न (अ्) ल्लाह युहिब्बु (अ्) ल् मुतवक्किलीन०

३ १५९

344 १ अलम् नश्रह् लक सद्रक०^म

२ व वज़अ्ना अन्क विज़्रक०^म

३ (अ्) ल्लज़ी अन्क़ज़ ज़ह्रक०^म

४ व रफ़अ्ना लक ज़िक्रक०^म्र

५ फ़ इन्न मअ (अ्) ल् अुस्रि युस्रन् (अ्)०^म

६ इन्न मअ (अ्) ल् अुस्रि युस्रन् (अ्)०^म्र

३४२ कोइ कुछ कहे, तू मरने तक भक्ति कर

१ निश्चय ही हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, उससे तेरा मन दुःखी हो जाता है।

२ सो तू अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन कर और प्रणिपात कर।

३ और अपने प्रभु की भक्ति करता रह, यहाँ तक कि तेरी मृत्यु आ जाय।

१५.९७–९९

३४३ निश्चय होने तक ही परामर्श कर

१ यह ईश्वर की कृपा है कि उन लोगों के भले के लिए तू कोमल हृदय है। यदि तू कर्कश एवं कठोर हृदय होता, तो वे तेरे इर्द-गिर्द से छँट जाते। सो तू उन्हें माफ कर और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना कर और काम में उनसे परामर्श ले। फिर जब तू निश्चय करे, तो फिर ईश्वर पर विश्वास रख। निस्सन्देह ईश्वर भरोसा करनेवालों को चाहता है।

३.१५९

३४४ मामनुस्मर युद्ध्य च

१ क्या हमने तेरे लिए तेरा वक्ष विशाल नहीं किया?

२ और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया

३ जिस बोझ ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

४ और हमने तेरे लिए तेरी कीर्ति बढ़ायी।

५ सो निस्सन्देह कष्टों के साथ सुख है।

६ निस्सन्देह कष्टों के साथ सुख है।

७ फिर जब तू काय-मुक्त हो जाय, तो फिर प्रयत्न कर
८ और अपने प्रभु की ओर ध्यान लगा।

९४ १–८

३४५ आत्मौपम्य बोध

१ शपथ है चढ़त दिन की
२ और रात की जब वि छा जाय।
३ तेरे प्रभु ने न तो तुझे छोड़ा और न तुम पर अप्रसन्न हुआ,
४ और निश्चय ही तेरा उत्तर-जीवन तेरे पूर्व-जीवन से अधिक उत्तम है
५ और तेरा प्रभु तुझे अवश्य देगा, फिर तू सन्तुष्ट हो जायगा।
६ क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया, और आश्रय दिया ?
७ और उसने तुझे भटकता हुआ पाया, तो मार्ग दिखाया
८ और दरिद्र पाया तो सम्पन्न बना दिया
९ अत जो अनाथ है, उसे न सता
१० और जो माँगने आये उसे मत झिड़क
११ और अपने प्रभु की देनों का बखान कर।

९३ १–११

७६ घोषणा

३४६ पञ्च आदेश

१ कह मैं तो केवल एक बात समझाता हूँ कि तुम इश्वर के लिए दो-दो एक-एक खड़े हो जाओ। फिर सोचो कि तुम्हारे इस साथी को कुछ पागलपन नहीं, वह तो केवल होशियार करनेवाला है एक बड़ी आपत्ति आने से पूर्व।

२ क़ुल् मा सअल्तुकु (म्) म्मिन् अज्रिन् फ हुव लकुम् ^(ग्रोप) इन् अजरिय इल्ला अल (य्) ल्लाहि ^(म) व हुव अला (य्) कुल्लि शय्अिन् शहीदुन्O

३ क़ुल इन्न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बि (अ्) ल् हक़्क़ि ^(म) अल्लामु (ल्) ल् ग़ुयूबिO

४ क़ुल् जाअ (अ्) ल् हक़्क़ु व मा युब्दि (अ) ल्- (अ्) ल् बातिलु व मा युईदुO

५ क़ुल् इन् ज़लल्तु फ़ इन्न मा अज़िल्लु अला (य्) नफ़्सी ^(म) व इनि (अ्) ह्तदैतु फ बि मा यूही' इलय्य रब्बी ^(ग्रप) इन्नहु समीअुन् क़रीबुनO

३४ ४६–५०

47 १ इन्न रब्बक यअ्लमु अन्नक तक़ूमु अद्ना (म्) मिन् सुलुसयि (अ्) ल्लैलि व निस्फ़हू व सुलुसहू व ताअिफ़तु(न्) म्मिन (अ्) ल्लज़ीन मअक ^(ग्रोप)

७३ २०

२ कह मैंने तुमसे जो कुछ मुआवजा माँगा हो, तो वह तुम ही रखो, मेरा प्रतिफल तो केवल ईश्वर के जिम्मे है और वह सब द्रष्टा है।

३ कह निस्सन्देह मेरा प्रभु सत्य का आविष्कार करता है, वह अव्यक्त का ज्ञाता है।

४ कह सत्य आया और असत्य न निर्माण करता है, न लौटकर लाता है।

५ कह यदि मैं भ्रान्त हो जाऊँ, तो केवल अपने ही आपके लिए भ्रमित हो जाऊँगा और यदि मैं बोध पाऊँ, तो वह इसी कारण से कि मेरे प्रभु ने मुझ पर प्रज्ञान भेजा है। निस्सन्देह वह सुननेवाला है, निकट है।

३४।४६–५०

७७ गुण-सम्पदा

४४७ प्रायमामयता

१ निस्सन्देह तेरा प्रभु जानता है कि तू और तेरे साथियों में से कुछ लोग (प्रार्थना में) खड़े रहते हैं, दो-तिहाई रात के लगभग और आधी रात और तिहाई रात ।

७३।२०

348 १ इल्ला तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहु (अ्) ल्लाहु इज्
अख़्रजहु (अ्) ल्लज़ीन कफ़रू (अ्) सानिय-
(अ्) सुनैनि इज् हुमा फ़ि (अ्) ल् ग़ारि
इज् यक़ूल् लि साहिबिहि लि तह्ज़न् इन्न-
(अ्) ल्लाह मअना फ़अन्ज़ल(अ्)ल्लाहु सकीनतहू
अलैहि व अय्यदहु बि जुनूदि (न्) ल्लम्
तरौहा व जअल कलिमत (अ्) ल्लज़ीन
क़फ़रु(व्अ्) (अ्ल्)सुफ़्ला (य्) व कलिमतु-
(अ्) ल्लाहि हिय (अ्) ल् उल्या व
(अ्) ल्लाहु अज़ीजुन् हकीमुन् ०

९४०

349 १ ल तद् बान कुम् फ़ी रसूलि (अ्) ल्लाहि
उस्वतुन् हसनतु (न्) लि मन् कान यर्जु (व्अ्)-
(अ्) ल्लाह व (अ्) ल यौम (अ्) ल् आख़िर
व ज़कर (अ्) ल्लाह कसीरन् (अ) ० १

३३ २१

350 १ अ(न्) न्नबिय्यु औला (य्) बि (अ्) ल्
मु (य) अमिनीन मिन् अन्फ़ुसिहिम

३३ ६

३४८ ईश्वर का सतत साम्निध्य

१ यदि तुम सन्देष्टा की सहायता न करोगे, तो निश्चय जानो, परमात्मा ने उसकी सहायता उस समय की है, जिस समय श्रद्धाहीनों ने उसे निकाल दिया था, जब कि वह दो में का दूसरा था। जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था दुःख न कर, निश्चय ही परमात्मा हमारे साथ है, उस समय परमात्मा ने उसे अपनी ओर से चित्त की शान्ति दी और उसकी ऐसी सेनाओं से सहायता की कि जो तुम्हें दिखाई नहीं पड़ती थीं। और श्रद्धाहीनों का बोल नीचा किया और परमात्मा का बोल ऊँचा रहा। परमात्मा सर्वजित् है, सर्वविद् है।

९.४०

३४९ ईश्वर भक्ति का आदर्श उदाहरण

१ निस्सन्देह तुम्हारे लिए अर्थात् उस व्यक्ति के लिए, जो ईश्वर की और अन्तिम दिन की आशा रखता है और ईश्वर को बहुत स्मरण करता है, ईश्वर के प्रेषित में एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

३३.२१

३५० प्रेषित और श्रद्धावान् का सम्बन्ध

१ श्रद्धावानों को अपने प्राण से अधिक सन्देष्टा से लगाव है।

३३.६

३५१ पूर्व-जीवन से प्रामाणिकता सिद्ध

१ कह यदि परमात्मा चाहता, तो म इस वाणी को तुम्हारे सम्मुख न पढ़ता और न वह तुम्हें इससे अवगत करता। वास्तविकता यह है कि इसके पूर्व-जीवन का एक भाग में तुममें व्यतीत कर चुका हूँ, फिर क्या तुम इतना नहीं समझते ?

१० १६

३५२ अनपढ़ ईश्वरनिष्ठ

१ कह ऐ लोगो, मैं तुम सबकी ओर उस परमात्मा का भेजा हुआ हूँ, जिसका आकाशों एव भूमि में आधिपत्य है। उसके अतिरिक्त कोइ नियन्ता नहीं। वही जिलाता है, वही मारता है। सो श्रद्धा रखो परमात्मा पर और उसके भेजे हुए अनपढ़ सन्देष्टा पर, जो परमात्मा पर और उसकी वाणी पर श्रद्धा रखता है और तुम उसका अनुसरण करो, जिससे कि तुम्हें मार्ग प्राप्त हो।

७ १५८

३५३ ईश्वर ने मुहम्मद को दृढ़ किया

१ और वे लोग तो चाहते थे कि तुझे उस वस्तु से विचला दें, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी, जिससे कि तू उसके अतिरिक्त कुछ और हमारे नाम से गढ़ ले और तब वे तुझे अवश्य मित्र बना लेते।

२ और यदि हम तुझे सँभाले न रखते, तो तू अवश्य उनकी ओर कुछ-न-कुछ झुकने लग जाता।

१७ ७३-७४

354 १ व मिन् हुमु (अ्) ल्लजीन यु(व्)अजून(अ्ल्) न्नबिय्य व यकूलून हुव अुजुनुन्[गोष] कुल् अुजुनु खैरि (न्) ल्ल कुम् यु(व्)अमिनु वि (अ्)- ल्लाहि व यु(व्) अमिनु लिल् मु(व्)अमिनीन व रह्मत्तु (न्) ल्लिल्लजीन आमनू (अ्) मिनकुम्[गोष] ९ ६१

355 १ व इन् तुत्रिअ् अक्सर मन् फि (अ्) ल् अर्द्रि युद्रिल्लुक अन् सबीलि (अ्) ल्लाहि[गोष] इ (न्) य्यत्तिबिअून इल्ल(अ्) (अ्ल्) ज्जन्न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून० ६ ११६

356 १ व मा अर्सल्नाक इल्ला रह्मत (न्) ल्लिल् आलमीन० २१ १०७

357 १ या अय्युह (अ्) (अ्ल्) न्नबिय्यु इन्ना अर्सल् नाक शाहिद (न्) व्व मुवश्शिर (न्) (अ्) व्व नजीरन् (अ्)०[गा]

२ व्व दाअियन् (अ्) इल (य्) (अ् ल्लाहि बि इज्निही व सिराज(न्) (अ्)म् मुनीरन् (अ्)० ३३ ४५-४६

358 १ इन्न (अ्) ल्लाह व मलाअिकतहु युसल्लून अल (य्) (अ्ल्) न्नबिय्यि[गाय] या अय्युह(अ्)- (अ्)ल्लजीन आमनू (अ्) सल्लू (अ्) अलैहि व सल्लिमू(अ्) तस्लीमन्० ३३ ५६

३५४ सबकी सुननेवाला

१ उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो सन्देष्टा को दुःख देते हैं और कहते हैं कि वह तो कान है (अर्थात् सबकी सुनता है)। वह कान है तुम्हारे भले के लिए। परमात्मा पर श्रद्धा रखता है और श्रद्धावानों का विश्वास करता है और तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं, उनके लिए वह करुणा-रूप है। ९.६१

३५५ बहुमत से अप्रभावित

१ संसार में अधिक लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनका कहना मानने लगे, तो वे तुझे ईश्वर के मार्ग से भटका देंगे। वे केवल कल्पनाओं पर चलते हैं और केवल अटकलबाजियाँ किया करते हैं। ६.११६

७८ मिशन

३५६ करुणा का दूत

१ और हमने तुझे भेजा है संसार की जनता के लिए करुणा-रूप बनाकर। २१.१०७

३५७ पचविध कार्य

१ हे सन्देष्टा, निस्सन्देह हमने तुझे भेजा है, बतानेवाला, शुभ वार्ता देनेवाला, सावधान करनेवाला बनाकर

२ और परमात्मा की ओर उसकी आज्ञा से, आवाहन करनेवाला तथा प्रकाश देनेवाला दीपक बनाकर। ३३.४५-४६

७९ आशीर्वाद-पात्र

३५८ मुहम्मद के लिए आशीर्वाद की याचना करो

१ निस्सन्देह परमात्मा एवं उसके देवदूत सन्देष्टा पर आशीर्वाद भेजते हैं। हे श्रद्धावानो! तुम भी आशीर्वाद भेजो उस पर और सलाम (शान्ति) भेजो सलाम (शान्ति) कहकर। ३३.५६

खण्ड ९

गूढ़-शोधन

359 १ व मा खलक़्न (अ्) (अ्ल्) स्समाअ व (अ्) ल् अर्ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन०

२ लौ अरद्‌ना अ (न्) नत्तख़िज लह्व(न्अ्) ल्ल (अ्) त्तख़ज्‌नाहु मि (न्) ल्लदुन्ना इन्‌ कुन्ना फ़ाअिलीन ०

२१ १६-१७

360 १ अल्लज़ीन यज़्कुरून (अ्) ल्लाह क़ियाम (न्) व्व क़ुअूद (न) (अ्) व्व अला (य्) जुनूबिहिम् व यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़ि (अ्ल)-स्समावाति व (अ्)ल् अर्ज़ि रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिलन् (अ्)न

३ १९१

२८ तत्त्वज्ञान

८० जगत्

३५९ सृष्टि का गम्भीर हेतु

१ हमने आकाश, भूमि एव जो कुछ उसमें ह उसे व्यय नहीं बनाया।

२ यदि हम कोई कौतुक ही करना चाहते, तो उसे अपने पास ही से कर लेते, यदि हमें यह करना होता ।

२१ १६-१७

३६० सष्टि रचना निरर्थक नहीं

१ वे, जो परमात्मा को स्मरण करते हैं, उठते-बैठते तथा लेटते और आकाश और भूमि की रचना में चिन्तन करते हैं (कहते हैं) हे प्रभो ! तूने यह सब कुछ व्यय और निरुद्देश नहीं बनाया।

३ १९१

361 १ अ फ हसिब्तुम् अन्न मा खलक्नाकुम् अबसन् (अ्) ˘व्व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जऊन ०

२३ ११५

362 १ व हुव (अ्) ल्लजी यतवफ़्फ़ाकुम् बि (अ्)-ल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम् बि (अल्) न्नहारि सुम्म यब्असुकुम् फ़ीहि लि युक़्ज़ा (य्) अजलु (न्) म्मुसम्मन् (य्)ˇ सुम्म इलैहि मर्जिअकुम् सुम्म युनब्बिअुकुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलून ०

६ ६०

363 १ अल्लाहु यतवफ़्फ़ (य्) (अ्) ल् अन्फ़ुस हीन मौतिहा व (अ्) ल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा ˇ फ युम्सिकु (अ्) ल्लती क़ज़ा (य्) अलैह (अ्) (अ्) ल् मौत व युर्सिलु (अ्) ल् अुख़रा (य्) इला (य्) अजलि (न्) म्मुसम्मन् (य्)ᶜᵒˡ इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति (न्) ल्लि क़ौमि (न्) ˘य्यतफ़क्करून ०

३९ ४२

८१ जीव

३६१ जीवनिर्मिति सोद्देश्य

१ क्या तुमने यह कल्पना कर ली है कि हमने तुम्हें व्यर्थ निर्माण किया है? और यह कि तुम हमारी ओर नहीं लौटाये जाओगे? २३ ११५

३६२ निद्रा मृत्यु का पूर्व-प्रयोग

१ वही है जो रात को तुम्हारा जीव खींच लेता है और दिन में तुम जो कुछ करते हो, जानता है। फिर इस दुनिया में तुम्हें उठाता है कि नियत अवधि पूरी हो, फिर उसीकी ओर तुम्हें लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो। ६ ६०

३६३ निद्रा और मृत्यु

१ ईश्वर खींच लेता है जीवों को उनकी मृत्यु के समय और जिन्हें मृत्यु नहीं आयी, उन्हें निद्रा की स्थिति में खींच लेता है। फिर जिन पर मृत्यु निश्चित हो चुकी है, उन्हें रोक लेता है और शेष को बिदा कर देता है एक निश्चित अवधि के लिए। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच विचार के अभ्यासी हैं। ३९.४२

364 १ व यस्अलूनक अनि (अल्) र्रूहि ताय कुलि-(अल्) र्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतु(म्)-म्मिन(अ्) ल अिल्मि इल्ला कलीलन् (अ्)०
२ व ल अिन् शिअ्ना ल नज्हबन्न वि (अ्)-ल्लजी औहैना इलैक ..

१७ ८५-८६

365 १ कु (ल्) ल्लॉ अकूलु लकुम् अिन्दी खज़ाअिनु-(अ्) ल्लाहि व लॉ अअ्लमु (अ्) ल् गैव व लॉ अकूलु लकुम् इन्नी मलकुन् * इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा (य्) इलय्य ताय

६ ५०

366 १ कु (ल्) ल्लॉ अम्लिकु लि नफ्सी नफ्अ(न्)-(अ्) व ला ज़र्रन् (अ्) इल्ला मा शाअ-(अ्)ल्लाहु ताय व लौ कुन्तु अअ्लमु (अ्)ल गैब ल (अ्) स्तक्सर्तु मिन् (अ्) ल् खैरि व मा मस्सनिय (अ) स्सू अु ०१

७ १८८

367 १ या अय्युह (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ) ला तसअलू (अ्) अन् अश्याअ इन् तुब्द लकुम् तसु(व्) अकुम्०२

५ १०४

३६४ जीवविषयक प्रश्न

१ ये लोग तुमसे पूछते ह जीव क विषय में। कह जीव मेरे प्रभु की आज्ञा से है। तुम लोगो ने ज्ञान से कम ही भाग पाया है।

२ और यदि हम चाहें, तो वह वस्तु ले जायें, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी ह । १७.८५-८६

३६५ अव्यक्त का ज्ञान नहीं

१ कह मैं तुमसे यह नही कहता कि मेरे पास ईश्वर के खजाने ह और न मैं अव्यक्त का ज्ञान रखता हूँ और न तुमसे यह कहता हूँ कि मैं देवदूत हूँ। मैं केवल उस प्रज्ञान का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर भेजा गया है । ६ ५०

३६६ यदि अव्यक्त का ज्ञान होता!

१ कह मैं अपने-आपके लिए लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता ईश्वरेच्छा के अतिरिक्त। और यदि म अव्यक्त जानता होता, तो मैं भलाई से बहुत लेता और मुझे बुराइ लगती नही । ७.१८८

३६७ अनावश्यक प्रश्न न करो

१ हे श्रद्धावानो, ऐसी बातें न पूछा करो कि यदि (उसके उत्तर) तुम पर प्रकट कर दिये जायें, तो तुम्हें संकटापन्न कर दें । ५ १०४

370 १ अल्ला तज़्रिदु वाजिरवु (न्) ब्विज़्र अुख़्रा (य्) ०ला
२ व अ (न्) ल्लैस लिल् इन्सानि इल्ला मा मआा (य्) ०ला
३ व अन्न सञ्यहु सौफ युरा (य्) ०स्थार
४ सुम्म युज्जाहु (अ्) ल् जज़ाअ (अ) ल् औफा (य्) ०ला
५ व अन्न इला (य्) रब्बिक (अ) ल् मुन्तहा (य्) ०ला
६ व अन्नहु हुव अद्हक व अब्का (य्) ०ला
७ य अन्नहु हुय अमात व अह्या०
८ व अन्नहु खल्क (अ्ल्) ज़्ज़ौजैनि (अ्ल्)-ज़्जकर व (अ्) ल् उन्सा (य्) ०ला
९ मि (न्) नुत्फतिन् इजा तुम्ना (य्) ०स्थाए
१० व अन्न अलैहि (अ्न) न्नश्अव (अ्) ल् उख़्रा (य्) ०ला
११ य अन्नहु हुव अग्ना (य्) व अक्ना (य्) ०ला
१२ व अन्नहु हुव रब्बु (अ्ल्) श्शिअ्रा (य्) ०ला

५३ १८-४९

371 १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लजीन् आमनू (अ्) अलैकुम् अन्फुसकुम् ल्ला यदुर्रुकुम् (म्)ताव म्मन् दल्ल इज (अ्) (अ्) हृतदैतुम्-

२९ कर्मविपाक

८३ कर्मविपाकविषयक मूलभूत श्रद्धा

३७० ग्यारह सूत्र

१ कोइ वोझ ढोनेवाला किसी और का बोझ ढो नही सकता।
२ और मनुष्य ने प्रयत्न किया ह, वही उसके लिए है
३ और उसका प्रयत्न अवश्य देखा जायगा।
४ और फिर उसे पूरा-पूरा प्रतिफल मिलेगा।
५ और तेरे प्रभु तक सबको पहुँचना है।
६ और वही हँसाता ह, वही रुलाता ह।
७ और वही मारता है, वही जिलाता है।
८ और उसीने नर और नारी का जोड़ा वनाया है,
९ एक बूँद से जो टपकायी जाती है।
१० और उसके जिम्मे है दा वार पैदा करना
११ और वही समृद्ध करता है और वही परितृप्ति देता ह
१२ और वही लुब्धक तारे का प्रभु है।

५३ ३८-४९

८४ कर्मविपाक अपरिहार्य

३७१ स्वात्मना कर्तव्यम

१ हे श्रद्धावानो ! अपनी चिन्ता करो। दूसरे के भटकने से तुम्हारा कुछ नही विगड़ता, जब कि तुम मार्ग पर हो।

इल (अ्) (अ्) ल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन्-
(अ्)फ़ युनब्बिअुकुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलूनO
५ १०८

372 १ मनि (अ्) हृतदा (य्) फ इन्नमा यहृतदी (य्)
लि नफ़्सिहर्ती व मन् ज़ल्ल फ़ इन्न मा यदिल्लु
अलैहा व ला तज़िरु वाज़िरतु (न्) विज़्र
उख्रा (य्)

१७ १५

373 १ इन्न (अ्) ल्लाह ला युग़य्यिरु मा बि कौमिन
हृत्ता (य्) युग़य्यिरू (अ्) मा बि अन्फुसि-
हिम् व इजा अराद (अ्) ल्लाहु बि क़ौमिन
सू अन् (अ्) फ़ला मरद्द लहु व मा लहुम् मिन्
दूनिहर्ती मि (न्) व्वालिन्O

१३ ११

374 १ व मा असाब कु (म्) म्मि (न्) म् मुसीबतिन्
फ बि मा कसबत् ऐदीकुम् व यअ्फू (अ्) अन्
कसीरिन्O

४२ ३०

इस्वर की ही ओर तुम सवको लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।

५ १०८

३७२ उत्तरदायित्व तुम्हारा

१ जो मार्ग पर चलता है, वह अपने ही कल्याण के लिए चलता है और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपने ही अकल्याण के लिए पथभ्रष्ट हुआ। कोइ बोझ ढोनेवाला दूसरे का बोझ नहीं ढोता ।

१७ १५

३७३ मनुष्य के बदलने पर इश्वर बदला करता ह

१ वास्तविकता यह है कि इश्वर किसी समाज की स्थिति नहीं बदलता, जब तक कि उस समाज के लोग, जो उनके मन में ह, उसे नहीं बदलते। ईश्वर जब किसी समाज पर आपत्ति डालना चाहता है, तो वह टलती नहीं और इश्वर के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नहीं।

१३ ११

३७४ आत्मैव रिपुरात्मन:

१ तुमको जो कष्ट पहुँचता है, वह तुम्हारे हाथों ने जो कमाया, उसके कारण है। बहुत से पाप तो वह क्षमा ही करता है।

४२ ३०

375 १ मन् जाअ बि (अ्) ल् हसनति फ लहु अश्रु अम्सालिहा व मन् जाअ बि (अ्ल्) सय्यिअति फ़ ला युज्ज़ा (य्) इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून०

६ १६०

376 १ हल् जज़ाउ (अ्) ल् इह्सानि इल्ल (अ्) ल् इह्सानु ०

५५ ६०

377 १ कुल् या अिबादि (अ्) ल्लज़ीन आमनु (व्अ्)-(अ्) त्तक़ू (अ्) रब्बकुम् लिल्लज़ीन अह्सनू-(अ्) फी हाज़िहि (अ्ल्) दुनया हसनतुन् व अर्ज़ु (अ्) ल्लाहि वासिअतुन् इन्नमा युवफ़्फ़ (य्) (अ्ल्) साबिरून अज्रहुम् बिग़ैरि हिसाबिन्०

३९ १०

378 १ मन् कान युरीदु (अ्) ल् इज़्ज़त फ लिल्लाहि (अ्) ल् अिज़्ज़तु जमीअन् (अ्) इलैहि यस्अदु (अ्) ल् कलिमु (अ्ल्) तय्यिबु व (अ्) ल् अमलु (अ्ल्) स्सालिहु यरफ़अुहु व (अ्) ल्लज़ीन यम्कुरून (अ्ल्) सय्यिआति लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् व मक्रु उ (व्) लाअिक हुव यबूरु ०

३५ १०

३७५ पुण्य का फल दसगुना

१ जो पुण्य लकर आये, उसके लिए उसका दसगुना है और जो बुराइ लेकर आये, तो उसे उसीके समान प्रतिफल दिया जायगा और उन पर अन्याय न होगा।

६ १६०

३७६ कर भला तो हो भला

१ भलाइ का बदला भलाई ही है।

५५ ६०

३७७ विपुला च पृथ्वी

१ कह मेरे श्रद्धावान दासो! इश्वर-परायणता धारण करो। जो लोग इस जगत में भलाइ करते हैं उनके लिए अच्छा प्रतिफल है और ईश्वर की भूमि विशाल है। तितिक्षा करने-वालों को ही उनका प्रतिफल अगणित मिलता ह।

३९ १०

३७८ सदवचन और सत्कृति को प्रतिष्ठा

१ जो प्रतिष्ठा चाहता है, तो (वह समझ ले) कि सारी प्रतिष्ठा ईश्वर के ही लिए है। सद्वचन उसी तक पहुँचते ह और सत्कृत्यों को वह उच्चता प्रदान करता ह। और जो लोग बुरी चालें चलते हैं उनके लिए कठोर दण्ड है और उनका कपट नष्ट होगा।

३५ १०

379 १ व मन् कान फी हाजिही अअ्मा (य्) फ हुव फि (अ्) ल् आखिरति अअ्मा (य्) व अज़ल्लु सबीलन् (अ्) ०

१७ ७२

380 १ व नज़अु (अ्) ल् मवाज़ीन (अ्) ल् क़िस्त लि यौमि (अ्) ल् कियामति फ ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शय्अन् (अ्) व इन् कान मिस्काल हब्बति (न्) म्मिन् खर्दलिन् अतैना बिहा व कफा (य्) बिना हासिबीन०

२१ ४७

381 १ इज़ा ज़ुल्ज़िलति (अ्) ल् अर्दु ज़िल्ज़ालहा०
२ व अख़्रजति (अ्) ल् अर्दु अस्क़ालहा०
३ व काल (अ्) ल् इन्सानु मा लहा०
४ यौम इज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा०
५ बि अन्न रब्बक औहा (य्) लहा ०
६ यौम इज़ि (न्) य्यस्दुरु (अ्ल्) न्नासु अश्तात (न् अ्) ल्लि युरौ (अ्) अअ्मालहुम्०
७ फ म (न्) य्यअ्मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् खैर (न्) य्यरहु०
८ व म (न्) य्यअ्मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् शर्र (न्) (अ्) य्यरहु०

८५ मृत्यु के बाद भी कर्म नहीं टलता

३७९ यहाँ अन्धा, सो वहाँ अन्धा

१ जो कोइ इहलोक में (इश्वर के विषय में) अधा रहा, वह अन्तिम दिन भी (उसी प्रकार) अधा रहेगा और मार्ग से बहुत भटका होगा ।

१७ ७२

३८० इश्वर की तुला

१ पुनरुत्थान के दिन हम न्याय की तराजू रखेंगे । किसी प्राणी पर कोइ अन्याय नहीं किया जायगा और यदि कोई राइ के दाने के बराबर भी कम होगा, तो हम उसे भी लाकर उपस्थित करेंगे और हम लेखा-जोखा करनेवाले पर्याप्त हैं ।

२१ ४७

३८१ धरती काँपती है

१ जब धरती (अन्तिम) भूकम्प से हिलायी जायगी
२ और भूमि अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी
३ और मनुष्य कहेगा कि इसको क्या हुआ ?
४ उस दिन वह अपनी बातें बतायेगी
५ इसलिए कि तेरे प्रभु ने उसे यही आज्ञा भेजी ।
६ उस दिन लोग निकलेंगे बिखरे हुए
७ ताकि वे अपने कृत्यों को देखें । सो जो कणभर भलाई करेगा, वह उसे देखेगा
८ और जो कणभर बुराई करेगा, वह उसे देखेगा ।

९९ १-८

382 १ अल् कारिअतु ०[ग]

२ म (अ्) (अ्) ल् कारिअतु ०[र]

३ व मा अद्राक म (अ्) (अ्) ल् कारिअतु ०[गोय]

४ यौम यकूनु (अल्) न्नासु क (अ्) ल् फराशि (अ्) ल् मब्सूसि ०[ग]

५ व तकूनु (अ्) ल् जिबाल् क (अ्) ल् अिह्नि (अ्) ल् मन्फूशि ०[गार]

६ फ अम्मा मन् सकुलत् मवाजीनुहू ०[ग]

७ फ़ हुव फी औशति (न्) र्राद्वियति्न् ०[गोय]

८ व अम्मा मन् खफ्फत् मवाजीनुहू ०[ग]

९ फ उम्मुहू हावियतुन् ०[गोय]

१० व मा अद्राक माहियहू ०[गोय]

११ नारुन् हामियतुन् ०[गोय]

१०१ १-११

३८२ हलका पल्ला भारी पल्ला

१ वह खड़खड़ा डालनेवाली,
२ क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली ?
३ और तूने क्या समझा कि क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली ?
(यह है अन्तिम दिन की स्थिति)।
४ जिस दिन होंगे लोग जैसे बिखरे हुए पतंगे।
५ और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की भाँति हो जायेंगे,
६ तो जिसका पल्ला भारी होगा,
७ तो वह वहाँ सुखी जीवन जियेगा।
८ और जिसका पल्ला हलका होगा,
९ तो उसका स्थान गर्त है।
१० और तूने क्या सोचा कि वह (गर्त) क्या है ?
११ (वह है) आग दहकती हुई।

१०१ १–११

383 १ व काल्ू' (अ्) अ इजा कुन्ना ज्रिजाम (न्) (अ्)-
ऽव्न रुफ़ातन् (अ्) अ इन्ना ल मव्ऊसून
खल्क़न् (अ्) जदीदन् (अ्) ०

२ कुल् कूनू (अ्) ह्रिजारतन औ हदीदन् (अ्) ०[ग]

३ औ खल्क (न्) (अ्) म्मिम्मा यक्बुरु फ़ी
सुदूरिकुम् [ज] फ़ सयक़ूलून म (न्) ऽय्युईदुना [गफ]
कुलि (अ्) ल्लजी फ़त्नरकुम् अव्वल मरतिन् [ज]

१७ ४९–५१

384 १ लौ अुक़्सिमु बि यौमि (अ्) ल् क़ियामति ०[ग]

२ व लौ अुक़्सिमु बि (अल्) न्नफ़्सि (अल्)
ल्लव्वामति ०[गेम]

३ अ यह्सबु (अ्) ल इन्सानु अल्ल (न्) नज्मअ
ज़िजामहु ०[गेम]

४ बला (य्) क़ादिरीन अ़ला (य्) अ (न्)
नुसव्विय बनानहु ०

७५ १–४

३० साम्पराय (मरणोत्तर जीवन)

८६ पुनरुत्थान अटल

३८३ पत्थर हो जाओ या लोहा

१ कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा-चूरा हो जायँगे तो क्या फिर हम उठाये जायँगे ?

२ कह तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज, जो तुम्हारे मन में बड़ी लगे।

३ फिर वे कहेंगे फिर हमें कौन लौटाकर लायेगा, कह वही, जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया…।

१७ ४९–५१

३८४ झाड़नेवाले मन की साख

१ मैं शपथ खाता हूँ पुनरुत्थान के दिन की,

२ और शपथ खाता हूँ उस मन की, जो बुराइ की निन्दा करे।

३ क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी नहीं करेंगे ?

४ क्यों नहीं ? हम समर्थ हैं कि उसकी उँगलियों की पोर-पोर दुरुस्त करें।

७५ १–४

385 १ व (अल्) जारियाति जर्वन् (अ्) ०[ज]
२ फ़ (अ्) ल् हामिलाति विक़्रन् (अ्) ० [न]
३ फ (अ्) ल् जारियाति युस्रन् (अ्) ०[रा]
४ फ (अ्) ल् मुकस्सिमाति अम्रन् (अ्) ०[ग]
५ इन्न मा तू (व) अदून ल सादिकुन् [ज]
६ व्व इन्न (अल्) द्दीन ल वाकिअुन् ०[गौर]

५१ १-६

386 १ फ़ इजा जाअ्ति (अल्) स्साख़्ख़ु ० [त]
२ यौम यफिर्रु (अ्) ल मर्अु मिन अख़ीहि ०[ग]
३ व उम्मिहृ्ती व अबीहि ०[ग]
४ व साह्बिनिहृ्ती व बनीहि ०[गार]
५ लि कुल्लि (अ्) म्रि (य) ञि(न्) म्मिन्हुम्
यौम इजिन् शअ्नु (न्) य्युग्नीहि ०[गौर]

८० ३३-३७

८७ पुनरुत्थान का दिन

३८५ पुनरुत्थान एक वास्तविकता है

१ शपथ है उन (हवाओं) की, जो उड़ाकर बिखेरनेवाली है,

२ फिर शपथ है उनकी, जो बोझ उठानेवाली हैं,

३ फिर नम्रता से चलनेवाली हैं,

४ फिर आज्ञा से बाँटनेवाली हैं,

५ निस्सन्देह तुम्हें जिस चीज का अभिवचन दिया गया है, वह अवश्य सत्य है।

६ और निस्सन्देह न्याय अवश्य होनेवाला है।

५१ १–६

३८६ छूट चले सब संगी-साथी

१ फिर जब आयेगी कान (को) फोड़ देनेवाली (आवाज),

२ उस दिन मनुष्य भागेगा अपने भाई से।

३ और अपनी माँ और अपने बाप से।

४ और अपनी जीवन-संगिनी से और अपनी सन्तति से।

५ उस दिन उनमें से प्रत्येक मनुष्य की ऐसी हालत होगी, जो उसके लिए ही पर्याप्त होगी।

८० ३३–३७

387 १ व (अ्) त्तकू (अ्) यौम(न् अ्)ल्ला तज्ज़ी नफ़सुन् अ (न्) ह्मफ़्सिन् शैअ (न्) व्व ला युक़्बलु मिन्हा अद्लु व्व ला तन्फ़अुहा शफ़ाअतु (न्) व्व ला हुम् युन्सरून ०

२ १२१

388 १ व इज (अ्) (अ्ल्) श्शम्सु कुव्विरत् ०[स्वाह्ना]
२ व इज (अ्) (अ्ल्) न्नुजूमु (अ्) न् कदरत् ०[स्वाह्ना]
३ व इज (अ्) (अ्)ल् जियालु सुय्यिरत् ०[स्वाह्ना]
४ व इज (अ्) (अ्)ल् अिशारु अुत्तिलत् ०[स्वाह्ना]
५ व इज (अ्) (अ्) ल् वुहूशु हुशिरत् ०[स्वाह्ना]
६ व इज (अ्) (अ्)ल् विहारु सुज्जिरत् ०[स्वाह्ना]
७ व इज (अ्) (अ्ल्) न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् ०[स्वाह्ना]
८ व इज (अ्) (अ्)ल् मौअुदतु सुअिलत् ०[स्वाह्ना]
९ वि अय्यि ज (न्) म्बिन् क़ुतिलत् ०[र]
१० व इज (अ्) (अ्ल्) स्सुहुफु नुशिरत् ०[स्वाह्ना]
११ व इज (अ्) (अ्ल्) स्समा अु कुशितत् ०[स्वाह्ना]
१२ व इज (अ्) (अ्) ल जह़ीमु सुअ्अिरत् ०[स्वाह्ना]
१३ व इज (अ) (अ्)ल् जन्नतु उज़्लिफ़त् ०[स्वाह्ना]
१४ अलिमत् नफ़्सु (न्) म्मा अह्ज़रत् ०[गम]

८१ १-१४

३८७ कोइ सिफारिश न चलेगी

१ और डरो उस दिन से, जब कोइ किसीके काम नही आयेगा। और न किसीकी ओर से कोई मुआवजा स्वीकार किया जायगा। और न किसीकी ओर से कोइ सिफारिश मजूर की जायगी। और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

२ १२३

३८८ बारह निशानियाँ

१ जिस दिन सूर्य उलट दिया जायगा।

२ और तारे झड़ जायेंगे।

३ और पहाड़ चलाये जायेंगे।

४ और जब आसन्नप्रसवा (दस मास की गाभिन) ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी।

५ और जब वन्य पशु इकट्ठे किये जायेंगे।

६ और समुद्र भडकाये जायेंगे।

७ और जब प्राण मिलाये जायेंगे।

८ और जीवित गाड़ी हुइ (लड़की) से पूछा जायगा

९ कि किस दोष से वह मारी गयी।

१० और जब कर्म-पत्र खोले जायेंगे।

११ और जब आकाश की खाल उतारी जायगी।

१२ और जब नारकीय अग्नि दहकायी जायगी।

१३ और जब स्वर्ग समीप लाया जायगा।

१४ और प्रत्येक जीव जान लेगा कि उसने क्या किया है।

८१ १-१४

389 १ इन्ना अअ्तदना लिल् काफिरीन सलासिल (अ्) व अग्लाल (न्)ँव्व सअीरन् (अ्)O
७६ ४

390 १ व यौम युह्शरु अअ्दाअु (अ्) ल्लाहि इल- (य्) (अल्) नारि फ़ हुम् यूज़अून O
२ हत्ता (य्) इजा मा जाअूहा शहिद अलैहिम् समअुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बि मा कानू यअ्मलून O
३ व कालू (अ्) लि जुलूदि हिम् लिम शहि(द्)- तुम् अलैना गेप क़ालू (अ्) अन्तकन (अ्)- (अ्) ल्लाहु (अ्) ल्लज़ी अन्तक कुल्ल शय्अि- (न्)ँव्व हुव ख़लक़कुम् अव्वल मर्रति- (न्)ँव्व इलैहि तुर्जअून O
४ व मा कुन्तुम् तस्ततिरून अ (न्)ँ य्यश्हद अलैकुम् सम्अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़नन्तुम् अन्न (अ्)- ल्लाह ला यअ्लमु कसीर (न्) (अ्) म्मिम्मा तअ्मलून O ४१ १९-२२

391 १ तिल्क (अल्) दारु (अ्)ल आख़िरतु नज्- अलुहा लिल्लज़ीन ला युरीदून अुलुव्वन् (अ्) फि (अ्) ल् अर्ज़ि व ला फ़सादन् (अ्)गेर य (अ्) ल् आक़िबतु लिल् मुत्तक़ीन O २८.८३

८८ स्वर्ग, नरक आदि की व्यवस्था

३८९ बेड़ियाँ, तौक और दहकती आग

१ हमने श्रद्धाहीनों के लिए जंजीरें, तौक और दहकती आग तयार रखी है। ७६४

३९० कान, आँख और खाल भी गवाही देंगी

१ जिस दिन ईश्वर के शत्रु आग की ओर इकट्ठे किये जायेंगे, तो उनकी टोलियाँ बनायी जायेंगी।

२ यहाँ तक कि जब उस आग के पास आ जायेंगे, तो उनके कान, उनकी आँखें एवं उनकी खालें उनके विरुद्ध उनकी करतूतों की गवाही देंगी।

३ वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी? वे उत्तर देंगे हम उसी ईश्वर ने बहलवाया, जिसने हर चीज को वाणी दी। उसीने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसीकी ओर तुम लौटाये जा रहे हो।

४ और तुम (पाप करते समय) छिपाते थे (तो) इस विचार से नहीं कि (कल) तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी, अपितु तुम्हारी यह कल्पना थी कि तुम्हारी बहुत-सी करतूतों को ईश्वर नहीं जानता। ४१ १९-२२

३९१ पुण्यवानों का स्थान

१ परलोक का वह घर हम उन लोगों के लिए नियत करते हैं, जो धरती पर न बड़ा बनने का विचार करते हैं, न कलह करने का। और ईश्वर-परायणों के लिए सद्‌गति है। २८८३

392 १ मसलु (अ) ल् जन्नति (अ) ल्लती वुअिद- (अ) ल मुत्तक़ून शेष फी हा अन्हारु (न) म्- मि(न्)म्माअिन् गैरि आसिनिन् * व अन्हारु- (न्) म्मि (न्) ल्लबनि (न्) ल्लम् यततग़य्यर तअ्मुहु * व अन्हारु (न्) म्मिन् ख़म्रि (न्)- ल्लज़्ज़ति (न) लिल (ल्) श्शारिबीन ०* व अन्हारु (न्) म्मिन् असलि (न्) म्मुस़ फ़्फ़न् (य्) शेष व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लि (अल्) स्समराति व मग़्फ़िरतु (न्)म् मि (न्) र्रब्बिहिम् शेष ४७ १५

393 १ व बैनहुमा हिजाबुन् * व अल (य्) (अ) ल् अअ्राफि रिजालु (न्) य्यअ्रिफ़ून कुल्ल- (न्) (अ्) म् बि सीमाहुम् * व नादौ (अ) अस़्हाब (अ) ल् जन्नति अन् सलामुन् अलैकुम् * लम् यदख़ुलूहा व हुम् यत़्मअ़ून०

२ व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ाअ अस्हाबि (अल्) न्नारि * क़ालू (अ) रब्बना ला तज्अल्ना मअ़ (अ) ल् क़ौमि (अल्) ज़्ज़ालिमीन० ७ ४६-४७

394 १ व मन् अराद (अ) ल आख़िरत व सआ (य्) लहा सअ्यहा व हुव मु(अ)अमिनुन् फ उ(ल्)लाअिक कान सअ्युहु (म्) म्मश्कूरन् (अ)० १७ १९

१९२ क्षीर मधुरं मधूवकम्

१ ईश्वर-परायणो से जिस स्वर्ग का अभिवचन दिया गया है, उसकी स्थिति यह है कि उसमें पानी की नदियाँ हैं, जो (पानी) बिगड़नेवाला नहीं और दूध की नदियाँ हैं, जिस (दूध) का स्वाद बदला हुआ नहीं होगा और ऐसे शर्बत की नदियाँ हैं, जो (शर्बत) पीनेवालो को स्वाद देनेवाली होगी और मधु की नदियाँ हैं, जो (मधु) स्वच्छ किया हुआ होगा। और उन ईश्वर-परायणों के लिए वहाँ भाँति-भाँति के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है। ४७।१५

१९३ ऊँचा स्थान

१ और उन दोनो (स्वर्ग और नरक) के बीच एक सीमा रेखा होगी और ऊँचे स्थान के ऊपर कुछ लोग होगे कि प्रत्येक को उसके चिह्न से पहचान लेंगे और स्वर्गवालों से पुकारकर कहेंगे कि तुमको सलाम हो, वे अभी स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए किन्तु उसके प्रत्याशी हैं।

२ और जब उनकी दृष्टि नरकवालों की ओर फिरेगी, तो वे कहेंगे हे प्रभो! हमें उन पापियों में सम्मिलित न कर।

७।४६-४७

१९४ इच्छा + श्रद्धा + प्रयत्न = साफल्य

१ जो परलोक की इच्छा रखता है, और उसके लिए प्रयत्न करता है जैसा कि उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रद्धावान् हो, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न सफल होगा। १७।१९

392 १ मसलु (अ्) ल् जन्नति (अ्) ल्लती वुअिद-(अ्) ल् मुत्तक़ून ^शेष^ फी हा अन्हारु (न्) म्-मि(न्)म्माअिन् ग़ैरि आसिनिन् ^श^ व अन्हारु-(न्) म्मि (न्) ल्लबनि (न्) ल्लम् यतग़य्यर त़अ्मुहु^श^ व अन्हारु (न्) म्मिन् ख़म्रि (न्)-ल्लज़्ज़ति (न्) ल्लि (ल्) श्शारिबीन ^छश^ व अन्हारु (न्) म्मिन् अ़सलि (न्) म्मुस़फ़्फ़न् (य्)^शेष^ व लहुम् फीहा मिन् कुल्लि (अल्) स्समराति व मग़्फ़िरतु (न्)म् मि (न्) र्रब्बिहिम्^शेष^ ४७ १५

393 १ व बैनहुमा हिजाबुन् ^श^ व अ़ल (य्) (अ्) ल् अअ्राफ़ि रिजालु (न्) य्यअ्रिफ़ून कुल्ल-(न्) (अ्) म् बि सीमाहुम्^श^ व नादौ (अ्) अस़्हाब (अ्) ल् जन्नति अन् सलामुन् अ़लैयुम्^श्क^ लम् यदख़ुलूहा व हुम् यत़्मअ़ून०

२ व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ाअ अस़्हाबि (अल) न्नारि ^का^ क़ालू (अ्) रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ़ (अ्) ल् क़ौमि (अल्) ज़्ज़ालिमीन० ७ ४६-४७

394 १ व मन् अराद (अ्) ल आख़िरत व सआ़ (य्) लहा सअ्यहा व हुव मु(व्) अ्मिनुन् फ उ(य्)लाअिक कान सअ्युहुम् (म्) म्मश्कूरन् (अ्)० १७ १९

३९२ क्षीर मधुर मधूवकम्

१ ईश्वर-परायणों से जिस स्वर्ग का अभिवचन दिया गया है, उसकी स्थिति यह है कि उसमें पानी की नदियाँ हैं, जो (पानी) बिगड़नेवाला नहीं और दूध की नदियाँ हैं, जिस (दूध) का स्वाद बदला हुआ नहीं होगा और ऐसे शर्बत की नदियाँ हैं, जो (शर्बत) पीनेवालों को स्वाद देनेवाली होगी और मधु की नदियाँ हैं, जो (मधु) स्वच्छ किया हुआ होगा। और उन ईश्वर-परायणों के लिए वहाँ भाँति-भाँति के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है ...। ४७ १५

३९३ ऊँचा स्थान

१ और उन दोनों (स्वर्ग और नरक) के बीच एक सीमा-रेखा होगी और ऊँचे स्थान के ऊपर कुछ लोग होंगे कि प्रत्येक को उसके चिह्न से पहचान लेंगे और स्वर्गवालों से पुकारकर कहेंगे कि तुमको सलाम हो, वे अभी स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए किन्तु उसके प्रत्याशी हैं।

२ और जब उनकी दृष्टि नरकवालों की ओर फिरेगी, तो वे कहेंगे हे प्रभो! हमें उन पापियों में सम्मिलित न कर।

७ ४६-४७

३९४ इच्छा + श्रद्धा + प्रयत्न = साफल्य

१ जो परलोक की इच्छा रखता है, और उसके लिए प्रयत्न करता है, जैसा कि उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रद्धावान् हो, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न सफल होगा। १७ १९

392 १ मसलु (अ) ल् जन्नति (अ) ल्लती वुअिद- (अ) ल् मुत्तक़ून[शेष] फ़ी हा अन्हारु (न्) म्-मि (न्) म्माअिन् गैरि आसिनिन्[५] व अन्हारु- (न्) म्मि (न्) ल्लबनि (न्) ल्लम् यतग़य्यर तअ्मुहु[५] व अन्हारु (न्) म्मिन् ख़म्रि (न्)-ल्लज्जति (न्) लि (ल्) श्शारिबीन[०४] व अन्हारु (न्) म्मिन् अ़सलि (न्) म्मुस़फ़्फ़न् (य्)[शेष] व लहुम् फीहा मिन् कुल्लि (अल्) स्समराति व मग्फ़िरतु (न्)म् मि (न्) र्रब्बिहिम्[शेष] ४७ १५

393 १ व बैनहुमा हिजाबुन्[५] व अ़ल (य्) (अ) ल् अअ्राफ़ि रिजालु (न्) य्यअ्रिफ़ून कुल्ल- (न्) (अ) म् बि सीमाहुम्[५] व नादौ (अ) अस्हाब (अ) ल् जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम्[५७] लम् यदख़ुलूहा व हुम् यत्मअ़ून○
२ व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ाअ अस्हाबि (अल्) न्नारि[ला] क़ालू (अ) रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ (अ) ल् क़ौमि (अल्) ज़्ज़ालिमीन○ ७ ४६-४७

394 १ व मन् अराद (अ) ल् आख़िरत व सआ (य्) लहा सअ्यहा व हुव मु (अ्) अ्मिनुन् फ़ उ (ल्) लाअिक काना सअ्युहुम् (म्) म्मश्कूरन् (अ्)○ १७ १९

१९२ और मधुरं मधूवकम्

१ ईश्वर-परायणों से जिस स्वर्ग का अभिवचन दिया गया है, उसकी स्थिति यह है कि उसमें पानी की नदियाँ हैं, जो (पानी) बिगड़नेवाला नहीं और दूध की नदियाँ हैं, जिस (दूध) का स्वाद बदला हुआ नहीं होगा और ऐसे शर्बत की नदियाँ हैं, जो (शर्बत) पीनेवालों को स्वाद देनेवाली होगी और मधु की नदियाँ हैं, जो (मधु) स्वच्छ किया हुआ होगा। और उन ईश्वर-परायणों के लिए वहाँ भाँति भाँति के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है ...। ४७ १५

१९३ ऊँचा स्थान

१ और उन दोनों (स्वर्ग और नरक) के बीच एक सीमा-रेखा होगी और ऊँचे स्थान के ऊपर कुछ लोग होंगे कि प्रत्येक को उसके चिह्न से पहचान लेंगे और स्वर्गवालों से पुकारकर कहेंगे कि तुमको सलाम हो, ये अभी स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए किन्तु उसके प्रत्याशी हैं।

२ और जब उनकी दृष्टि नरकवालों की ओर फिरेगी, तो वे कहेंगे हे प्रभो! हमें उन पापियों में सम्मिलित न कर।
७ ४६-४७

१९४ इच्छा + श्रद्धा + प्रयत्न = साफल्य

१ जो परलोक की इच्छा रखता है, और उसके लिए प्रयत्न करता है, जैसा कि उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रद्धावान् हो, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न सफल होगा। १७ १९

395 १ व कुन्तुम् अज़्वाजन् (अ्) सलासतन्O
२ फ असहाबु (अ्) ल् मय्मनति मा असहाबु (अ्) ल मय्मनतिO
३ व असहाबु (अ्) ल मश्अमति मा असहाबु (अ्) ल मशअमतिO
४ व (अल्) सुसाबिकून (अल्) सुसाबिकूनO
५ अु (व्) लाअिक (अ्) ल मुकर्रबूनO
५६ ७-११

396 १ या अय्युह (अ्) ल इन्सानु इन्नक कादिहुन् इला (य्) रब्बिक कदहन् (अ्)फ मुलाकीहि O
२ फ अम्मा मन् ऊतिय कितावहु बि यमीनिही O
३ फ सौफ युहासबु हिसाब(न् अ) य्यसीरन्-(अ्)O
४ व यन्क़लिबु इला (य) अह्लिही मसरूरन् (अ्)O
५ व अम्मा मन् ऊतिय कितावहु वराअ ज़हरिही O
६ फ सौफ यद्अू (अ्) सुबूरन् (अ्)O
७ व यस्ला (य्) सअीरन् (अ्)O
८ इन्नहु कान फी अह्लिही मसरूरन् (अ्)O
९ इन्नहु ज़न्न अ (न्) ल्लन (न्) य्यहूरO
८४ १-१४

३९५ दाहिनेवाले, बायेंवाले एवं समीपवाले

१ तुम हो जाओगे तीन प्रकार के
२ दाहिनेवाले, कैसे अच्छे हैं दाहिनेवाले।
३ और बायेंवाले, कैसे बुरे हैं बायेंवाले।
४ और आगे निकल जानेवाले सबसे आगे हैं।
५ वे लोग समीपस्थ हैं।

५६७-११

३९६ अन्त में मधुर या आदि में मधुर

१ हे मनुष्य, तुझे परिश्रम करना चाहिए अपने प्रभु के समीप पहुँचने के लिए। खूब परिश्रम कर, फिर तू उससे मिलनेवाला है।
२ तो जब उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया,
३ तो उससे हिसाब लिया जायगा, सरल हिसाब।
४ और वह अपने लोगों की ओर आनन्दित होकर लौटेगा।
५ और जिसको अपना कर्म-पत्र पीठ के पीछे से दिया गया,
६ वह पुकारेगा मृत्यु! मृत्यु!
७ और वह नारकीय अग्नि में प्रविष्ट होगा।
८ निस्सन्देह वह अपने बाल-बच्चों में खुश था।
९ निश्चय ही उसने कल्पना की थी कि वह कदापि नहीं लौटेगा

८४६-१४

397 १ फ अम्म (अ)ल्लज़ीन शक़ू (अ)फ फ़ि (अल्)-
नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरु (न्) व शहीक़ुन्०
२ ख़ालिदीन फ़ीहा मा दामति (अल्) स्समावातु
व (अ) ल् अर्ज़ु इल्ला मा शाअ रब्बुक
इन्न रब्बक फ़अ्आलु (न्) ल्लि मा युरीदु०
३ व अम्म (अ) ल्लज़ीन सुअिदू फ़ फ़ि (अ)
ल् जन्नति ख़ालिदीन फ़ीहा मा दामति (अल्)
स्समावातु व (अ) ल् अर्ज़ु इल्ला मा शाअ
रब्बुक अ़ता अन् ग़ैर मज्ज़ूज़िन्०

११ १०६-१०८

398 १ या अय्यतुह (अ) (अल्) नफ़्सु (अ) ल
मुत्मअिन्नतु०
२ (अ) र्जिअी इला (य्) रब्बिक राज़ियत (न्)
म्मर्ज़ीयतन्
३ फ़(अ)द्ख़ुली फ़ी अिबादी०
४ व (अ)द्ख़ुली जन्नती०

८९ २७-३०

१९७ यावत् ईश्वरेच्छा

१ जो अभागे होंगे वे आग में होंगे, वहाँ वे चीखेंगे और धाड़ें मारकर रोयेंगे।

२ वे उसमें सदा रहेंगे, जब तक कि आकाश और भूमि रहेंगे, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। तेरा प्रभु जो चाहता है, उसे कर डालता है।

३ और वे लोग, जो भाग्यवान होंगे वे स्वर्ग में होंगे। वहाँ वे सदा रहेंगे, जब तक आकाश और भूमि रहें, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। यह अखण्ड उपहार है।

११।१०६-१०८

८९ शान्ति-मन्त्र

१९८ शान्त जीव

१ हे शान्त जीव!

२ लौट चल अपने प्रभु की ओर। तू उससे प्रसन्न और वह तुझसे प्रसन्न।

३ सो मेरे (अल्लाह के) दासों में सम्मिलित हो जा।

४ और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा।

८९।२७-३०

399 १ वअद (अ्)ल्लाहु (अ्)ल् मु(ऽ्)अमिनीन व (अ्) ल् मु(ऽ्)अमिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिह (अ्) (अ्) ल् अन्हार् ख़ालिदीन फ़ीहा व मसाकिन त़य्यिबतन् फ़ी जन्नाति अद्निन्[१] व रिद्वानु(न्) म्मिन (अ्) ल्लाहि अक्बरु[२] ज़ालिक हुव (अ्)ल् फ़ौज़ु(अ्)ल् अज़ीमु O

१४२

400 १ व उज़्लिफ़ति (अ) ल् जन्नतु लिल् मुत्तक़ीन ग़ैर बईदिन्O

२ हाज़ा मा तूअदून लि कुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़िन् O[१]

३ मन् ख़शिय (अ्ल्) र्रह्मान बि (अ्) ल् ग़ैबि व जाअ बि क़ल्बि(न्) म् मुनीबि निO[२]

४ (अ्)दख़ुलूहा बि सलामिन् ज़ालिक यौमु- (अ) ल् ख़ुलूदिO

५ लहु (म्) म्मा यशाऊन फ़ीहा व लदना मज़ीदुनO

५०।३१।३५

९० ईश्वर-प्रसाद

३९९ ईश्वर की प्रसन्नता सबसे श्रेष्ठ

१ ईश्वर ने श्रद्धावानों और श्रद्धावतियों को ऐसे स्वर्गोद्यानों का अभिवचन दिया है, जिनके नीचे नदियां बहती हैं, व उनमें नित्य रहेंगे। और इन सदाबहार उद्यानों में पवित्र गृहों का भी अभिवचन है और सबसे बढ़कर ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होगी। यही बड़ी सफलता है।

९.७२

४०० स्वर्ग से मेरे पास अधिक

१ ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूर्ण करनेवालों के लिए स्वर्ग समीप लाया जायगा दूर न होगा।

२ (कहा जायगा) यह है जिसका अभिवचन प्रत्येक पश्चात्ताप करनेवाले एवं सावधानी से आज्ञा-पालन करनेवाले के लिए तुमसे किया गया,

३ जो डरता है कृपालु से बिना देखे और ईश्वर प्रवृत्त मन के साथ आता है।

४ इसमें शान्ति से समर्पित होकर प्रविष्ट हो जाओ। यह नित्य निवास का स्थान है।

५ वह जो कुछ चाहेंगे, वहां उनके लिए उपलब्ध है और हमारे पास और भी अधिक है।

५०.३१-३५

कुछ शब्दार्थ

कुरान-सार में प्रयुक्त कुछ शब्दों के मूल अरबी शब्द देकर 'कुरान-कोशों' नुसार यहाँ उनके अर्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इससे मूल अर्थग्रहण में धा होगी।

अन्तिम दिन अन्तिम न्याय का दिन—आखिरत—परलोक, शाश्वत जीवन, पुनर्जीवन, दूसरी जिन्दगी।

इब्लीस—इब्लीस–शैतान ईश्वर की कृपा के विषय में हताश।

शैतान—शैतान–आशा न पालनेवाला नेकी से दूर जलनेवाला, निस्सार।

कृपावान्–रहमान—बहुत मेहरबान ऐसा कृपावान्, जो माँगने पर देता ही है।

करुणावान्–रहीम—अतीव करुणाशील, ऐसा कि उससे न माँगा जाय तो नाराज हो जाय।

ग्रंथवान्—हज़रत मुहम्मद के पूर्ववर्ती प्रेषितों को ईश्वर से प्राप्त हुए ग्रन्थों के अनुयायी।

जप जयजयकार—तस्बीह—ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करना। ईश्वर-भक्ति में तन्मय होना।

जीविका रोजी—रिज़्क—इहलोक एवं परलोक की देनें, आन्तरिक एवं बाह्य प्रभु-प्रसाद।

दान—इन्फ़ाक़—ईश्वर के कार्यों में धन का व्यय।

नियमित—नियत—दान—ज़कात—जकात का धात्वर्थ है शुद्धता स्वच्छता। चित्त-शुद्धि के लिए सत्कार्य में धन का नियमित तथा नियत व्यय।

निर्लज्जता—लज्जाहीनता। लज्जा—हया। उसका स्वरूप निम्न प्रकार कहा गया है। सिर और सिर में जो चिंतन एवं विचार हैं उनकी देखभाल करना पेट की और उसमें जो कुछ भरा है, उन सब पर नजर रखना और मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जो जीवन होगा, उसका स्मरण रखना।

११ पश्चात्ताप—तौबा—बुराई से पराङ्मुख होकर भलाई की ओर मुड़ना। (१) बुरे कामों को बुरा समझकर छोड़ देना। (२) हाथ से कोई बुरा काम होने पर परिताप करना। (३) पुनः गलती न करने का इरादा करना। (४) जिस काम की आदत डालने से कुकृत्यों का प्रतिबंध होता है, ऐसे कामों की आदत डालना। ये चारों बातें करने से पश्चात्ताप की शर्तें पूरी होती हैं।

१२ प्रमाण—वह्य—इशारे से बताना, इशारे से बात करना, यह ईश्वरीय सन्देश जो प्रेषितों को स्फुरित होता है।

१३ प्रणिपात—सज्द—भूमि पर माथा रखना, नमाज पढ़ना, ईश्वर के सम्मुख नम्र होना।

१४ विभक्ति—शिर्क—साझी बनाना, अनन्यनिष्ठ न होना। ईश्वर ने जो चीजें अपने लिए खास की हैं, अपने दासों के जिम्मे दासत्व के जो काम ठहराए हैं, वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी व्यक्ति, जीव या वस्तु के लिए करना।

१५ विभक्त—मुशरिक—विभक्ति का शिकार।

१६ शरणता—इस्लाम—आज्ञा पालना, ईश्वर के सुपुर्द होना, अपने को ईश्वर को सौंपना, ईश्वरीय प्रसाद प्राप्त करना।

१७ शान्तजीव—नफ्स मुत्मइन्ना—समाधान, वह विश्राम जो कष्ट एवं प्रयासों के पश्चात् प्राप्त हो। अन्तःसमाधान जिसके कारण कोई विकार या सन्देह नहीं उठता। इस अवस्था को सूफी लोग 'ऐनुल यकीन'—प्रत्यक्ष साक्षात्कार कहते हैं, ऐसा कहा जाए तो गलत न होगा।

१८ टोकनेवाला मन—नफ्से लव्वामा—टोकनेवाला अर्थात् दोषों का सूक्ष्म परखनेवाला मन। मनुष्य को उसकी बुराई पर टोकनेवाला कि क्यों उसने बुराई की और भलाई करने पर पूछनेवाला कि उसने उससे अधिक भलाई क्यों नहीं की।

१९ दोषप्रवृत्त मन—नफ्से अम्मारा—बुरी आज्ञा करनेवाला मन।

२० विकार—वसवसा—बुरा विचार, मन को भगा ले जानेवाला, शैतान कुत्ते और शिकारी की हलकी आवाज। वृक्ष की छोटी सरसराहट।

२१ सुमनता, सत्कृति—इहसान—भला काम इस प्रकार करना मानो तुम ईश्वर को देख रहे हो। यदि ऐसा न हो सके, तो फिर यह समझते रहना कि वह तुम्हें देख रहा है।

२२ श्रद्धा—ईमान—निश्चय आस्तिकता निष्ठा।

२३ श्रद्धावान् भक्त—मोमिन।

२४ श्रद्धाहीन अभक्त नास्तिक—काफ़िर, मुलहिद।

२५ सन्देष्टा—नबी—ईश्वर के सन्देश को स्पष्टतया विवरण करनेवाला।

२६ प्रेषित पैगंबर—रसूल—ईश्वर का सन्देश पहुँचानेवाला ईश्वर का भेजा हुआ, क़ासिद, ईश्वर के सन्देश को लोगों के हृदय में प्रविष्ट करनेवाला।

२७ संयम डर, ईश्वरपरायणता धर्मपरायणता कल्याण—तक़वा—ईश्वर का भय ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करना अपने अंतर का उस प्रत्येक वस्तु से सुरक्षित रखना जो हमें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य विषयों में व्यस्त रखे।

× × ×

१ ख्रीष्ट मसीह—मसीह ईसा का *गुणगौरव-परक अभिधान। मगस।* वह मनुष्य जिसकी असत्य की मैल मिटी हुई है। पदयात्रा में जीवन बितानेवाला। सच्ची बात बतानेवाला।

(ईसा और उसके पूर्व के प्रेषितों के नाम के साथ उन्हें ईश्वर शांति दे ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।)

२ मुहम्मद—मुहम्मद—ईश्वर के प्रेषित का नाम। वह व्यक्ति जिसमें विपुल सद्गुण सद्वृत्ति एवं सदाचार मौजूद हो।

(मुहम्मद (पैगंबर) शब्द के साथ उन पर ईश्वर का आशीर्वाद हो और ईश्वर की ओर से उन्हें शांति प्राप्त हो, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।)

११ पश्चात्ताप—तोबा—बुराई से पराङ्मुख होकर भलाई की ओर मुड़ना। (१) बुरे कामों को बुरा समझकर छोड़ देना। (२) हाथ से कोई बुरा काम होने पर परिताप करना। (३) पुनः गलती न करने का इरादा करना। (४) जिस काम की आदत डालने से बुराइयों का प्रतिरोध होता है ऐसे कामों की आदत डालना। ये चारों बातें करने से पश्चात्ताप की शर्तें पूरी होती हैं।

१२ संकेत—रमूज़-इशारा से बताना, इशारे से बात करना, यह ईश्वरीय शब्द या प्रेमियों का सूचित होता है।

१३ प्रणिपात—सज्दा—भूमि पर माथा रखना, नमाज़ पढ़ना, ईश्वर के सम्मुख नम्र होना।

१४ विभक्ति—शिर्क—साझी बनाना, अनन्यनिष्ठ न होना। ईश्वर की जो चीज़ें करने के लिए लोग थे, अपने दासत्व व विनम्र दास्यत्व के निमित्त ठहराए हैं वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु यारा व्यक्ति, जीव या वस्तु के लिए करना।

१५ विभक्त—मुशरिक—विभक्ति का शिकार।

१६ शरणागति—इस्लाम—आज्ञा पालना, ईश्वर के सुपुर्द होना, अपने को ईश्वर को सौंपना, ईश्वरीय प्रसाद प्राप्त करना।

१७ शान्तजीव—नफ्से मुत्मइन्ना—समाधान, वह विश्वास, जो कष्ट एवं प्रयासों के पश्चात् प्राप्त हो। मन का समाधान जिसके कारण कोई विचार या शंका नहीं उठता। इस अवस्था को सूफ़ी लोग 'ऐनुल यक़ीन'—प्रत्यक्ष साक्षात्कार कहते हैं जैसा कि आग को देखने से होता।

१८ टोकनेवाला मन—नफ्से लव्वामा—टोकनेवाला अपने दोषों पर रुदन करनेवाला मन। मनुष्य को उसकी बुराई पर टोकनेवाला मन कि क्यों उसने बुराई की और भलाई करने पर पूछनेवाला कि उसने उससे अधिक भलाई क्यों नहीं की।

१९ दोषपूर्ण मन—नफ्से अम्मारा—बुरी आज्ञा करनेवाला मन।

२० विकार—वसुवसा—बुरा विचार, मन को भगा छे जानेवाला, शैतान कुत्ते और शिकारी की हलकी आवाज । वृम की छोटी सरसराहट ।

२१ सुजनता, सत्कृति—इहसान—भला काम इस प्रकार करना मानो तुम ईश्वर को देख रहे हो । यदि ऐसा न हो सके तो फिर यह समझते रहना कि वह तुम्हें देख रहा है ।

२२ श्रद्धा—ईमान—निश्चय आस्तिकता निष्ठा ।

२३ श्रद्धावान् भक्त—मोमिन ।

२४ श्रद्धाहीन, अभक्त नास्तिक—काफ़िर, मुलहिद ।

२५ सन्देष्टा—नबी—ईश्वर के सन्देश को स्पष्टतया विवरण करनवाला ।

२६ प्रेषित पैगंबर—रसूल—ईश्वर का सन्देश पहुँचानेवाला ईश्वर का भजा हुआ क़ासिद ईश्वर के सन्देश को लोगों के हृदय में प्रविष्ट करनवाला ।

२७ संयम डर ईश्वरपरायणता धर्मपरायणता कल्याण—तक़वा—ईश्वर का भय ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करना अपन अतर का उस प्रत्येक वस्तु से सुरक्षित रखना जो हमें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य विषयो में व्यस्त रखे ।

× × ×

१ ख्रीष्ट मसीह—मसीह, ईसा का गुणगौरव-परक अभिधान । मगक । वह मनुष्य जिसकी असत्य की आँख मिटी हुई है । पदयात्रा म जीवन बितानेवाला । सच्ची बात बतानेवाला ।

(ईसा और उसके पूर्व के प्रषितों के नाम के साथ उन्हें ईश्वर शांति दे ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है ।)

२ मुहम्मद—मुहम्मद—ईश्वर के प्रषित का नाम । वह व्यक्ति जिसमें विपुल सद्गुण सद्वृत्ति एव सदाचार मौजूद हों ।

(मुहम्मद (पैगंबर) शब्द के साथ उन पर ईश्वर का आशीर्वाद हो और ईश्वर की ओर से उन्हें शांति प्राप्त हो, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है ।)

३ १ प्रावरणावगुण्ठित } प्रेषित महम्मद। यहाँ पर घटना की ओर
२ चादर ओढ़नेवाला } इशारा है। जब हजरत मुहम्मद को वह्य
(प्रज्ञान) आया तब प्रारम्भ में वे डर-से गये। दूसरी और तीसरी
बार वह्य आयी तब भी उनकी वैसी ही स्थिति रही। उन्हें उस
समय सर्दी मालूम हुई और उन्होंने कपड़ा ओढ़ लिया। इस
प्रकार कुरान में दो बार 'कपड़ा ओढ़नेवाले' ऐसा उल्लेख आया है।
इसके बाद मुहम्मद को सम्बोधित करते समय प्रत्येक बार रसूल
(प्रेषित) या पैगम्बर (नबी) शब्द ही प्रयुक्त हुआ है।

४ यहया—एक महम्मद-पूर्व प्रेषित का नाम। कुरान-शरीफ में इनके
पवित्राचारी होने का आदरपूर्वक जिक्र किया गया है। इस शब्द का
आशय है जीवित रहो। चिरंजीव रहो।